सामुद्रक शास्त्र

SAMUDRAKA SHASTRA

सामुद्रक एवं हस्तरेखा का प्रामाणिक ग्रन्थ

पं० शक्तिधर शुक्ल

PANDIT SHAKTIDHAR SHUKLA

व्यास प्रकाशन

डी० १६/१३ मानमन्दिर, वाराणसी

11-1
Scored

सामुद्रकशास्त्र

प्रथम एवं द्वितीय खण्ड

SAMUDRAKASHASTRA

I & II PART

•

पं० शक्तिधर शुक्ल

PANDIT SHAKTIDHAR SHUKLA

•

व्यास प्रकाशन वाराणसी १९८६

VYAS PRAKASHAN, VARANASI

प्रकाशक :—

व्यास प्रकाशन

डी० १६/१३, मानमन्दिर, वाराणसी

●

मूल्य—साठ रुपए

प्रथम फोटो आफसेट संस्करण १९८६

●

मुद्रक :—

सिटिजन प्रिन्टर्स

दिल्ली

नम्र निवेदन

भविष्य जानने की उत्कण्ठा मानव सभ्यता के प्रारम्भ से ही मनुष्य में बलवती होती गई और इस उद्देश्य की पूर्ति आर्यों के महान ग्रन्थ 'वेद-भगवान' के अनुसन्धान द्वारा मानव ने सफलतापूर्वक कर लिया ।

ज्योतिष शास्त्र, सिद्धान्त, संहिता और होरा नामक तीन स्कन्धों में वर्णित विद्या के द्वारा मानव सफल भविष्य वेत्ता के रूप में उभरा । इसी महान ज्योतिष शास्त्र का एक महत्वपूर्ण अंग है सामुद्रक-शास्त्र ।

वर्तमान में साहित्यिक सामग्रियों का जितना बड़ा भण्डार विश्व में है, इतना बड़ा भण्डार भूत में कभी नहीं सुलभ रहा, इस भण्डार में सार्थक और निरर्थक साहित्य का कितना अनुपात है यही विचारणीय है । लगभग तीन चार दशकों से सामुद्रक शास्त्र, हस्त रेखा ज्ञान, तन्त्र, मन्त्र इत्यादि विद्याओं पर बहुत बड़ी संख्या में साहित्यों का प्रकाशन हुआ है ।

देखना यह है कि इन ग्रन्थों में प्रामाणिक और उपयोगी ग्रन्थ कितने प्रकाशित हुए हैं। आज संस्कृत के साथ हिन्दी ग्रन्थों का लगभग अभाव है, परिणाम

स्वरूप हमने जो पढ़ा उसका शास्त्रीय प्रमाण हमारे पास नहीं है, किसी जिज्ञासा के समाधान के हेतु, ग्रन्थों का संकेत हमारे पास नहीं है कि हम किसी ग्रन्थ का उद्धृत अंश पढ़ रहे हैं। ताकि अंश की मौलिकता से सम्वन्धित समाधान मूल ग्रन्थ से किया जा सके।

प्रस्तुत ग्रन्थ "सामुद्रकशास्त्र" संस्कृत के मूल श्लोक, मूल ग्रन्थ के अंश संकेत के साथ तथा सरल हिन्दी में विषय के सुव्यवस्थित क्रम के अनुसार प्रकाशित है। काफी लम्बे समय से यह ग्रन्थ जिज्ञासु पाठकों के लिये दुर्लभ था, इसी को दृष्टि में रखते हुए हमने इसे पुनर्प्रकाशित किया है, विश्वास है कि पाठकों को लाभ होगा।

श्याम कुमार व्यास

महा शिवरात्रि सं २०४२

भूमिका

(प्रथम संस्करण की)

यो देवः सचराचरेषु रमते रामाधिपो रासदो
लोकानां सुखदायको धृततनुर्धन्यो धरेशो धनी।
नित्यानन्दरतो निरामयपदो नारायणो ह्यव्यय-
स्तं वन्दे सुरवृन्दवन्दितपदं स्वाभीष्टसिद्ध्यै विभुम् ॥ १ ॥
प्रणम्य सच्चिदानन्दं सर्वाधारं निरामयम्।
सामुद्रकस्य शास्त्रस्य भूमिकेयं वितन्यते ॥ २ ॥

उस सर्वजननायक, महासुखविधायक, परानन्ददायक सर्वात्मा परमात्मा को कोटिशः धन्यवाद है जिसकी परिपूर्ण कृपा से यह सामुद्रकशास्त्र तैयार हो अवनिमण्डल में अवतीर्ण हुआ। इसके अन्वेषण करने में बाईस वर्ष व्यतीत हुए हैं। इस कराल कलिकाल के आ जाने पर पुरातन सामुद्रकशास्त्र का लोप सा हो गया था। जहाँ कहीं देखने में आता, वहाँ पूर्णरूप से न देख पड़ता था। इस कारण राजा, महाराजा, ताल्लुक़ेदार, ज़मींदार, गुण-गणमण्डित-पण्डित और सर्वसाधारण के अवलोकनार्थ भविष्यपुराण, गरुड़पुराण, स्कन्दपुराण आदि तथा वाल्मीकीय रामायण व अँगरेज़ी, फ़ारसी, बँगला एवं मराठी आदि के सारांश सहित यह सामुद्रकशास्त्र प्राचीन पद्धति पर बनाया गया है। इस पुस्तक को सर्व महोदयगणों के करकमलों में समर्पण कर आशा रखता हूँ कि यदि इसके संशोधन आदि में कहीं प्रमाद पाया जाता हो उसके लिये विद्वान् लोग क्षमा करेंगे—

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः ॥ १ ॥

शक्तिधर शर्मा

इस ग्रन्थ के सम्पादन में जिन पुस्तकों से सहायता मिली है उनकी सूची:—

(1) Language of the hand. (Cheiro)

(2) Book of the hand. (K. St. Hill)

(3) What your hand reveals. (H. Rem)

(4) Study of Palmistry for professional purposes. (St. Germain)

(5) The Laws of scientific hand-reading. (W. G. Benhem)

(6) The hand and its mysteries. (Karma)

(7) Scientific Palmistry. (Noel Jequin)

(8) Practical Palmistry. (H. Frith)

(9) Cheirography and Cheirosophy. (Allen)

(१०) सामुद्रकशास्त्र (वेंकटेश्वर प्रेस)

(११) वाराहीसंहिता (,,)

(१२) पद्मपुराण

(१३) भविष्यपुराण

(१४) गरुड़पुराण

(१५) स्कंदपुराण

(१६) वाल्मीकीय रामायण

(१७) भावप्रकाश

(१८) चरकसंहिता

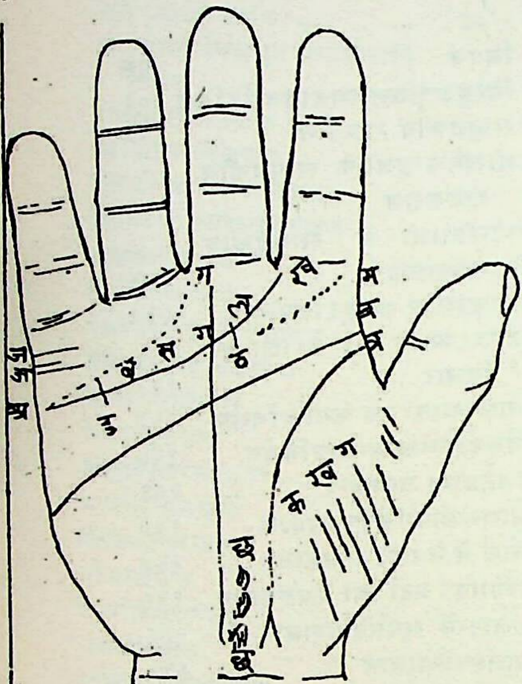
(१९) सुश्रुतसंहिता

(२०) जातकाभरण

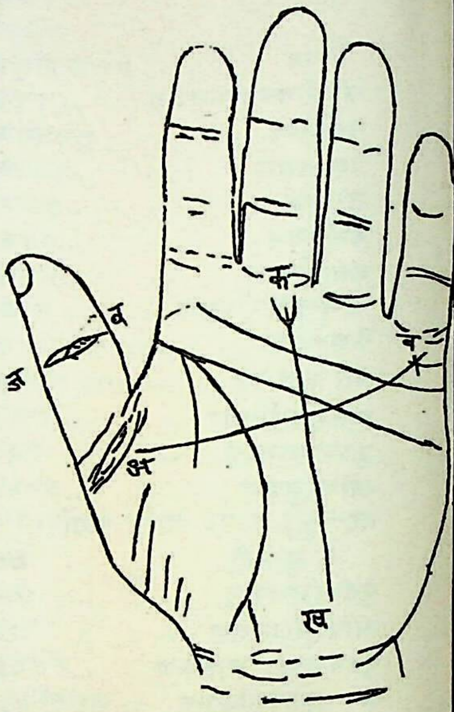
(२१) बृहद्ज्योतिषसार

(२२) सिद्धांतशिरोमणि (गणिताध्याय, गोलाध्याय)

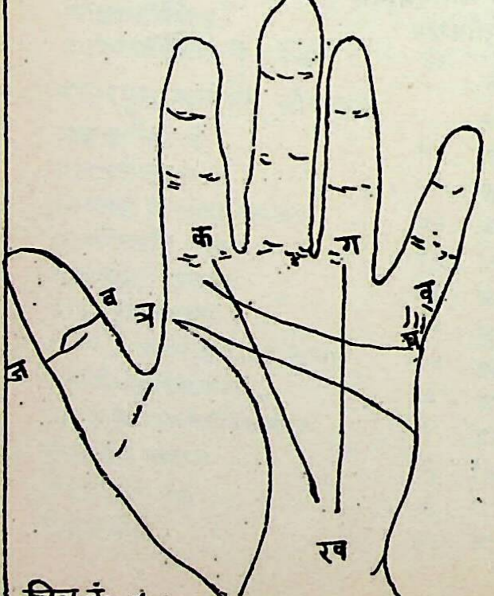
सामुद्रकशास्त्र के प्रथमखण्ड का सूचीपत्र।



चित्र नं. १



चित्र नं. ३



चित्र नं. २



सामुद्रकशास्त्र

प्रथमखण्ड

नत्वा देवं गणपममरैरग्रपूज्यं त्रिलोक्यां
भाषाभाष्यं विशदमनिशं तस्य सामुद्रकस्य ।
कुर्वे स्माहं सकलविदुषां चित्तकञ्जालिलील-
मल्पज्ञानां बहुसुखकरं बोधगम्यं नितान्तम् ॥ १ ॥

तीनों लोकों में देवताओं द्वारा प्रथम पूज्य, सुखदायक गणनायक को प्रणामकर मैं उस सामुद्रक शास्त्र का भाषाभाष्य करता हूँ जो निरन्तर निर्मल है और समस्त विद्वज्ज़नों के चित्तरूपी कमलों में भौंरे के समान लीला करता है । अल्पज्ञाताओं को बहुत सुखी करता तथा अत्यन्त बोधगम्य कहाता है ॥ १ ॥

कैलासाख्ये शुभे धाम्नि शिवा शंकरमब्रवीत् ।
नृनारीलक्षणं ज्ञातुमभिलष्ये दयानिधे ॥ २ ॥
पार्वत्या वचनं श्रुत्वा प्रहस्य जगदीश्वरः ।

प्रोवाच सुरशार्दूलो महादेवो महेश्वरः ॥ ३ ॥
धन्यासि कृतपुण्यासि मान्यासि मम वल्लभा ।
नृनारीलक्षणं श्रोतुं यतो जाता मतिस्तव ॥ ४ ॥
तदहं संप्रवक्ष्यामि नाम्ना सामुद्रकं प्रिये ।
यस्य विज्ञानमात्रेण कुशलो जायते नरः ॥ ५ ॥

एकबार कैलास में पार्वतीजी ने शिवजी से पूछा कि हे दयानिधि ! नर-नारियों के लक्षणों को आपसे जानने की मेरी इच्छा है। पार्वतीजी का वचन सुनकर जगदीश्वर महेश्वर हँसकर बोले कि तुम धन्य हो। तुमने पुण्य किये हैं। तुम सम्मान्य होकर मेरी प्यारी हो। नर-नारियों के लक्षणों को सुनने की जो तुम्हारी इच्छा हुई है, इसलिये हे प्रिये, "सामुद्रक" नामक शास्त्र को मैं भलीभाँति कहूँगा। इसके ज्ञान से मनुष्य प्रवीण होता है ॥ २–५ ॥

पुरुषों के लक्षण

उन्मानमानगतिसारमनूकमादौ
स्नेहस्वरप्रकृतिवर्णससन्धिसत्त्वम् ।
क्षेत्रं मृजां च विधिवत्कुशलोऽवलोक्य
सामुद्रविद्वदति यातमनागतं च ॥ ६ ॥

सुदक्ष सामुद्रक-शास्त्रवेत्ता पहले मनुष्य की देह में उच्चता, परिमाणता, गति, बल, मुखाकृति, चिकनई, स्वर, स्वभाव, वर्ण, सन्धिसमेत सत्त्व, क्षेत्र और लावण्य को विशेषता से देखकर गत अथवा अनागत शुभाशुभ को कहे ॥ ६ ॥

पादलक्षण

अस्वेदनौ मृदुतलौ कमलोदराभौ
श्लिष्टांगुली रुचिरताम्रनखौ सुपार्ष्णी ।
उष्णौ शिराविरहितौ सुनिगूढगुल्फौ
कूर्मोन्नतौ च चरणौ मनुजेश्वरस्य ॥ ७ ॥

जिसके चरण पसीनारहित, कोमल तलवेवाले हों। जिनमें परस्पर अँगुलियाँ सटी हों। मनोहर लालवर्णवाले नख हों। सुन्दर एड़ियाँ गरम तथा नसों रहित हों। गम्भीर गण्ठोंवाले कछुए की तरह ऊँचे हों तो वह मनुष्य नरेश होता है॥ ७॥

शूर्पाकारविरूक्षपाण्डुरनखौ वक्रौ शिरासन्ततौ
संशुष्कौ विरलाङ्गुली च चरणौ दारिद्र्यदुःखप्रदौ।
मार्गायोत्कटकौ कषायसदृशौ वंशस्य विच्छित्तिदौ
ब्रह्मघ्नौ परिपक्वमृद्द्युतितलौ पीतावगम्यारतौ॥ ८॥

जिसके दोनों पैर सूप के समान (आगे बहुत चौड़े तथा पीछे कम चौड़े) तथा विशेष रूखे हों। जिनमें पीले नख हों। टेढ़े तथा नसों से व्याप्त हों। खूब सूखे हों, विरली अँगुलियोंवाले हों तो वह प्राणी दरिद्री और दुःखी होता है। जिसके पैर बड़े हों वह अत्यन्त दूर पथ में गमन करता है। जिसके पैर कषायवर्ण हों उसके वंश का विनाश होता है। जिसके पैर के तलवे का रंग पकी मिट्टी के समान हो तो वह ब्राह्मणघाती होता है। जिसके तलवे पीले हों वह अगम्या रमणी में आसक्त होता है॥ ८॥

जङ्घलक्षण

प्रविरलतनुरोमवृत्तजङ्घा द्विरदकरप्रतिमैर्वरोरुभिश्च।
उपचितसमजानवश्च भूपा धनरहिताःश्वसृगालतुल्यजङ्घाः ९

जिनकी जाँघों में रोयें विरल और सूक्ष्म हों और जाँघें गोलाकार हों। जिनकी ऊरु (पतली जाँघें) हाथी की सूँड़ के समान हों। दोनों जानु (घुटनू) मांसल और सम हों तो वे राजा होते हैं। और, जिनकी जाँघें कुत्ते वा सियार के समान (चौड़ी) हों तो वे दरिद्री होते हैं॥ ९॥

रोमलक्षण

रोमैकैकं कूपके पार्थिवानां द्वे द्वे ज्ञेये पण्डितश्रोत्रियाणाम्।
त्र्याद्यैर्निस्स्वामानवादुःखभाजः केशाश्चैवंनिन्दिताःपूजिताश्च

जिनके रोमकूप में एक-एक रोम हो वे राजा होते हैं। जिनके रोमकूपों में दो-दो रोम हों वे पण्डित वा वेदपाठी होते हैं। जिनके रोमकूपों में तीन-तीन या चार-चार रोम हों वे मनुष्य धनरहित और दुःखभागी होते हैं। इसी तरह केशों के भी शुभाशुभ लक्षण जानना चाहिए ॥ १० ॥

जानुलक्षण

निर्मांसजानुर्म्रियते प्रवासे सौभाग्यमल्पैः प्रथितैर्दरिद्राः।
स्त्रीनिर्जिताश्चापिभवन्तिनिम्नैराज्यंसमांसैश्च महद्भिरायुः ११

जिसके घुटनू मांसरहित हों वह परदेश में मरता है। जिसके घुटनू थोड़े मांसवाले हों वह भाग्यशाली होता है। जिनके घुटनू चौड़े हों वे दरिद्री होते हैं। जिनके घुटनू गहरे हों वे स्त्री के वश में रहते हैं। जिनके घुटनू मांसल हों वे राज्य पाते हैं। और भारी घुटनू दीर्घायु के द्योतक हैं ॥ ११ ॥

लिङ्गलक्षण

लिङ्गेऽल्पे धनवानपत्यरहितः स्थूले विहीनो धनै-
र्मेढ्रे वामनते सुतार्थरहितो वक्रेऽन्यथा पुत्रवान्।
दारिद्र्यं विनते त्वधोऽल्पतनयो लिङ्गे शिरासन्तते
स्थूलग्रन्थियुते सुखी मृदु करोत्यन्तं प्रमेहादिभिः ॥१२॥

जिसका लिङ्ग छोटा हो वह धनी होता है। जिसका लिङ्ग मोटा हो वह सन्तानरहित होता है। जिसका लिङ्ग बायीं तरफ़ झुका हो वह पुरुष दरिद्री होता है। जिसका लिङ्ग टेढ़ा हो वह सन्तान और धनरहित होता है। जिसका लिङ्ग सीधा हो वह पुत्रवान् होता है। जिसका लिङ्ग नीचे की तरफ़ लचा हो वह दरिद्री होता है। जिसका लिङ्ग नसों से घिरा हो वह थोड़ी सन्तानोंवाला होता है। जिसका लिङ्ग मोटी गाँठोंवाला हो वह सुखी रहता है। जिसका लिङ्ग ढीला हो तो प्रमेह, पथरी आदि घोर रोगों से उस प्राणी की मृत्यु होती है ॥ १२ ॥

लिङ्ग और वृषण के लक्षण

कोषनिगूढैर्भूपा दीर्घैर्भग्नैश्च वित्तपरिहीनाः।
ऋजुवृत्तशेफसो लघुशिरालशिश्नाश्च धनवन्तः॥ १३ ॥
जलमृत्युरेकवृषणो विषमैः स्त्रीचञ्चलः समैश्च क्षितिपः।
ह्रस्वायुश्चोद्बद्धैः प्रलम्बवृषणस्य शतमायुः॥ १४ ॥
रक्तैराढ्या मणिभिर्निर्द्रव्याः पाण्डुरैश्च मलिनैश्च।
सुखिनः सशब्दमूत्रा निःस्वा निःशब्दधाराश्च॥ १५ ॥

जिनके अण्डकोष छिपे हों यानी मांस से घिरे हों, वे मनुष्य पृथ्वी-पति होते हैं। जिनके कोष लम्बे तथा ढीले हों वे धनहीन रहते हैं। जिनका लिङ्ग सीधा गोलाकार अथवा छोटा-सा होकर नसों से व्याप्त हो वे धनी होते हैं। जिसके एक ही अण्डकोष हो वे जल में मौत पाते हैं। जिसके वृषण विषम होते हैं वह स्त्रियों में चञ्चल रहता है। जिसके वृषण सम होते हैं वह राजा होता है। जिसके वृषण ऊपर को उठे हों वह अल्पायु होता है। जिसके वृषण बड़े लम्बे होते हैं वह सौ बरस की आयु पाता है। जिनके लिङ्ग की मणियाँ लाल हों वे धनवान् होते हैं। जिनके लिङ्ग की मणियाँ पीली वा मैली हों वे दरिद्री होते हैं। जिनके पेशाब करने में शब्द होता है वे सुखी रहते हैं। जिनकी मूत्र-धारा में शब्द न होता हो वे दरिद्री होते हैं॥ १३–१५॥

मूत्रधारा, मणि, बस्ति और शुक्रगन्ध के लक्षण

एकैव मूत्रधारावलिता रूपप्रधानसुतदात्री।
स्निग्धोन्नतसममणयो धनवनितारत्नभोक्तारः॥ १७ ॥
मणिभिश्च मध्यनिम्नैः कन्यापितरो भवन्ति निःस्वाश्च।
बहुपशुभाजो मध्योन्नतैश्च नात्युल्वणैर्धनिनः॥ १८ ॥
परिशुष्कबस्तिशीर्षैर्धनरहिता दुर्भगाश्च विज्ञेयाः।
कुसुमसमगन्धशुक्रा विज्ञातव्या महीपालाः॥ १९ ॥

मधुगन्धे बहुवित्ता मत्स्यसगन्धे बहून्यपत्यानि ।
तनुशुक्रा स्त्रीजनको मांससगन्धो महाभोगी ॥ २० ॥
मदिरागन्धे यज्वा क्षारसगन्धे च रेतसि दरिद्रः ।
शीघ्रं मैथुनगामी दीर्घायुरतोऽन्यथाऽल्पायुः ॥ २१ ॥

जिनके एक ही मूत्रधारा चलती है वह उनको रूप, प्रधानता व पुत्र देती है । जिनके लिङ्ग का अग्रभाग चिकना, ऊँचा, और सम हो वे धन व स्त्रीरत्न के भोगनेवाले होते हैं । जिनकी मणियाँ बीच में गहरी हों वे कन्याओं के पिता और दरिद्री होते हैं । जिनकी मणियाँ बीच में ऊँची हों वे पशुपालक होते हैं । जिनकी मणियाँ बहुत ऊँची न हों वे धनी होते हैं । जिनके पेड़ू व शिर सूखे हों तो उनको विशेषता से दरिद्री जानना चाहिये । जिनके वीर्य में फूल की-सी गन्ध आती हो, उन्हें राजा जानना चाहिये । जिनके वीर्य में शहद-सी गन्ध हो वे बड़े धनी होते हैं । जिनके शुक्र में मछली-सी गन्ध हो वे बहुत-सी सन्तान पाते हैं । जिसे थोड़ा-सा वीर्य होता है वह कन्या उपजाता है । जिसके वीर्य में मांस-सी गन्ध हो, वह महाभोगी, जिसके वीर्य में मदिरा-सी गन्ध आती हो, वह विधि से यज्ञ करनेवाला होता है । जिसके वीर्य में क्षार-सी गन्ध हो, वह दरिद्री होता है । जिसके मैथुन करने में शीघ्रता होती हो, तो वह प्राणी दीर्घायु होता है । जिसके मैथुन करने में बड़ी देर लगती हो, तो उसे थोड़ी उम्रवाला जानना चाहिये ॥ १७-२१ ॥

स्फिक्लक्षण

निःस्वोऽतिस्थूलस्फिक्[१]समांसलस्फिक्सुखान्वितो भवति ।
रोगी मध्यमस्फिङ्मण्डूकस्फिङ्नराधिपतिः ॥ २२ ॥

जिसके कूल्हे बहुत मोटे हों वह दरिद्री होता है । जिसके कूल्हे मांसल

---

१. अशीघ्रमैथुन्यल्पायुः स्थूलस्फिग्जघनोज्झितः । मांसलस्फिक्सुखी स्याच्च सिंहस्फिक् भूपतिः स्मृतः ॥

हों वह सुखी होता है। जिसके कूल्हे मध्यम हों वह रोगी होता है। जिसके कूल्हे मेंडक के समान हों वह नरपाल होता है ॥ २२ ॥

कटि, उदरलक्षण

सिंहकटिर्मनुजेन्द्रः कपिकरभकटिर्धनैः परित्यक्तः ।
समजठरा भोगयुता घटपिठरनिभोदरा निःस्वाः ॥ २३ ॥

जिसकी कमर सिंह की नाईं हो वह राजा होता है। जिसकी कमर वानर व ऊँट के बच्चे के समान हो वह दरिद्री होता है। जिनके पेट समान हों वे भोगी होते हैं। जिनका पेट घड़ा या बटलोही की तरह हो वे दरिद्री होते हैं ॥ २३ ॥

पार्श्व, कुक्षि, उदरलक्षण

अविकलपार्श्वा धनिनो निम्नैर्वक्रैश्च भोगसंत्यक्ताः ।
समकुक्षा भोगाढ्या निम्नाभिर्भोगपरिहीनाः ॥ २४ ॥
उन्नतकुक्षाः क्षितिपाः कुटिलाः स्युर्मानवा विषमकुक्षाः ।
सर्पोदरा दरिद्रा भवन्ति बह्वाशिनश्चैव ॥ २५ ॥

जिनकी पसलियाँ अविकल हों वे धनी होते हैं। जिनकी पसलियाँ गहरी व टेढ़ी हों वे भोग-विहीन होते हैं। जिनकी कोखें समान हों वे भोगयुक्त होते हैं। जिनकी कोखें गहरी हों वे भोगहीन होते हैं। जिनकी कोखें ऊँची हों वे राजा होते हैं। जिनकी कोखें विषम हों वे कुटिल (टेढ़े) होते हैं। जिनके पेट साँप के उदर के समान हों वे दरिद्री तथा बहुत खाऊ (खानेवाले) होते हैं ॥ २४–२५ ॥

नाभिलक्षण

परिमण्डलोन्नताभिर्विस्तीर्णाभिश्च नाभिभिः सुखिनः ।
स्वल्पात्वदृश्यनिम्ना नाभिः क्लेशवहा भवति ॥ २६ ॥

जिनकी नाभि बड़ी व चारों तरफ़ ऊँची हो वे सुखी होते हैं। जिनकी नाभि छोटी तथा अदृश्य होकर गहरी हो वह उन्हें क्लेशदायक होती है ॥ २६ ॥

बलिमध्यगता विषमा शूला बाधं करोति नैःस्वं च ।
शाठ्यं वामावर्ता करोति मेधां प्रदक्षिणतः ॥ २७ ॥

जिनकी नाभि बलियों के बीच प्राप्त होकर विषम हो वह उन्हें शूल-रोगी दरिद्री बनाती है । जिनकी नाभि वामावर्त हो वह शठताद्योतक है और जिनकी नाभि दक्षिणावर्त हो वह बुद्धिदायी है, यानी वे प्राणी मेधावी होते हैं ॥ २७ ॥

पार्श्वायता चिरायुषमुपरिष्टाच्चेश्वरं गवाढ्यमधः ।
शतपत्रकर्णिकाभा नाभिर्मनुजेश्वरं कुरुते ॥ २८ ॥

जिसकी नाभि दोनों ओर चौड़ी हो तो वह उसे दीर्घजीवी होता है । जिसकी नाभि ऊपर के भाग में चौड़ी हो वह उसे धनी करती है । जिसकी नाभि नीचे की तरफ चौड़ी हो वह गोगणशाली करती है । जिसकी नाभि कमलकर्णिका के समान हो वह उसे राजा बनाती है ॥ २८ ॥

बलिलक्षण

शस्त्रान्तं स्त्रीभोगिनमाचार्यं बहुसुतं यथासंख्यम् ।
एकद्वित्रिचतुर्भिर्बलिभिर्विद्यान्नृपं त्ववलिम् ॥ २९ ॥

जिसके उदर में एकही बलि हो वह शस्त्राघात से मौत पाता है । जिसके उदर में दो बलि हों वे उसे स्त्रीभोगी करती हैं । जिसके उदर में तीन बलियाँ हों, वे आचार्य बनाती हैं । जिसके उदर में चार बलियाँ हों वे उसे अनेक सन्तानोंवाला करती हैं । जिसके उदर में एकमात्र बलि देख ही न पड़े तो उसे नरपाल जानना चाहिये ॥ २९ ॥

विषमबलयो मनुष्या भवन्त्यगम्यागामिनःपापाः ।
ऋजुबलयः सुतभाजः परदारद्वेषिणश्चैव ॥ ३० ॥

जिनकी बलियाँ विषम हों वे मनुष्य अगम्यागामी होकर पापी होते हैं । जिनकी बलियाँ सीधी हों वे सुतभागी होकर परदाराओं से विरोध रखते हैं ॥ ३० ॥

---

१. एको बलिः शतायुः स्याच्छ्रीभोगी द्विवलिः स्मृतः । त्रिबलिः क्ष्माप आचार्य ऋजुभिर्बलिभिः सुखी । अगम्यगामी जिह्मवलिर्भूपः पार्श्वैश्च मांसलैः ॥

पुनः पार्श्वलक्षण

मांसलमृदुभिः पार्श्वैः प्रदक्षिणावर्तरोमभिर्भूपाः।
विपरीतैर्निर्द्रव्याः सुखपरिहीनाः परप्रेष्याः ॥ ३१ ॥

जिनके बाज़ू मांसल व कोमल तथा प्रदक्षिणावर्त होकर रोमों से घिरे हों वे राजा होते हैं। जिनके बाज़ू विपरीत हों वे दरिद्री तथा सुखविहीन होकर दास हाते हैं ॥ ३१ ॥

चूचकलक्षण

सुभगा भवन्त्यनुद्बद्धचूचका निर्धना विषमदीर्घैः।
पीनोपचितनिमग्नैः क्षितिपतयश्चूचकैः सुखिनः ॥३२॥

जिनके स्तनशिर ऊँचे न हों तो वे लोग सौभाग्यशाली होते हैं। जिनके स्तनशिर विषम होकर बड़े हों वे निर्धन होते हैं। जिनके स्तनशिर मोटे व ऊँचे हों वे राजा होकर सुखी रहते हैं ॥ ३२ ॥

हृदयलक्षण

हृदयं समुन्नतं पृथुलमांसलं च नृपतीनाम्।[1]
अधमानां विपरीतं खररोमचितं शिरालं च ॥ ३३ ॥

जिनका वक्षस्थल ऊँचा व चौड़ा होकर मांसल हो वे राजा होते हैं। जिनका वक्षस्थल विपरीत व कड़े बालों से युक्त हो वे प्राणी नराधम होते हैं ॥ ३३ ॥

सम[2]वक्षसोऽर्थवन्तः पीनैः शूरास्त्वकिञ्चनास्तनुभिः।
विषमं वक्षो येषां ते निःस्वाः शस्त्रनिधनाश्च ॥ ३४ ॥

जिनका वक्षस्थल समान हो वे धनी होते हैं। जिनका वक्षस्थल मोटा हो वे प्राणी वीर होते हैं। जिनका वक्षस्थल पतला हो वे दरिद्री होते हैं। जिनका वक्षस्थल विषम हो वे निर्धनी होकर शस्त्राघात से मृत्यु पाते हैं ॥ ३४ ॥

---

१. समोन्नतं च हृदयमकम्पं मांसलं पृथु । नृपाणामधमानां च खररोमशिरालकम् ॥
२. अर्थवान्समवक्षाः स्यात्पीनैर्वक्षोभिरूर्जितः। वक्षोभिर्विषमैर्निःस्वः शस्त्रेण निर्धनस्तथेति ॥

जत्रुलक्षण

विषमैर्विषमो जत्रुभिरर्थविहीनोस्थिसन्धिपरिणद्धैः ।
उन्नतजत्रुर्भोगी निम्नैर्निःस्वोऽर्थवान्पीनैः ॥ ३५ ॥

जिसकी हँसली असमान हो वह दुश्चरित्र होता है । जिसकी हँसली अस्थिसन्धियों से बँधी हुई हो वह धनहीन होता है । जिसकी हँसली ऊँची हो वह भोगी होता है । जिसकी हँसली निचली हो वह दरिद्री होता है । जिसकी हँसली मोटी हो वह धनवान् होता है ॥ ३५ ॥

ग्रीवालक्षण

चिपिटग्रीवो निःस्वः शुष्का सशिरा च यस्य वा ग्रीवा ।
महिषग्रीवः शूरः शस्त्रान्तो वृषसमग्रीवः ॥ ३६ ॥

जिसकी गर्दन चपटी या नसों से व्याप्त होकर सूखी हो वह निर्धन होता है । जिसकी गर्दन भैंसे के समान हो वह सूरमा होता है । जिसकी गर्दन बैल के समान हो उसकी शस्त्राघात से मौत होती है ॥ ३६ ॥

कम्बुग्रीवो राजा प्रलम्बकण्ठः प्रभक्षणो भवति ।
पृष्ठमभग्नमरोमशमर्थवतामशुभदमतोऽन्यत् ॥ ३७ ॥

जिसकी गर्दन शंख के समान (तीनरेखा से अङ्कित) हो वह राजा होता है । जिसका कण्ठ लम्बा हो वह बहुभोगी होता है । जिनकी पीठ अभग्न होकर रोमहीन हो वे अर्थशाली होते हैं । इससे अन्यभाँति पीठ अशुभदायक होती है ॥ ३७ ॥

कक्षालक्षण

अस्वेदनपीनोन्नतसुगंधिसमरोमसंकुलाः कक्षाः ।
विज्ञातव्या धनिनामतोऽन्यथार्थैर्विहीनानाम् ॥ ३८ ॥

जिनकी कक्षायें पसीने से रहित, मोटी, ऊँची तथा सुगन्धित होकर समान लोमों से आवृत हों उन्हें विशेषता से धनी जानना चाहिये । इससे विपरीत निर्धनियों की जानना चाहिये ॥ ३८ ॥

स्कन्धलक्षण

निर्मांसौ रोमचितौ भग्नावल्पौ च निर्धनस्यांसौ।
विपुलावप्युन्नतौ सुश्लिष्टौ सौख्यवीर्यवताम्॥ ३९ ॥

जिसके दोनों कन्धे मांसरहित, रोमों से व्याप्त व भग्न होकर छोटे हों वह निर्धन होता है। जिनके कन्धे चौड़े व ऊँचे होकर भली भाँति भरे हों वे पराक्रमी सुखी होते हैं॥ ३९ ॥

बाहुलक्षण

करिकरसदृशौ वृत्तावाजान्ववलम्बिनौ समौ पीनौ।
बाहू पृथिवीशानामधमानां रोमशौ ह्रस्वौ॥ ४० ॥

जिनकी दोनों भुजाएँ गोलाकार, हाथी की सूँड़ के समान, परस्पर बराबर और मोटी हों तथा घुटनों तक लम्बी हों वे भूपाल होते हैं। जिनकी दोनों बाहें रोमसहित छोटी हों वे निर्धनी कहाते हैं॥ ४० ॥

हस्ताङ्गुलिलक्षण

हस्ताङ्गुलयो दीर्घाश्चिरायुषामवलिताश्च सुभगानाम्।
मेधाविनां च सूक्ष्माश्चिपिटाः परकर्मनिरतानाम्॥ ४१ ॥

जिनके हाथ की अँगुलियाँ बड़ी हों वे दीर्घजीवी होते हैं। जिनकी अँगुलियाँ बलियों से रहित हों वे बड़े भाग्यवाले होते हैं। जिनकी अँगुलियाँ पतली हों वे बुद्धिमान् होते हैं। जिनकी अँगुलियाँ चपटी हों वे दासकर्म करनेवाले होते हैं॥ ४१ ॥ *

(देखिये चित्र नं० ११, १२ और १३)

स्थूलाभिर्धनरहिता बहिर्नताभिश्च शस्त्रनिर्याणाः।
कपिसदृशकरा धनिनो व्याघ्रोपमपाणयश्च पापाः॥ ४२ ॥

जिनके हाथ की अँगुलियाँ मोटी हों वे निर्धन होते हैं। जिनकी अँगुलियों का अग्रभाग लचा-सा हो वे शस्त्राघात से मृत्यु पाते हैं। जिनके

* पाश्चात्य विद्वानों का मत है कि बड़ी उँगलीवाले भौतिकवादी होते हैं। हमें इसका अनुभव भी हुआ है।—सं०

हाथ वानर के हाथ की तरह हों वे धनी होते हैं। जिनके हाथ बाघ के हाथ के समान हों वे पापी होते हैं ॥ ४२ ॥ †

मणिबन्धलक्षण

मणिबन्धनैर्निगूढैर्दृढैश्च सुश्लिष्टसन्धिभिर्भूपाः ।
हीनैर्हस्तच्छेदः श्लथैस्सशब्दैश्च निर्द्रव्याः ॥ ४३ ॥

जिनके मणिबन्ध (कलाई) गंभीर पुष्ट तथा सन्धियों से लिपटे हों, वे पृथ्वीपति होते हैं। जिनके कब्जे छोटे तथा सन्धियों से ढीले हों, ऐसे प्राणियों का हाथ काटा जाता है। जिनके कब्जे शब्दसमेत हों वे धनरहित होते हैं ॥ ४३ ॥

करतललक्षण

पितृवित्तेन विहीना भवन्ति निम्नेन करतलेन नराः ।
संवृतनिम्नैर्धनिनः प्रोत्तानकराश्च दातारः ॥ ४४ ॥

जिनके करतल गहरे हों वे पैतृकधन नहीं पाते। जिनके करतल गोलाकार तथा गहरे हों वे धनी होते हैं। जिनके करतल उन्नत हों वे दाता होते हैं ॥ ४४ ॥ *

विषमैश्च पापा निःस्वाश्च करतलैरीश्वरास्तुलाक्षाभैः ।
पीतैरगम्यवनितागामिनो निर्द्धना रूक्षैः ॥ ४५ ॥

जिनके हाथ विषम (असमान) हों वे पापी तथा निर्धन होते हैं। जिनके करतल लाख के समान लालवर्ण हों वे धनवान् होते हैं। जिनके करतल हल्दी के समान पीले हों वे अगम्या रमणी से रमण करते हैं। जिनके करतल रूखे हों वे धनरहित होते हैं ॥ ४५ ॥

---

† पतली नोक एवं जड़ में अधिक मोटी उँगली आलसी तथा आमोद-प्रमोदप्रियता की द्योतक हैं।—संपादक।

१. पितृवित्तविनाशश्च निम्नात्करतलान्नराः। संवृतैश्चैव निम्नैश्च धनिनः परिकीर्तिताः। प्रोत्तानकरदातारो विषमैर्विषमा नरा इति ॥ करैः करतलैश्चैव लाक्षाभैरीश्वरस्तनैः। परदाररताः पीतैरूक्षैर्निःस्वा नरा मताः ॥

* गहरी गद्दीवाले हाथ की सूर्यरेखा तथा ऊर्ध्वरेखा का विशेष फल नहीं होता। यह कुछ पाश्चात्य विद्वानों का मत है। किन्तु हम इससे पूर्णरूप से सहमत नहीं।—संपादक।

नखवर्णन

तुषसदृशनखाः क्लीबाश्चिपिटैः स्फुटितैश्च वित्तसन्त्यक्ताः ।
कुनखविवर्णैः परतर्कुकाश्च ताम्रैश्च भूपतयः ॥ ४६ ॥

जिनके नख * भूसी के समान हों (लम्बे छोटे) वे हिजड़े होते हैं। जिनके नख चपटे व फूटे से हों वे धनहीन होते हैं। जिनके नख कुत्सित तथा विवर्ण हों वे कुदृष्टि से निहारनेवाले होते हैं। जिनके नख ताम्रवर्ण व लाल हों वे पृथ्वीपाल होते हैं ॥ ४६ ॥

अङ्गुष्ठाङ्गुलिलक्षण

अङ्गुष्ठयवैराढ्याःसुतवन्तोऽङ्गुष्ठमूलगैश्च यवैः ।
दीर्घाङ्गुलिपर्वाणः सुभगा दीर्घायुषश्चैव ॥ ४७ ॥

जिनके अँगूठे में यव का चिह्न हो वे धनी होते हैं। जिनके अँगूठे की जड़ में यव का निशान हो वे पुत्रवान् होते हैं। जिनकी अँगुलियों की पोरें लम्बी हों वे बड़े भाग्यशाली तथा दीर्घजीवी होते हैं (देखिये ज. ब. चित्र नं० १२) ॥ ४७ ॥ †

स्निग्धा निम्ना रेखा धनिनां तद्व्यत्ययेन निःस्वानाम् ।
विरलाङ्गुलयो निःस्वा धनसंचयिनो घनाङ्गुलयः ॥ ४८ ॥

जिनकी हथेली की रेखायें चिकनी व गहरी हों वे धनी होते हैं। इसके विरुद्ध निर्धनी होते हैं। जिनकी अँगुलियाँ बिरली हों वे धनहीन और घनी अँगुलीवाले द्रव्य संग्रह करते हैं ॥ ४८ ॥

---

* अनेकों विदेशी विद्वानों ने नखों पर स्वतंत्ररूप से एक शास्त्र लिख डाला है। यथार्थ में नखों से बहुत कुछ भविष्य जाना जा सकता है।--सं०।

१. ताम्रैर्भूपा धनाढ्याश्च अङ्गुष्ठैस्सयवैस्तथा। अङ्गुष्ठमूलजैः पुत्री स्याद्दीर्घाङ्गुलिपर्वकः ॥

२. हस्ताङ्गुलय एव स्युर्वायुद्वारनिभाः शुभाः। मेधाविनां च सूक्ष्माः स्युर्भृत्यानां चिपिटाः स्मृताः ॥ स्थूलांगुलीभिर्निःस्वाः स्युर्नराः स्युः सुकृशैस्तथेति ॥

† जिस तरह चेहरा, आँख, मस्तक आदि देखकर लोग बहुत कुछ बातों का ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं इसी प्रकार अँगूठे से मनुष्य के आचरण का भली भाँति पता लग जाता है। हाँ, इसे बड़े गौर से देखना चाहिये। अँगूठे की सच्ची जाँच होजाने पर बहुत कुछ बातें आगे चलकर सरल हो जाती हैं।—सं०।

तिस्रो रेखा मणिबन्धनोत्थिताः करतलोपगा नृपतेः।
मीनयुगाङ्कितपाणिर्नित्यमन्नप्रदो भवति ॥ ४९ ॥

जिसके मणिबन्ध (कब्ज़े) से उठी हुई तीन रेखायें करतल के समीप पहुँच गई हों वह राजा होता है। जिसका हाथ दो मीनरेखाओं से अंकित हो तो वह सदैव अन्नदान करता है ॥ ४९ ॥

वज्राकारा धनिनां विद्याभाजां तु मीनपुच्छनिभाः।
शंखातपत्रशिबिकागजाश्वपद्मोपमा नृपतेः ॥ ५० ॥

जिनके करतल में वज्र का निशान हो वे धनी होते हैं। जिनके करतल में मछली की पूँछ का निशान हो वे विद्यावान् होते हैं। जिसके करतल में शंख, छाता, पालकी, हाथी, घोड़ा और पद्म का निशान हो वह राजा होता है ॥ ५० ॥ *

कलशमृणालपताकांकुशोपमाभिर्भवन्ति निधिपालाः।
दामनिभाभिश्चाढ्याः स्वस्तिकरूपाभिरैश्वर्य्यम् ॥ ५१ ॥

जिनके हाथ में कलश, मृणाल (कमल की नाल), पताका और अंकुश का निशान हो वे धनाधिपति होते हैं। जिनके करतल में रस्सी या माला का निशान हो वे धनी होते हैं। जिसके हाथ में स्वस्तिक का निशान हो वे ऐश्वर्य पाते हैं ॥ ५१ ॥

चक्रासिपरशुतोमरशक्तिधनुः कुन्तनिभा रेखाः।
कुर्वन्ति चमूनाथं यज्वानमुलूखलाकाराः ॥ ५२ ॥

जिनके करतल में चक्र, तलवार, कुठार, शक्ति, धनुष और भाला के समान रेखायें हों वे सेनापति होते हैं। जिनके करतल में उखली के निशान हों वे विधि से यज्ञ के करनेवाले होते हैं ॥ ५२ ॥

---

* हमें आजतक हाथी, घोड़ा, छाता, पालकी, मकर, तलवार आदि के निशान हाथों में नहीं मिले। हमने जहाँ तक खोज की है उससे यही पता चल सका है कि उक्त सभी बातें प्रायः रूपक हैं। हमारा प्राचीन सामुद्रिक यथार्थ में लुप्तप्राय है। इस विषय में खोज की बहुत आवश्यकता प्रतीत होती है। —संपादक।

मकरध्वजगोष्ठागारसन्निभाभिर्महाधनोपेताः ।
वेदीनिभेन चैवाग्निहोत्रिणो ब्रह्मतीर्थेन ॥ ५३ ॥

जिनके करतल में मकर, ध्वजा, गोष्ठ और मन्दिर के आकार की रेखाएँ हों वे धनसंपन्न होते हैं । जिनके ब्रह्मतीर्थ (अँगूठे के मूल) में वेदी का निशान हो वे अग्निहोत्री होते हैं ॥ ५३ ॥ *

वापीदेवगृहाद्यैर्धर्मं कुर्वन्ति च त्रिकोणाभिः ।
अङ्गुष्ठमूलरेखाः पुत्राः स्युर्दारिकाः सूक्ष्माः ॥ ५४ ॥

जिनके करतल में बावली, देवमन्दिर तथा त्रिकोण का चिह्न देख पड़े वे धर्मशील होते हैं । जिनके अँगूठे के मूल में बड़ी-बड़ी जितनी रेखायें लक्षित हों उतने ही पुत्र पैदा होते हैं । जिनके अँगूठे के मूल में छोटी-छोटी जितनी रेखायें हों उतनी ही कन्याएँ पैदा होती हैं ॥ ५४ ॥

ऊर्ध्वरेखालक्षण ।

रेखाः प्रदेशिनीगाः शतायुषां कल्पनीयमूनाभिः ।
छिन्नाभिर्द्रुमपतनं बहुरेखारेखिणो निःस्वाः ॥ ५५ ॥

जिनके करतल में ऊर्ध्वरेखा तर्जनीपर्यंत पहुँच गई हों (देखो चित्र नं० १२ क. ख.) वे सौ बरस की आयु पाते हैं । यदि तर्जनी तक ऊर्ध्व-रेखा नहीं गई हो तो वे प्राणी कम उमर पाते हैं । यदि ऊर्ध्वरेखा छिन्न हो गई हो तो वे वृक्ष से गिरते हैं । जिनके कर तल में बहुतसी रेखाएँ हों अथवा रेखामात्र लक्षित हों तो वे प्राणी धन-रहित होते हैं ॥ ५५ ॥

---

* मनुस्मृति में करतल में तीनों तीर्थ कहे हैं। साथ ही अँगूठे के भी तीन तीर्थ कहे गये हैं । अनेक विदेशी विद्वानों ने अँगूठे को दो भागों में विभाजित किया है और अनेकों ने तीन भागों में । पहला है नाखूनवाला भाग (पोर) और दूसरा बीच की गाँठ से लेकर मूल तक और तीसरा मूल से लेकर कलाई तक । पहला आत्मबल, दूसरा विवेकशक्ति तथा तीसरा प्रेम एवं सहानुभूति का द्योतक बताया गया है । —सं० ।

नोटः—हस्तरेखा तथा इस विषय पर अधिक जानने के लिए इस पुस्तक का "द्वितीय खण्ड" देखिये ।—संपादक

चिबुक, अधरलक्षण

अतिकृशदीर्घैश्चिबुकैर्निर्द्रव्या मांसलैर्धनोपेताः।
बिम्बोपमैरवक्रैरधरैर्भूपास्तनुभिर्निःस्वाः ॥ ५६ ॥

जिनकी चिबुक (दाढ़ी) बहुत पतली या लम्बी हो तो वे प्राणी दरिद्री होते हैं। जिनकी चिबुक मांस से भरी हो वे धनवान् होते हैं। जिनके अधर कुँदरू के सदृश हों तथा टेढ़े न हों वे पृथ्वीपाल होते हैं। जिनके अधर पतले हों वे निर्धनी होते हैं ॥ ५६ ॥

ओष्ठ, दशन, दंष्ट्रालक्षण

ओष्ठैः स्फुटितविखण्डितविवर्णरूक्षैश्च धनपरित्यक्ताः।
स्निग्धा घनाश्च दशनाः सुतीक्ष्णदंष्ट्राःसमाश्च शुभाः ॥५७॥

जिनके ओठ स्फुटित, विखण्डित, विवर्ण और रूखे हों वे धनहीन होते हैं। बड़ी तीखी दाढ़ोंवाले, चिकने, सघन व सम दाँत शुभसूचक होते हैं ॥ ५७ ॥

जिह्वा, तालुलक्षण

जिह्वा रक्ता दीर्घा श्लक्ष्णा सुसमा च भोगिनां ज्ञेया।
श्वेता कृष्णा परुषा निर्द्रव्याणां तथा तालु ॥ ५८ ॥

---

१. द्वात्रिंशद्दशनो राजा भोगी स्यादेकहीनकः। त्रिंशद्दन्ताः स्युः सुखिनो विनैकेन सुदुःखिनः ॥ दन्तास्तु विकटा यस्य नीचवन्नीचकर्मकृत्। प्रगल्भो दन्तुरः सत्यं देशान्तररतो भवेत् ॥ दुःखितैर्विकृतैरूक्षैर्दन्तमूषिकसन्निभैः। सौभाग्यं मिलितैर्दन्तैर्विद्यावान्दन्तुरः पुनः ॥ कदाचिद्दन्तुरो मूर्खः कदाचिन्नो-मयोऽसुखी ॥

२. यस्य जिह्वा भवेद्दीर्घा नासाग्रं लेढि सर्वदा। योगी भवति निर्वाणः पृथ्वीं भ्रमति सर्वदा ॥ जिह्वेष्टमिष्टभोक्त्री स्याच्छोणा मृद्वी तथा सिता। दुःखाय मध्यसंकीर्णा पुरोभागसुविस्तरा ॥ कृष्णजिह्वा भवेद्यस्य स नरो दुःखभाजनः। यः स्पृशेज्जिह्वया नासां सभवेत्पापकारकः ॥ स्थूलजिह्वा क्रूरजिह्वा स नरोऽनृत-भाषितः। श्वेतजिह्वा नरा ये च तेप्याचारविवर्जिताः ॥ रक्तजिह्वा भवेद्यस्य विद्यां लक्ष्मीं स चाप्नुयात् ॥

३. कृष्णतालुनरा ये तु भवन्ति कुलनाशकाः। पद्मपत्रसमस्तालुः स नरो भूपतिर्भवेत् ॥ श्वेततालुनरा ये तु धनवन्तो भवन्ति हि। रक्ततालुनरा ये तु धनाढ्या मानवाधिपाः ॥

जिनकी जीभ लाल, लम्बी व पतली और सम हो उन्हें भोगी जानना चाहिये। जिनकी जीभ सफ़ेद या काली तथा कड़ी हो वे प्राणी निर्धन होते हैं। वैसे ही जिनका तालु लाल, लम्बा व कोमल होकर समान हो वे प्राणी भोगी होते हैं। सफ़ेद या काला तथा खरखरा तालू दरिद्रता का सूचक है ॥ ५८ ॥

मुखलक्षण

वक्त्रं सौम्यं संवृतममलं श्लक्ष्णं समं च भूपानाम्।
विपरीतं क्लेशभुजां महामुखं दुर्भगाणां च ॥ ५९ ॥

जिनका मुख सुशोभन, गोल, अमल व कोमल तथा समानाकार हो वे राजा होते हैं। जिनका मुख पूर्वोक्त लक्षणों से विपरीत हो वे क्लेशभागी होते हैं। जिनका मुख बड़ाभारी हो वे बुरे भाग्यवाले होते हैं ॥ ५९ ॥

स्त्रीमुखमनपत्यानां शाठ्यवतां मण्डलं परिज्ञेयम्।
दीर्घं निर्द्रव्याणां भीरुमुखाः पापकर्माणः ॥ ६० ॥

जिनका मुख स्त्रीमुख के समान हो वे सन्तानरहित होते हैं। मण्डलाकृति मुख शठता का द्योतक है। लम्बा मुख निर्धनी का और भयावनासा मुख पापकर्मकारी का होता है ॥ ६० ॥

चतुरस्रं धूर्तानां निम्नं वक्त्रं च तनयरहितानाम्।
कृपणानामतिह्रस्वं सम्पूर्णं भोगिनां कान्तम् ॥ ६१ ॥

चौकोन मुखवाले धूर्त होते हैं। जिनका मुख नीचे की ओर झुका हो वे प्राणी सन्तानरहित होते हैं। छोटे मुखवाले कृपण होते हैं। जिनका मुख सम्पूर्ण मनोरम हो वे भोगी होते हैं ॥ ६१ ॥

श्मश्रुलक्षण

अस्फुटिताग्रं स्निग्धं श्मश्रु शुभं मृदु च सन्नतं चैव।
रक्तैः परुषैश्चौराः श्मश्रुभिरल्पैश्च विज्ञेयाः ॥ ६२ ॥

---

१. चन्द्रबिम्बोपमो वक्त्रो धर्मशीलः सदा भवेत्। मृगमूषिकवक्त्राश्च ते नरा भाग्यवर्जिता इति ॥

जिनकी दाढ़ी मूछ अग्रभाग में विकसित न हो अथवा चिकनी व कोमल होकर सन्नत हो वे शुभसम्पन्न होते हैं। जिनकी दाढ़ी मूछ लाल व कड़ी तथा थोड़ी हो उनको चोर जानना चाहिये ॥ ६२ ॥

कर्णलक्षण

निर्मांसैः कर्णैः पापमृत्यवश्चिपिटैः सुबहुभोगाः।
कृपणाश्च ह्रस्वकर्णाः शङ्कुश्रवणाश्च भूपतयः ॥ ६३ ॥

मांसरहित कानवाले पापकर्म से मौत पाते हैं। जिनके कान चपटे हों वे बड़े ही भोगशाली होते हैं। जिनके कान छोटे हों वे कृपण होते हैं। जिनके कान शङ्कु के समान हों वे पृथ्वीपाल होते हैं ॥ ६३ ॥

रोमशकर्णा दीर्घायुषस्तु धनभागिनो विपुलकर्णाः।
क्रूराः शिरापनद्धैर्व्यालम्बैर्मांसलैः सुखिनः ॥ ६४ ॥

जिनके कान रोमों से व्याप्त हों वे बड़ी उमरवाले होते हैं। जिनके कान बड़े हों वे धनभागी होते हैं। जिनके कान नसों से युक्त तथा विशेषतः लम्बे हों वे क्रूर होते हैं। मांस से भरे हुए लम्बे कानवाले सुखी होते हैं ॥ ६४ ॥

गण्डनासिकालक्षण

भोगीत्वनिम्नगण्डो मन्त्री संपूर्णमासगण्डो यः।
सुखभाक् शुकसमनासश्चिरजीवी शुष्कनासश्च ॥ ६५ ॥

नीचा गण्डस्थल भोगी का होता है। जिसका गण्डस्थल मांसविशिष्ट हो वह मन्त्री होता है। जिसकी नासिका शुक (तोता) की चोंच के समान हो वह सुखभागी होता है। सूखी नासिकावाला चिरजीवी होता है ॥ ६५ ॥ *

---

१. दन्ताश्च विरला यस्य गण्डे कूपोऽपि जायते। परस्त्रीरमणो नित्यं परवित्तेन वित्तवान्।

* जिस प्रकार शरीर में प्राण प्रधान हैं इसी प्रकार कन्धों से ऊपर का भाग भी अत्यन्त मुख्य है। इसकी बनावट आकार-प्रकार आँख, कान, नाक, मुख, भौंह, मस्तक आदि मुख्य हैं। समस्त ब्रह्माण्ड के ये द्वार हैं। यदि इनकी आकृति पर विशेष ध्यान दिया जाय तो निश्चय ही, सामुद्रिक-शास्त्री उस मनुष्य के संबंध में भलीभाँति भूत-भविष्यत् एवं उसका आचरण कह सकता है। पाठकों को उपर्युक्त बातें ध्यानपूर्वक पढ़कर मनन कर लेना चाहिये। —संपादक।

छिन्नानुरूपयागम्यगामिनो दीर्घया तु सौभाग्यम्।
आकुञ्चितया चौरः स्त्रीमृत्युः स्याच्चिपिटनासः ॥ ६६ ॥

जिनकी नासिका (छिन्न) कटी-सी हो वे अगम्या रमणी में गमन करते हैं। जिनकी नासिका दीर्घ हो वे सौभाग्य को पाते हैं। जिनकी नासिका टेढ़ी हो वे चोर होते हैं। जिनकी नासिका चपटी हो वे स्त्री से मृत्यु पाते हैं॥ ६६ ॥ *

धनिनोऽग्रवक्रनासा दक्षिणवक्राः प्रभक्षणाः क्रूराः।
ऋज्वी स्वल्पच्छिद्रा सुपुटा नासा सुभाग्यानाम् ॥ ६७ ॥

नासिका का अग्रभाग टेढ़ा होना धनी का लक्षण है। जिनकी नासिका दाहनी तरफ़ टेढ़ी हो वे मनुष्य बड़े खानेवाले तथा क्रूर होते हैं। जिनकी नासिका सीधी, छोटे छेदोंवाली तथा गोल पुटोंवाली हो वे प्राणी बड़े भाग्यशाली होते हैं॥ ६७ ॥

क्षुतलक्षण

धनिनां क्षुतं सकृद्द्वित्रिपिण्डितं ह्रादि सानुनादं च।
दीर्घायुषां प्रमुक्तं विज्ञेयं संहतं चैव ॥ ६८ ॥

जिनकी छींक एक ही समय दो-तीन हों व पीछे से उनका शब्द सुनने योग्य हो वे धनी होते हैं। जिनकी निकली हुई छींक गम्भीर हो वे बड़ी उमरवाले होते हैं॥ ६८ ॥

लोचनलक्षण

पद्मदलाभैर्धनिनो रक्तान्तविलोचनाः श्रियो भाजः।
मधुपिङ्गलैर्महार्था मार्जारविलोचनाः पापाः ॥ ६९ ॥

---

* चेहरे पर चित्रकला की दृष्टि से दोनों आँखों की लम्बाई के बराबर नाक तथा कान और मुख होते हैं। यदि इसके विपरीत हों तब उस मनुष्य में कुछ न कुछ विशेषता होगी। जो भाग जिस प्रकार विशेषता रखता हो, उसका उसी प्रकार स्वभाव आदि जानना चाहिये। —संपादक।

१. अनिम्नाक्षाश्च ये काणा वधिराः स्थूलदेहिनः। स्थूलाश्च खञ्जगतयो नरा दुष्टा न संशयः॥ शतं काणे च खञ्जे च अशीतिर्भण्डचारयोः। खर्वे च षष्टि-दोषाः स्युः कुब्जस्यान्तं न विद्यते ॥ १ ॥

जिनके दोनों नयन पद्मदल के समान हों वे धनी होते हैं। लाल नेत्रों-वाले लक्ष्मीसम्पन्न होते हैं। बादामी अथवा पीले लोचनवाले बड़े अर्थशाली होते हैं। जिनके लोचन बिलार के समान हों वे पापी होते हैं ॥ ६९ ॥

हरिणाक्षा मण्डललोचनाश्च जिह्मैश्च लोचनैश्चौराः।
क्रूराः केकरनेत्रा गजसदृशदृशश्च भूपतयः ॥ ७० ॥

हरिण के समान या मण्डलाकार अथवा टेढ़े नेत्रोंवाले चोर होते हैं। जिनके लोचन कञ्जे हों वे क्रूर होते हैं। जिनके लोचन हाथी के समान हों वे पृथ्वीपाल होते हैं ॥ ७० ॥

ऐश्वर्य्यं गम्भीरैर्नीलोत्पलकान्तिभिश्च विद्वांसः।
अतिकृष्णतारकाणामक्ष्णामुत्पाटनं भवति ॥ ७१ ॥
मन्त्रित्वं स्थूलदृशां श्यावाक्षाणां च भवति सौभाग्यम्।
दीना दृङ् निःस्वानां स्निग्धा विपुलार्थभोगवताम् ॥ ७२ ॥

जिनके लोचन गम्भीर हों वे ऐश्वर्य पाते हैं। श्याम कमल के समान नेत्र विद्वान् के होते हैं। जिनके लोचनों की तारकाएँ बहुत काली हों, उनकी आंखें उखाड़ी जाती हैं ॥ ७१ ॥ जिनके लोचन स्थूल हों वे मन्त्री होते हैं। पीले नेत्र सौभाग्यदाता हैं। जिनके लोचन दीन हों वे दरिद्र होते हैं। जिनके लोचन स्निग्ध (चिकने या प्यारे) हों वे बड़े अर्थशाली व भोगी होते हैं ॥ ७२ ॥

भ्रुकुटिलक्षण

अभ्युन्नताभिरल्पायुषो विशालोन्नताभिरतिसुखिनः।
विषमभ्रुवो दरिद्रा बालेन्दुनतभ्रुवः सधनाः ॥ ७३ ॥

जिनकी भौंहें ऊँची उठी हों वे अल्पायु होते हैं। जिनकी भौंहें विशाल तथा ऊँची हों वे बड़े सुखी रहते हैं। जिनकी भौंहें विषम हों वे दरिद्र होते हैं। जिनकी भौंहें बालचन्द्रमा के समान लचीं हों वे धनी होते हैं ॥ ७३ ॥

दीर्घासंसक्ताभिर्धनिनः खण्डाभिरर्थपरिहीनाः।
मध्यविनतभ्रुवो ये तु सक्ताः स्त्रीष्वगम्यासु ॥ ७४ ॥

जिनकी भौंहें बड़ी तथा परस्पर मिली अथवा अलग हों वे धनवान् होते हैं। जिनकी भौंहें खण्डित हों वे धनहीन होते हैं। जिनकी भौंहें बीच में लची हों वे अगम्या रमणी में आसक्त होते हैं॥ ७४॥

ललाटलक्षण

उन्नतिविपुलैः शंखैर्धन्या निम्नैः सुतार्थसंत्यक्ताः।
विषमललाटा विधना धनवन्तोऽर्धेन्दुसदृशेन॥ ७५॥

जिनके शंख (ललाट के पार्श्वों की हड्डियाँ) उन्नत होकर विशाल हों वे धन्य गिने जाते हैं। जिनके शंख निचले हों वे धन व पुत्रों से रहित होते हैं। जिनका ललाट विषम हो वे दरिद्र होते हैं। जिनका ललाट अर्धचन्द्राकार हो वे धनवान् होते हैं॥ ७५॥

शुक्तिविशालैराचार्यता शिरासन्ततैरधर्मरताः।
उन्नताशिराभिराढ्याः स्वस्तिकवत्संस्थिताभिश्च॥७६॥

जिनके कपाल विशाल होकर सीप के समान हों वे आचार्य पदवी पाते हैं। जिनके भाल नसों से व्याप्त हों वे अधर्म में परायण होते हैं। जिनके कपाल की नसें ऊँची तथा त्रिकोणाकार प्रतीत हों वे धनाढ्य होते हैं॥ ७६॥

निम्नललाटा वधबन्धभागिनः क्रूरकर्मनिरताश्च।
अभ्युन्नतैश्च भूपाः कृपणाः स्युः संकटललाटाः॥ ७७॥

जिनके ललाट नीचे हों वे वधबन्धभागी होते हैं, यानी वे मारे जाते हैं अथवा बँधुआ होकर दुःख भोगते हैं, बुरे कामों में लगे रहते हैं। जिनके भाल ऊँचे हों वे पृथ्वीपाल होते हैं। जिनके कपाल संकीर्ण हों वे कृपण होते हैं॥ ७७॥

रुदितलक्षण

रुदितमदीनमनश्रु स्निग्धं च शुभावहं मनुष्याणाम्।
रूक्षं दीनं प्रचुराश्रु चैव न शुभप्रदं पुंसाम्॥ ७८॥

दीनतारहित व अश्रुपातविहीन रोना शुभ लक्षण है। रूखा व दीनता-सूचक तथा बड़े आँसुओंवाला रोना शुभदायक नहीं होता॥ ७८॥

हसितलक्षण

हसितं शुभदमकम्पं सनिमीलितलोचनं च पापस्य ।
हृष्टस्य हसितमसकृत्सोन्मादस्यासकृत्प्रान्ते ॥ ७९ ॥

जिनके हँसने में शरीर न काँपे तो उन्हें वह शुभदायक होता है । जिसके हँसने में आँखें मूँद जावें वह पापी होता है । जिसका हँसना वारंवार हो वह सुखी होता है । जो सारी कथा को सुनकर अन्त में वारंवार हँसता है वह पागल होता है ॥ ७९ ॥

ललाटरेखालक्षण

तिस्रो रेखाः शतजीविनां ललाटायताः स्थिता यदि ताः ।
चतसृभिरवनीशत्वं नवतिश्चायुः सपञ्चाब्दा ॥८०॥

जिनके ललाट में तीन रेखाएँ हों वे सौ वर्ष पर्यन्त जीते हैं । जिनके ललाट में चार रेखाएँ हों वे राजपदवी पाकर पचानवे वर्ष जीते हैं ॥ ८० ॥

विच्छिन्नाभिश्चागम्यागामिनो नवतिरप्यरेखेण ।
केशान्तोपगताभी रेखाभिरशीतिवर्षायुः ॥ ८१ ॥

जिनके ललाट में छिन्न-भिन्न रेखाएँ हों वे अगम्या रमणी में गमन करते हैं । जिनके कपाल में रेखाएँ ही न हों वे नब्बे वर्ष जीते हैं । जिनके कपाल में रेखाएँ बालों के समीप तक पहुँच गई हों वे अस्सी वर्ष पर्यन्त जीते हैं ॥ ८१ ॥

पञ्चभिरायुः सप्ततिरेकाग्रावस्थिताभिरपि षष्टिः ।
बहुरेखेण शतार्द्धं चत्वारिंशच्च वक्राभिः ॥ ८२ ॥

जिनके कपाल में पाँच रेखाएँ हों वे सत्तर वर्ष जीते हैं । जिनके कपाल में रेखाएँ एकाग्रावस्थित हों वे साठ वर्ष जीते हैं । जिनके कपाल में बहुनसी रेखाएँ हों वे पचास वर्ष जीते हैं । जिनके कपाल में रेखाएँ टेढ़ी हों वे चालीस वर्ष की आयु पाते हैं ॥ ८२ ॥

त्रिंशद्भ्रूलग्नाभिर्विंशतिकश्चैव वामवक्राभिः ।
क्षुद्राभिः स्वल्पायुर्न्यूनाभिश्चान्तरे कल्प्यम् ॥ ८३ ॥

जिनके ललाट में रेखाएँ भौंहों से मिली हों वे प्राणी तीस वर्ष जीते हैं ।

जिनके ललाट में रेखाएँ बाएँ तरफ़ टेढ़ी हों वे प्राणी बीस वर्ष जीते हैं। जिनके कपाल में रेखाएँ छोटी छोटी हों वे स्वल्पायु होते हैं। जिनके कपाल में रेखाएँ कम हों उनकी अल्पायु की ही कल्पना करनी चाहिये ॥ ८३ ॥

शिरोलक्षण

परिमण्डलैर्गवाढ्याश्छत्राकारैः शिरोभिरवनीशाः।
चिपिटैः पितृमातृघ्नाः करोटिशिरसां चिरान्मृत्युः ॥८४॥

जिनके मस्तक गोल हों वे गोधन-संपन्न होते हैं। जिनके शीश छत्राकार (छाते के समान) हों वे पृथ्वीपाल होते हैं। जिनके शीश चपटे हों वे यौवनकाल में माता-पिता के मारनेवाले होते हैं और जिनके शीश बड़े हों वे दीर्घजीवी होते हैं ॥ ८४ ॥

घटमूर्द्धाध्यानरुचिर्द्विमस्तकः पापकृद्धनैस्त्यक्तः।
निम्नन्तु शिरो महतां बहुनिम्नमनर्थदं भवति ॥८५॥

जिसका शीश घड़े के समान हो वह ध्यानपरायण होता है। जिसके दो शीश हों वह पापी व निर्धन होता है। जिनका शीश लचा हो वे महापुरुष होते हैं। बहुत ही गहरा शीश अनर्थदायक होता है ॥ ८५ ॥

एकैकभवैः स्निग्धैः कृष्णैराकुञ्चितैरभिन्नाग्रैः।
मृदुभिर्न चातिबहुभिः केशैः सुखभाक् नरेन्द्रो वा ॥८६॥

जिनके मस्तक के एक एक रोमकूप में एक एक बाल हो और यदि वे बाल चिकने काले व टेढ़े हों और उनका अग्रभाग भिन्न न हो तथा वे कोमल होकर बहुत से न हों तो वह प्राणी सुखभागी या राजा होता है ॥ ८६ ॥

बहुमूलविषमकपिलाः स्थूलस्फुटिताग्रपरुषह्रस्वाश्च।
अतिकुटिलाश्चातिघनाश्च मूर्धजा वित्तहीनानाम् ॥८७॥

जिनके मस्तक के एक एक रोमकूप में बहुतसे बाल हों और वे यदि असमान हों तथा पीले हों, अग्रभाग में मोटे होकर टूटे हों, बड़े छोटे व बहुत-से टेढ़े होकर बहुत घने हों तो वे प्राणी निर्धन होते हैं ॥ ८७ ॥

गात्ररूक्षतालक्षण

यद्यद्गात्रं रूक्षं मांसविहीनं शिरापनद्धं च।
तत्तदनिष्टं प्रोक्तं विपरीतमतः शुभं सर्वम् ॥ ८८ ॥

शरीर में जो अंग रूखा, मांसहीन व नसों से व्याप्त हो वह अनिष्ट कहा गया है। इससे विपरीत शुभदायक होता है ॥ ८८ ॥

नाभि आदि के लक्षण

नाभिःस्वरं सत्त्वमिति प्रदिष्टं गम्भीरमेतत्त्रितयं नराणाम् ।
उरो ललाटं वदनं च पुंसां विस्तीर्णमेतत्त्रितयं प्रशस्तम् ॥ ८९ ॥

जिनकी नाभि, स्वर व शक्ति ये तीनों गंभीर हों तो वे पुरुष भाग्यवाले होते हैं। विस्तृत वक्षःस्थल, ललाट व मुख ये तीनों शुभदायक होते हैं ॥८९॥

वक्षआदि के लक्षण

वक्षोऽथ कक्षानखनासिकास्यं कृकाटिका चेति षडुन्नतानि ।
ह्रस्वानि चत्वारि च लिङ्गपृष्ठं ग्रीवा च जङ्घे च हितप्रदानि ॥ ९० ॥

वक्षःस्थल, कक्षा (बगल), नख, नासिका, मुख और घाँटी ये छः ऊँचे (उठे) हों और लिङ्ग, पीठ, घींच, जंघा ये चार छोटे हों तो हितकर होते हैं ॥ ९० ॥

नेत्रान्त और पाद के रक्तादिलक्षण

नेत्रान्तपादकरताल्वधरौष्ठजिह्वा
रक्तानखाश्च खलु सप्त सुखावहानि ।
सूक्ष्माणि पञ्चदशनांगुलिपर्वकेशाः
साकं त्वचा कररुहाश्च न दुःखितानाम् ॥ ९१ ॥

नेत्रकोण, पादतल, करतल, तालु, निचला ओष्ठ, जिह्वा और नख ये सातों लालवर्ण सुखदायक होते हैं। दाँत, अँगुलियों के पर्व, केश, खाल और नख ये पाँच छोटे दुखदायी होते हैं ॥ ९१ ॥

हनु आदि के दीर्घलक्षण

हनुलोचनबाहुनासिकाः स्तनयोरन्तरमत्र पञ्चमम् ।
इति दीर्घमिदन्तु पञ्चकं न भवत्येव नृणामभूभृताम् ॥ ९२ ॥

जिनकी ठुड्डी, लोचन, बाहु, नासिका और स्तनों का अन्तर ये पाँच स्थान दीर्घ हों वे राजा होते हैं। राजाओं के सिवा किसी के उक्त पञ्च स्थान दीर्घ नहीं होते ॥ ९२ ॥

छायालक्षण

छाया शुभाशुभफलानि निवेदयन्ती
लक्ष्या मनुष्यपशुपक्षिषु लक्षणज्ञैः ।
तेजोगुणान्बहिरपि प्रविकाशयन्ती
दीपप्रभा स्फटिकरत्नघटस्थितैव ॥ ६३ ॥

छाया (कान्ति) या शरीर की शोभा शुभाशुभ फलों को बताती है । इसलिए लक्षणज्ञाता विद्वानों को मनुष्य, पशु व पक्षियों में उसको देखना चाहिये । स्फटिक रत्न के बने घड़े में टिकी हुई दीपक की प्रभा की नाईं कांति भी तेज तथा गुणों की द्योतक है ॥ ६३ ॥ *

पृथ्वीछायालक्षण

स्निग्धद्विजत्वङ्नखरोमकेशच्छाया सुगन्धा च महीसमुत्था ।
तुष्ट्यर्थलाभाभ्युदयान्करोति धर्मस्य चाहन्यहनि प्रवृत्तिम् ॥६४

यदि दाँत, खाल, नख, रोम और केश ये चिकने तथा सुगन्धित हों तो पृथ्वीतत्त्व से उपजी छाया (शरीर की शोभा) जानना चाहिये । यह प्राणियों के लिए सन्तोष, धनलाभ और ऐश्वर्य दायिनी है और धर्म में प्रवृत्ति कराती है; क्योंकि अस्थि, मांस, नख, खाल और लोम ये पृथ्वी के गुण हैं । यदि सुगन्धित पुरुष हो तो बुधकृत पृथ्वी की छाया मानना चाहिये ॥६४॥

जलच्छायालक्षण

स्निग्धासिताच्छहरितानयनाभिरामा
सौभाग्यमार्दवसुखाभ्युदयान्करोति ।
सर्वार्थसिद्धिजननी जननी च चाप्या
छायाफलं तनुभृतां शुभमादधाति ॥ ६५ ॥

---

* भारतीय सामुद्रिक यथार्थ में उन तत्त्वों पर अवलंबित है जिन पर सृष्टि निर्भर है । यह विषय बड़ा गम्भीर है । इसे हमने भूमिका में कहा है । तत्त्वों का पंचीकरण करके सृष्टिरचना की गई है । यही कारण है कि मृतक शरीर को अग्नि द्वारा पाँचों तत्त्वों में विभाजित कर देते हैं । यह महान् सिद्धान्त जिन २ विदेशी पंडितों की समझ में आ गया है वे आज भी भारतीय शास्त्रों का लोहा मानने में किंचित् संकोच नहीं करते । पर खेद है, आज कल हम भारतीय ही अपने गौरव को भुला रहे हैं । संपादक ।

यदि किसी के शरीर की शोभा चिकनी, सफ़ेद, साफ़ व सब्ज़ तथा नयनाभिराम हो तो उसे जल की छाया जानना चाहिये। यह सौभाग्य, कोमलता, सुख व ऐश्वर्य और माता के समान समग्र अर्थों की सिद्धि देती है। कारण, शुक्र, शोणित, मज्जा, मल और मूत्र ये पाँच जल के गुण हैं। यदि प्राणी मिष्टरसभोजी हो तो चन्द्र-शुक्र-कृत जल की छाया माननी चाहिये ॥ ६५ ॥

अग्निच्छायालक्षण

चण्डा धृष्या पद्महेमाग्निवर्णा युक्ता तेजोविक्रमैः संप्रतापैः। आग्नेयीति प्राणिनां स्याज्जयाय क्षिप्रं सिद्धिं वाञ्छितार्थस्य धत्ते ॥ ६६ ॥

यदि शरीर की शोभा प्रचण्ड, भयजनक, कमल, सुवर्ण अथवा अग्नि के समान प्रतापी हो तो उसे अग्नि की छाया जानना चाहिये। वह जयदात्री है। शीघ्र ही वाञ्छित अर्थ की सिद्धि देती है। निद्रा, क्षुधा, प्यास, क्लान्ति और आलस्य ये अग्नि के गुण हैं। यदि पुरुष बहुत रूपवान् तथा सुकान्त हो तो सूर्य-भौमकृत आग्नेयी छाया जाननी चाहिये ॥ ६६ ॥

वायव्याकाशच्छायालक्षण

मलिनपरुषकृष्णा पापगन्धानिलोत्था
जनयति वधबन्धव्याध्यनर्थार्थनाशान्।
स्फटिकसदृशरूपा भाग्ययुक्तात्युदारा
निधिरिव गगनोत्था श्रेयसां स्वच्छवर्णा ॥ ६७ ॥

यदि शरीर की शोभा मैली, कठोर, काली तथा दुर्गन्धित हो तो उसे वायु की छाया जानना चाहिये। यह वध, बन्ध, व्याधि, अनर्थ व अर्थनाश करती है। धावन, चालन, क्षेपण, संकोचन व प्रसारण ये ५ वायु के गुण हैं। यदि पाँवों का स्पर्शन कोमल हो तो शनैश्चरकृत वायवी छाया जाननी चाहिये। यदि शरीर की शोभा स्फटिकसदृश निर्मल हो तो आकाश की छाया जाननी चाहिये। यह भाग्यसूचक, औदार्यशाली तथा शुभदायक होती है। काम, क्रोध, लोभ, मोह व लज्जा ये पाँच

आकाश के गुण[1] हैं। यदि पुरुष के वचन कानों को सुखकारी हों तो गुरुकृत नाभसी छाया माननी चाहिये ॥ ९७ ॥

छायादेवतालक्षण

छाया[2]: क्रमेण कुजलाग्न्यनिलाम्बरोत्थाः
केचिद्वदन्ति दश ताश्च यथानुपूर्व्वाः।
सूर्याब्जनाभपुरुहूतयमोडुपानां
तुल्यास्तु लक्षणफलैरिति तत्समानाः ॥ ९८ ॥

पृथ्वी[3], जल, अग्नि, वायु, आकाश इन तत्त्वों से उपजी हुई क्रम से पाँच छाया हैं। उनको अनेक आचार्यों ने यथानुपूर्वी दश कहा है। सूर्य, विष्णु, इन्द्र, यमराज और चन्द्रमा ये ५ पूर्वोक्त छायाओं के ५ देवता हैं। उन्हीं के तुल्य छाया हैं। लक्षण व फलों से प्राणी उन्हींके समान होते हैं। यानी जिस प्राणी में जिस तत्त्व की छाया के लक्षण व फल घटित हों उन्हीं के समान प्राणियों को लक्षण व फल बतलाना चाहिये ॥ ९८ ॥

स्वरलक्षण

करिवृषरथौघभेरीमृदङ्गसिंहाम्बुदनिःस्वनाः।
गर्दभजर्जररूक्षस्वराश्च धनसौख्यसंत्यक्ताः ॥ ९९ ॥

---

१ ईश्वर उवाच। अस्थि मांसं नखं चैव त्वग्लोमानि च पञ्चमम्। पृथ्व्याः पञ्चगुणाः प्रोक्ता ब्रह्मज्ञानेन भाषते १ शुक्रं शोणितमज्जे च मलमूत्रं च पञ्चमम्। अपां पञ्चगुणाः प्रोक्ता ब्रह्मज्ञानेन भाषते २ निद्रा क्षुधा तृषा क्लान्तिरालस्यं चैव पञ्चमम्। तेजः पञ्चगुणाः प्रोक्ता ब्रह्मज्ञानेन भाषते ३ धावनं चालनं क्षेपः संकोचं प्रसरन्तथा। वायोः पञ्चगुणाः प्रोक्ता ब्रह्मज्ञानेन भाषते ४ कामः क्रोधस्तथा मोहो लज्जा लोभश्च पञ्चमम्। नभः पंचगुणाः प्रोक्ता ब्रह्मज्ञानेन भाषते ५। (इति ज्ञानसंकलिनीतन्त्रे)।

सामुद्रिक शास्त्र ज्योतिष का एक अंग है और ज्योतिष वेद का अंग है। वेदों में जिन विषयों का उल्लेख हुआ है वे प्राणिमात्र की भलाई के लिए हैं, किसी एक देश अथवा जाति ही के लिए नहीं। हमारा सामुद्रिक शास्त्र भी इसी प्रकार है। इसका वैद्यक, ज्योतिष, सांख्य, वेदान्त आदि से घनिष्ठ संबंध है। संपादक।

२ छायां महाभूतकृतां च सर्वेऽभिव्यञ्जयन्ति स्वदशामवाप्य। क्ष्म्यम्बग्निवाय्वम्बरजान् गुणांश्च नासास्यदृक्त्वक्श्रवणानुमेयानिति (बृहज्जातके)॥

३ गन्धो रसस्तथा रूपं स्पर्शः शब्दश्च पञ्चम इति वेदान्तिनां मते पृथिव्या गन्धः, जलस्य रसः, अग्नेः रूपम्, वायोः स्पर्शः, आकाशस्य शब्दस्तन्मात्रा इति।

जिसका शब्द * हाथी, बैल, रथसमूह, भेरी, मृदंग, सिंह और मेघ के समान हो वह राजा होता है। जिसका शब्द (कण्ठध्वनि) गधे के समान व जर्जर तथा रूखा हो वह धन व सुखों से रहित होता है ॥ ९९ ॥

सप्तसारलक्षण

सप्त भवन्ति च सारा मेदोमज्जात्वगस्थिशुक्राणि ।
रुधिरं मांसं चेति प्राणभृतां तत्समानफलम् ॥ १०० ॥

मेदा, मज्जा, त्वचा, अस्थि, शुक्र, रुधिर और मांस ये सात प्राणियों के शरीर में सार पदार्थ हैं। उन्हींके समान फल को कहै ॥ १०० ॥

रक्तसारलक्षण

ताल्वोष्ठदन्तपाली जिह्वानेत्रान्तपायुकरचरणैः ।
रक्तैस्तु रक्तसारा बहुसुखवनितार्थपुत्रयुक्ताः ॥ १ ॥

जिनके तालु, ओठ, दाँत, कर्णरन्ध्र, जिह्वा, नेत्रप्रान्त, गुदा, हाथ और पैर ये लालवर्ण हों तो उन में रक्ताधिक्य जानना चाहिये। वे प्राणी बहुसुखशाली, स्त्रीसमन्वित तथा धनी और पुत्रवान् होते हैं ॥ १ ॥

मज्जामेदस्सारलक्षण

स्निग्धत्वक्का धनिनो मृदुभिः सुभगा विचक्षणास्तनुभिः ।
मज्जामेदःसाराः सुशरीराः पुत्रवित्तयुक्ताः ॥ २ ॥

जिनकी खाल चिकनी और शरीर कोमल हो तो उनमें त्वचा का सार जानना चाहिये। वे मनुष्य धनी, सौभाग्यशाली तथा बड़े पण्डित होते हैं। जिनका शरीर अतिसुशोभन हो, उनमें मज्जा और मेदा का सार जानना चाहिये। ऐसे लोग पुत्रवान् और धनशाली होते हैं ॥ २ ॥

अस्थिशुक्रसारलक्षण

स्थूलास्थिरस्थिसारो बलवान् विद्यान्तगः सुरूपश्च ।
बहुगुरुशुक्राः सुभगा विद्वांसो रूपवन्तश्च ॥ ३ ॥

---

* स्वरशास्त्र एक स्वतंत्र शास्त्र है। सप्त स्वर तमाम वायुमण्डल में शब्द आदि नामों से भरे हैं। वर्तमान विज्ञानाचार्यों ने शब्द अथवा ध्वनि को सातों स्वरों में विभाजित कर पुनः क्रम से एकत्र करना यंत्रों द्वारा सरल कर दिया है। इसी का फल "रेडियो" है।

जिसके शरीर की हड्डियाँ मोटी हों उसमें अस्थि का सार जानना चाहिये। वह बली, विद्वान् और रूपवाला होता है। जिनके शरीर में शुक्र व गुरु अधिक हो उनमें शुक्रसार जानना चाहिये। वे सौभाग्यशाली, विद्वान् तथा रूपवान् होते हैं *॥ ३ ॥

संघातलक्षण

उपचितदेहो विद्वान् धनी सुरूपश्च मांससारो यः।
संघात इति च सुश्लिष्टसन्धिता सुखभुजो ज्ञेयाः॥ ४ ॥

जिसकी देह भलीभाँति पुष्ट हो उसमें मांस का सार जानना चाहिये। वह विद्वान्, धनवान् और रूपवान् होता है। जिनकी देह में समस्त सन्धियाँ पुष्ट हों उन्हें सुखभोगी जानना चाहिये॥ ४ ॥

स्निग्धलक्षण

स्नेहः पञ्चसु लक्ष्यो वाग्जिह्वादन्तनेत्रनखसंस्थः।
सुतधनसौभाग्ययुताः स्निग्धैस्तैर्निर्धना रूक्षैः॥ ५ ॥

पाँच स्थानों में स्निग्धता देखनी चाहिये। यथा—वाक्य, जिह्वा, दन्त, नेत्र और नख। जिनके पाँचों स्थानों में स्निग्धता प्रतीत हो वे पुत्रवान्, धनवान् और भाग्यशाली होते हैं। जिनके पाँचों स्थान रूखे दिखें वे निर्धन होते हैं॥ ५ ॥

वर्णलक्षण

द्युतिमान् वर्णः स्निग्धः क्षितिपानां मध्यमः सुतार्थवताम्।
रूक्षो धनहीनानां शुद्धश्शुभदो न संकीर्णः॥ ६ ॥

तेजस्वी और चिकने वर्णवाले पृथ्वीपाल होते हैं। जिनका वर्ण मध्यम हो वे पुत्रवान् और धनवान् होते हैं। जिनका वर्ण रूखा हो वे निर्धन होते हैं। शुद्ध वर्ण शुभदायक होता है। मिश्रित वर्णवाले दीन होते हैं॥६॥

मुखस्वभावलक्षण

साध्यमनूकं वक्त्राद्गोवृषशार्दूलसिंहगरुडमुखाः।
अप्रतिहतप्रतापा जितरिपवो मानवेन्द्राश्च॥ ७ ॥

---

* सामुद्रक शास्त्र आयुर्वेद से घनिष्ठ संबंध रखता है। प्रमाण यही श्लोक है। संपादक।

मुख से स्वभाव जानना चाहिये। जिनका मुख गौ, बैल, बाघ, सिंह और गरुड़ के समान हो वे राजा होते हैं। इनका प्रताप स्थायी रहता है। ये युद्ध में वैरियों को पराजित करते हैं *॥ ७॥

वानरादिमुखलक्षण

वानरमहिषवराहाजतुल्यवदनाः सुतार्थसुखभाजः।
गर्दभकरभप्रतिमैर्मुखैः शरीरैश्च निःस्वसुखाः॥ ८॥

जिनके मुख वानर, भैंसा, शूकर और बकरे के समान हों वे पुत्रवान्, धनवान् और सुखभागी होते हैं। जिनके मुख और शरीर गधे व ऊँट के समान हों वे दुखी दरिद्र बने रहते हैं॥ ८॥

शरीरांगुलप्रमाण

अष्टशतं षण्णवतिः परिमाणं चतुरशीतिरिति पुंसाम्।
उत्तमसमहीनानामंगुलसंख्यास्वमानेन॥ ९॥

जिनका शरीर अपने अंगुल परिमाण से एक सौ आठ अंगुल ऊँचा हो वे उत्तम होते हैं। जिनका शरीर छानबे अंगुल ऊँचा हो वे मध्यम होते हैं। जिनका शरीर चौरासी अंगुल ऊँचा हो वे अधम होते हैं॥ ९॥

भारार्धतनुः सुखभाक् तुलितोऽतो दुःखभाग्भवत्यूनः।
भारोतीवाढ्यानामध्यर्द्धः सर्वधरणीशः॥ १०॥

जिसका शरीर तौलने में आधा भार यानी एकमन हो, वह सुखभागी होता है। जिसका शरीर तौलने में आधे भार से भी कम हो, वह दुःखभागी होता है। जिसका शरीर तौलने में एक भार यानी दो मन हो, वह धनाढ्य होता है। जिसका शरीर तौलने में डेढ़ भार यानी तीन मन हो, वह सारी पृथ्वी का स्वामी होता है॥ १०॥

मानवर्षप्रमाण

विंशतिवर्षा नारी पुरुषः खलु पञ्चविंशतिभिरब्दैः।
अर्हति मानोन्मानं जीवितभागे चतुर्थे वा॥ ११॥

---

* यहाँ कहे गये पशु-पक्षियों आदि के स्वरूप का ज्ञान अत्यावश्यक है। देखिये हमारा सामुद्रक किन किन शास्त्रों से सम्बद्ध है। संपादक।

जिस समय नारी बीस वर्ष की हो और पुरुष पचीस वर्ष का हो तो मान व उन्मान के योग्य होता है। अर्थात् उच्चता व वज़न का फल कहना चाहिये; अथवा आयु के चौथे भाग में उच्चता व वज़न को जानकर फलादेश कहे ॥ ११ ॥

भूजलशिख्यनिलाम्बरसुरनररक्षःपिशाचकतिरश्चाम् ।
सत्त्वेन भवति पुरुषो लक्षणमेतद्भवत्येषाम् ॥ १२ ॥

* पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, देवता, मनुष्य, राक्षस, पिशाच और पशु इनके स्वभाव के समान स्वभाववाला पुरुष इन्हीं के लक्षणों के समान होता है ॥ १२ ॥

महीजलस्वभावलक्षण

महीस्वभावः शुभपुष्पगन्धः संभोगवान् सुश्वसनः स्थिरश्च ।
तोयस्वभावो बहुतोयपायी प्रियाभिलाषी रसभोजनश्च ॥ १३ ॥

जिसका स्वभाव पृथ्वी का सा हो तो उसके शरीर में उत्तम फूल के समान गन्ध आती है। वह बड़ा भोगवान् व अच्छी श्वासवाला होकर स्थिर रहता है। जिसका स्वभाव जल के समान हो वह बहुत जल पीता व प्यारे की अभिलाषा करता हुआ रसों को खाता है ॥ १३ ॥

अग्निवायुस्वभावलक्षण

अग्निप्रकृत्या चपलोतितीक्ष्णश्चण्डः क्षुधालुर्बहुभोजनश्च ।
वायोःस्वभावेन चलःकृशश्च क्षिप्रं च कोपस्य वशं प्रयाति १४ ॥

जिसका स्वभाव अग्नि के समान हो तो वह चपल, बड़ा तीखा, कोपी तथा क्षुधावान् और बहुत भोजन करता है। जिसका स्वभाव वायु के समान हो वह चंचल बुद्धिवाला, दुर्बल और जल्द गुस्से में आनेवाला होता है ॥ १४ ॥

आकाशस्वभावलक्षण

खप्रकृतिर्निपुणो विवृतास्यः शब्दगतौ कुशलः शुषिराङ्गः ।
त्यागयुतः पुरुषो मृदुकोपः स्नेहरतश्च भवेत्सुरसत्त्वः ॥ १५ ॥

---

* इसे समझने के पूर्व पृथ्वी, जल, अग्नि, मनुष्य, राक्षस, पिशाच आदि का स्वभाव जान लेना आवश्यक है। इसके लिए इससे संबंध रखनेवाले शास्त्र अवलोकन करना आवश्यक है। हम इसे अन्यत्र लिखेंगे। संपादक।

आकाश के समान स्वभाववाला, चौड़े मुखवाला, निपुण तथा शब्द-शास्त्र कुशल होना है। जिसका स्वभाव देवता के समान हो वह दानशील, अल्पक्रोधी और प्रेमी होता है ॥ १५ ॥

मनुजसत्त्वलक्षण

मर्त्यसत्त्वसंयुतो गीतभूषणप्रियः।
संविभागशीलवान्नित्यमेव मानवः ॥ १६ ॥

जिसका स्वभाव मनुष्य के समान हो वह गानेवाला, वस्त्र आभूषणों से प्रीति रखनेवाला और शीलवान् होता है ॥ १६ ॥

रक्षःपिशाचलक्षण

तीक्ष्णप्रकोपः खलचेष्टितश्च पापश्च सत्त्वेन निशाचराणाम्[२]।
पिशाचसत्त्वश्चपलो मलाक्तो बहुप्रलापी च समुल्बणाङ्गः॥ १७॥

राक्षसों के समान स्वभाववाला, तीखे कोपवाला व खलों के समान चेष्टा रखनेवाला पापी होता है। जिसका स्वभाव पिशाच के समान हो वह चपल, मैला, बकवादी तथा बड़े डीलडौलवाला होता है ॥ १७ ॥

पशुसत्त्वलक्षण

भीरुः क्षुधालुर्बहुभुक् च यः स्याज्ज्ञेयः ससत्त्वेन नरस्तिरश्चाम्[३]।
एवं नराणां प्रकृतिः प्रदिष्टा यल्लक्षणज्ञाः प्रवदन्ति सत्त्वम्॥ १८॥

जिसका स्वभाव पशुओं के समान हो उसको डरपोक, क्षुधार्त व बहुभोजी जानना चाहिये ॥ १८ ॥

गतिलक्षण

शार्दूलहंससमदद्विपगोपतीनां तुल्या भवन्ति गतिभिः शिखिनां च भूपाः। येषां च शब्दरहितं स्तिमितं च यातं तेपीश्वरा द्रुतपरिप्लुतगा दरिद्राः ॥ १९ ॥

---

१ शुचिरत्यन्तदाता च भूमिजीवी च गोहितः। चातुर्वर्णाः समाजाता ज्ञातव्याः क्रमशो बुधैः ॥ स्थूलाङ्गा मलिनाश्चैव रमकाः प्राणहारकाः। मांसप्रिया नास्तिकाश्च ते जाता व्याधयोनयः ॥

२ कालस्कन्धा महोत्ताश्च भीमाभीमपराक्रमाः। बह्वाशिनः सर्ववैरास्ते पूर्वं राक्षसाः स्मृताः ॥

३ त्रासयुक्ताः कर्मरताः स्वोदराभरणे युताः। व्यवहारविहीनाश्च ते पूर्वं पशुजातयः॥ इतस्ततो भ्रमन्नित्यं गहनेषु पृषोदरः। भीतियुक्ताः स्वल्पकायास्ते जाताः पक्षियोनयः ॥ सर्वकार्येषु ये क्षुद्रास्ते पूर्वं क्षुद्रजातयः ॥

जिनकी गति (चाल) बाघ, हंस, मतवाला हाथी, बैल और मोर के समान हो वे राजा होते हैं। जिनका गमन शब्दरहित निश्चल हो वे भी समर्थ होते हैं। शीघ्रगामी दरिद्र होते हैं ॥ १६ ॥

इति बृहत्सामुद्रके पण्डितशक्तिधरसंकलिते भाषाभाष्ये पुरुषलक्षणं नाम प्रथमं प्रकरणम् ॥ १ ॥

स्त्रीलक्षण

अथातः संप्रवक्ष्यामि नारीणां लक्षणं प्रिये ! ।
श्रूयतां देवदेवेशि समाधाय मनोऽमलम् ॥ १ ॥

अब इसके उपरान्त अहो प्रिये ! मैं नारियों के लक्षण भलीभाँति कहूँगा। हे देवि ! अपने अमल मन को सावधान कर सुनिये ॥ १ ॥

नखपादादिलक्षण

स्निग्धोन्नताग्रतनुताम्रनखौ कुमार्याः
पादौ समोपचितचारुनिगूढगुल्फौ ।
श्लिष्टांगुलीकमलकान्तितलौ च यस्या-
स्तामुद्वहेद्यदि भुवोधिपतित्वमिच्छेत् ॥ २ ॥

जिस कुमारी के नख चिकने और ऊँचे हों, जिनका अग्रभाग पतला व तांबे के वर्ण हो, दोनों पैर समान व कुछ मोटे तथा मनोरम हों, जिनमें गंठे (टखने) छिपे हों, अंगुलियाँ परस्पर मिली हों, तलवे कमल के सदृश शोभावाले हों, ऐसी कुमारी को सुलक्षणा जानना चाहिये। यदि कोई पुरुष पृथ्वीपति होने की इच्छा करे तो ऐसी कुमारी से अपना विवाह करे ॥ २ ॥

मत्स्यादि चिह्नयुतपादजङ्घादिलक्षण

मत्स्यांकुशाब्जयववज्रहलासिचिह्नावस्वेदनौ मृदुतलौ चरणौ प्रशस्तौ। जङ्घे च रोमरहिते विशिरे सुवृत्ते जानुद्वयं सममनुल्बणसन्धिदेशम् ॥ ३ ॥ ऊरू घनौ करिकरप्रतिमाव-

रोमावश्वत्थपत्रसदृशं विपुलं च गुह्यम्। श्रोणीललाटमुरुकूर्मसमुन्नतं च गूढो मणिश्च विपुलां श्रियमादधाति ॥ ४ ॥

कोमल व पसीनासहित चरणतल, जिनमें मछली, अंकुश, कमल, यव, वज्र, हल और तलवार के चिह्न हों, नारी के ऐसे चरण प्रशस्त होते हैं। जंघाएँ रोमरहित, नस विहीन और गोलाकार हों। दोनों घुटने समान होकर सन्धिदेश में मांसल हों। दोनों ऊरू घने व हाथी की सूँड़ के समान हों तथा रोम रहित हों। गुह्याङ्ग पीपलपत्र के समान विस्तीर्ण हो। कमर तथा ललाट चौड़े कछुए के समान ऊँचे हों। मणि छिपी हो। वह नारी बड़ी संपत्तिशालिनी होती है ॥ ३ । ४ ॥

नितम्बनाभिलक्षण

विस्तीर्णमांसोपचितो नितम्बो गुरुश्च धत्ते रसनाकलापम्।
नाभिर्गभीरा विपुलाङ्गनानां प्रदक्षिणावर्तगता प्रशस्ता ॥५॥

यदि स्त्रियों का नितम्ब (कटिपश्चाद्भाग) चौड़ा, मांसल और बड़ा हो तो वह करधनी से शोभित होता है। यदि नारियों की नाभि गंभीर, विपुल और प्रदक्षिणावर्त हो तो वह प्रशस्त होती है ॥ ५ ॥

स्त्रीकट्यादिलक्षण

मध्यं स्त्रियास्त्रिवलिनाथविरोमशं च वृत्तौ घनावविषमौ कठिनावुरस्यौ। रोमापवर्जितमुरो मृदु चाङ्गनानां ग्रीवा च कम्बुनिचितार्थसुखानि धत्ते ॥ ६ ॥

यदि मध्यभाग त्रिवलीयुक्त रोमरहित हो, दोनों स्तन घने, समान तथा कड़े हों, वक्षःस्थल कोमल तथा रोमहीन हो, ग्रीवा (गींच) शंख के समान हो, तो वह नारी धनवती और सुखी होती है ॥ ६ ॥

स्त्रियों का अधरलक्षण

बन्धुजीवकुसुमारुणोऽधरो मांसलो रुचिरबिम्बरूपभृत्।
कुन्दकुड्मलनिभाःसमाद्विजा योषितां पतिसुखामितार्थदाः॥७॥

जिन स्त्रियों का अधर दुपहरियाफूल के समान हो, मांसल हो अथवा पके कुदरू फल के समान हो, दाँत कुन्दकली के समान बराबर हों, वे स्त्रियाँ पति को सुखी करतीं और अमित धन देती हैं ॥ ७ ॥

स्त्रियों के चित्तादिलक्षण

दाक्षिण्ययुक्तमशठं परपुष्टहंसवल्गुप्रभाषितमदीनमनल्पसौख्यम्। नासा समा समपुटा रुचिरा प्रशस्ता दृग्नीलनीरजदलद्युतिहारिणी च ॥ ८ ॥

सौभाग्यवती स्त्रियों का चित्त दयाशील, कपटहीन और शब्द कोकिला व हंसशब्द के समान होता है। नासिका सम व समान पुटवाली होकर सुन्दर हो तो प्रशस्त जानना चाहिये। नील कमलदल के समान नेत्र अच्छे कहाते हैं ॥ ८ ॥

भ्रूललाटलक्षण

नो संगते नातिपृथू न लम्बे शस्ते भ्रुवौ बालशशाङ्कवक्रे।
अर्धेन्दुसंस्थानमरोमशं च शस्तं ललाटं न नतं न तुङ्गम् ॥९॥

स्त्रियों की दोनों भौंहें यदि असंलग्न, पतली, छोटी, बाल चन्द्रमा के समान टेढ़ी हों तो प्रशस्त कहाती हैं। जिनका ललाट अर्धचन्द्राकार, लोमरहित और सम हो तो प्रशस्त जानना चाहिये ॥ ९ ॥

कर्णकेशलक्षण

कर्णयुग्ममपि युक्तमांसलं शस्यते मृदुसमं समाहितम्।
स्निग्धनीलमृदुकुञ्चितैकजा मूर्धजाः सुखकराः समं शिरः १०

स्त्रियों के दोनों कान मांसल, कोमल समान तथा अचल हों तो प्रशस्त कहाते हैं। केश चिकने, काले, कोमल और टेढ़े तथा रोमकूपों से एक एक निकले हों तो सुखकारी होते हैं। यदि शिर समान हो तो सुखदायक होता है ॥ १० ॥

रमणियों के राजलक्षण

भृङ्गारासनवाजिकुञ्जररथश्रीवृक्षयूपेषुभि-
र्मालाकुण्डलचामरांकुशयवैः शैलैर्ध्वजैस्तोरणैः।
मत्स्यस्वस्तिकवेदिकाव्यजनकैः शङ्खातपत्राम्बुजैः
पादे पाणितलेपि वा युवतयो गच्छन्ति राज्ञीपदम् ॥११॥

जिन स्त्रियों के करतल व पादतल में झारी, आसन, घोड़ा, हाथी,

रथ, श्रीफलवृक्ष, यूप, बाण, माला, कुण्डल, चामर, अंकुश, यव, पर्वत, ध्वजा, तोरण, मछली, त्रिकोण, वेदिका, पंखा, शंख, छाता और कमल के चिह्न हों, वे स्त्रियाँ रानी पद पाती हैं ॥ ११ ॥

मणिबन्धादिलक्षण

निगूढमणिबन्धनौ तरुणपद्मगर्भोपमौ
करौ नृपतियोषितां तनुविकृष्टपर्वांगुलौ ।
न निम्नमतिनोन्नतं करतलं सुरेखान्वितं
करोत्यविधवां चिरं सुतसुखार्थसंभोगिनीम् ॥ १२ ॥

जिनके हाथ गंभीर मणिबन्धवाले हों, नवीन कमलगर्भ के समान हों, जिनमें सारी अंगुलियाँ पतली तथा विरली हों वे स्त्रियाँ राजपत्नी होती हैं। जिनका करतल गहरा व ऊँचा न हो तथा सुरेखाओं से संयुत हो उन स्त्रियों को सौभाग्यवती, पुत्रवती, सुखवती और धनवती तथा संभोगिनी बनाता है ॥ १२ ॥

ऊर्ध्वरेखालक्षण

मध्यांगुलिं या मणिबन्धनोत्था रेखा गता पाणितलेऽङ्गनायाः।
ऊर्ध्वस्थिता पादतलेथवा या पुंसोऽथवा राज्यसुखाय सा स्यात् ॥

जिसके करतल में मणिबन्ध से उठी ऊर्ध्वरेखा मध्यमा के मूल तक गई हो वह स्त्री रानी होती है। इसीभाँति पादतल में ऊर्ध्वरेखा हो तो भी रानी होती है। अपने पुरुष को राज्यसुखदात्री होती है। जिस पुरुष के करतल या पादतल में ऊर्ध्वरेखा उपस्थित हो वह भी राजा होता है ॥ १३ ॥

परमायुर्लक्षण

कनिष्ठिकामूलभवा गता या प्रदेशिनी मध्यमिकान्तरालम्।
करोति रेखा परमायुषः सा प्रमाणमूना तु तदूनमायुः ॥१४॥

जिन स्त्रियों के करतल में कनिष्ठा अंगुली के मूल से निकली रेखा तर्जनी व मध्यमा के बीच तक हो तो वह उन्हें दीर्घायु करती है, और जो प्रमाण से कम हो तो कम आयु को देती है ॥ १४ ॥

अंगुष्ठमूलरेखाज्ञान

अंगुष्ठमूले प्रसवस्य रेखा पुत्रा बृहत्यः प्रमदास्तु तन्व्यः।
अच्छिन्नदीर्घा बृहदायुषां ता अल्पायुषां छिन्नलघुप्रमाणाः १५

स्त्रियों के अँगूठे के मूल में सन्तान की रेखायें होती हैं। उनमें जो बड़ी हों वे पुत्र की रेखा जानना चाहिये। जो छोटी हों वे कन्याओं की जानना चाहिये। जो रेखाएँ साफ़ और बड़ी हों वे दीर्घायु द्योतक हैं। जो छिन्नभिन्न तथा छोटी रेखा प्रतीत हों वे कम उमरवालों की कहाती हैं॥ १५॥

इतीदमुक्तं शुभमङ्गनानामतो विपर्यस्तमनिष्टमुक्तम्।
विशेषतोऽनिष्टफलानि यानि समासतस्तान्यनुकीर्तयामि १६

इस प्रकार जो स्त्रियों के शुभ लक्षण कहे हैं उनसे विपरीत अनिष्टदायक हैं। इसलिए विशेषतः जो अनिष्टफलदायक हैं उन्हें संक्षेप से कहता हूँ॥ १६॥

पादाङ्गुलिलक्षण

कनिष्ठिका वा तदनन्तरा वा महीं न यस्याः स्पृशती स्त्रियाः स्यात्। गताथवांगुष्ठमतीत्य यस्याः प्रदेशिनी सा कुलटाऽतिपापा॥ १७॥

जिस स्त्री के चलने में पैर की कनिष्ठा व अनामिका अंगुली पृथ्वी का स्पर्श न करें अथवा जिस स्त्री के पैर की तर्जनी अंगुली अँगूठे से लंबी हो वह स्त्री व्यभिचारिणी होती है॥ १७॥

पिण्डिकोदरलक्षण

उद्बद्धाभ्यां पिण्डिकाभ्यां शिराले शुष्के जङ्घे रोमशे चातिमांसे। वामावर्तं निम्नमल्पं च गुह्यं कुम्भाकारं चोदरं दुःखितानाम्॥ १८॥

जिन स्त्रियों की पिंडुरियाँ ऊँची हों, जङ्घायें लोमोंवाली, अतिमांसल, या सूखी अथवा नसों से व्याप्त हों अर्थात् नसें दिखती हों, जिनका गुह्यदेश वामावर्त, गहरा व छोटा सा प्रतीत हो और उदर घड़ा सा हो वे स्त्रियाँ दुःखभागिनी होती हैं॥ १८॥

ग्रीवालक्षण

ह्रस्वयातिनिःस्वता दीर्घया कुलक्षयः ।
ग्रीवया पृथूत्थया योषितः प्रचण्डता ॥ १६ ॥

जिन स्त्रियों की ग्रीवा (घींच) बहुत छोटी हो वे दरिद्रिणी होती हैं। जिनकी ग्रीवा लम्बी हो वे वंश विनाशती हैं। जिनकी ग्रीवा चौड़ी, और ऊँची हो वे क्रोधी होती हैं ॥ १६ ॥

नेत्रगण्डकूपलक्षण

नेत्रे यस्याः केकरे पिङ्गले वा सा दुःशीला श्यावलोलेक्षणा च ।
कूपौ यस्या गण्डयोश्च स्मितेषु निःसंदिग्धंवञ्चकीं तां वदन्ति २०

जिसके दोनों नेत्र कंजे हों वह दुश्चरित्रा होती है। जिसके नेत्र पिङ्गलवर्ण हों, चञ्चल चितवन हो वह भी दुश्चरित्रा होती है। जिसके हँसने के समय गालों में गड्ढे पड़ जाते हों उस स्त्री को मुनियों ने निःसंदेह वञ्चकी (असती) कहा है ॥ २० ॥

ललाटलक्षण

प्रविलम्बिनि देवरं ललाटे श्वशुरं हन्त्युदरे स्फिजोः पतिं च ।
अतिरोमचयान्वितोत्तरोष्ठी न शुभा भर्तुरतीव या च दीर्घा ॥ २१ ॥

जिसका ललाट बहुत लम्बा हो, वह स्त्री देवर को विनाशती है। जिसका पेट लम्बा हो वह ससुर का नाशती है। जिसके कूले लम्बे हों वह पतिघातक होती है। जिसके मूछें सी निकल आई हों वह स्त्री स्वामी को शुभदायक नहीं होती। जो स्त्री पति की अपेक्षा लम्बी हो वह स्वामी को अतीव दुःखदायक होती है ॥ २१ ॥

स्तनकर्णदन्तलक्षण

स्तनौ सरोमौ मलिनोल्बणौ च क्लेशं दधाते विषमौ च कर्णौ ।
स्थूलाः कराला विषमाश्च दन्ताः क्लेशाय चौर्याय च कृष्णमांसाः

जिनके स्तन (दूध) रोमों समेत मैले और बड़े हों, कान विषम (छोटे-बड़े) हों तो उन्हें क्लेशकारक होते हैं। जिनके दाँत मोटे, कराल तथा विषम हों तो दुःखदायक होते हैं। जिनके मसूढ़ों के मांस काले हों वे स्त्रियाँ चोरी करती हैं ॥ २२ ॥

करतल में क्रव्यादिरेखाज्ञान

क्रव्यादरूपैर्वृककाककङ्कसरीसृपोलूकसमानचिह्नैः ।
शुष्कैः शिरालैर्विषमैश्च हस्तैर्भवन्ति नार्यः सुखवित्तहीनाः २३

जिनके हाथों में मांसभक्षी बाज आदि पक्षी, भेड़िया, कौवा, ऊजली, चील और घुग्घू के समान निशान हों, जिनके हाथ सूखी नसों से व्याप्त हों, जिनके हाथ विषम हों तो वे स्त्रियाँ सुख व धन से रहित रहती हैं ॥२३॥

ओष्ठकेशलक्षण

यातूत्तरोष्ठेन समुन्नतेन रूक्षाग्रकेशी कलहप्रिया सा ।
प्रायो विरूपासु भवन्ति दोषा यत्राकृतिस्तत्र गुणा भवन्ति २४

जिन स्त्रियों का ऊपर का ओठ ऊँचा हो, केशों का अग्रभाग रूखा हो वे लड़ाई करने में प्रेम रखती हैं । प्रायः विरूप स्त्रियों में दोष होते हैं । जिन का अच्छा रूप होता है वे गुणी होती हैं ॥ २४ ॥

दशाफलविचार में वर्षज्ञान

पादौ सगुल्फौ प्रथमं प्रदिष्टौ जङ्घे द्वितीयं च सजानुचक्रे ।
मेढ्रोरुमुष्कं च ततस्तृतीयं नाभिः कटिश्चेति चतुर्थमाहुः ॥२५॥
उदरं कथयन्ति पञ्चमं हृदयं षष्ठमतः स्तनान्वितम् ।
अथ सप्तमं सजत्रुणी कथयन्त्यष्टममोष्ठकन्धरे ॥ २६ ॥
नवमं नयने च सभ्रुणी सललाटं दशमं शिरस्तथा ॥
अशुभेष्वशुभं दशाफलं चरणाद्येषु शुभेषु शोभनम् ॥ २७ ॥

नरनारी की देह दशभाग में विभक्त हैं । प्रतिभाग में बारह बारह वर्ष का एक एक दशा होती है । इस भाँति दश दशाओं के १२० वर्ष होते हैं । अब उन्हीं का क्रम कहते हैं । पाद व गुल्फ (गंठे) यह प्रथमभाग पहली दशा होती है । इसकी संख्या बारह वर्ष की है । जानुओं समेत जंघा दूसरा भाग दूसरी दशा है । इसकी संख्या १३ से लेकर २४ तक है । भग, ऊरू व वृषण यह तीसरा भाग तीसरी दशा है । इसकी संख्या २५ से लेकर ३६ तक है । नाभि व कमर यह चौथा भाग चौथी दशा है । इसकी संख्या ३७ से लेकर ४८ तक है । उदर यह पाँचवाँ भाग पाँचवीं दशा है । इसका

प्रमाण ४६ से लेकर ६० तक है । स्तनों समेत हृदय छठा भाग छठी दशा है । इसका प्रमाण ६१ से लेकर ७२ तक है । हँसुली समेत बाहें सातवाँ भाग सातवीं दशा कहाती है । इसका प्रमाण ७३ से लेकर ८४ तक है । ओठ और ग्रीवा यह आठवाँ भाग आठवीं दशा है । इसका प्रमाण ८५ से लेकर ९६ तक है । भौहें समेत आँखें यह नवां भाग नवीं दशा है । इसका प्रमाण ९७ से लेकर १०८ तक है । भाल समेत शीश दशवाँ भाग, दशवीं दशा है । इसका प्रमाण १०९ से लेकर १२० तक है । यदि चरण आदि अङ्ग अशुभ लक्षण युक्त हों तो दशाफल अशुभदायक होता है, यदि चरणादि अंग शुभ लक्षणों से युक्त हों तो दशाफल शुभदायक होते हैं ॥ २५ । २७ ॥

इति बृहत्सामुद्रिके स्त्रीलक्षणम् ।

स्कन्दपुराणान्तर्गतकाशीखण्डात्स्त्रीसामुद्रिकमादाय स्त्रीलक्षणान्युच्यन्ते–

स्कन्द उवाच

सदा गृही सुखं भुंक्ते स्त्री लक्षणवती यदि।
अतः सुखसमृद्ध्यर्थमादौ लक्षणमीयते ॥ १ ॥*

अगस्त्यजी से स्कन्दजी कहते हैं कि यदि स्त्री सुलक्षणा हो तो गृहस्थ पुरुष सदैव सुख भोगता है। इसलिए सुख व समृद्धि के लिए पहले लक्षणों को देखना चाहिए ॥ १ ॥

तत्र प्रथमं लक्षणाधिकरणं निर्दिशति

वपुरावर्तगन्धाश्च छाया सत्त्वं स्वरोगतिः।
वर्णश्चेत्यष्टधा प्रोक्ता बुधैर्लक्षणभूमिका ॥ २ ॥

हस्तादि अवयवों से रहित अंग, हाथ व नाभि आदि में लोमों का दक्षिणावर्त, गन्ध, कान्ति, शील, स्वर, गमन और गोर आदि वर्ण, यह आठ प्रकार लक्षणों की भूमिका पण्डितों ने कही है ॥ २ ॥

आपादतलमारभ्य यावन्मौलिरुहं क्रमात्।
शुभाशुभानि वक्ष्यामि लक्षणानि मुने शृणु ॥ ३ ॥

पैर के तलवों से लेकर बालों तक क्रम से शुभ व अशुभ लक्षणों को कहूँगा। मुनिजी! सुनिये ॥ ३ ॥

आदौ पादतलं रेखास्ततोऽङ्गुष्ठांगुलीनखाः।
पृष्ठं गुल्फद्वयं पार्ष्णी जङ्घे रोमाणि जानुनी ॥ ४ ॥

---

* इन वाक्यों से स्पष्ट है कि प्राचीनकाल में प्रत्येक व्यक्ति सामुद्रकशास्त्र भलीभाँति जानता था, और यही कारण है कि शुभाशुभ लक्षणों तथा अनुकूल ग्रह-नक्षत्रों की जाँच कर विवाहादि कार्य करने की प्रथा चली आ रही है। इस नियम का ठीक-ठीक पालन करने से गृहस्थी कदापि क्लेशमय नहीं हो सकती। सदा सुख, ऐश्वर्य एवं धर्म की प्रवृत्ति बनी रहती है। वर्तमान समय के बहुत से लोग कुण्डली मिलाकर शुभाशुभ लक्षण देखने के विरुद्ध हैं। परिणाम यह होता है कि वे अपनी जीवन-नौका शांतिपूर्ण नहीं चला सकते। सदा कलह, विद्रोह और अशान्ति का अड्डा एक गृहस्थ का घर बन जाता है। यह क्या हमारे दुर्भाग्य की बात नहीं? संसार में केवल भारत ही ऐसा देश है, जहाँ की जनता अपने शास्त्रानुकूल धर्म-मार्ग पर चल इस लोक तथा परलोक में सुख भोगती थी। पर अब समय के फेर से यह सब यहाँ आडंबर बताया जाने लगा है।–संपादक।

ऊरू कटी नितम्बस्फिग्भगो जघनबस्तिके ।
नाभिः कुक्षिद्वयं पार्श्वोदरमध्यबलित्रयम् ॥ ५ ॥
रोमाली हृदयं वक्षो वक्षोजद्वयचूचुकम् ।
जत्रुस्कन्धांसकक्षादोर्मणिबन्धकरद्वयम् ॥ ६ ॥
पाणिपृष्ठं पाणितलं रेखांगुष्ठांगुलीनखाः ।
पृष्ठिः कृकाटिका कण्ठे चिबुकं च हनुद्वयम् ॥ ७ ॥
कपोलौ वक्त्रमधरोत्तरोष्ठौ द्विजजिह्विकाः ।
घण्टिकातालुहसितं नासिकाक्षुतमक्षिणी ॥ ८ ॥
पक्ष्मभ्रूकर्णभालानि मौलिसीमन्तमौलिजाः ।
षष्टिः षडुत्तरा योषिदङ्गलक्षणसत्खनिः ॥ ९ ॥

पहले दोनों पादतल, उनकी रेखा, अँगूठा, अंगुलियाँ, नख, पीठ, दोनों गंठे, एँड़ियाँ, जंघायें, रोम, घुटनू, निरोह, कमर, नितंब, कूल्हे, योनि, पेड़ू, मूत्रस्थान, नाभि, दोनों कोखें, पसलियाँ, पेट के बीच की तीनों वलियाँ, रोमपंक्ति, हृदय, वक्षःस्थल, स्तन, कुचाग्र, हँसली, कन्धा, भुज, शीश, काँखें, बाहें, कब्जा, दोनों हाथ, हाथ की पीठ, दोनों करतल व उनकी रेखा, अँगूठा, अंगुलियाँ, नख, पीठ, घाँटी, कण्ठ, दाढ़ी, कनपटी, कपोल, मुख निचला ओंठ, ऊपर का ओंठ, दाँत, जीभ, घण्टिका, तालु, हसना, नासिका, छींक, आँखें, भौंहें, कान, ललाट, शीश, जूड़ा और केश, ये नारियों के छियासठ अंग लक्षणों की समीचीन भूमियाँ हैं ॥ ४ । ९ ॥

पादतललक्षण

स्त्रीणां पादतलं स्निग्धं मांसलं मृदुलं समम् ।
अस्वेदमुष्णमरुणं बहुभोगोचितं स्मृतम् ॥ १० ॥

जिन स्त्रियों के पैरों के तलवे चिकने, मांस से भरे, कोमल तथा सम

१ दोनों करतल व दोनों पादतल इस भाँति मानने से रमणियों के अङ्ग में सही सही ६६ लक्षण होते हैं ।

हो, उनमें पसीना न आता हो, गरम व लाल हों, उन्हें बड़ा भोग प्राप्त होता है ॥ १० ॥

रूक्षं विवर्णं परुषं खण्डितप्रतिबिम्बकम् ।
सूर्पाकारं विशुष्कं च दुःखदौर्भाग्यसूचकम् ॥ ११ ॥

जिनके पैर के तलवे रूखे, वर्णविहीन व कठोर हों, जिनके रखने पर बालू आदि में निशान न हो, सूप के समान हों, विशेषतः सूखे हों, ऐसी स्त्रियों को दुःख व दुर्भाग्य मिलता है ॥ ११ ॥

पादतल में चक्रादिलक्षण

चक्रस्वस्तिकशंखाब्जध्वजमीनातपत्रवत् ।
यस्याः पादतले रेखा सा भवेत्क्षितिपाङ्गना ॥ १२ ॥

जिसके पादतल में चक्र, त्रिकोणाकार रेखा हो तथा शंख, कमल, ध्वजा, मछली और छाते के निशान हों वह रानी होती है ॥ १२ ॥

ऊर्ध्वरेखादिज्ञान

भवेदखण्डभोगायोर्ध्वामध्यांगुलिसंगता ।
रेखाखुसर्पकाकाभा दुःखदारिद्र्यसूचिका ॥ १३ ॥

पादतल में ऊर्ध्व रेखा (भाग्य रेखा) मध्यमा अंगुली तक हो तो वह उसको अखण्ड भोग देती है । जिसके पादतल में मूषक, साँप और कौए के आकारवाली रेखा हो तो उस स्त्री को दुःख व दारिद्र्य देती है ॥ १३ ॥

पादाङ्गुष्ठादिलक्षण

उन्नतो मांसलोङ्गुष्ठो वर्तुलोऽतुलभोगदः ।
वक्रो ह्रस्वश्च चिपिटः सुखसौभाग्यभञ्जकः ॥ १४ ॥

पैर का अँगूठा ऊँचा व मांसल तथा गोल हो तो उस स्त्री को अतुल भोगदायक होता है । अँगूठा टेढ़ा, छोटा, चपटा हो तो सुख व सौभाग्य-नाशक होता है ॥ १४ ॥

विधवा विपुलेन स्याद्दीर्घांगुष्ठेन दुर्भगा ।
मृदवोङ्गुलयः शस्ता घनावृत्ताः समुन्नताः ॥ १५ ॥

जिसके पैर का अँगूठा चौड़ा हो वह स्त्री विधवा होती है। जिसके पैर का अँगूठा लम्बा हो वह स्त्री अभागिनी होती है। पैर की अंगुलियाँ कोमल, घनी, गोल, बड़ी व ऊँची हों तो वे शुभदायक होती हैं ॥ १५ ॥

पादाङ्गुलिलक्षण

दीर्घाङ्गुलीभिः कुलटा कृशाभिरतिनिर्धना ।
ह्रस्वायुष्या च ह्रस्वाभिर्भुग्नाभिर्भुग्नवर्तिनी ॥ १६ ॥

जिसके पैर की अंगुलियाँ लम्बी हों वह स्त्री कुलटा होती है। जिसके पैर की अंगुलियाँ पतली हों वह स्त्री धन रहित होती है। जिसके पैर की अंगुलियाँ छोटी हों वह स्त्री कम उमरवाली होती है। जिसके पैर की अंगुलियाँ टेढ़ी हों वह स्त्री कुटिल व्यवहारवाली होती है ॥ १६ ॥

चिपिटाभिर्भवेद्दासी विरलाभिर्दरिद्रिणी ।
परस्परं समारूढाः पादाङ्गुल्यो भवन्ति हि ॥ १७ ॥
हत्वा बहूनपि पतीन् परप्रेष्या तदा भवेत् ।
यस्याः पथि समायान्त्या रजो भूमेः समुच्छलेत् ॥१८॥
सा पांसुला प्रजायेत कुलत्रयविनाशिनी ।

जिसके पैर की अंगुलियाँ चपटी हों वह स्त्री दासी होती है। जिसके पैर की अँगुलियाँ विरली हों वह स्त्री दरिद्रिणी होती है। जिसके पैर की अंगुलियाँ परस्पर मिली हों वह बहुत से पतियों को मारकर पराधीन होती है। मार्ग में जिस स्त्री के चलते हुए भूमि से धूल उछलती हो वह व्यभिचारिणी होती और तीनों कुलों को नष्ट करती है ॥ १७ । १८ । ½ ॥

गमन में कनिष्ठिकादिलक्षण

यस्याः कनिष्ठिका भूमिं न गच्छन्त्याः परिस्पृशेत् ॥१९॥
सा निहत्य पतिं योषा द्वितीयं कुरुते पतिम् ।
अनामिका च मध्या च यस्या भूमिं न हि स्पृशेत् ॥२०॥
पतिद्वयं निहन्त्याद्या द्वितीया च पतित्रयम् ।
पतिहीनत्वकारिण्यो हीने ते द्वे इमे यदि ॥ २१ ॥

चलने में जिस स्त्री की कनिष्ठिका अंगुली भूमि को न स्पर्श करे वह एक पति को मारकर दूसरा पति करती है। जिसकी अनामिका अंगुली भूमि का स्पर्श न करे वह स्त्री दो पतियों को मारती है। जिस की मध्यमा अंगुला भूमि को नहीं छूता वह स्त्री तीन पतियों को मारती है और यदि अनामिका व मध्यमा ये दोनों अंगुलियाँ न हों तो वह पति को विनाशती है ॥१९।२१॥

प्रदेशिन्यादिलक्षण

प्रदेशिनी भवद्यस्या अङ्गुष्ठादतिरेकिणी ।
कन्यैव कुलटा तु स्यादेष एव विनिश्चयः ॥ २२ ॥
राज्ञित्वसूचकं स्त्रीणां पादपृष्ठं समुन्नतम् ।
स्निग्धा समुन्नतास्ताम्रा वृत्ताः पादनखाः शुभाः ॥२३॥

जिसके पैर की तर्जनी अंगुली अँगूठे से बड़ी हो वह कन्या अवस्था में ही पुंश्चली हो जाती है। यदि स्त्रियों के पैर की पीठ ऊँची हो तो वह रानी के पद को सूचित करती है। पैरों के नख चिकने, ऊँचे तथा ताम्र-वर्ण सरीखे गोलाकार हों तो वे शुभदायक होते हैं ॥ २२। २३ ॥

पादपृष्ठमध्यनम्रादिलक्षण

राज्ञित्वसूचकं स्त्रीणां पादपृष्ठं समुन्नतम् ।
अस्वेदमशिराढ्यं च मसृणं मृदु मांसलम् ॥ २४ ॥
दरिद्रा मध्यनम्रेण शिरालेन सदाध्वगा ।
रोमाढ्येन भवेद्दासी निर्मांसेन च दुर्भगा ॥ २५ ॥

यदि स्त्रियों के पैर की पीठ ऊँची, पसीना-रहित, नस-विहीन, चिकनी, कोमल और मांसयुक्त हो तो रानीपद को सूचित करती है। जिसके पैर की पीठ बीच में लची हो वह दरिद्रा होती है। जिसके पैर की पीठ नसों से व्याप्त हो वह सदैव मार्ग में गमन करती है। जिसके पैर की पीठ रोमोंवाली हो वह दासी होती है और जिसके पैर की पीठ मांस से रहित हो वह स्त्री बुरे भाग्यवाली होती है ॥२४।२५॥

गुल्फादिलक्षण

गूढौ गुल्फौ शिवायोक्तावशिरालौ सुवर्तुलौ ।
स्थपुटौ शिथिलौ दृश्यौ स्यातां दौर्भाग्यसूचकौ ॥२६॥

समपार्ष्णिः शुभा नारी पृथुपार्ष्णिश्च दुर्भगा।
कुलटोन्नतपार्ष्णिः स्याद्दीर्घपार्ष्णिश्च दुःखभाक् ॥ २७ ॥

नसों से व्याप्त, छिपे हुए, गोलाकार पैर के गंठे कल्याणदायक होते हैं। पैर के गंठे निचले ढीले से हों तो बुरे भाग को बतलाते हैं। जिसके पैर की एड़ी सम हो वह स्त्री शुभदायक होती है। जिसकी एड़ी चौड़ी हो वह दुर्भगा होती है। जिसकी एड़ी ऊँची हो वह छिनाल होती है। जिसकी एड़ी लम्बी हो वह दुःखभागिनी होती है ॥ २६।२७ ॥

जंघारोमलक्षण

रोमहीने समे स्निग्धे यज्जङ्घे क्रमवर्तुले।
सा राजपत्नी भवति विशिरे सुमनोहरे ॥ २८ ॥
एकरोमा राजपत्नी द्विरोमा च सुखावहा।
त्रिरोमा रोमकूपेषु भवेद्वैधव्यदुःखभाक् ॥ २९ ॥

जिसकी जंघाएँ रोमहीन, समान, चिकनी क्रम से गोलाकार, नसविहीन और मनोहर हों वह स्त्री राजपत्नी होती है। जिसके रोमकूपों में एकही रोम हो वह रानी होती है। जिसके रोमकूपों में दो-दो रोम हों वह सुख पाती है। जिसके रोमकूपों में तीन-तीन रोम हों वह विधवा होकर दुःखभागिनी होती है ॥ २८ । २९ ॥

जानुलक्षण

वृत्तं पिशितसंलग्नं जानुयुग्मं प्रशस्यते।
निर्मांसं स्वैरचारिण्या दरिद्रायाश्च विश्लथम् ॥ ३० ॥

जिसके दोनों जानु (घुटनू) गोलाकार, मांस से भरे हों वह स्त्री शुभ है। जिसके घुटनू मांसरहित हों तो वह अपनी इच्छानुसार घूमता तथा पुष्ट जानुवाली दरिद्रा होती है ॥ ३० ॥

ऊरुलक्षण

विशिरैः करभाकारैरूरुभिर्मसृणैर्घनैः।
सुवृत्तै रोमरहितैर्भवेयुर्भूपवल्लभाः ॥ ३१ ॥

---

१ जंघे च रोमरहिते सुवृत्ते विशिरे शुभे।
रोमजंघे च नारीणां महादुःखप्रदायिके ॥ १ ॥

वैधव्यं रोमशैरूरुं दौर्भाग्यं चिपिटैरपि ।
मध्यच्छिद्रैर्महादुःखं दारिद्र्यं कठिनत्वचैः ॥ ३२ ॥

जिनकी ऊरु (पतली जाँघें) नस रहित, हाथी की सूड़ के समान चिकनी, घनी, गोल, और लोम-हीन हों वे स्त्रियाँ रानी होती हैं । जिनकी ऊरु रोम संयुक्त हों वे विधवा होजाती हैं । जिनकी ऊरु चपटी हों वे दौर्भाग्य को प्राप्त होती हैं । जिनकी ऊरुओं के बीच में नसों के कारण गढ़ा सा हो वे स्त्रियाँ महादुःख पाती हैं । जिनकी ऊरुओं की खाल कठोर हो वे दारिद्र्य भोगती हैं ॥ ३१।३२ ॥

कटिलक्षण

चतुर्भिरङ्गुलैः शस्ता कटिर्विंशतिसंयुतैः ।
समुन्नतनितम्बाढ्या चतुरस्रा मृगीदृशाम् ॥ ३३ ॥
ह्रस्वा रोमयुता नार्या दुःखवैधव्यसूचिका ।
विनता चिपिटा दीर्घा निर्मांसा संकटा कटिः ॥ ३४ ॥

यदि रमणियों की कमर चौबीस अंगुल हो तो शुभदायक होती है । जिसकी कमर ऊँचे और बड़े नितम्बोंवाली, चौकोण हो वह धनवती होती है । लची, चपटी, लम्बी और निर्मांस कमर संकटदायक होती है । छोटी, रोमयुक्त कमर दुःखदायक तथा विधवापन बताती है ॥ ३३,३४ ॥

नितम्बादिलक्षण

नितम्बबिम्बो नारीणामुन्नतो मांसलः पृथुः ।
महाभोगाय संप्रोक्तस्तदन्योऽशर्मणे मतः ॥ ३५ ॥
कपित्थफलवद्वृत्तौ मृदुलौ मांसलौ घनौ ।
स्फिचौ वलिविनिर्मुक्तौ रतिसौख्यविवर्धनौ ॥ ३६ ॥

यदि स्त्रियों का नितम्बमण्डल ऊँचा, मांस से भरा और चौड़ा हो तो वह बड़े भोगों के लिए कहा है । जो इससे विपरीत हो तो वह अमंगल माना गया है । यदि कूल्हे कैथा फल की तरह गोल, कोमल, मांसल, घने और वलियों से रहित हों तो वे विशेषतः रतिसौख्य बढाते हैं ॥३५।३६॥

भगलक्षण

शुभः कमठपृष्ठाभो गजस्कन्धोपमो भगः ।
वामोन्नतस्तु कन्याजः पुत्रजो दक्षिणोन्नतः ॥ ३७ ॥

जिसकी योनि कछुए की पीठ या हाथी के कन्धे के सदृश ऊँची हो तो शुभदायक होती है । जिसकी योनि बाईं तरफ़ ऊँची हो वह कन्याएँ उपजाती है । जिसकी योनि दाहनी तरफ़ ऊँची हो वह पुत्रवती होती है ॥ ३७ ॥

आखुरोमा गूढमणिः सुश्लिष्टः संहतः पृथुः ।
तुङ्गः कमलपर्णाभः शुभोऽश्वत्थदलाकृतिः ॥ ३८ ॥
कुरङ्गखुररूपो यश्चुल्लिकोदरसन्निभः ।
रोमशो विवृतास्यश्च दृश्यनासोऽतिदुर्भगः ॥ ३९ ॥

योनि मुसरिया के रोमों की तरह रोमयुक्त हो, मणि छिपी हो, जो लिपटी हुई पुष्ट तथा ऊँची हो, कमलपत्र के समान अथवा पीपल-पत्ते के आकारवाली हो तो शुभदायक होती है । हिरन के खुरके समान या चूल्हे के उदर के समान हो अथवा रोमोंवाली, फैले मुखवाली हो, जिसमें नाक देख पड़ती हो, ऐसी योनि दुःखदायक होती है ॥ ३८ । ३९ ॥

शङ्खावर्तो भगो यस्याः सा गर्भमिह नेच्छति ।
चिपिटः खर्पराकारः किंकरीपददो भगः ॥ ४० ॥
वंशवेतसपत्राभो गजरोमोच्चनासिकः ।
विकटः कुटिलाकारो लम्बगल्लस्तथाऽशुभः ॥ ४१ ॥

जिसकी योनि तीन रेखाओं से युक्त हो वह बाँझ होती है । जो योनि चपटी खपरे के आकारवाली हो तो दासीपद देती है। बाँसपत्र या बेतसपत्र के समान, हाथीरोम के समान रोमयुक्त जिसकी नासिका बड़ी हो; विकट या कुटिल आकारवाली या लम्बे गलवाली (नीचे का भाग दीर्घ मुखवाली) योनि अशुभदायक होती है ॥ ४० । ४१ ॥

भगभाललक्षण

भगस्य भालं जघनं विस्तीर्णं तुङ्गमांसलम् ।
मृदुलं मृदुलोमाढ्यं दक्षिणावर्तमीडितम् ॥ ४२ ॥

वामावर्तं च निर्मांसं भुग्नं वैधव्यसूचकम् ।
संकटं स्थपुटं रूक्षं जघनं दुःखदं तथा ॥ ४३ ॥

भगका ऊपरी भाग (जघनदेश) चौड़ा, ऊँचा, मांसल, कोमल तथा नरम रोमों से संयुक्त दहिनावर्त हो तो शुभदायक होता है । जो जघनदेश वामावर्त या निर्मांस टेढ़ा हो वह विधवापने को सूचित करता है । जो जघनदेश सकरा, गहरा, रूखा हो वह दुःखदायक होता है ॥ ४२–४३ ॥

बस्तिलक्षण

बस्तिः प्रशस्ता विपुला मृद्वी स्तोकसमुन्नता ।
रोमशा च शिराला च रेखाङ्का नैव शोभना ॥ ४४ ॥

जिसकी पेडू विशाल, कोमल, और कुछ ऊँची हो तो शुभदायक होती है। जो पेडू रोमों व नसों से व्याप्त रेखाओं से अंकित हो वह शुभदायक नहीं होती ॥ ४४ ॥

नाभिलक्षण

गम्भीरा दक्षिणावर्ता नाभी स्यात्सुखसंपदे ।
वामावर्ता समुत्ताना व्यक्तग्रन्थिर्न शोभना ॥ ४५ ॥
सूते सुतान्बहून्नारी पृथुकुक्षिः सुखास्पदम् ।
क्षितीशं जनयेत्पुत्रं मण्डूकाभेन कुक्षिणा ॥ ४६ ॥

गहरी, रोम या रेखाओं से दहिनावर्त नाभि सुख संपदा के लिये होती है । जो नाभि बहुत ऊँची वामावर्त हो, जिसका मध्यभाग दिखता हो वह अशुभदायक होती है । जिसकी कोख चौड़ीसी हो वह स्त्री बहुत से पुत्र पैदा करती है । जिसकी कोख मेंढक के उदरसमान हो वह सुखधाम, पृथ्वीपालक पुत्र की माता होती है ॥ ४५–४६ ॥

---

१ नाभिः प्रशस्ता गंभीरा दक्षिणावर्तिका शुभा । मत्स्योदरा बहुधना नाभिभिः सुखिनः स्मृताः ॥ विस्तीर्णाभिर्बहुलाभिर्निम्नाभिः क्लेशभोगिनः । वलिमध्यगता नाभिः शलबाधां करोति हि ॥ वामावर्ता च साध्यं वै मेधां च दक्षिणस्तथा । पार्श्वायता चिरायुः स्याद्भूपरिष्ठाद्धनेश्वरः ॥ अधोगवाञ्च्यं कुर्याच्च नृपत्वं पद्मकर्णिका ।

कुक्षिलक्षण

उन्नतेन बलीभाजा सावर्तेनापि कुक्षिणा ।
बन्ध्या प्रव्रजिता दासी क्रमाद्योषा भवेदिह ॥ ४७ ॥

जिसकी कोख आवर्त समेत ऊँची हो वह स्त्री बाँझ होती है । जिसकी कोख ढीली खालवाली हो वह संन्यासिनी होती है । जिसकी कोख आवर्त समेत प्रतीत हो वह दासी होती है ॥ ४७ ॥

पार्श्वलक्षण

समैः समांशैर्मृदुभिर्योषिन्मग्नास्थिभिः शुभैः ।
पार्श्वैः सौभाग्यसुखयोर्निधानं स्यादसंशयम् ॥ ४८ ॥
यस्या दृश्यशिरे पार्श्वे उन्नते रोमसंयुते ।
निरपत्या च दुश्शीला सा भवेद्दुःखशेवधिः ॥ ४९ ॥

जिनकी पसलियाँ समान, मांस-समेत, कोमल, शुभदायक, छिपी हड्डियों-वाली हों वे स्त्रियाँ निःसन्देह सौभाग्यशाली होती हैं। जिसके दोनों पार्श्व नसों-वाले ऊँचे रोमसंयुक्त हों वह सन्तानरहित व बुरे स्वभाववाली होती है॥४८–४९॥

उदरलक्षण

उदरेणातितुच्छेन विशिरेण मृदुत्वचा ।
योषिद्भवति भोगाढ्या नित्यं मिष्टान्नसेविनी ॥ ५० ॥
कुम्भाकारं दरिद्राया जठरं च मृदङ्गवत् ।
कूष्माण्डाभं यवाभं च दुष्पूरं जायते स्त्रियाः ॥ ५१ ॥

जिसका पेट बहुत छोटा, नसहीन और कोमल त्वचावाला हो वह स्त्री भोगयुक्त होकर हमेशा मीठे अन्न सेवन करती है । जिसका पेट घड़े के आकारवाला हो वह दरिद्रिणी होती है ! जिसका पेट मृदंग के समान, कुम्हड़े वा यवों के आकार का हो तो उसका वह पेट बड़े दुःखों से भरता है ॥ ५०–५१ ॥

विशाल जठरादिलक्षण

सुविशालोदरा नारी निरपत्या च दुर्भगा ।
प्रलम्बजठरा हन्ति श्वशुरं चापि देवरम् ॥५२॥

मध्यक्षामा च सुभगा भोगाढ्या सवलित्रया ।
ऋज्वी तन्वी च रोमाली यस्याः सा शर्मनर्मभूः ॥५३॥

जिसका पेट बहुत चौड़ा हो वह स्त्री सन्तानरहित तथा बुरे भाग्यवाली होती है । जिसका पेट लम्बा हो वह ससुर व देवर को नाशती है । जो कृशोदरी हो वह बड़े भाग्यवाली होती है । जिसका पेट तीन बलियों से युक्त हो वह भोगवाली होती है । जिसके रोमों की पंक्ति सीधी पतली-सी हो वह सुख व क्रीड़ा की भूमि है ॥ ५२–५३ ॥

रोमराज्यादि लक्षण

कपिला कुटिला स्थूला विच्छिन्ना रोमराजिका ।
चौर्यवैधव्यदौर्भाग्यं विदध्यादिह योषिताम् ॥ ५४ ॥
निर्लोमहृदयं यस्याः समं निम्नत्ववर्जितम् ।
ऐश्वर्यं चाप्यवैधव्यं प्रियप्रेम च सा लभेत् ॥ ५५ ॥

जिसकी रोमपंक्ति कपिलवर्णवाली, टेढ़ी, मोटी, छिन्न-भिन्न-सी हो वह चोर, विधवा और बुरे भाग्यवाली होती है । जिसका हृदय रोम-रहित, सम हो वह ऐश्वर्य भोगती तथा अपने प्यारे की प्रेमपात्री होती है ॥५४–५५॥

हृदयलक्षण

विस्तीर्णहृदया योषा पुंश्चली निर्दया तथा ।
उद्भिन्नरोमहृदया पतिं हन्ति विनिश्चितम् ॥ ५६ ॥
अष्टादशाङ्गुलततमुरः पीवरमुन्नतम् ।
सुखाय दुःखाय भवेद्रोमशं विषमं पृथु ॥ ५७ ॥

जिसका हृदय विस्तारवाला हो वह स्त्री पुंश्चली और दयाहीन होती है । जिसके हृदय में रोम हों वह निश्चय ही पतिनाशक है । स्त्रियों का अट्ठारह अंगुल चौड़ा, मोटा और ऊँचा वक्षःस्थल सुखदायक होता है । रोमयुक्त ,विषम, चौड़ा वक्षःस्थल दुःखदायक होता है ॥ ५६–५७ ॥

---

१ समवक्षा हि भोगाढ्या निम्नवक्षा धनोज्झिता । विस्तीर्णहृदया योषा पुंश्चली निर्दया तथेति ॥

स्तनलक्षण

घनौ वृत्तौ दृढौ पीनौ समौ शस्तौ पयोधरौ ।
स्थूलाग्रौ विरलौ शुष्कौ वामोरूणां न शर्मदौ ॥ ५८ ॥

दोनों स्तन कठोर, गोल, दृढ़, स्थूल समान हों तो शुभदायक होते हैं। स्तनों के अग्रभाग मोटे, विरले, सूखे हों तो सुखदायक नहीं होते ॥ ५८ ॥

दक्षिणोन्नतवक्षोजा पुत्रिणी त्वग्रणीर्मता ।
वामोन्नतकुचा सूते कन्यां सौभाग्यसुन्दरीम् ॥ ५९ ॥
अरघट्टघटीतुल्यौ कुचौ दौश्शील्यसूचकौ ।
पीवरास्यौ सान्तरालौ पृथूपान्तौ न शोभनौ ॥ ६० ॥

जिसका दाहना स्तन ऊँचा हो वह स्त्री पुत्रवती होती तथा श्रेष्ठ मानी जाती है। जिसका बायाँ स्तन ऊँचा हो वह सौभाग्यसुन्दरी कन्या उपजाती है। दोनों स्तन रहट के समान हों तो वे बुरे स्वभाव को सूचित करते हैं। जिन स्तनों के मुख मोटे हों, फ़ासिले पर हों, किनारे पर चौड़े हों वे शुभदायक नहीं होते ॥ ५९—६० ॥

चूचकलक्षण

मूले स्थूलौ क्रमकृशावग्रे तीक्ष्णौ पयोधरौ ।
सुखदौ पूर्वकाले तु पश्चादत्यन्तदुःखदौ ॥ ६१ ॥
सुदृढं चूचकयुगं शस्तं श्यामं सुवर्तुलम् ।
अन्तर्मग्नं च दीर्घं च कृशं क्लशाय जायते ॥ ६२ ॥

स्तन मूल में मोटे तथा क्रम से पतले हों, अग्रभाग में तीखे हों तो पहले सुखदायक होकर पीछे बड़े ही दुःखदायक होते हैं। स्तनों के अग्रभाग मजबूत, काले, बहुत गोल हों तो शुभदायक होते हैं। जो स्तनों के अग्रभाग (ढेपुनी) भीतर छिपे हों, दीर्घ हों, पतले हों, तो क्लेशदायक होते हैं ॥ ६१—६२ ॥

जत्रुस्कन्धलक्षण

पीवराभ्यां च जत्रुभ्यां धनधान्यनिधिर्वधूः ।
श्लथास्थिभ्यां च निम्नाभ्यां विषमाभ्यां दरिद्रिणी ॥६३॥
अबद्धावनतौ स्कन्धावदीर्घावकृशौ शुभौ ।
वक्रौ स्थूलौ न रोमाढ्यौ प्रेष्यवैधव्यसूचकौ ॥ ६४ ॥

जिसकी हँसलियाँ मोटी हों वह स्त्री धन धान्य की निधि होती है। जिसकी हँसलियाँ ढीली हड्डियोंवाली, गहरी और विषम हों वह दरिद्रिणी होती है। यदि कन्धे बँधे या झुके हुए न हों, लम्बे या पतले न हों तो वे शुभदायक होते हैं। यदि कन्धे टेढ़े, मोटे, रोमयुक्त हों वे दासी और विधवापन सूचित करते हैं॥ ६३–६४ ॥

अंसलक्षण

निगूढसन्धी स्रस्ताग्रौ शुभावंसौ सुसंहतौ ।
वैधव्यदौ समुच्चाग्रौ निर्मांसावतिदुःखदौ ॥ ६५ ॥

छिपे सन्धिवाले, अग्रभाग में झुके मज़बूत पुट्ठे शुभदायक होते हैं। यदि पुट्ठे अग्रभाग में ऊँचे या निर्मांस हों तो वे वैधव्यदायक तथा अत्यन्त दुःखदायक होते हैं॥ ६५ ॥

कक्षलक्षण

कक्षे सुसूक्ष्मरोमे तु तुङ्गे स्निग्धे च मांसले ।
शस्ते न शस्ते गम्भीरे शिराले स्वेदमेदुरे ॥ ६६ ॥

जो कांखें पतले रोमवाली, ऊँची, चिकनी, मांस से भरी हों तो शुभदायक होती हैं। गहरी नसोंवाली, पसीने से चिकनी काँखें शुभदायक नहीं होतीं॥ ६६ ॥

भुजालक्षण

स्यातां दोषौ सुनिर्दोषौ गूढास्थिग्रन्थिकोमलौ ।
विशिरौ च विरोमाणौ सरलौ हरिणीदृशाम् ॥ ६७ ॥
वैधव्यं स्थूलरोमाणौ ह्रस्वौ दौर्भाग्यसूचकौ ।
परिक्लेशाय नारीणां परिदृश्यशिरौ भुजौ ॥ ६८ ॥

यदि रमणियों की भुजाएँ छिपी हुई हड्डियों व गाँठोंवाली, कोमल हों तथा नसों या रोमरहित, सीधी हों तो वे दोषकारक नहीं। जिनकी भुजाएँ मोटे रोमोंवाली हों वे स्त्रियाँ विधवा होती हैं। जो भुजाएँ छोटी हों वे बुरे भाग्यको सूचित करती हैं। जो भुजाएँ चारों तरफ़ नसों से घिरी हों तो दुःखदायक होती हैं ॥ ६७–६८ ॥

करांगुष्ठलक्षण

अम्भोजमुकुलाकारमङ्गुष्ठाङ्गुलिसंमुखम् ।
हस्तद्वयं मृगाक्षीणां बहुभोगाय जायते ॥ ६९ ॥
मृदु मध्योन्नतं रक्तं तलं पाण्योररन्ध्रकम् ।
प्रशस्तं शस्तरेखाढ्यमल्परेखं शुभश्रियम् ॥ ७० ॥

यदि नारियों के दोनों हाथ, अँगूठे, और अङ्गुलियों के सामने फूलती कमलकली के आकार के घने हों तो भोगदायक होते हैं। करतल कोमल, बीच में ऊँचा, लालवर्ण, छिद्ररहित, समीचीन रेखाओं से युक्त हो तो शुभदायक होता है। यदि करतल अल्परेखायुक्त हो तो शुभ और लक्ष्मी देता है ॥ ६९–७० ॥

पाणितलपृष्ठलक्षण

विधवा बहुरेखेण विरेखेण दरिद्रिणी ।
भिक्षुकी सुशिराढ्येन नारी करतलेन वै ॥ ७१ ॥
विरोमविशिरं शस्तं पाणिपृष्ठं समुन्नतम् ।
वैधव्यहेतुं रोमाढ्यं निर्मांसं स्नायुमत्त्यजेत् ॥ ७२ ॥

हाथ में बहुत रेखावाली स्त्री विधवा होती है। जिसका करतल रेखारहित हो वह दरिद्रिणी होती है। जिसका करतल बहुतसी नसों से घिरा हो वह भीख माँगनेवाली होती है। जो हाथ की पीठ रोमों व नसों से रहित ऊँची हो वह शुभदायक होती है। जो हाथ की पीठ रोमों से संयुत, मांसरहित, नसोंवाली हो तो वह वैधव्य का कारण होती है। उसे त्याग दे ॥ ७१–७२ ॥

कररेखावर्णज्ञान

रक्ता व्यक्ता गभीरा च स्निग्धा पूर्णा च वर्तुला ।
कररेखाङ्गनायाः स्याच्छुभा भाग्यानुसारतः ॥ ७३ ॥

मत्स्येन सुभगा नारी स्वस्तिकेन वसुप्रदा ।
पद्मेन भूपतेः पत्नी जनयेद्भूपतिं सुतम् ॥ ७४ ॥

यदि हाथ की रेखा लाल, स्पष्ट, गंभीर, चिकनी और पूरी २ गोल हो तो शुभदायक है । जिसके हाथ में मछली की रेखा हो वह स्त्री बड़े भाग्य-वाली होती है । हाथ में त्रिकोणाकार रेखा हो तो वह धनदायक है । जिसके हाथ में पद्म का निशान देखे वह रानी और पृथ्वीपालक पुत्र की माता होती है ॥ ७३–७४ ॥

करतलत्रिकोणादिचिह्न

चक्रवर्तिस्त्रियाः पाणौ नन्द्यावर्तः प्रदक्षिणः ।
शङ्खातपत्रकमठा नृपमातृत्वसूचकाः ॥ ७५ ॥
तुलामानाकृती रेखे वणिक्पत्नीत्वहेतुके ।
गजवाजिवृषाकारा करे वामे मृगीदृशाम् ॥ ७६ ॥

जिसके हाथ में दाहिनी तरफ़ त्रिकोणाकार रेखा हो वह स्त्री चक्रवर्ती की रानी होती है । जिनके हाथ में शंख, छाता, या धनुष के आकार की रेखा हों वे स्त्रियाँ राजमाता होती हैं । जिसके हाथ में तराजू व बाँटों की रेखा हों वह विना कारण बनिये की पत्नी होती है । जिन रमणियों के बायें हाथ में हाथी, घोड़े या बैल के आकार की रेखा, ॥ ७५–७६ ॥

रेखा प्रासादवज्राभा सूयुस्तीर्थकरं सुतम् ।
कृषीबलस्य पत्नी स्याच्छकटेन युगेन वा ॥ ७७ ॥
चामराङ्कुशकोदण्डै राजपत्नी भवेद्ध्रुवम् ।
अङ्गुष्ठमूलान्निर्गत्य रेखा याति कनिष्ठिकाम् ॥ ७८ ॥
यदि सा पतिहन्त्री स्याद् दूरतस्तां त्यजेद्बुधः ।

तथा देवमन्दिर या राजमहल, अथवा वज्र के समान रेखाएँ हों वे तीर्थाटनकारी पुत्र उत्पन्न करती हैं । जिसके हाथ में गाड़ी या जुएँ की रेखा हो वह किसान को प्यारी होती है । जिसके हाथ में चमर, अंकुश या धनुष के समान रेखा हों वह निश्चय ही रानी होती है । यदि अँगूठे के मूल से रेखा निकलकर कनिष्ठिका अँगुली के पास चली

जावे तो वह स्त्री पतिनाशक होती है। इसलिए विद्वान लोग उसको दूर ही से त्याग दें॥ ७७–७८॥

करतल त्रिशूलादिचिह्न

त्रिशूलासिगदाशक्तिदुन्दुभ्याकृतिरेखया॥ ७९॥
नितंबिनी कीर्तिमती त्यागेन पृथिवीतले।
कङ्कजम्बूकमण्डूकवृकवृश्चिकभोगिनः॥ ८०॥
रासभोष्ट्रबिडालाः स्युः करस्था दुःखदाः स्त्रियाः।

जिसके हाथ में त्रिशूल, तलवार, गदा, शेल या नगाड़े के आकार की रेखाएँ हों वह स्त्री पृथ्वीमण्डल में दान द्वारा कीर्तिभागी होती है। उजली चील्ह, सियार, मेढक, भेड़िया, बीछू, साँप, गधा, ऊँट या बिलार के समान रेखाएँ दुःखदायक होती हैं॥ ७९–८०॥

कराङ्गुष्ठाङ्गुलिलक्षण

शुभदः सरलोङ्गुष्ठो वृत्तो वृत्तनखो मृदुः॥ ८१॥
अङ्गुल्यश्च सुपर्वाणो दीर्घा वृत्ताः शुभाः कृशाः।
चिपिटाः स्थपुटा रूक्षा पृष्ठरोमयुजोऽशुभाः॥ ८२॥
अतिह्रस्वाः कृशा वक्रा विरला रोगहेतुकाः।
दुःखायाङ्गुलयः स्त्रीणां बहुपर्वसमन्विताः॥ ८३॥

सीधा, गोल या गोल नखोंवाला, कोमल अँगूठा स्त्री को शुभदायक होता है। यदि अँगुलियाँ सुन्दर पोरोंवाली, लम्बी, गोल, क्रम से पतली हों तो शुभदायक होती हैं। चपटी या छोटी, गहरी या रूखी अंगुली तथा रोमयुक्त पीठ अशुभदायक होती हैं। बहुत छोटी, पतली या टेढ़ी या बिरली अंगुली रोगदायक हैं। अगर अंगुलियाँ चौड़े पोरवाली हों तो दुःखदायक होती हैं॥ ८१–८३॥

नखलक्षण

अरुणाः सशिखास्तुङ्गाः करजाः सुदृशां शुभाः।
निम्ना विवर्णा शुक्त्याभाः पीता दारिद्र्यसूचकाः ८४

नखेषु बिन्दवः श्वेताः प्रायः स्युः स्वैरिणीस्त्रियाः ।
पुरुषा अपि जायन्ते दुःखिनः पुष्पितैर्नखैः ॥ ८५ ॥

यदि रमणियों के नख रक्तवर्ण, शिखा समेत, ऊँचे से हों तो शुभदायक होते हैं । गहरे, विवर्ण या सीप सदृश पीले नख दारिद्र्य सूचित करते हैं । जिनके नखों में सफ़ेद बिन्दु (कौड़ी) हों वे प्रायः पुंश्चली होती हैं । यदि पुरुषों के नखों में सफ़ेद चिह्न प्रतीत हों तो वे भी दुःखी ही होते हैं ॥ ८४–८५ ॥*

वंशास्थिपृष्ठिलक्षण

अन्तर्निमग्नवंशास्थिपृष्ठिः स्यान्मांसला शुभा ।
पृष्ठेन रोमयुक्तेन वैधव्यं लभते ध्रुवम् ॥ ८६ ॥

अगर पीठ का वंश (बाँस) भीतर छिपा हो तथा पीठ मांस से भरी हो तो शुभदायक होती है । जिसकी पीठ रोमयुक्त हो वह स्त्री निश्चय कर वैधव्य पाती है ॥ ८६ ॥

कृकाटादिलक्षण

भुग्नेन विनतेनापि सशिरेणापि दुःखिता ।
ऋज्वी कृकाटिका श्रेष्ठा समांसा च समुन्नता ॥ ८७ ॥
शुष्का शिराला रोमाढ्या विशाला कुटिलाऽशुभा ।
मांसलो वर्तुलः कण्ठः प्रशस्तश्चतुरङ्गुलः ॥ ८८ ॥

टेढ़ी, नसयुक्त, लचीसी पीठ दुःखदायक होती है । यदि घाँटी (उपजिह्वा) या घाँटा सीधी, मांसल, या ऊँचीसी हो तो शुभदायक होती है । यदि घाँटी सूखी, नसों से घिरी, रोम तथा चौड़ी या टेढ़ी हो तो अशुभदायक है । यदि कण्ठ मांसल, गोल, या चार अंगुल का हो तो शुभदायक है ॥ ८७–८८ ॥

---

* नखवर्णन देशी तथा विदेशी विद्वानों ने स्वतंत्र रूप से किया है । केवल नख ही देखकर विज्ञ पुरुष आचरण, स्वभाव एवं भूत-भविष्यत् बता देते हैं । सम्पादक ।

ग्रीवालक्षण

शस्ता ग्रीवा त्रिरेखाङ्का त्वव्यक्तास्थि सुसंहता ।
निर्मांसा चिपिटा दीर्घा स्थपुटा न शुभप्रदा ॥ ८९ ॥
स्थूलग्रीवा च विधवा वक्रग्रीवा च किंकरी ।
बन्ध्या हि चिपिटग्रीवा ह्रस्वग्रीवा च निःसुता ॥९०॥

ग्रीवा (घींच) तीन रेखाओं से अङ्कित व अप्रकटित हड्डीवाली, अत्यन्त पुष्ट हो तो उसे शुभ कहना । ग्रीवा मांसरहित, चपटी, लम्बी, या गहरी हो तो शुभदायक नहीं है । ग्रीवा मोटीसी हो वह स्त्री विधवा होती है । जिसकी ग्रीवा टेढ़ी हो वह दासी होती है । जिसकी ग्रीवा चपटी हो वह बाँझ होती है । जिसकी ग्रीवा छोटी हो वह संतानरहित होती है ॥ ८९–९० ॥

चिबुकलक्षण

चिबुकं द्व्यङ्गुलं शस्तं वृत्तं पीनं सुकोमलम् ।
स्थूलं द्विधा संविभक्तमायतं रोमशं त्यजेत् ॥ ९१ ॥
हनुश्चिबुकसंलग्ना निर्लोमा सुघना शुभा ।
वक्रा स्थूला कृशा ह्रस्वा रोमशा न शुभप्रदा ॥ ९२ ॥

गोल, मोटी, बड़ी, कोमल या दो अंगुलवाली चिबुक (दाढ़ी) स्त्री के लिए शुभदायक है । जिसकी चिबुक मोटी, दो भागों में बँटी, चौड़ी या रोमोंवाली हो तो उसे दूर से ही त्याग दे । यदि हनु (ठुड्डी) चिबुक में लगी हुई निर्लोम, बड़ी या मजबूत हो तो शुभदायक है । पर टेढ़ी, मोटी, पतली व छोटी, रोमोंवाली शुभदायक नहीं ॥ ९१–९२ ॥

कपोललक्षण

शस्तौ कपोलौ वामाद्याः पीनौ वृत्तौ समुन्नतौ ।
रोमशौ परुषौ निम्नौ निर्मांसौ परिवर्जयेत् ॥ ९३ ॥

मोटे, गोल, ऊँचे, गाल स्त्री के लिए शुभदायक हैं । जिसके गाल रोमवाले, कठोर, निचले या मांसरहित हों उसे त्याग दे ॥ ९३ ॥

मुखलक्षण

समं समांसं सुस्निग्धं स्वामोदं वर्तुलं मुखम् ।
जनेतृवदनच्छायं धन्यानामिह जायते ॥ ९४ ॥

जिनका मुख सम, समांस, चिकना, गोल, या सुगन्धित हो और जिसमें पितृमुख की शोभा हो वे स्त्रियाँ इस लोक में धन्यवाद देने योग्य होती हैं ॥ ९४ ॥

अधरलक्षण

पाटलो वर्तुलः स्निग्धो लेखाभूषितमध्यभूः ।
सीमन्तिनीनामधरो धराजानिप्रियो भवेत् ॥ ९५ ॥
कृशः प्रलम्बः स्फुटितो रूक्षो दौर्भाग्यसूचकः ।
श्यावः स्थूलोधरोष्ठः स्याद्वैधव्यकलहप्रदः ॥ ९६ ॥

जिनका अधर (निचला ओठ) रक्तवर्ण, गोल, चिकना हो, और उसके बीच में रेखा हो, वे स्त्रियाँ रानी होती हैं । अगर अधर पतला, लम्बा, फूटा या रूखासा हो तो दौर्भाग्य सूचित करता है । कपिल वर्ण या मोटा अधर स्त्रियों को वैधव्य या लड़ाई देता है ॥ ९५–९६ ॥

उत्तरोष्ठलक्षण

मसृणो मत्तकाशिन्याश्चोत्तरोष्ठः सुभोगदः ।
किञ्चिन्मध्योन्नतोऽरोमा विपरीतो विरुद्धकृत् ॥ ९७ ॥

जिस स्त्री का ऊपर का ओठ चिकना हो तो महाभोगदायक कहना । बीच में कुछ ऊँचा, रोमरहित हो तो भी घने भोग देता है । जो पूर्वोक्त लक्षणों से विपरीत हो तो विरुद्धकारी कहना ॥ ९७ ॥

दन्तलक्षण

गोक्षीरसन्निभाः स्निग्धा द्वात्रिंशद्दशनाः शुभाः ।
अधस्तादुपरिष्टाच्च समास्तोकसमुन्नताः ॥ ९८ ॥

---

१ सुदन्ता स्नेहसौभाग्यं लभते नात्र संशयः । केशस्नेहेन सौभाग्यं नेत्रस्नेहेन वस्नता । सर्वाङ्गेन च यः स्निग्धः प्राप्नोति विपुलं धनम् ॥

पीताः श्यावाश्च दशनाः स्थूला दीर्घा द्विपङ्क्तयः ।
शुक्त्याकाराश्च विरला दुःखदौर्भाग्यदायकाः ॥ ९९ ॥
अधस्तादधिकैर्दन्तैर्मातरं भक्षयेत्स्फुटम् ।
पतिहीना च विकटैः कुलटा विरलैर्भवेत् ॥ १०० ॥

गोदुग्ध समान चिकने, बत्तीस संख्यावाले, नीचे व ऊपर दाँत शुभदायक होते हैं । पीले या कपिल, मोटे, लम्बे, दो पाँतिवाले, सीपी के आकारवाले अथवा बिरले दाँत दौर्भाग्य देते हैं । जिसके दाँत नीचे अधिक हों वह स्त्री माता को नाशती है । जिसके दाँत विकटाकार हों वह पतिहीन होती है । जिसके बिरले दाँत हों वह पुंश्चली होती है ॥ ९८–१०० ॥

जिह्वालक्षण

जिह्वेष्टमिष्टभोक्त्री स्याच्छोणा मृद्वी तथा सिता ।
दुःखाय मध्यसंकीर्णा पुरोभागसविस्तरा ॥ १ ॥
सितया तोयमरणं श्यामया कलहप्रिया ।
दरिद्रिणी मांसलया लम्बयाऽभक्ष्यभक्षिणी ॥ २ ॥
विशालया रसनया प्रमदातिप्रमादभाक् ।

जिसकी जीभ लाल, कोमल, कुछ सफ़ेदी लिये हो वह स्त्री अभिलषित पदार्थों को पाकर मीठे भोजन करती है । जिसकी जीभ बीच में सकरी हो, अग्रभाग में चौड़ी हो, वह दुःखदायक है । जिसकी जीभ सफ़ेद ही हो वह जलमें डूबकर मरती है । जिसकी जीभ काली सी हो वह बहुत लड़ाका होती है । जिसकी जीभ मांस से भरी मोटीसी हो वह दरिद्रिणी होती है । जिसकी बहुत ही लंबीसी जीभ हो वह अभक्ष्य पदार्थ खानेवाली होती है । जिसकी जीभ बहुत चौड़ीसी हो वह प्रमादिनी होती है ॥ १–२ ॥

तालुलक्षण

स्निग्धं कोकनदाभासं प्रशस्तं तालु कोमलम् ॥ ३ ॥
सिते तालुनि वैधव्यं पीते प्रव्रजिता भवेत् ।
कृष्णेऽपत्यविहीनार्ता रूक्षे भूरिकुटुम्बिनी ॥ ४ ॥

जिसका तालु चिकना, लालकमल के समान, कोमल हो तो शुभदायक होता है। जिसका तालु सफ़ेद हो वह विधवा हो जाती है। जिसका तालु पीला हो वह संन्यासिनी होती है। जिसका तालु काला हो वह सन्तानरहित तथा दुखिया रहती है। जिसका तालु रूखा बहुत हो वह बन्धुओंवाली तथा परिवारवाली होती है। ३—४ ॥

नासालक्षण

समवृत्तपुटा नासा लघुच्छिद्रा शुभावहा।
स्थूलाग्रा मध्यनम्रा च न प्रशस्ता समुन्नता ॥ ५ ॥
आकुञ्चितारुणाग्रा च वैधव्यक्लेशदायिनी।
परप्रेष्या च चिपिटा ह्रस्वा दीर्घा कलिप्रिया ॥ ६ ॥

स्त्री की सम गोल पुटोंवाली, छोटे छेदोंवाली नाक शुभदायक होती है। जिसकी नासिका अग्रभाग में मोटी व मध्यभाग में लचीसी, ऊँची हो, वह शुभदायक नहीं होती। अगर नासिका टेढ़ी, अग्रभाग में लाल-वर्णवाली हो तो वैधव्य और दुखों की देनेवाली कहाती है। जिसकी नासिका चपटी छोटीसी हो वह दासी होती है। जिसकी नासिका लम्बी हो वह स्त्री लड़ाई लड़ती है ॥ ५—६ ॥

क्षुतलोचनपक्ष्मलक्षण

दीर्घायुष्कृत् क्षुतं दीर्घं युगपद्द्वित्रिपिण्डितम्।
ललनालोचने शस्ते रक्तान्ते कृष्णतारके ॥ ७ ॥
गोक्षीरवर्णविशदे सुस्निग्धे कृष्णपक्ष्मणी।
उन्नताक्षी न दीर्घायुर्वृत्ताक्षी कुलटा भवेत् ॥ ८ ॥

जिनकी छींक बड़ी तथा एक बार में दो तीन लगातार आ जावें तो वह दीर्घायु होती है। आँखें आख़िरी में लाल या काले तिलवाली हों तो वे शुभदायक होती हैं। गऊ के दूध के समान, साफ़ चिकनी या काली पलकोंवाली हों तो भी शुभदायक होती हैं। जिसकी आँखें ऊँचीसी हों वह स्त्री दीर्घायु नहीं पाती। जिसकी आँखें गोल हों वह व्यभिचारिणी होती है ॥ ७—८ ॥

नेत्रलक्षण

मेषाक्षी महिषाक्षी च केकराक्षी न शोभना ।
कामगृहीला नितरां गोपिङ्गाक्षी सुदुर्वृता ॥ ९ ॥
पारावताक्षी दुःशीला रक्ताक्षी भर्तृघातिनी ।
कोटरा नयना दुष्टा गजनेत्रा न शोभना ॥ १० ॥
पुंश्चली वामकाणाक्षी बन्ध्या दक्षिणकाणिका ।
रमणी मधुपिङ्गाक्षी धनधान्यसमृद्धिभाक् ॥ ११ ॥

जिसकी आँखें मेढ़े या भैंसे की आँखों के समान कञ्जी हों वह स्त्री शुभदायक नहीं होती । वरन् वह बड़ी कामुक होती है । जिसकी आँखें गऊ के समान, पीलीसी हों वह स्त्री बुरे चरित्रोंवाली होती है । जिसकी आँखें कबूतर के समान हों वह बुरे स्वभाववाली होती है । जिसकी आँखें लाल-वर्णवाली हों वह स्त्री पति विनाशती है । जिसकी आँखें वृक्षच्छिद्र (खोंखल) के समान हों वह दुष्टा होती है । जिसकी आँखें हाथी के समान हों वह शुभदायक नहीं होती । जिसकी बाईं आँख कानी हो वह स्त्री पुंश्चली होती है । जिसका दाहनी आँख कानी हो वह बाँझ होती है । जिसकी आँखें रसीली, पीली हों वह धन, धान्य और समृद्धिशालिनी होती है ॥९–११॥

पक्ष्मलक्षण

पक्ष्मभिः सुघनैः स्निग्धैः कृष्णैः सूक्ष्मैःसुभाग्यभाक् ।
कपिलैर्विरलैः स्थूलैर्निन्द्या भवति भामिनी ॥ १२ ॥

जिसकी आँखों की बिन्नियाँ (बरौनियाँ) घनी, चिकनी, काली, सूक्ष्म हों वह स्त्री बड़े भाग्यवाली होती है । जिसकी बरौनियाँ पीली, बिरली, मोटी सी हों वह निन्दा योग्य होती है ॥ १२ ॥

भ्रूलक्षण

भ्रुवौ सुवर्तुले तन्व्याः स्निग्धे कृष्णे असंहते ।
प्रशस्ते मृदुरोमाणौ सुभ्रुवः कार्मुकाकृती ॥ १३ ॥
खररोमा च पृथुला विकीर्णा सरला स्त्रियाः ।
न भ्रूः प्रशस्ता मिलिता दीर्घरोमा च पिङ्गला ॥ १४ ॥

अगर भौंहें गोल, चिकनी, काली, परस्पर न मिली हों, कोमल रोमों-वाली, और धनुषाकार हों तो शुभदायक होती हैं। बिखरे रोमोंवाली, चौड़ी, विकीर्ण, सीधी या मिली हुई तथा बड़े रोमों वाली, पीली भौंहें शुभदायक नहीं होतीं ॥ १३–१४ ॥

कर्णलक्षण

लम्बौ कर्णौ शुभावर्तौ सुखदौ च शुभप्रदौ।
शष्कुलीरहितौ निन्द्यौ शिरालौ कुटिलौ कृशौ ॥ १५ ॥

जो कान लम्बे हों तो सुखद होते हैं। अगर कान शष्कुली (कुचियों) रहित, नसोंवाले या टेढ़े, पतले हों तो निन्दनीय होते हैं ॥ १५ ॥

ललाटलक्षण

भालः शिराविरहितो निर्लोमार्धेन्दुसन्निभः।
अनिम्नस्त्र्यंगुलो नार्याः सौभाग्यारोग्यकारणम् ॥१६॥
व्यक्तस्वस्तिकरेखं च ललाटं राज्यसम्पदे।
प्रलम्बं मस्तकं यस्या देवरं हन्ति सा ध्रुवम् ॥ १७ ॥
रोमशेन शिरालेन प्रांशुना रोगिणी मता ॥ १८ ॥

जिसका भाल नसों रहित, लोमहीन, अर्ध चन्द्र समान तथा गहरा न हो और तीन अंगुलवाला हो तो वह सौभाग्य व आरोग्य का कारण होता है। जिसका ललाट प्रकटित त्रिकोण रेखावाला हो तो राज्यसंपदा के लिए होता है। जिसका मत्था लम्बा हो वह स्त्री निश्चय ही देवर को मारती है। जिसका भाल रोमोंवाला, नसोंवाला तथा ऊँचासा हो वह स्त्री रोगिणी मानी जाती है ॥ १६–१८ ॥

सीमन्तशिरोलक्षण

सीमन्तः सरलः शस्तो मौलिः शस्तः समुन्नतः।
गजकुम्भनिभो वृत्तः सौभाग्यैश्वर्यसूचकः ॥ १९ ॥
स्थूलमूर्धा च विधवा दीर्घशीर्षा च बन्धकी।
विशालेनापि शिरसा भवेद् दौर्भाग्यभाजनम् ॥ २० ॥

सीधा शीश का जूड़ा स्त्री के लिए शुभदायक है। जो मस्तक ऊँचा हो तो भी शुभदायक है। जो शीश हाथी के कुम्भ सदृश गोलाकार हो तो सौभाग्य और ऐश्वर्य देता है। जिसका मस्तक मोटा हो वह स्त्री राँड़ होती है। जिसका शीश लम्बा हो वह स्त्री कुलटा होती है। जिसका शीश चौड़ा हो वह बुरे भाग्य की भाजन होती है॥ १९–२०॥

केशलक्षण

केशा अलिकुलच्छायाः सूक्ष्माः स्निग्धाः सुकोमलाः।
किञ्चिदाकुञ्चिताग्राश्च कुटिलाश्चातिशोभनाः॥ २१॥
परुषाः स्फुटिताग्राश्च विरलाश्च शिरोरुहाः।
पिङ्गला लघवो रूक्षा दुःखदारिद्र्यबन्धदाः॥ २२॥

भ्रमरसमूह के समान काले, पतले, चिकने, कोमल तथा अग्रभाग में घुँघराले केश अत्यन्त शुभदायक हैं। अगर केश कठोर, अग्रभाग में टूटे, विरले, पीले, छोटे, रूखे हों तो दुःख, दारिद्र्य और बन्धन देते हैं॥ २१–२२॥

भ्रुवोरन्तर्ललाटे[1] वा मशको राज्यसूचकः।
वामे कपोले मशकः शोणो मिष्टान्नदः स्त्रियाः॥ २३॥
तिलकं लाञ्छनं वापि हृदि सौभाग्यकारणम्।
यस्या दक्षिणवक्षोजे शोणे तिलकलाञ्छने॥ २४॥
कन्याचतुष्टयं सूते सूते सा च सुतत्रयम्।

इस प्रकार छाँछठ अंगों के शुभाशुभ लक्षणों को कह प्रसंगवश मशकादिकों को कहते हैं। भौंहों के बीच या ललाट में मसे का चिह्न हो तो वह राज्यसूचक है। बाएँ गाल में लाल मसा हो तो मिष्टान्नदायक है। हृदय में तिल स्त्री को सौभाग्यदायक होता है। जिसके

---

१ यस्याः कुटिलकेशाश्च नेत्रमुत्पलसन्निभम्। नाभिश्च दक्षिणावर्ता सा नारी सुखमेधते॥ अतिनीला स्निग्धकेशी सुमुखी च सुमध्यमा। सुभ्रू जंघा सुनासा च सा कन्या सुखमेधते॥ या सुवर्णा प्रसन्नाक्षी सुलोमा च मृदूदरी। पद्मपत्रसमाक्षी च पुत्रैः सार्धं प्रवर्धते॥

दाहिने स्तन में लाल तिल हो तो वह स्त्री चार कन्याओं को पैदा कर पीछे तीन पुत्रों को उपजाती है ॥ २३–२४ ॥

तिलकं लाञ्छनं शोणं यस्या वामे कुचे भवेत् ॥ २५ ॥
एकं पुत्रं प्रसूयादौ ततः सा विधवा भवेत् ।
गुह्यस्य दक्षिणे भागे तिलकं यदि योषितः ॥ २६ ॥
तदा क्षितिपतेः पत्नी सूते वा क्षितिपं सुतम् ।

जिसके बायें कुच पर लाल तिल हो वह स्त्री पहले एक पुत्र को पैदाकर विधवा हो जाती है । जिसकी गुदा की दाहिनी तरफ़ तिलका निशान हो वह स्त्री रानी अथवा पृथ्वीपालक पुत्र की मा होती है ॥ २५–२६ ॥

नासाग्रे मशकः शोणो महिष्या एव जायते ॥ २७ ॥
कृष्णः स एव भर्तृघ्न्याः पुंश्चल्याश्च प्रकीर्तितः ।
नाभेरधस्तात्तिलकं मशको लाञ्छनं शुभम् ॥ २८ ॥
मशकस्तिलकं चिह्नं गुल्फदेशे दरिद्रकृत् ।

जिसकी नासिका के अग्रभाग में लाल मसे का निशान हो, वह पटरानी होती है । जिसकी नासिका के अग्रभाग में काला तिल हो, वह पति को मारती तथा व्यभिचारिणी हो जाती है । अगर नाभि के नीचे तिल या मसा हो तो शुभदायक होता है । अगर टखनों (गंठों) में मसा या तिल हो तो दरिद्रकारी जानना चाहिये ॥ २७–२८ ॥

करे कर्णे कपोले वा कण्ठे वामे भवेद्यदि ॥ २९ ॥
एषां त्रयाणामेकन्तु प्राग्गर्भे पुत्रदं भवेत् ।
भालगेन त्रिशूलेन निर्मितेन स्वयंभुवा ॥ ३० ॥
नितम्बिनीसहस्राणां स्वामित्वं योषिदाप्नुयात् ।

जिसके हाथ, कान, कपोल या कण्ठ के बाईं तरफ़ मसा या तिल हो उसे पहले गर्भ में ही पुत्र प्राप्त होता है। जिसके भाल में त्रिशूल का निशान हो वह स्त्री हज़ारों स्त्रियों की स्वामिनी होती है ॥ २९–३० ॥

सुप्ता परस्परं या तु दन्तान् किटकिटायते ॥ ३१ ॥
सुलक्ष्मापि न सा शस्ता या किंचित्प्रलपेत्तथा ।
पाणौ प्रदक्षिणावर्तो धर्म्यो वामो न शोभनः ॥ ३२ ॥

निद्रा समय जो परस्पर दाँतों को किटकिटाती है वह शुभ लक्षणों-वाली होकर भी भली नहीं होती । वैसे ही सोती हुई जो बका करती है वह भी शुभदायक नहीं । जिसके हाथ में रोम दहिनावर्त हों तो वह धर्मशील होता है । अगर हाथ में रोमों का वामावर्त हो तो शुभदायक नहीं होता ॥ ३१–३२ ॥

नाभौ श्रुतावुरसि च दक्षिणावर्त ईडितः ।
सुखाय दक्षिणावर्तः पृष्ठवंशस्य दक्षिणे ॥ ३३ ॥
अन्तः पृष्ठं नाभिसमो बह्वायुः पुत्रवर्धनः ।
राजपत्न्याः प्रदृश्येत भगमौलौ प्रदक्षिणः ॥ ३४ ॥

नाभि, कान और छाती में रोमों या रेखाओं का दहिनावर्त प्रतीत होना स्त्री को शुभदायक होता है । जो पृष्ठवंश की दाहिनी तरफ़ दहिनावर्त प्रतीत हो तो सुखदायक होता है । जिसकी पीठ के बीच में नाभि के समान गोलाकार निशान हो तो वह बड़ी आयु देता तथा पुत्रों को बढ़ाता है । जिसकी योनि के ऊपर के भाग में या योनि की जड़ में दहिनावर्त प्रतीत हो वह स्त्री रानी होती है ॥ ३३–३४ ॥

स चेच्छकटभङ्गः स्याद्बह्वपत्यसुखप्रदः ।
कटिगो गुह्यवेधेन पत्यपत्यनिपातनः ॥ ३५ ॥
स्यातामुदरवेधेन पृष्ठावर्तौ न शोभनौ ।
एकेन हन्ति भर्तारं भवेदन्येन पुंश्चली ॥ ३६ ॥

जिसकी योनिके ऊपर या नीचे के भाग में रोमों या रेखाओं का छकड़ेकासा निशान हो वह बहुत से सन्तानों को देकर सुखदायक होता है । जो गुदा को वेधकर यानी उदरपर्यन्त आकर कमर तक हो तो उस स्त्री के स्वामी व सन्तानों को मारकर गिरा देता है । अगर पीठ में उदर को वेधन कर दो आवर्त हों तो शुभदायक नहीं होते । यदि एक ही आवर्त हो तो वह

स्वामी को नाशती है । जो दूसरा आवर्त प्रतीत हो तो वह स्त्री व्यभिचारिणी होजाती है ॥ ३५–३६ ॥

इति स्कन्दपुराणकाशीखण्डे स्त्रीणां लक्षणम् ।

स्कन्द उवाच

सुलक्षणापि दुश्शीला कुलक्षणशिरोमणिः । अलक्षणापि सा साध्वी सर्वलक्षणभूस्तु सा ॥ सुलक्षणा सुचरित्रा स्वाधीना पतिदेवता । विश्वेशानुग्रहादेव गृहे योषिद्वाप्यते ॥

अगस्त्यजी से स्वामिकार्त्तिकजी कहते हैं कि, अच्छे लक्षणोंवाली स्त्री भी बुरे स्वभाव वाली होकर कुलक्षणों की शिरोमणि होजाती है। लक्षणों से हीन स्त्री भी पतिव्रता होजाती है । वह सर्वलक्षणों की भूमि (आश्रय) कहाती है। अब प्रसंगवश † ग्रन्थान्तर से लक्षणों व कुलक्षणों को कहते हैं—

" पद्मिनी १ [पद्मगन्धा च मीनगन्धा च] चित्रिणी २ । शङ्खिनी ३ [क्षारगन्धा च मदगन्धा च] हस्तिनी । ४ । हंसपुन्नागवर्णाभा या नारी रक्तलोचना । अष्टौ जनयते पुत्रान्प्राप्नोति परमं सुखम् ॥ काकस्वरा काकजङ्घा तथैवोर्ध्वस्वरा तथा । लम्बोष्ठी लम्बवदना तां कन्यां परिवर्जयेत् ॥ हंसतुल्यगतिर्नारी राजपत्नी च सा भवेत् । यस्या गमनमात्रेण भूमिकम्पः प्रजायते ॥ सा स्त्री दैन्यकरी ज्ञेया सामुद्रवचनं यथा । आवर्तः प्रजने यस्या मध्ये चैव प्रदक्षिणः ॥ एकं सा जनयेत्पुत्रं राजानं पृथिवीपतिम् । "

पद्मिनी पद्म की सुगंधवाली; चित्रिणी मछली की सी गन्धवाली; शङ्खिनी क्षारगन्धवाली तथा हस्तिनी मद की गन्धवाली कहाती है। जो स्त्री हंस व नागकेसर के वर्णवाली, लाल लोचनोंवाली हो तो आठ पुत्र उपजाती तथा परम सुख पाती है। काकस्वरवाली, काकजङ्घावाली, ऊँचे स्वरवाली, लम्बे होठोंवाली, और लम्बे वदनवाली स्त्री त्याज्य है । जो स्त्री हंस गमनवाली, हो तो वह रानी होती है । जिसके गमन से पृथ्वी काँपती हो वह दुःखकारिणी जानना चाहिये । जिसके गर्भ या कमर में रोमों या रेखाओं का दहिनावर्त प्रतीत हो वह राजरूप पृथ्वीपालक पुत्र उपजाती है।

---

† यह कोकशास्त्र का विषय है । सामुद्रक और इस शास्त्र से घनिष्ठ संबंध है । इसका विवेचन अन्यत्र पढ़िये । संपादक ।

अथातः संप्रवक्ष्यामि कररेखाविचारणम् ।
श्रूयतां देवदेवेशि सज्जनानन्दकारणम् ॥ १ ॥
वामभागे तु नारीणां दक्षिणे पुरुषस्य च ।
निर्दिष्टं लक्षणं तेषां समुद्रेण यथोदितम् ॥ २ ॥

शिवजी बोले, हे प्रिये ! अब इसके उपरान्त तुम्हें हस्तरेखा का विचार सुनाता हूँ । यह विद्वज्जनों के आनन्द का कारण है । समुद्र के कथनानुसार नारियों के वाम हाथ तथा पुरुषों के दाहिने हाथ में रेखाओं का लक्षण बतलाया है ॥ १–२ ॥ *

पूर्वमायुः परीक्षेत पश्चाल्लक्षणमेव च ।
आयुर्हीनं नराणां चेल्लक्षणैः किं प्रयोजनम् ॥ ३ ॥

---

* यहाँ यह बात बताना अत्यावश्यक है कि भारतीय सामुद्रक मर्मज्ञों ने पुरुषों के दाहिने तथा स्त्रियों के बायें हाथ एवं अंग-प्रत्यंगों पर विचार करना आवश्यक बताया है । इधर विदेशी विद्वानों का कथन है कि पुरुष तथा स्त्रियों के दोनों हाथ देखना आवश्यक है । पर भेद केवल यह है कि दाहिना हाथ कार्यों का द्योतक है और बायाँ हाथ विचारसमूहों का । साथ ही उनका कथन है कि यदि कोई घटना दोनों हाथों में एक समय दिखे तो उसका होना अवश्यम्भावी है । अब देखना यह है कि इनमें किसका कथन सत्य है । शरीर की रचना पर यदि विचार किया जाय तो यह ज्ञात हो सकेगा कि मस्तिष्क एवं हाथों से कितना घनिष्ठ संबंध है । कुछ स्नायु ऐसे हैं जो सीधे मस्तक के प्रधानदेश से सम्बद्ध हैं । हाँ, दाहिनी तथा बायीं ओर विभिन्नता अवश्य है । उधर पुरुषों एवं स्त्रियों की शरीर-रचना में बड़ा अन्तर है । एलोपैथिक, होम्योपैथिक, क्रोमोपैथिक और आयुर्वेदिक विद्वानों के शरीर-रचना-मत पर बहुत कम अन्तर है । प्रायः प्रधान बातें एवं तथ्य वस्तुओं के पथनिर्देश की समानता है । इन सब बातों पर भलीभाँति हमने विचार किया है और देशी व विदेशी दोनों मतों में सत्य का अंश पाया है । अब तक हमें जिन सहस्रों हाथों के देखने का अनुभव हुआ है उनमें पुरुषों के दाहिने तथा स्त्रियों के बायें हाथ देखना ठीक जान पड़ा है । जिन घटनाओं का चित्रण दोनों हाथों पर मिला है वे निश्चय ही होती हैं । यह हमारा भी मत है । पर दोनों हाथ देखना बहुत ज़रूरी है । इस विषय पर अधिक जानने के लिए--"-सामुद्रकशास्त्र का दूसरा खण्ड" देखिये । सम्पादक ।

पहले आयु की परीक्षा करे। फिर लक्षणों का विचार करे। जो आयु ही नहीं है तो लक्षणों से कौन लाभ ॥ ३ ॥

अनामिका पूर्वमूले कनिष्ठादिक्रमेण चेत्।
आयुषं दशवर्षाणि समुद्रवचनं यथा ॥ ४ ॥

जिसके करतल में कनिष्ठ अंगुली के मूल से चलकर अनामिका-मूल के पूर्वभाग में आयुरेखा प्रतीत हो, उसकी दश वर्ष की आयु होती है ॥ ४ ॥ (देखो चित्र नं० ११ अ.ब.)

अङ्गुष्ठस्याप्यूर्ध्वरेखा वर्तते नृपतिः शुभा।
सेनापतिर्धनेशश्च मध्यमायुर्नरो भवेत् ॥ ५ ॥

जिसके करतल में अँगूठे के ऊपर शुभलक्षणाङ्कित ऊर्ध्वरेखा (फेटलाइन) हो तो वह राजा तथा सेनापति (फ़ौज का सरदार) और धनशाली होकर मध्यम आयु (६४।६०।५० वर्ष की उमर) वाला होता है ॥ ५ ॥

येषां पाण्यूर्ध्वरेखा स्यात्कनिष्ठामूलसंस्थिता।
ते नराः परदेशेषु शतमायुर्लभन्ति वै ॥ ६ ॥

जिनके करतल में ऊर्ध्वरेखा कनिष्ठा अंगुली के मूल में हो वे परदेश में बसते और सौ वर्ष की आयु पाते हैं ॥ ६ ॥

आयुष्मती भवेद्रेखा तर्जनीमूलसंस्थिता।
शतवर्षं भवेदायुः सुखमृत्युर्न संशयः ॥ ७ ॥

जिसके करतल में आयुरेखा चलकर तर्जनी अंगुली के मूल तक हो वह सौ वर्ष जीता तथा सुख से मरता है ॥ ७ ॥ (देखो अ ल. चित्र ११)

मध्यमामूलपर्यन्तमायुरेखा च दृश्यते।
चतुर्दशचतुर्विंशत्यायुर्बलविनाशनम् ॥ ८ ॥

जिसके करतल में आयुरेखा मध्यमा अंगुली के मूलपर्यन्त हो तो वह अड़तीस वर्ष जीता है ॥ ८ ॥ (देखो अ. ग. चित्र ११)

आयुर्बलं भवेद्रेखानामिकामूलसंस्थिता।
त्रिदशं वा त्रिषष्टिं वा आयुर्बलविनाशनम् ॥ ९ ॥

जिसके करतल में आयुरेखा अनामिका अंगुली के मूल तक हो वह तीस वर्ष या तिरसठ वर्ष जीता है ॥ ९ ॥ (देखो अ. स. चित्र ११)

आयुर्हीनं यथास्वल्पं बहुदीर्घं च दृश्यते ।
ते नराः सुखदुःखेन चाल्पमृत्युर्न संशयः ॥ १० ॥

जिनके हाथ पर आयुरेखा बहुत छोटी हो वे आयुहीन होते हैं । जिनकी आयुरेखा बड़ी हो वे सुख अथवा दुःख से जीते हैं ॥ १० ॥

कनिष्ठामूलरेखा तु कुर्याच्चैव शतायुषम् ।
अनामिकामध्यमाभ्यामन्तरे संयुता सती ॥ ११ ॥

जिसकी आयुरेखा अनामिका व मध्यमा के बीच में संयुक्त होती हुई प्रतीत हो, वह सौ वर्ष की आयुवाला है ॥ ११ ॥

ऊना ऊनायुषं कुर्याद्रेखाश्चाङ्गुष्ठमूलगाः ।
बृहत्यः पुत्रदाः क्षीणाः प्रमदाः परिकीर्तिताः ॥ १२ ॥

जिसकी आयुरेखा अनामिका व मध्यमा के बीच कम हो वह कम उमर वाला है । यदि अँगूठे के मूल में बड़ी रेखायें हों तो वे पुत्रदायक होती हैं । जो क्षीण रेखा हों तो कन्यायें कहाती हैं । यानी अँगूठे के मूल में जितनी बड़ी रेखा हों उतने ही पुत्र और जितनी छोटी रेखा हों उतनीही कन्याएँ जन्मती हैं । उन रेखाओं में छोटी या बड़ी रेखा जितनी कटीसी हों उतनेही कन्या व पुत्र मरजाते हैं ॥ १२ ॥ (क. ख. ग. देखो चित्र नं० ११)

कनिष्ठाङ्गुलिदेशात्तु रेखा गच्छति तर्जनीम् ।
अविच्छिन्ना भवेद्यस्य शतमायुर्विनिर्दिशेत् ॥ १३ ॥

जिसकी आयुरेखा अविच्छिन्न हो तथा कनिष्ठा अंगुली से तर्जनी तक हो उसकी सौ वर्ष की आयु कहे ॥ १३ ॥ (देखो अ. ख. चित्र ११)

कनिष्ठाङ्गुलिमध्यस्था रेखा चेदवतिष्ठति ।
ऊर्ध्वच्छिन्ना भवेद्यस्य विंशत्यायुर्विनिर्दिशेत् ॥ १४ ॥

जिसकी आयुरेखा कनिष्ठा अंगुली के बीच में हो और उसका ऊपर का भाग कटासा हो वह बीस वर्ष पर्यन्त जाता है ॥ १४ ॥

कनिष्ठाङ्गुलिमूलं वा रेखा गच्छति मध्यमाम् ।
अविच्छिन्ना भवेद्यस्याशीतिस्तस्य विनिर्दिशेत् ।। १५ ।।

जिसकी आयुरेखा कनिष्ठा अंगुली के मूल से चलकर मध्यमा पर्यन्त पहुँचकर छिन्न भिन्न हो वह अस्सी वर्ष पर्यन्त जीता है ।। १५ ।।

कनिष्ठाङ्गुलिमूले तु रेखा गच्छत्यनामिकाम् ।
अविच्छिन्ना भवेद्यस्य चत्वारिंशत्स जीवति ।। १६ ।।

जिसकी आयुरेखा कनिष्ठा अंगुली के मूल से अनामिका पर्यन्त गई हो और यदि वह रेखा छिन्न-भिन्न हो तो वह चालीस वर्ष पर्यन्त जीता है ।।१६।।

तर्जन्या मध्यमाङ्गुल्या आयुरेखा तु मध्यतः ।
संप्राप्ता या भवेच्चैव स जीवेच्छरदः शतम् ।। १७ ।।

जिसकी आयुरेखा तर्जनी व मध्यमा के बीच तक भलीभाँति पहुँची हो वह सौवर्ष पर्यन्त जीता है ।। १७ ।।

प्रदेशिनीगता रेखा कनिष्ठामूलगामिनी ।
शतायुषं च कुरुते छिन्नया तरुतो भयम् ।। १८ ।।

जिसकी आयुरेखा कनिष्ठा के मूल से तर्जनी के मूल पर्यन्त हो तो वह उसको सौ वर्ष की उमरवाला करती है । यदि आयुरेखा छिन्न-भिन्न हो तो उसको वृक्ष से गिरने का भय होता है ।। १८ ।।

कनिष्ठा तर्जनी यावद्रेखा भवति चाक्षता ।
विंशत्यब्दादिकशतं नरो जीवत्यनामयः ।। १९ ।।

जिसकी आयुरेखा अच्छिन्न होकर कनिष्ठा अंगुली के मूल से आरम्भ होकर तर्जनी तक हो तो वह निरोगी तथा एक सौ बीस वर्ष पर्यन्त जीता है ।। १९ ।। (देखो अ. म. चित्र ११)

कनिष्ठानामिकायां चेद्रेखा भवति चाक्षता ।
षष्टिं पञ्चाशदब्दं वा नरो जीवत्यसंशयः ।। २० ।।

जिसकी आयुरेखा कनिष्ठा अंगुली के मूल से चलकर अनामिका के मूल में जा मिले वह निस्सन्देह पचास वर्ष पर्यन्त जीता है ।। २० ।। (देखो अ. भ. चित्र ११)

रेखया भिद्यते रेखा स्वल्पायुश्च भवेन्नरः ।
यत्संख्या भिद्यते रेखा अपमृत्युश्च तद्भवेत् ॥ २१ ॥

जिसकी आयुरेखा किसी छोटी रेखा से कटी हो वह थोड़ी उमरवाला होता है । जितनी छोटी रेखाओं से आयुरेखा कटी हो उतनीही उस प्राणी की अल्पायु होती है ॥ २१ ॥ (देखो ड. ढ. चित्र ११)

यस्य मीनसमा रेखा कर्मसिद्धिश्च जायते ।
धनाढ्यश्च स विज्ञेयो बहुपुत्रो न संशयः ॥ २२ ॥

जिसके करतल में मछली के समान रेखा हो, उसके कर्मों की सिद्धि होती है, और उसे निस्संदेह धन व पुत्रोंवाला जानना चाहिये ॥ २२ ॥ (देखो छ. छ. चित्र ११)

तुला ग्रामं तथा वज्रं करमध्ये च दृश्यते ।
तस्य वाणिज्यसिद्धिः स्यात्पुरुषस्य न संशयः ॥ २३ ॥

जिसके करतल में तराजू, चतुष्कोणचिह्न तथा वज्र का चिह्न हो तो वह बनिये का व्यापार करता है ॥ २३ ॥

पद्मचापादिखड्गश्च अष्टकोणादि दृश्यते ।
स्त्रियाश्च पुरुषस्यापि धनवान्स सुखी नरः ॥ २४ ॥

जिसके करतल में पद्म, धनुष आदि तथा खड्ग और अष्टकोणादि चिह्न प्रतीत हों वह धनी व सुखी होता है। यदि स्त्री के करतल में पूर्वोक्त पद्म आदि निशान हों वह स्त्री धनी व सुखशालिनी होती है । परन्तु विशेषता से जिस स्त्री-पुरुष के करतल में पद्म का ही निशान हो वह स्त्री रानी व पुरुष राजा होता है । जिसके करतल में धनुष का निशान हो वह पुरुष महावीर होता है । तलवार का निशान हो तो वह पुरुष महा योद्धा होता है । यदि अष्टकोण हो तो वह भूपति या ग्रामपति होता है ॥ २४ ॥

शङ्खचक्रध्वजाकारो नासाकारश्च दृश्यते ।
सर्वविद्याप्रदानेन बुद्धिमान्स भवेन्नरः ॥ २५ ॥

जिसके करतल में शंख, चक्र, ध्वजाकार या नासाकार निशान हों, वह सकलशास्त्रपारदर्शी तथा ज्ञानी कहाता है ॥ २५ ॥

त्रिशूलं करमध्ये तु तेन राजा प्रवर्तते।
यज्ञे धर्मे च दाने च देवद्विजप्रपूजने ॥ २६ ॥

जिसके हाथ में त्रिशूल का निशान हो वह राजा होता तथा यज्ञ, धर्म, दान व देवता तथा ब्राह्मणों के पूजन में लगा रहता है ॥ २६ ॥

शक्तितोमरबाणैश्चेत्करमध्ये प्रदृश्यते।
रथचक्रध्वजाकारः स च राज्यं लभेन्नरः ॥ २७ ॥

जिसके करतल में शक्ति (बरछी, सांग, भाला या यष्टि), तोमर (गुर्ज), बाण, रथ, चक्र और ध्वजा (पताका, झण्डी) के निशान हों वह राज्य पाता है ॥ २७ ॥

अङ्कुशं कुण्डलं छत्रं यस्य पाणितले भवेत्।
तस्य राज्यं महाश्रेष्ठं सामुद्रवचनं यथा ॥ २८ ॥

जिसके करतल में अङ्कुश, कुण्डल और छाता इन तीनों का निशान हो वह चक्रवर्ती महाराजा होता है। ऐसा क्षीरसमुद्रवासी भगवान् नारायण ने कहा है ॥ २८ ॥

गिरिकङ्कणयोनीनां नरमुण्डघटस्य च।
करे वै यस्य चिह्नानि राजमन्त्री भवेन्नरः ॥ २९ ॥

जिसके करतल में पर्वत, कङ्कण, योनि, नरमुण्ड और घट (घड़ा) के निशान हों, वह राजमन्त्री होता है ॥ २९ ॥

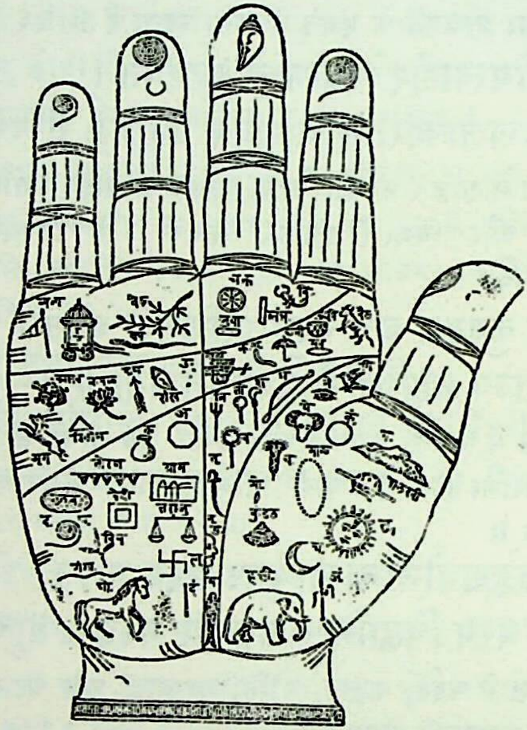
सूर्यचन्द्रलतानेत्रमष्टकोणत्रिकोणकम्।
मन्दिराश्वगजेन्द्राणां चिह्ने स्यात्स सुखी नरः ॥ ३० ॥

जिसके करतल में सूर्य, चन्द्र, लता, नेत्र, अष्टकोण, त्रिकोण, मन्दिर, घोड़ा और गजराज इनका निशान हो वह सुखी रहता है ॥ ३० ॥

गता पाणितले या च सोर्ध्वरेखा स्मृता बुधैः।
स्त्रीणां पुंसां तथा चैव राज्याय च सुखाय च ॥
पुत्रपौत्रादिसम्पन्ना चोर्ध्वरेखा शुभप्रदा ॥ ३१ ॥

मणिबन्ध (कब्जे) से निकली रेखा को सामुद्रकशास्त्रवेत्ता पण्डितगणों

ने ऊर्ध्वरेखा (फेट लाइन) कहा है। यदि स्त्रियों व पुरुषों के करतल में ऊर्ध्वरेखा देखी जाय तो राज्य और सुख के लिए होती है। वह पुत्र पौत्रादिकों से सम्पन्न करती तथा शुभदायक होती है ॥ ३१ ॥



तर्जनीमूलपर्यन्तमूर्ध्वरेखा च दृश्यते ।
राजदूतो भवेत्तस्य धर्मनाशो हि जायते ॥ ३२ ॥

जिसके करतल में ऊर्ध्वरेखा तर्जनी की मूल तक दिखे वह राजाओं का दूत होता है और उसके ध ्का विनाश भी हो जाता है ॥ ३२ ॥

(देखो क. ख. चित्र नं० १२)

मध्यमामूलपर्यन्तमूर्ध्वरेखा च दृश्यते ।
पुत्रपौत्रादिसम्पन्नो धनवान्स सुखी नरः ॥ ३३ ॥

जिसके करतल में ऊर्ध्वरेखा (भाग्यरेखा) मध्यमा अंगुली के मूल-

पर्यन्त हो तो वह पुत्र पौत्रादिकों से संपन्न, धनवान् तथा सुखी रहता है॥ ३३ ॥ (देखो भ. ख. चित्र नं० ११)

अनामिकोर्ध्वरेखायां व्यवसायधनागमः।
सुखदुःखेन जीवेत पुत्रपौत्रगृहादिमान्॥ ३४ ॥

जिसके करतल में ऊर्ध्वरेखा अनामिका के मूल में हो वह रोजगार से धन पाता और पुत्रों व पौत्रों से सम्पन्न शुभ गृहवाला होता और सुख व दुःख से जीता है ॥ ३४ ॥ (देखो ग. ख. चित्र नं० १२)

रेखाभिर्बहुभिर्दुःखं स्वल्पाभिर्धनहीनताम्।
रक्ताभिः श्रियमाप्नोति कृष्णाभिः प्रेष्यतां व्रजेत्॥३५॥

जिसके करतल में बहुत सी रेखाएँ हों वह दुःख पाता है। जिसके करतल में थोड़ी रेखाएँ हों वह निर्धन होता है। जिसके करतल में रक्तवर्ण रेखाएँ हों वह सुखी होता एवं लक्ष्मी पाता है। जिसके करतल में काली रेखाएँ हों वह क्लेशभागी तथा दासत्व पाता है ॥ ३५ ॥ *

अङ्कुशं कुलिशं छत्रं यस्य पाणितले भवेत्।
तस्यैश्वर्यं विनिर्दिष्टमशीत्यायुर्भवेद्ध्रुवम् ॥
पुत्रं प्रसूयते नारी नरेन्द्रं लभते पतिम्॥ ३६ ॥

जिसके करतल में अङ्कुश, वज्र और छाते का निशान हो उसको ऐश्वर्य मिलता है। निश्चय ही वह अस्सीवर्ष की उमरवाला होता है। यदि स्त्री के करतल में पूर्वोक्त निशान हों तो वह नरेन्द्रपत्नी तथा राजकुमार की माता होती है ॥ ३६ ॥

धनुर्यस्य भवेत्पाणौ पङ्कजं वाथ तोरणम्।
तस्यैश्वर्यं च राज्यं च अशीत्यायुर्भवेद्ध्रुवम्॥ ३७ ॥

जिसके करतल में धनुष, कमल और तोरण का निशान हो उसको

* विदेशी विद्वानों का मत है कि अधिक रेखावाला विचारसमूहों अथवा कल्पनाओं का घर है। साथ ही वह कमज़ोर दिल का तथा भावुक भी होता है। इस पर साधारण घटनाएँ भी काफ़ी असर करती हैं। दरिद्र होने की बात का वे पुष्टीकरण नहीं करते। संपादक

ऐश्वर्य व राज्य प्राप्त होता है। वह निश्चय कर अस्सी वर्ष की उमरवाला होता है ॥ ३७ ॥

कनिष्ठायां स्थिता रेखा संख्या यावतिकाः स्मृताः।
तावत्यः पुरुषाणां च नार्यः सन्ति विनिश्चितम् ॥ ३८ ॥

करतल में कनिष्ठा अंगुली के नीचे जितनी रेखाएँ हों उतनी ही उन पुरुषों की स्त्रियाँ होती हैं। ऐसे ही स्त्रियों की कनिष्ठा में जितनी रेखाएँ प्रतीत हों उनके उतने ही पुरुष होते हैं ॥ ३८ ॥ (देखो ज. ज. चित्र नं० ११)

करमध्यगता रेखा ध्रुवा ऊर्ध्वम्भवेद्यदि।
नृपो वा नृपतुल्यो वा चिरंख्यातोर्थवान्भवेत् ॥ ३९ ॥

जिसके करतल में मणिबन्ध से उठी रेखा पूर्ण ऊपरले भाग में चली जाय वह राजा अथवा राजा के समान तथा बहुत कालपर्यन्त विख्यात एवं धनवान् होता है ॥ ३९ ॥

मत्स्यपुच्छप्रकीर्णेन विद्यावित्तसमन्वितः।
पितुः पितामहादीनां धनं स लभते नरः ॥
पितामहस्य वा किञ्चिद्धनं च लभते ध्रुवम् ॥ ४० ॥

जिसके करतल में मछली की पूँछ का निशान हो वह विद्या व धन से युक्त होता एवं पिता व पितामहादिकों का धन पाता है ॥ ४० ॥

अयवस्य कुतो विद्या मत्स्यहीने कुतो धनम्।
अपुच्छस्य कुतो विद्या अयवस्य कुतो धनम् ॥
ऊर्ध्वरेखाविहीनस्य कुतो राज्यं कुतो यशः ॥ ४१ ॥

जिसके करतल में यव का निशान न हो उसको विद्या कहाँ से मिल सकती है। जिसके करतल में मत्स्यरेखा न हो उसको कहाँ से धन मिल सकता है। जिसके करतल में मछली की पूँछ का निशान नहीं हो उसको कहाँ से विद्या मिल सकती है। जिसके करतल में यव (जौ) का निशान न हो उसको कहाँ से धन मिल सकता है। जिसके करतल में ऊर्ध्वरेखा न हो उसको कहाँ से राज्य अथवा यश मिल सकता है ॥ ४१ ॥

एकमुद्रो भवेद्राजा द्विमुद्रो धनवान्नरः ।
त्रिमुद्रो रोगसंपन्नो बहुमुद्रो बहुप्रजः ॥ ४२ ॥

जिसके करतल में एक मुद्रा का निशान हो वह राजा होता है । जिसके करतल में दो मुद्राओं का चिह्न हो वह धनवान् होता है । जिसके करतल में तीन मुद्राएँ हों वह रोगी होता है । जिसके करतल में बहुत सी मुद्राएँ हों वह बहुत सी सन्तानोंवाला होता है ॥ ४२ ॥

तर्जनीमूलगामिन्यां रेखायां छिद्रता यदि ।
श्वाविन्मूषिकमार्जारसर्पदष्टो भविष्यति ॥ ४३ ॥

जिसके करतल में तर्जनी के मूल में गमन करती रेखा में यदि छेदसा हो वह साही, मूसा, बिलार या साँप से डसा जाता है ॥ ४३ ॥

यस्य पाणितले रेखा पीवरा दृश्यते यदि ।
अविच्छिन्ना पादसौख्यं संपूर्णा च सुशोभनम् ॥ ४४ ॥

जिसके करतल में रेखा मोटी हो और यदि छिन्न-भिन्न न हो तो वह पादसौख्य (पदोन्नति) पाता है । यदि सम्पूर्ण रेखा प्रतीत हो तो वह सुख सम्पत्ति पाता है ॥ ४४ ॥

कनिष्ठामूलरेखायाः परतश्च तथाहि वै ।
भवन्ति रेखास्तावत्यः पुत्राः कन्याश्च निश्चिताः ॥
कन्या द्विमुखरेखायां एकस्यायां तथात्मजः ॥ ४५ ॥

कनिष्ठा के मूल (ब्याह रेखा के अधोदेश) में जितनी खड़ी रेखाएँ हों उतने ही पुत्र अथवा कन्याएँ होती हैं। द्विमुखी रेखाओं में कन्या उपजती हैं और एकमुखी रेखा में पुत्र (देखो घ. घ. चित्र १२)॥ ४५ ॥*

ज्ञानरेखा च प्रथमा अङ्गुष्ठादनुवर्तते ।
मध्यमायां करे रेखा आयूरेखा प्रकीर्तिता ॥ ४६ ॥

---

* विदेशी अनेकों विद्वानों ने भी इसी स्थान पर की रेखाओं को पुत्र तथा कन्याओं की रेखाएँ माना है। किन्तु सामुद्रक में कहीं कहीं अँगूठे के मूल में भी इसी प्रकार पुत्र-पुत्रियों की रेखा मानी गई हैं। यह मतान्तर है। हमारा अनुभव है कि कनिष्ठा के मूल की रेखाओं से मानना अच्छा है। संपादक

अँगूठे के मूलदेश की पहली ज्ञानरेखा होती है। इसके बाद कनिष्ठा के मूल से चली मध्यमामूल पर्यन्त जो रेखा होती है उसको पण्डितों ने आयु-रेखा कहा है ॥ ४६ ॥ (मतान्तर में इसे हृदय सम्बन्धी अथवा संभोगरेखा भी कहते हैं। संपादक)

घनाङ्गुलिश्च सघनास्तिस्रो रेखाश्च यस्य वै।
नृपतेः करतलगा मणिबन्धे समुत्थिता ॥ ४७ ॥

जिसकी अंगुलियाँ घनी हों वह धनी होता है। जिसके करतल में मणि-बन्ध से उठी तीन ऊर्ध्वरेखाएँ हों वह राजा होता है ॥ ४७ ॥

युगमीनाङ्कितो यो वै भवेन्मन्त्रप्रदो नरः।
वज्राकाराश्च धनिनां मत्स्यपुच्छनिभा बुधैः ॥ ४८ ॥

जिसके करतल में दो मछलियों की रेखाएँ हों वह मन्त्रों का प्रदाता अथवा याज्ञिक होता है। जिनके करतल में वज्राकार निशान हों वे धनी होते हैं। जिनके करतल में मछली की पूँछ का निशान हो वे पण्डित होते हैं ॥ ४८ ॥

यस्य पाणितले रेखा दीर्घाकारद्वयं भवेत्।
युग्मे मुखे सुजातश्च अयुग्मे जारजो ध्रुवम् ॥ ४९ ॥

जिसकी मातृ व पितृरेखा दोनों दीर्घाकार हों तथा आपस में जुड़ी सी हों वह निजवंश से उपजा हुआ होता है। यदि दोनों रेखाएँ भिन्न हों तो वह जारजात कहाता है ॥ ४९ ॥ (देखो त्र. त्र. चित्र नं० ११ और १२)*

करमध्यस्थिता रेखा त्रयादूर्ध्वं भवेद्यदि।
नृपो वा नृपतुल्यो वा चिरं ख्यातोऽर्थवान्भवेत् ॥ ५० ॥

जिसके करतल में आयुरेखा, मातृरेखा और पितृरेखा की अपेक्षा एक

---

* "अङ्गुष्ठमूलगा रेखा भ्रातृदा सुखदायिका" (इति समीचीनः पाठः) कनिष्ठांगुलिमूलाधोभागे वृहत्यः पुत्ररेखाः प्रतीयन्ते क्षुद्राः कन्यारेखाश्च दृश्यन्ते तस्मान्मदुक्तपाठएवादर्तव्य इति

दीर्घाकार ऊर्ध्वरेखा हो वह राजा अथवा राजा के समान बहुत विख्यात एवं धनी होता है ॥ ५० ॥ *

---

* यद्यपि यह कथन यहाँ कहा गया है, किन्तु आज तक हमें इसका अनुभव नहीं हुआ। इसके अतिरिक्त हमें ऐसे हाथों में जिनमें ऐसी रेखाएँ हों, अनेक विशेषताएँ मिली हैं। विदेशी विद्वान् भी उक्त मत नहीं मानते। हमारा तथा उनका मत बहुत कुछ मिलता है।

एक अँग्रेज़ स्त्री का कथन है कि जिसकी आयुरेखा (पितृरेखा) तथा मस्तकरेखा (मातृरेखा) प्रारम्भ में न मिली हों वे बहादुर और दिलेर होते हैं। एक प्रसिद्ध अमेरिकन विद्वान् का मत है कि जब उक्त दोनों रेखाएँ अलग २ हों तो पहले तो उसे आत्मविश्वासी समझना। ऐसा व्यक्ति स्वावलंबी तथा दूसरों के विचारों पर कभी निर्भर नहीं रहता, स्वयं सोच सकता है। स्वतंत्र तथा अपने बुद्धिबल के भरोसे कार्य करता है। अपने विचारों में दृढ़ होता है। और इस प्रकार यदि उक्त दोनों रेखाओं में बड़ा अन्तर न हो तो यह बहुत अच्छा चिह्न है। यदि बड़ा अंतर हो तो हिम्मत और स्व-विचार-प्रबलता के कारण कभी कभी वह कुछ का कुछ कर बैठने से मूर्ख कहाता है।

एक फ्रेंच विद्वान् कहता है कि ऐसा मनुष्य शीघ्र विचार स्थिर कर लेता है और अपनी स्पष्टवादिता के कारण उसे कभी कभी पछताना पड़ता है। तुरन्त निर्णय कर लेने के स्वभाव के कारण उससे कभी २ भयानक भूलें भी हो जाती हैं। यह बड़ा आत्मविश्वासी होता है। इस प्रकार विभिन्न रूप में ये दोनों रेखाएँ लगभग सभी अमेरिकानिवासियों के हाथों में पाई जायँगी। ऐसे व्यक्ति बड़े यत्नशील होते हैं। यह चिह्न वकील या कानून-विशारदों, कलाविदों, प्रसिद्ध वक्ताओं, नाट्यकलाविदों और पंडितों (पादरियों) के बड़े लाभ का है। या यों कहिए कि वे सभी लोग, जो जनता के समक्ष अपने विचारों को भावपूर्ण दिलेरी और माननीय युक्तियों द्वारा उपस्थित करें, उनके लिए यह चिह्न एक खास सहायता है। एक और दूसरे फ्रेंचशास्त्र-अनुयायी अमेरिकन का कथन है कि कभी-कभी ऐसे व्यक्ति पत्रकार होते हैं। साथ ही ज़रा हठीले व झंझटी स्वभाव के भी होते हैं। यदि दोनों रेखाओं में अधिक अंतर हो तो आत्मविश्वास तथा शीघ्र-निर्णय-शक्ति के कारण उन्हें झंझट उठाना पड़े तथा वे मूर्ख कहावें।

इस प्रकार तो हुए पाश्चात्य विद्वानों के मत। हमारा स्वयं अनुभव है कि ऐसे व्यक्ति आत्मविश्वासी तथा शीघ्र विचारक होते हैं। यह चिह्न उपर्युक्त व्यक्तियों को बड़ा लाभप्रद है। कभी कभी जल्दबाज़ी में ऐसे व्यक्ति भयानक भूलें कर बैठते हैं और फिर मूर्ख बनते हैं।

अब प्रश्न उठता है कि यहाँ जारजात क्यों कहा गया। हमारे ख़्याल से चूँकि ये दोनों रेखाएँ पिता-माता की रेखाएँ कही गई हैं, इसलिये जान पड़ता है कि इनकी विभिन्नता पिता-माता की विभिन्नता समझ ली गई है।

अङ्गुष्ठोदरमध्ये तु यवो यस्य विराजते ।
उत्पन्नावधिभोगी स्यात्स नरः सुखमेधते ॥ ५१ ॥
मध्यमातर्जनीमूले यवो यस्य प्रदृश्यते ।
धनवान्सुखभोगी स्यात्पुत्रदारगृहादिमान् ॥ ५२ ॥

जिसके करतल में अंगूठे के मध्यभाग में जव का निशान हो वह जन्म पर्यंत भोगी तथा सुखी होता है । मध्यमा व तर्जनी अंगुली के मूल में जव का निशान हो तो वह धनी सुखभोगी, पुत्र, स्त्री व घरवाला होता है ॥५१-५२॥

इन रेखाओं की उद्गम स्थान पर विभिन्नता देखकर इस प्रकार शायद जार-जात माना गया है। पर उपर्युक्त विदेशी मत देखने से तथा प्रत्यक्ष अनुभव करने से ऐसा जान नहीं पड़ता। हाँ, यह कहा जा सकता है कि ऐसी स्थिति में उस बालक के जन्म समय उसके पिता माता में न पटती हो अथवा वे एक दूसरे से बहुत दूर हों। संभव है, पिता घर पर न हो, कहीं बाहर गया हो। हमारा यह कथन वैज्ञानिक मत से भी पुष्ट होता है। हथेली की रेखाएँ रक्तप्रवाह की धाराएँ हैं। प्रत्येक प्रधान रेखा मस्तिष्क प्रदेश के एक एक स्थल से एक विशेष संबंध रखती है, और उसी का परिणाम-स्वरूप उन रेखाओं का नामकरण है। पितृरेखा (आयुरेखा) तथा मातृरेखा (मस्तिष्क रेखा) एक विशेष प्रकार की विभिन्न धाराओं की प्रवाहिनी हैं। जब ये दोनों मिली होंगी तब उक्त दोनों धाराओं का प्रवाह मिलकर उसमें एक खास बात पैदा कर देता है। पर यदि दोनों अलग अलग हों तो उनमें अपने उद्गम स्थान में स्वतंत्र-प्रवाह-शक्ति है, अर्थात् वे स्वतंत्र रूप से अपनी अपनी क्रियाएँ करने में सफल हो सकती हैं। मस्तिष्क रेखा (मातृरेखा) स्वतंत्र प्रवाहिनी होने से उसमें स्वतंत्र विचार-विनिमय, स्वतंत्रता प्रियता तथा स्वावलंबन होना ही चाहिए। इसी प्रकार जीवनरेखा (पितृरेखा) स्वतंत्र होने से जीवनधारा की स्वतंत्रगति होनी चाहिए। मस्तिष्क का उस पर अधिकार न रहेगा। दोनों की स्वतंत्रता से मनमौजी होना और कभी कभी त्रुटि कर बैठना स्वाभाविक है। इससे यह ज्ञात हुआ कि जन्म समय उस व्यक्ति के माता पिता अलग अलग रहे हों। अब ज़रा ज्योतिष पर दृष्टि डालिए। आपको ज्ञात होगा कि कुछ नक्षत्र तथा ग्रह ऐसे हैं जो एक दूसरे के विरोधी हैं और कुछ मैत्री भाववाले हैं। वे नक्षत्र जो परस्पर विरोधसूचक हैं, यदि जन्म समय में आवे तो पिता-माता में अवश्य विरोध होता है अथवा पिता उस स्थान से अन्यत्र कहीं दूर पर होता है। इसका यह अर्थ नहीं कहा जा सकता कि वह उत्पन्न बालक जारजात है।'पिता-माता को उसके जन्म समय मनमुटाव रखने से जारजात का कथन सिद्ध नहीं होता। कुछ भी हो, यह एक विचारपूर्ण विषय है। इस पर अन्य-अन्य विद्वान् पंडितों का मत भी सर्वथा वांछनीय है। सम्पादक

अङ्गुष्ठोदरमध्ये तु रेखा यस्य यवाकृतिः ।
पद्मरेखा भवेद्यस्य स नरः सुखमेधते ॥ ५३ ॥
अङ्गुष्ठादरमध्ये तु कुण्डलं यस्य दृश्यते ।
भोज्यमुत्पाद्यते तस्य प्रचुरं च सुखं भवेत् ॥ ५४ ॥

जिसके करतल में अँगूठे के बीच यवाकार रेखा या कमल का निशान हो वह सुख पाता है । अँगूठे के बीच में कुण्डल का निशान हो तो उसे भोग मिलता है ॥ ५३–५४ ॥

दीक्षादानं यथाधर्मं पदवीसुखमेव च ।
विद्यामानोपमानं च अङ्गुल्यामूलसंस्थिताः ॥ ५५ ॥
कनिष्ठामूलसंयुक्ता त्रिरेखा यस्य दृश्यते ।
एकं युग्मं तृतीयं च चतुर्थं बाणसम्मितम् ।
युग्मं वापि पृथग्वापि विपुलं भोगदायकम् ॥ ५६ ॥

करतल में कनिष्ठा के मूलदेश में जितनी रेखाएँ हों उनका यह फल है कि एक रेखा हो तो वह दीक्षा देता है । दो रेखा हों तो दानी, तीन रेखाओं से धर्मात्मा, चार से चौधरी, पाँच से सुखी, छः से विद्वान, सात से मानी और आठ से साधारण जन होता है । जिसके करतल में कनिष्ठा के मूल से संयुक्त आयु-रेखा के वाम भाग में तीन रेखाएँ हों या एक, दो, तीन, चार व पाँच तथा दो ही रेखाएँ हों यानी जितनी रेखाएँ देखी जावें उतनी ही रमणियों के साथ वह विहार करता है । ऐसे ही यदि स्त्रियों के करतल में जितनी रेखाएँ हों उतने ही पुरुषों के साथ वे स्त्रियाँ भोग करती हैं ॥ ५५–५६ ॥(देखो चित्र ११ ज. ज.)

अङ्गुष्ठानां पृथग्रेखात्रितयं गण्यते पृथक् ।
रेखाद्वादशकं सौख्यं धनधान्यप्रदायकम् ॥ ५७ ॥
अङ्गुलीनां पृथग्रेखा गणने चेत्त्रयोदश ।
महादुःखं मनःक्लेशं सामुद्रवचनं यथा ॥ ५८ ॥

अँगूठे की रेखाओं को अलग कर अंगुलियों के पर्वों की तीनों स्थान

की रेखाएँ गिनी जावें और यदि गिनने में बारह रेखाएँ हों तो उसे सौख्य, धन व धान्य देती हैं। यदि तेरह हों तो वह महादुःख पाता है और यदि चौदह हों तो वह क्लेश भोगता है ॥ ५७–५८ ॥

रेखापञ्चदशे चौरः षोडशे द्यूतवञ्चकः।
पापी सप्तदशे ज्ञेयो धर्मात्माऽष्टादशे भवेत् ॥ ५९ ॥
ऊनविंशे भवेन्मान्यो गुणज्ञो लोकपूजितः।
तपस्वी विंशतौ ज्ञेयो महात्मा चैकविंशतौ ॥ ६० ॥

यदि पन्द्रह रेखाएँ हों तो वह चोर होता है। यदि सोलह हों तो जुआरी तथा छलिया होता है। यदि सत्रह हों तो पापी जानना चाहिए। यदि अट्ठारह हों तो धर्मात्मा होता है। यदि उन्नीस हों तो मान्य व गुणज्ञ तथा लोक में पूजित होता है। यदि बीस हों तो तपस्वी जानना चाहिए और यदि अंगुलियों के पोरों की रेखाएँ इक्कीस हों तो वह महात्मा होता है ॥ ५९–६० ॥

ताम्रैर्भूपो धनाढ्यश्च अङ्गुष्ठैः सयवैस्तथा।
अङ्गुष्ठमूलजैः पुत्री स्याद्दीर्घाङ्गुलिपर्वकः ॥ ६१ ॥
दीर्घायुः सुभगश्चैव सधनो विरलाङ्गुलिः।
घनाङ्गुलिश्च अधनस्तिस्रो रेखाश्च यस्य वै।
अङ्गुष्ठमूलगा रेखाः पुत्राश्च सुखदायकाः ॥ ६२ ॥

जिसके करतल में जव युक्त अँगूठा (देखो चित्र १२ ज.व.) ताम्रवर्ण हो वह धनशाली होता है। जिसके करतल में अंगुलियों की पोरें पड़ी हों वह अधिक पुत्रोंवाला होता है। जिसकी अंगुलियाँ विरली हों वह धनशाली, बड़भागी तथा दीर्घायु होता है। जिसकी अंगुलियाँ घनी हों और उनमें तीन २ रेखाएँ देखी जावें वह निर्धनी होता है। अँगूठे के मूल में बड़ी २ रेखाएँ पुत्रदायक व सुखदायक होती हैं ॥ ६१–६२ ॥

अङ्गुष्ठोदरमध्ये तु यवो यस्य विराजितः।
उन्नतं शोभनं तस्य शतं जीवति मानवः ॥ ६३ ॥

मध्यमायां यदि यवा दृश्यन्तेऽत्यन्तशोभनाः।
तदान्यसंचितं वित्तं प्राप्नोत्यङ्गुष्ठगे यवे ॥ ६४ ॥

जिसके करतल में अँगूठे के बीच में जव का निशान हो वह ज्ञान, ध्यान व मान आदि में ऊँचा होता तथा सौ बरस जाता है। जिसके करतल में मध्यमा व अँगूठे में जव के निशान हों वह दूसरे का जोड़ा हुआ धन पाता है ॥ ६३–६४ ॥

यस्याथ चक्रमङ्गुष्ठे यवः पद्मं च दृश्यते।
तदा पितामहादीनामर्जितं धनमाप्नुयात् ॥ ६५ ॥

जिसके अँगूठे में चक्र, जव या पद्म का निशान देखा जावे वह पितामहादिकों के जोड़े हुए धन को पाता है ॥ ६५ ॥

तर्जन्यामथ चक्रं च पितृद्वारा धनं लभेत्।
तेनैव विपरीतन्तु व्ययो भवति निश्चितम् ॥ ६६ ॥

जिसके करतल में तर्जनी के पहले पर्व में चक्र का निशान हो वह मित्रद्वारा वा पितृ द्वारा धन पाता है, और यदि तर्जनी में चक्र का निशान न हो तो उसके धनका खर्चा पितृद्वारा या मित्रद्वारा निश्चयकर होता है ॥ ६६ ॥

मध्यमायां स्थिते चक्रे देवद्वारा धनं लभेत्।
तेनैव विपरीतं तु व्ययो भवति निश्चितम् ॥ ६७ ॥
अनामिकायां चक्रे तु सर्वद्वारा धनं लभेत्।
तेनैव विपरीतं तु व्ययो भवति निश्चितम् ॥ ६८ ॥

जिसके करतल में मध्यमा की पहली पोर में चक्र का निशान हो वह देवद्वारा धन पाता है। यदि चक्र का निशान हो तो उसके धन का खर्चा देवद्वारा होता है। यदि अनामिका में चक्र का निशान हो तो सर्वजन द्वारा धन पाता है। यदि चक्र का निशान हो तो उसके धन का खर्चा सर्वजन द्वारा निश्चय कर होता है ॥ ६७–६८ ॥

कनिष्ठायां भवेच्चक्रं वाणिज्येन धनं लभेत्।
तेनैव विपरीतन्तु व्ययो भवति निश्चितम् ॥ ६९ ॥

अङ्गुष्ठे कुलिशं चिह्नं यस्य पाणितले भवेत् ।
तोरणं पुण्डरीकं च राज्यं तस्य भविष्यति ॥ ७० ॥

जिसके करतल में कनिष्ठा के पहले पर्व में चक्र का निशान हो वह बनियों के व्यापार से धन पाता है ; और यदि चक्र का निशान हो तो उसके धन का खर्चा वाणिज्य में निश्चय होता है । जिसके करतल में अँगूठे के बीच वज्र, तोरण व कमल का निशान हो उसे राज्य मिलता है ॥६९–७०॥

मत्स्येनैकेन चैश्वर्यं सहस्रं लाभसंपदम् ।
पद्मं शङ्खं विजानीयाद् व्यजनं चक्रमेव च ॥ ७१ ॥
पद्मे कोटिर्भवेच्छत्रे शङ्खे कोटिशतानि च ।
लक्षाधिपश्च व्यजने चक्रे राजा न संशयः ॥ ७२ ॥

जिसके करतल में एकमात्र मछली का निशान हो वह ऐश्वर्य पाता है । ऐसे ही पद्म, शङ्ख, पंखा और चक्र का निशान हो तो वह हजारों की संपत्ति पाता है । यदि छाता व पद्म का निशान हो तो वह 'कोटीश्वर' होता है । यदि शङ्ख का निशान हो तो वह 'शतकोटीश्वर' होता है । यदि पंखे का निशान हो तो वह 'लक्षेश्वर' होता है और यदि चक्र का निशान हो तो वह निस्सन्देह राजा होता है ॥ ७१–७२ ॥

समस्ताङ्गुलिकानान्तु कोष्ठरेखा भवेद्यदि ।
तदा स्वर्णाङ्गुरीं दिव्यां चिरं स लभते ध्रुवम् ॥ ७३ ॥
पञ्चभिः सव्यकरगा नृपाद्यैः पूरिताङ्गुलीः ।
नृपाधिकारमाप्नोति बहुलाभकरः पुमान् ॥ ७४ ॥

जिसके करतल में सारी अंगुलियों के बीच प्रकोष्ठ रेखा प्रतीत हो वह प्राणी बहुत समय तक दिव्य, स्वर्णमयी अँगूठी निश्चय कर पाता है । जिसके बायें हाथ की अंगुलियों में पाँच नृपाद्य चिह्न हों वह राजाधिकार को पाता है ॥ ७३–७४ ॥

अथ स्त्रीकरलक्षण

मृदुमध्योन्नतं रक्तं तलं पाण्योररन्ध्रकम् ।
प्रशस्तं शस्तरेखाढ्यमल्परेखं शुभप्रदम् ॥ १ ॥
विधवा बहुरेखेण विरेखेण दरिद्रिणी ।
भिक्षुकी सुशिराढ्येन नारीकरतलेन वै ॥ २ ॥

कोमल, बीच में ऊँचा, लालवर्ण, छिद्ररहित, प्रशस्त रेखायुक्त नारी का करतल प्रशस्त होता है । अल्परेखाओं से विभूषित हो तो शुभदायक होता है । जिसके करतल में बहुतसी रेखाएँ हों वह विधवा होती है । जिसके करतल में रेखाएँ ही न हों वह दरिद्रिणी होती है । जिसका करतल बहुतसी नसों से घिरा हो वह भीख माँगनेवाली होती है ॥ १–२ ॥ (बहुत अथवा कम रेखाओं पर हम पीछे लिख चुके हैं । सं०)

मत्स्येन सुभगा नारी स्वस्तिकेन च सुप्रजा ।
पद्मेन भूपतेः पत्नी जनयेद्भूपतिं सुतम् ॥ ३ ॥
चक्रवर्तिस्त्रियाः पाणौ नन्दावर्तप्रदक्षिणः ।
शंखातपत्रकमठा राजमातृत्वसूचकाः ॥ ४ ॥

जिसके करतल में मछली का चिह्न हो वह स्त्री बड़े भाग्यवाली होती है । जिसमें त्रिकोणाकार निशान हो वह अच्छी सन्तानोंवाली होती है । जिसके पद्म का निशान हो वह रानी तथा पृथ्वीपालक पुत्र की माता होती है । जिसके करतल में दक्षिणावर्त मण्डल हो वह चक्रवर्ती की रानी होती है । जिसके करतलमें शंख, छत्र और धनुप का निशान हो वह स्त्री राजकुमारों की माता कहाती है * ॥ ३–४ ॥

कृषीबलस्य पत्नी स्याच्छकटेन युगेन वा ।
चामराङ्कुशकोदण्डै राजपत्नी भवेद् ध्रुवम् ॥ ५ ॥

---

* ऐसे चिह्नों के संबंध में भी हम पीछे टिप्पणी लिख आए हैं ।—संपादक

अङ्गुष्ठमूलान्निर्गत्य रेखा याति कनिष्ठिकाम् ।
यदि स्यात्पतिहन्त्री सा दूरतस्तां त्यजेत्सुधीः ॥ ६ ॥

जिसके करतल में गाड़े व जुएँ की रेखा प्रतीत हो वह किसान की पत्नी होती है। यदि करतल में चमर, अंकुश और धनुष का निशान हो तो वह निश्चय कर रानी होती है। जिसके करतल में अँगूठे के मूल से निकलकर एक रेखा कनिष्ठा के समीप चली जावे वह स्त्री पति को मारनेवाली होती है, इसलिए पण्डितगण उसे दूर से ही त्याग करें ॥ ५—६ ॥ (देखो चित्र नं० १३ अ. ब.)

त्रिशूलासिगदाशक्तिदुन्दुभ्याकृतिरेखया ।
नितम्बिनी कीर्तिमती करेण पृथिवीतले ॥ ७ ॥

जिसके करतल में त्रिशूल, तलवार, गदा, शेल या नगाड़े के आकार की रेखा हो वह स्त्री बड़ी यशस्विनी होती है ॥ ७ ॥

वाजिकुञ्जरश्रीवृत्तयूपेषुयवतोमरैः ।
ध्वजचामरमालाभिः शैलकुण्डलवेदिभिः ॥ ८ ॥
शङ्खातपत्रपद्मैश्च मत्स्यस्वस्तिकसद्रथैः ।
लक्षणैरङ्कुशाद्यैश्च स्त्रियः स्यू राजवल्लभाः ॥ ९ ॥

जिनके करतल में घोड़ा, हाथी, बिल्ववृक्ष, यज्ञस्तम्भ, बाण, यव, गुर्ज, ध्वजा, चमर, माला, क्षुद्रपर्वत, कर्णभूषण, वेदी, शङ्ख, छाता, कमल, मछली, त्रिकोणाकाररेखा, उत्तम रथ और अंकुशादि के लक्षण हों वे स्त्रियाँ रानियाँ होती हैं ॥ ८—९ ॥

अल्पायुषे लघुच्छिन्ना दीर्घच्छिन्ना महायुषे ।
शुभं तु लक्षणं स्त्रीणां प्रोक्तं तु शुभमन्यथा ॥ १० ॥
अङ्कुशं कुण्डलं चक्रं यस्याः पाणितले भवेत् ।
पुत्रं प्रसूयते नारी नरेन्द्रं लभते पतिम् ॥ ११ ॥

यदि अंगुष्ठ के निचले भाग में छोटी २ रेखाएँ छिन्न भिन्न हों तो अल्पायु जानना। यदि बड़ी रेखाएँ छिन्नभिन्न हों तो दीर्घायु कहना। जिसके

करतल में अंकुश, कुण्डल और चक्र का निशान हो वह राजपति पाती तथा राजकुमार को उपजाती है ॥ १०–११ ॥

यस्याः पाणितले रेखाप्राकारं तोरणं भवेत् ।
अपि दासकुले जाता राज्ञीत्वमधिगच्छति ॥ १२ ॥
रक्ता व्यक्ता गभीरा च स्निग्धा पूर्णा च वर्तुला ।
कररेखाङ्गनायाः स्याच्छुभा भाग्यानुसारतः ॥ १३ ॥

जिसके करतल में प्राकार (घेर) व तोरण के आकार की रेखाएँ हों वह स्त्री यदि दासकुल में उपजी हो तो भी रानी होती है । अगर स्त्री की हस्त-रेखाएँ लाल, स्पष्ट, गभीर, चिकनी, पूर्ण तथा गोलाकार हों तो भाग्या-नुसार शुभदायक होती हैं ॥ १२–१३ ॥

तुलामानाकृतीरेखा वणिक्पत्नीत्वहेतुका ।
गजवाजिवृषाकारा करे वामे मृगीदृशाम् ॥ १४ ॥
पाणिपादतले रेखा ताम्रवर्णा नखानि च ।
जीववत्सा चिरंजीविपुत्रपौत्रसमन्विता ॥ १५ ॥

यदि मृगनयनियों के करतल में तराजू तथा दण्डाकृति रेखाएँ हों और बायें करतल में हाथी, घोड़ा तथा बैल के आकार की रेखाएँ हों तो वे स्त्रियाँ बनियों की रमणियाँ होती हैं । जिसके करतल व पादतल में ताँबे के वर्ण की रेखा व नख हों वह स्त्री चिरजीवी व पुत्र-पौत्रों से युक्त होती है ॥ १४–१५ ॥

रेखा प्रासादवज्राभा सूते तीर्थकरं सुतम् ।
कृषीबलस्य पत्नी स्याच्छकटेन मृगेन वा ॥ १६ ॥
यस्याः करतले पद्मं पूर्णकुम्भं तथैव च ।
राजपत्नीत्वमाप्नोति पुत्रपौत्रैः प्रवर्तते ॥ १७ ॥

जिसके करतल में देवमन्दिर, राजमहल या वज्राकार निशान हों वह तीर्थकारी पुत्र की मा होती है । जिसके करतल में गाड़ी व हिरन का निशान हो वह किसान की पत्नी होती है । जिसके करतल में पद्म व पूर्ण कुम्भ का निशान हो वह राजपत्नी होती और पुत्र पौत्रों को पाती है ॥ १६–१७ ॥

वृद्धामूले च या रेखा भ्रातृभग्नीप्रदायिका ।
कृष्णाः सूक्ष्माः क्रमेणैव हीनाश्छिद्रप्रदायिकाः ॥१८॥

अँगूठे के मूल में जो रेखा हो वह भाई व बहिनों की द्योतक है । काली व क्रम से पतली रेखा भाई व भगिनियों को विनाशती हैं ॥ १८ ॥

अङ्गुष्ठमूलाद्यदि वै तु रेखा स्थूला तथा चक्रकृता च नारी ।
अवारिता षण्डप्रचण्डता च परान्विता शून्यहृदा च खण्डिता ॥

जिसके करतल में अँगूठे के मूल से मध्यभाग पर्यन्त चक्राकार मोटी रेखा हो वह कुलटा, नष्ट स्वभाववाली, परपुरुषों में आसक्त तथा स्वाधीन रहती है ॥ १९ ॥

यस्याः करतले पादे चोर्ध्वरेखा च दृश्यते ।
यदि नीचकुले जाता राजपत्नी भवेद्ध्रुवम् ॥ २० ॥

जिसके करतल या पादतल में ऊर्ध्वरेखा हो वह यदि नीच कुल में उपजी हो तो भी निश्चय कर राजपत्नी होती है ॥ २० ॥ (देखो क. ख. चित्र १३)

अनामिका भवेच्छिन्ना सा भवेत्कलहप्रिया ।
मध्यमा च भवेच्छिन्ना सा नारी कुलटा स्मृता ॥२१॥
तर्जनी च भवेच्छिन्ना विधवा सा प्रकीर्तिता ।
कनिष्ठा च भवेच्छिन्ना सा नारी दुःखभागिनी ॥२२॥

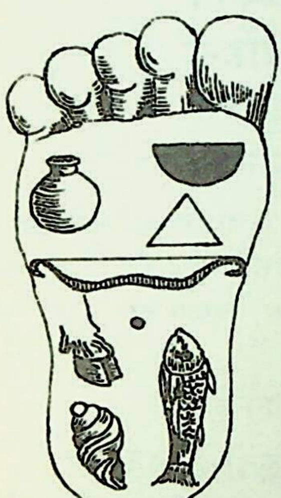
जिसके करतल में अनामिकास्थित रेखा छिन्नभिन्न प्रतीत हो तो वह बड़ी लड़ाका होती है । मध्यमास्थित रेखा कटी सी हो तो वह व्यभिचारिणी होती है । यदि तर्जनी स्थित रेखा टूटी सी हो तो वह विधवा कहाती है ; और यदि कनिष्ठास्थित रेखा भिन्न सी प्रतीत हो तो वह दुःखभागिनी होती है ॥ २१–२२ ॥

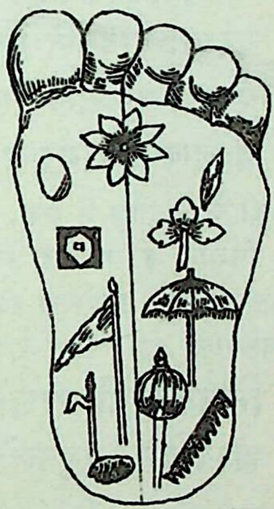
अथ नरनारीणां पदाद्यङ्गादिलक्षणं व्याख्यायते

चन्द्रार्धं कलशं त्रिकोणधनुषी खं गोष्पदं प्रोष्ठिकं
शङ्खं सव्यपदेऽथ दक्षिणपदे कोणाष्टकं स्वस्तिकम् ।

चक्रं छत्रयवाङ्कुशं ध्वजपवीजम्बूर्ध्वरेखाम्बुजं
बिभ्राणो हरिरूनविंशति महालक्ष्म्यार्चिताङ्घ्रिर्भवेत् २३॥

जिसके वामपाद में अर्धचन्द्र, कलश, त्रिकोण, धनु, शून्य, गोपद, मत्स्य और शङ्ख ये आठ चिह्न हों और दक्षिणपाद में अष्टकोण, स्वस्तिक, चक्र, छाता, जव, अङ्कुश, ध्वज, वज्र, जामुन, ऊर्ध्वरेखा और कमल ये ग्यारह चिह्न प्रतीत हों वह महालक्ष्मीसेवित चरणोंवाला होता है, जैसे कि इन्हीं उन्नीस लक्षणों युक्त श्रीहरि श्रीलक्ष्मीजी द्वारा पूजित चरणोंवाले हैं ॥ २३ ॥





यस्य पादतले पद्मं चक्रं वाप्यथ तोरणम् ।
अङ्कुशं कुलिशं वापि स राजा भवति ध्रुवम् ॥ २४ ॥

जिसके पादतल में पद्म, चक्र, तोरण, अंकुश और वज्र का निशान हो वह निश्चय राजा होता है ॥ २४ ॥

यस्य वृद्धाङ्गुलेर्मूलात्पादे रेखा च दृश्यते ।
स राज्यं लभते नूनं भुङ्क्ते निष्कण्टकां महीम् ॥ २५ ॥
असमं मूलदेशे तु वज्रं यस्य तु दृश्यते ।

अविच्छिन्नं पदं चैव कुलश्रेष्ठो भवेन्नरः ।
अपरं पर्वरेखायां राज्यं च परिकीर्तितम् ॥ २६ ॥

जिसके पैर में ऊर्ध्वरेखा अँगूठे के मूल से चलकर पादतल में फैली दिखे वह निश्चय ही राज्य पाता है। जिसके पादमूल में असमानाकार तथा अविच्छिन्न वज्र का चिह्न हो वह अपने वंश में प्रधान होता है। यदि पैर के पोरों की रेखाओं के बीच दूसरी रेखा हो तो उसे राज्य मिलता है ॥२५–२६॥

स्त्रीपदतललक्षण

चक्रस्वस्तिकशङ्खाब्जध्वजमीनातपत्रवत् ।
यस्याः पादतले रेखा सा भवेत्क्षितिपाङ्गना ॥ २७ ॥
यस्याः पादतले रेखा सा भवेत्क्षितिपाङ्गना ॥
भवेदखण्डभोगा च या मध्याङ्गुलिसंगता ॥ २८ ॥

स्त्री के पादतल में चक्र, स्वस्तिक, शङ्ख, पद्म, ध्वजा, मछली और छाता का निशान हो तो वह रानी होती है। जिसके पादतल में मध्यमा अंगुली पर्यन्त ऊर्ध्वरेखा हो वह राजरानी तथा अखण्डित भोगों को भोगनेवाली हो ॥ २७–२८ ॥

निगूढगुल्फौ चरणौ पद्मकान्तितलौ शुभौ ।
अस्वेदिनौ मृदुतलौ मत्स्याङ्कमकराङ्कितौ ॥ २९ ॥
वज्राब्जहलचिह्नं च दास्याः पादे सदा स्थितम् ।
राजपत्नी तु सा ज्ञेया राजभोगप्रदायकम् ॥ ३० ॥

छिपे गण्ठोंवाले, पद्मकान्ति समान तलवाले, तथा पसीने से रहित, कोमल तलवेवाले एवं मछली व मगर के चिह्न से अङ्कित चरण स्त्री के लिए शुभदायक होते हैं। यदि दासी के पादतल में वज्र, कमल और हल का निशान हो तो भी उसे राजपत्नी जानना चाहिए। पूर्वोक्त वज्रादि चिह्न उस स्त्री के लिए राजभोगदायक होते हैं ॥ २९–३० ॥

स्निग्धोन्नतौ ताम्रनखौ नार्याश्च चरणौ शुभौ ।
मत्स्याङ्कुशाब्जचिह्नौ च चक्रलाङ्गललक्षितौ ॥ ३१ ॥

चिकने, ऊँचे तथा ताम्रसरीखे नखोंवाले चरण और जिनमें मछली, अङ्कुश, कमल, चक्र और हल के निशान हों वे स्त्री को शुभदायक होते हैं ॥३१॥

अवेदखण्डभोगायोर्ध्वा मध्याङ्गुलिसंगताः ।
रेखाखुसर्पकाकाभा दुःखदारिद्र्यसूचकाः ॥ ३२ ॥
स्निग्धाः समुन्नतास्ताम्रा वृत्ताः पादनखाः शुभाः ।
वाणिज्यसूचका स्त्रीणां पादपृष्ठसमुन्नतिः ॥ ३३ ॥
प्रदेशिनी भवेद्यस्या अङ्गुष्ठादतिरेकिणी ।
कन्यैव कुलटा सा स्यादेष एव विनिश्चयः ॥ ३४ ॥

अगर पादतल में ऊर्ध्वरेखा मध्यमा अँगुली में मिली हो तो वह अखण्ड भोग देती है । यदि मूषक, सर्प और कौए के समान रेखाएँ हों तो वे दुःख व दारिद्र्य देती हैं । अगर पैरों के नख चिकने, ऊँचे, ताम्रवर्ण व गोलाकार हों तो शुभदायक होते हैं । स्त्रियों का पादपीठ ऊँचा हो तो वह वाणिज्य सूचक है । जिसके पैर की तर्जनी अंगुली अँगूठे से बड़ी हो वह स्त्री कन्या की दशा में ही व्यभिचारिणी होजाती है ॥ ३२–३४ ॥

राज्ञ्याः स्निग्धौ समौ पादौ तलौ ताम्रनखौ तथा ।
श्लिष्टाङ्गुली चोन्नताग्रौ तां प्राप्य नृपतिर्भवेत् ॥ ३५ ॥
समपार्ष्णी शुभा नारी पृथुपार्ष्णी सुदुर्भगा ।
कुलटोन्नतपार्ष्णी स्याद्दीर्घपार्ष्णी च दुःखभाक् ॥ ३६ ॥

जिसके पैर चिकने तथा समानाकार प्रतीत हों, पैर के तलवे तथा नख ताम्र सरीखे लालवर्ण हों, अंगुलियाँ सटी हुई हों, उनके अग्रभाग ऊँचे से हों, ऐसी स्त्री रानी होती है । समानाकार एँड़ी स्त्री को शुभदायक होती है । जिसकी एँड़ी चकलीसी हों वह बुरे भाग्यवाली होती है । जिसकी एँड़ी ऊँचीसी हों वह व्यभिचारिणी होती है । जिसकी एँड़ी दीर्घाकार हो वह जन्मपर्यन्त दुःख ही भोगती है ॥ ३५–३६ ॥

यस्याः संचरमाणाया भूमिशब्दः प्रजायते ।
सा नारी विधवा ज्ञेया सामुद्रवचनं यथा ॥ ३७ ॥

यस्याः संस्पृशते भूमिमङ्गुली न कनिष्ठिका ।
भर्तारं प्रथमं हन्ति द्वितीयं नैव विन्दति ॥ ३८ ॥

जिसके चलने में पृथ्वी में धमधम शब्द हो उसे विधवा जानना। जिसके पैर की कनिष्ठा अंगुली भूमि को न छूती हो वह स्त्री प्रथम पति को मारती और दूसरे को पाती है ॥ ३७–३८ ॥

यस्यास्त्वनामिकाङ्गुल्यौ पृथिव्यां नोपसर्पतः ।
पतिं नाशयते क्षिप्रं सा रक्ता चिरजीविनी ॥ ३९ ॥
यस्या गमनमात्रेण भूमौ कम्पः प्रजायते ।
बह्वाशिनीं प्रलोभां च तां नारीं परिवर्जयेत् ॥ ४० ॥

जिसके दोनों पैर की अनामिका अंगुलियाँ भूमि को न छूती हों वह स्त्री शीघ्र स्वपति को मारती है। यदि अनामिकाएँ लालवर्ण हों तो वह स्त्री चिरजीविनी होती है। जिसके चलने से पृथ्वी हिलने लगे वह बहुत भोजन करती तथा महालोभिनी होती है ॥ ३९–४० ॥

चरणानामिका यस्याः क्षितिं न स्पृशते यदि ।
द्वितीया च तृतीया वा सा कन्या सुखवर्जिता ॥ ४१ ॥
कनिष्ठिकानामिका वा यस्या न स्पृशते महीम् ।
अङ्गुष्ठं वागतातीता तर्जनी कुलटा हि सा ॥ ४२ ॥

जिसके पैर की अनामिका अंगुली भूमि स्पर्श न करती हो अथवा तर्जनी व मध्यमा अंगुली भूमि को न छूती हो वह कन्या-सुखरहित होती है। जिसके पैर की कनिष्ठिका व अनामिका अंगुली भूमि को न छूती हो अथवा जिसके पैर की तर्जनी अंगुली अँगूठे पर चढ़ी हो अथवा आगे बढ़ी हो वह स्त्री व्यभिचारिणी होती है ॥ ४१–४२ ॥

यस्या अनामिकाङ्गुष्ठौ पृथिव्यां नैव तिष्ठतः ।
पतिं मारयते सापि स्वतन्त्रेणैव वर्तते ॥ ४३ ॥
स्त्रीणां पादतलं स्निग्धं मांसलं मृदुलं समम् ।
अस्वेदमुष्णमरुणं बहुभोगोचितं स्मृतम् ॥ ४४ ॥

जिसके पैर की अनामिका तथा अँगूठा पृथिवी में न टिकते हों वह स्त्री स्वपति को मार अपनी इच्छानुसार वर्तती है । चिकने, मांसल, कोमल, समानाकार, पसीनारहित, गरम तथा लालवर्ण स्त्रियों के पैर के तलवे घने भोगों के लिए कहाते हैं ॥ ४३–४४ ॥

रूक्षं विवर्णं परुषं खण्डितं प्रतिबिम्बकम् ।
सूर्पाकारं विशुष्कं च दुःखदौर्भाग्यसूचकम् ॥ ४५ ॥
उन्नतो मांसलोऽङ्गुष्ठो वर्तुलोऽतुलभोगदः ।
वक्रो ह्रस्वश्च चिपिटः सुखसौभाग्यभञ्जकः ॥ ४६ ॥

स्त्री के पैर का तलवा रूखा, विवर्ण, कठोर, खण्डित प्रतिबिम्बवाला, सूप के आकार का तथा सूखा सा प्रतीत हो तो वह दुःख दौर्भाग्य का द्योतक है । अँगूठा ऊँचा व मांसल तथा गोलाकार हो तो अतुल भोग देता है । जो अँगूठा टेढ़ा व छोटा सा तथा चपटा प्रतीत हो वह सुख व सौभाग्य को विनाशता है ॥ ४५–४६ ॥

विधवा विपुलेन स्याद्दीर्घाङ्गुष्ठेन दुर्भगा ।
मृदवोऽङ्गुलयः शस्ता घना वृत्ताः समुन्नताः ॥ ४७ ॥
दीर्घाङ्गुलीभिः कुलटा कृशाभिरतिनिर्धना ।
ह्रस्वायुष्या च ह्रस्वाभिर्भुग्नाभिर्भुग्नवर्तिनी ॥ ४८ ॥

जिसका अँगूठा चौड़ा हो वह स्त्री विधवा होती है । जिसका अँगूठा लम्बा हो वह बुरे भाग्यवाली होती है । यदि अंगुलियाँ घनी, गोलाकार, ऊँची तथा कोमल हों तो शुभदायक होती हैं । जिसकी अंगुलियाँ लम्बी-सी हों वह व्यभिचारिणी होती है । जिसकी अंगुलियाँ पतली हों वह निर्धन होती है । जिसकी अंगुलियाँ छोटीसी हों वह थोड़ी उम्रवाली होती है । जिसकी अंगुलियाँ टेढ़ी हों वह टेढ़े वर्तावबाली होती है॥४७–४८॥

चिपिटाभिर्भवेद्दासी विरलाभिर्दरिद्रिणी ।
परस्परं समारूढाः पादाङ्गुल्यो भवन्ति हि ॥
हत्वा बहूनपि पतीन्परप्रेष्या तदा भवेत् ॥ ४९ ॥

दरिद्रा मध्यनम्रेण शिरालेन सदाध्वगा ।
रोमाढ्येन भवेद्दासी निर्मांसेन च दुर्भगा ॥ ५० ॥

जिसके पैर की अंगुलियाँ चपटी हों वह दासी होती है । यदि अंगुलियाँ बिरली हों तो दरिद्रिणी होती है । यदि पैरों की अंगुलियाँ परस्पर चढ़ी हों तो वह स्त्री बहुत से पतियों को मारकर पराई दासी होती है । जिसका पैर बीच में लचा सा प्रतीत हो वह दरिद्रा होती है । जिसका पैर नसों से घिरा हो वह स्त्री सदैव मार्गगामिनी होती है । जिसका पैर रोमयुक्त हो वह दासी होती है । जिसका पैर निर्मांस हो वह बुरे भाग्यवाली होती है ॥ ४९–५० ॥

गूढौ गुल्फौ शिवायोक्तावशिरालौ सुवर्तुलौ ।
सुपुटौ शिथिलौ दृश्यौ स्यातां दौर्भाग्यसूचकौ ॥५१॥
यस्या न स्पृशते भूमिमङ्गुलिश्च कनिष्ठिका ।
भर्तारं प्रथमं हन्ति मृतो भवति पुत्रकः ॥ ५२ ॥

अगर पैर के गण्ठे (टखने) नसों से रहित, गोलाकार, अच्छे पुटोंवाले तथा छिपे से हों तो कल्याणदायक होते हैं । जिसके गण्ठे ढाले से देख पड़ें तो बुरे भाग्य को बताते हैं । जिसके पैर की कनिष्ठा अंगुली भूमि को न छूती हो वह पहले पति को मार डालती है और पीछे से उसका पुत्र भी मर जाता है ॥ ५१–५२ ॥ (यह कथन हमने प्रत्यक्ष देखा है । संपादक)

नखारुणाश्च या नार्यो भोगिन्यः सुखसंयुताः ।
श्यामनख्यः स्त्रियो या वै कुशीलाः पापसंगताः ॥५३॥
श्वेतनख्यः स्त्रियो या वै महादुःखसमन्विताः ।
पीतनख्यःप्रवासिन्यः पापिन्यश्च धनोज्झिताः॥५४॥
हरिन्नख्यो हतधना दुराचारपरायणाः ।
सुखसन्तानरहिताः सामुद्रेण यथोदितम् ॥ ५५ ॥

जिनके नख रक्तवर्ण हों वे स्त्रियाँ भोगिनी तथा पुत्रपौत्रादि सुखों से संयुत होती हैं । जिनके नख काले हों वे बुरे स्वभाववाली, पापकर्म में

परायण रहती हैं। जिनके नख सफ़ेद हों वे बड़े दुःखों से संयुक्त होती हैं। जिनके नख पीले हों वे परदर्शिनी, पापिनी तथा निर्धन रहती हैं। जिनके नख हरे हों वे दुराचारों में परायण तथा सुख व सन्तानों से रहित होती हैं॥ ५३—५५॥

ललाटरेखालक्षण

ललाटे यस्य दृश्यन्ते तिस्रो रेखाः समाहिताः।
सुखी पुत्रसमायुक्तः स षष्टिं जीवते नरः॥ ५६॥

जिसके ललाट में तीन रेखा अच्छिन्न हों वह सुखी, पुत्रों से संयुत तथा साठवर्ष पर्यन्त जीवित रहता है॥ ५६॥*

चत्वारिंशच्च वर्षाणि द्विरेखादर्शनान्नरः।
विंशत्यब्दमेकरेखा आकर्णा च शतायुषः॥ ५७॥
सप्तत्यायुर्द्विरेखे तु षष्ट्यायुस्तिसृभिर्भवेत्।
व्यक्ताव्यक्ताभिरेखाभिर्विंशत्यायुर्भवेन्नरः॥ ५८॥

जिसके ललाट में दो रेखाएँ दिखें वह चालीस वर्ष पर्यन्त जीता है। जिसके ललाट में एक रेखामात्र हो वह बीस वर्ष पर्यन्त जीता है। जिसके ललाट में एक रेखा कानों तक चली गई हो वह सौ वर्ष तक जीता है। जिसके ललाट में दो रेखाएँ हों वह सत्तर वर्ष पर्यन्त जीता है। जिसके ललाट में तीन रेखाएँ हों वह साठ वर्ष पर्यन्त जीता है। जिसके ललाट में व्यक्त अथवा अव्यक्त बहुतसी रेखाए हों वह बीस वर्ष पर्यन्त जीता है॥ ५७—५८॥

चत्वारिंशच्च वर्षाणि हीनरेखस्तु जीवति।
भिन्नाभिश्चैव रेखाभिरपमृत्युर्नरस्य हि॥ ५९॥
त्रिशूलं बडिशं वापि ललाटे यस्य दृश्यते।
धनपुत्रसमायुक्तस्स जीवेच्छरदःशतम्॥ ६०॥

जिसके ललाट में रेखाएँ ही न हों वह चालीस वर्ष तक जीता है। जिसके ललाट में छिन्न-भिन्न रेखाएँ हों वह अपमृत्यु से मरता है। जिसके

---

* आगे चलकर इस विषय पर विशेषरूप से कहा गया है। संपादक

ललाट में त्रिशूल व मछली पकड़नेवाली वंसी का निशान हो वह धन व पुत्रों से संयुक्त होता और सौ वर्ष पर्यन्त जीता है ॥ ५९–६० ॥

उन्नतैर्विपुलैः शङ्खैर्ललाटैर्विषमैस्तथा ।
निर्धना धनवन्तश्च अर्धेन्दुसदृशैर्नराः ॥ ६१ ॥
आचार्याः शुक्तिविशालैः शिरालैः पापकारिणः ।
उन्नताभिः शिराभिश्च स्वस्तिकाभिर्धनेश्वराः ॥६२॥

जिनके ललाट ऊँचे, विशाल, शङ्खाकार, विषम तथा अर्धचन्द्राकार हों वे निर्धनी होकर धनवान् होते हैं। जिनके ललाट सीपियों के निशानों से विशाल प्रतीत हों वे आचार्य (अध्यापक) होते हैं। जिनके ललाट नसों से व्याप्त हों वे पापकारी होते हैं। जिनके ललाट में ऊँची नसें हों अथवा स्वस्तिक (त्रिकोणाकार) निशान दिखें वे धनेश्वर होते हैं॥६१–६२॥

निम्नैर्ललाटैर्वधार्हाः क्रूरकर्मरतास्तथा ।
संवृतैश्च ललाटैश्च कृपणा उन्नतैर्नृपाः ॥ ६३ ॥
ललाटोपसृतास्तिस्रो रेखाः स्युः शतवर्षिणाम् ।
नृपत्वं स्याच्चतसृभिरायुः पञ्चनवत्यथ ॥ ६४ ॥

जिनके ललाट निचले हों वे वध योग्य होते और क्रूरकर्मों में परायण रहते हैं। जिनके ललाट गोलाकार हों वे कृपण होते हैं। जिनके ललाट ऊँचे से हों वे राजा होते हैं। जिनके ललाट में तीन रेखाएँ हों वे सौ वर्ष पर्यन्त जीते हैं। जिनके ललाट में चार रेखाएँ हों वे राजा होते और पंचानवे वर्ष पर्यन्त जीते हैं ॥ ६३–६४ ॥

केशान्तोपगताभिश्च अशीत्यायुर्नरो भवेत् ।
नवतिः स्यादरेखाभिर्विच्छिन्नाभिश्च पुंश्चलः ॥६५॥
पञ्चभिः सप्ततिः षड्भिः पञ्चाशद्वक्रैर्भिस्तथा ।
चत्वारिंशच्च रक्ताभिस्त्रिंशद्भूतलगामिभिः ।
विंशतिर्वामवक्राभिरायुः क्षुद्राभिरल्पकम् ॥ ६६ ॥

जिसके ललाट में रेखाएँ विस्तीर्ण हों तथा केशोंपर्यन्त चली गई हों वह

अस्सी वर्ष की उमरवाला होता है। जिसके ललाट में रेखा ही न हों वह नव्वे वर्ष की उमरवाला होता है। जिसके ललाट में रेखाएँ छिन्नभिन्न हों वह व्यभिचारी होता है। जिसके ललाट में पाँच रेखाएँ हों वह सत्तर वर्ष पर्यन्त जीता है। जिसके ललाट में छः, सात, आठ या बहुतसी रेखाएँ हों वह पचास वर्ष पर्यन्त जीता है। जिसके ललाट में रेखाएँ रक्तवर्ण हों वह चालीस वर्ष पर्यन्त जीता है। जिसके ललाट में रेखा भौंहों तक हों वह तीस वर्ष पर्यन्त जीता है। जिसके ललाट में रेखाएँ बाईं तरफ़ टेढीसी हों वह बीस वर्ष की आयु पाता है। जिसके ललाट में टूटी-फूटी छोटीसी रेखाएँ हों वह अल्पायु होता है ॥ ६५–६६ ॥

ललाटे दृश्यते यस्य वक्ररेखाचतुष्टयम् ।
अशीत्यायुः समाप्नोति पञ्चरेखाः शतं समाः ॥ ६७ ॥
यस्योन्नतं ललाटं च ताम्रवर्णं च दृश्यते ।
रेखाहीनं च रूक्षं च स चोन्मत्तो महीं भ्रमेत् ॥ ६८ ॥

जिसके ललाट में चार टेढी रेखाएँ हों वह अस्सी वर्ष की आयु पाता है। जिसके ललाट में पाँच रेखाएँ हों वह सौ वर्ष की आयु पाता है। जिसका ललाट ऊँचा, ताम्रवर्णवाला दिखे अथवा रेखाहीन, रूखासा हो वह पागल होकर पृथ्वी में घूमता फिरता है ॥ ६७–६८ ॥

शुभमर्धेन्दुसंस्थानमतुङ्गं स्यादलोमशम् ।
नृपतीनां भवेच्चिह्नं ललाटे शुभदर्शनम् ॥ ६९ ॥
उन्नतेन ललाटेन धनाढ्यो जायते नरः ।
विषमेन ललाटेन दुःखितो दुर्जनो नरः ।
ललाटे चार्धचन्द्राद्यैर्जायते पृथिवीपतिः ॥ ७० ॥

जिनके ललाट में उच्चतारहित, लोमविहीन, शुभ दर्शनवाला, अर्धचन्द्राकार चिह्न चमकता हो वे राजा होते हैं। जिसका ललाट ऊँचासा हो वह धनवान् होता है। जिसका ललाट विषम (कहीं ऊँचा व कहीं नीचा) हो वह दुर्जन होता और दुःखित रहता है। जिसके ललाट में अर्धचन्द्राकार आदि निशान हों वह पृथ्वीपालक होता है ॥ ६९–७० ॥

त्रिशूलं कुलिशं चापं ललाटे यस्य दृश्यते ।
ईश्वरं तं विजानीयात्प्रमदाजनवल्लभम् ॥ ७१ ॥
रेखाः पञ्चललाटस्थाः समाः कर्णान्तलोचनः ।
भवेत्तं यस्य गंभीरं तं विद्यात्सफलायुषम् ॥ ७२ ॥

जिसके ललाट में त्रिशूल, वज्र व धनुष का निशान हो उसे सबका स्वामी जानना चाहिए । वह प्रमदाओं का प्यारा होता है । जिसके ललाट में समानाकार पांच रेखाएँ हों तथा दोनों लोचन कानपर्यन्त चलते हों उसे सफल आयुवाला जानना चाहिए ॥ ७१–७२ ॥

रेखाचतुष्टयं यस्य ललाटे च प्रदृश्यते ।
चिरायुश्चापि विद्वांश्च सुखभोगादिभिर्युतः ॥ ७३ ॥
पञ्चरेखा भवेद्यस्य सुतसौख्यस्य कारणम् ।
हीनायुश्च त्रिरेखायां रेखैकेन नृपो भवेत् ॥ ७४ ॥

जिसके ललाट में चार रेखाएँ हों वह चिरजीवी, विद्वान्, सुखी, भोगी तथा सम्पत्तिशाली होता है । जिसके ललाट में पाँच रेखाएँ हों वह पुत्र-पौत्रादि से संपन्न तथा सुखी रहता है । जिसके ललाट में तीन रेखाएँ हों वह आयुहीन होता है । जिसके ललाट में एक रेखा हो वह राजा होता है ॥ ७३ - ७४ ॥

विपुलेन ललाटेन धनाढ्यो जायते नरः ।
अल्पेन च ललाटेन चाल्पायुर्जायते नरः ।
खरक्रयकरो नित्यं प्राप्नोति वधबन्धनम् ॥ ७५ ॥

जिसका ललाट विशाल हो वह धनवान् होता है । जिसका ललाट छोटासा हो वह अल्पायु होता है और गर्दभादि के क्रय-विक्रय द्वारा अपना जीवननिर्वाह करता तथा वध व बन्धन पाता है ॥ ७५ ॥

ललाटे दृश्यते यस्य समरेखाचतुष्टयम् ।
ग्रीवारेखाः पञ्च यस्य शुभं तस्य विनिर्दिशेत् ॥ ७६ ॥

दृश्यन्ते भालगा रेखाश्चतस्रः पाण्डुरूपिकाः।
अविच्छिन्ना विवर्णास्स्युरशीत्यायुः प्रकीर्तितः॥ ७७ ॥

जिसके ललाट में चार रेखाएँ समानाकार हों, जिसकी ग्रीवा में पाँच रेखाएँ हों उसे शुभ कहना। जिसके ललाट में चार रेखाएँ पीली, अविच्छिन्न तथा मैलीसी हों वह अस्सी वर्ष की उमरवाला होता है ॥ ७६–७७ ॥

स्त्रीललाटलक्षण

भालगेन त्रिशूलेन निर्मितेन स्वयंभुवा।
नितम्बिनीसहस्राणां स्वामित्वं योषिदाप्नुयात् ॥ ७८ ॥

जिसके ललाट में त्रिशूल का निशान हो उस स्त्री की हजारों स्त्रियाँ हाथ जोड़े हुए सेवा करती और आज्ञा मानती हैं ॥ ७८ ॥

एकरेखा भवेद्यस्या ललाटे शोभना भवेत्।
श्रीवत्सं स्वस्तिकं चैव ललाटे दृश्यते सदा ॥ ७९ ॥
प्रलम्बिनि ललाटे तु देवरं हन्ति चाङ्गना।
स्मिते कूपे गण्डयोश्च सा ध्रुवं व्यभिचारिणी ॥ ८० ॥

ललाट में एक रेखा मात्र अथवा श्रीवत्स या स्वस्तिक (त्रिकोणाकार) निशान सदैव शुभदायक होता है। जिसका ललाट लम्बा हो वह स्त्री निश्चय देवर का विनाशती है। जिसके हँसने पर गालों में गढ़े से देखे जायँ वह स्त्री निश्चय व्यभिचारिणी होती है ॥ ७९–८० ॥

ललाटे दृश्यते यस्यास्त्रिशूलं कृष्णपिङ्गलम्।
सा पञ्च जनयेत्पुत्रान्धनधान्यं विवर्धयेत् ॥ ८१ ॥
न पृथू बालेन्दुनिभे भ्रुवौ चाथ ललाटकम्।
शुभमर्धेन्दुसंस्थानमतुङ्गं स्यादलोमकम् ॥ ८२ ॥

जिसके ललाट में काला या पीला त्रिशूलाकार निशान हो वह स्त्री पाँच पुत्रों को उपजाती, धन-धान्य को बढ़ाती है। जिसकी भौंहें चौड़ी न हों पर बालचन्द्र के समान हों, जिसका उच्चतारहित, लोमविहीन, अर्धचन्द्राकार ललाट हो, तो शुभदायक होता है ॥ ८१–८२ ॥

भालः शिराविरहितो निर्लोमार्धेन्दुसन्निभः ।
अनिम्नस्त्र्यंगुलो नार्याः सौभाग्यारोग्यकारणम् ॥ ८३ ॥
व्यक्तस्वस्तिकरेखं च ललाटं राज्यसम्पदे ।
रोमशेन शिरालेन प्रांशुना रोगिणी स्मृता ॥ ८४ ॥

जिसका ललाट नसों से रहित, लोमविहीन, अर्धचन्द्राकार हो, गहरा न हो, तथा तीन अङ्गुल हो वह स्त्री सुहागिन होती और आरोग्य रहती है। जिसके ललाट में स्वस्तिक (त्रिकोणाकार) रेखा विशेषतः हों वह स्त्री रानी होती तथा संपदा को भोगती है। जिसका ललाट रोमों से संयुक्त, नसों से घिरा हुआ, ऊँचासा प्रतीत हो वह रोगिणी कही जाती है यानी उस स्त्री को हमेशा रोग ही घेरे रहता है ॥ ८३–८४ ॥

ललाट में सप्तस्वरविचार

श्रुतिभ्यः स्युः स्वराः षड्जर्षभगान्धारमध्यमाः।
पञ्चमो धैवतश्चाथ निषाद इति सप्त ते ॥ १ ॥

कानों में सुनाई देनेवाले सात स्वर होते हैं, जिनमें पहला षड्ज, दूसरा ऋषभ, तीसरा गान्धार, चौथा मध्यम, पाँचवाँ पञ्चम, छठा धैवत और सातवाँ निषाद कहाता है। पहले 'षड्ज' की व्याख्या करते हैं—"नासा कण्ठमुरस्तालु जिह्वा दन्तांश्च संस्पृशन्। षड्भ्यः संजायते यस्मात्तस्मात्षड्ज इति स्मृतः" अर्थात् नाक, कण्ठ, वक्षःस्थल, तालु, जिह्वा और दाँत इनको स्पर्श करता हुआ जो छहों से पैदा होता है उसे षड्ज कहते हैं। "ऋषति बलीवर्दस्वरसादृश्यं गच्छतीति ऋषभः" जो बैल के स्वर के समान हो उसे 'ऋषभ' कहते हैं। "गन्धारदेशे भवः गान्धारः" जो गन्धार देश में हुआ है उसे 'गान्धार' कहते हैं। "तद्वदेवोत्थितो वायुरुरःकण्ठसमाहतः। नाभिं प्राप्तो महानादो मध्यस्थस्तेन मध्यमः" अर्थात् वायु वक्षःस्थल व कण्ठ से ताडित होता हुआ नाभि में पहुँच महानादवाला बीच में रहता है इसलिए मध्यम कहा जाता है। "वायुः समुद्गतो नाभेरुरोहृत्कण्ठमूर्धसु। विचरन्पञ्चमस्थानप्राप्त्या पञ्चम उच्यते" अर्थात् नाभि से उठा हुआ पवन वक्षःस्थल, हृदय, कण्ठ और मस्तक में होता हुआ चलता है। इसलिए पाँच स्थानों की प्राप्ति से 'पञ्चम' कहाता है। "धीमतामयं धैवतः" यानी धीमानों का जो यह शब्द है उसे धैवत कहते हैं। और "निषीदति मनो यस्मिन्निति निषादः" अर्थात् जिसमें मन लगता है उसे 'निषाद' कहते हैं। ये सातों स्वर ललाट की रेखाओं से जाने जाते हैं; यह संगीत शास्त्रवालों ने कहा है। अब पूर्वोक्त स्वरों को कौन-कौन से प्राणी बोलते हैं, उसे कहते हैं ॥ १ ॥

षड्जं रौति मयूरस्तु गावो नर्दन्ति चर्षभम्।
अजाविकौ च गान्धारं क्रौञ्चो नदति मध्यमम् ॥ २ ॥
पुष्पसाधारणे काले कोकिलो रौति पञ्चमम्।
अश्वस्तु धैवतं रौति निषादं रौति कुञ्जरः ॥ ३ ॥

मोर षड्ज स्वर से बोलता है। गौ ऋषभ स्वर से बोलती हैं। बकरी तथा भेड़ गान्धार स्वर को बोलती हैं। क्रौंच (कराकुलनामक) पक्षी मध्यम स्वर बोलता है। पुष्पों के साधारण काल में कोकिला पञ्चम स्वर बोलती है। घोड़ा धैवतस्वर और हाथी निषाद स्वर बोलता है[१]॥ २—३॥

षड्जाधिपग्रह

षड्जाधिपः सूर्यसूनुर्ऋषभेशो गुरुः स्मृतः।
गान्धाराधिपतिर्भौमो रविर्मध्यमनायकः॥ ४॥
पञ्चमेशो भृगुः प्रोक्तो धैवतेशो बुधः स्मृतः।
निषादाधिपतिश्चोक्तो निशानायकसंज्ञकः॥ ५॥

षड्ज का स्वामी शनैश्चर, ऋषभ का बृहस्पति, गान्धार का मङ्गल, मध्यम का सूर्य, पञ्चम का शुक्र, धैवत का बुध और निषाद का स्वामी चन्द्रमा कहा गया है॥ ४—५॥





१ देखिए स्वरशास्त्र, पक्षी-शास्त्र एवं ज्योतिष तथा सामुद्रक में कितना घनिष्ठ एवं सूक्ष्म संबंध है।—संपादक

बिन्दुजत्रुतिलमशकावर्तादि चिह्न

नखेषु बिन्दवः श्वेताः प्रायः स्युः स्वैरिणीस्त्रियः।
पुरुषा अपि जायन्ते दुःखिनः पुष्पितैर्नखैः ॥ १ ॥

जिनके नखों में सफ़ेद बिन्दु (कौड़ीमी) हों वे स्त्रियाँ प्रायः व्यभिचारिणी होती हैं। यदि पुरुषों के नखों में सफ़ेद बिन्दु हों तो वे भी दुखी रहते हैं ॥ १ ॥

विषमैर्जत्रुभिर्निःस्वा अस्थिनद्धैश्च मानवाः।
उन्नतैर्भोगिनो निम्नैर्निःस्वाः पीनैर्धनान्विताः ॥ २ ॥

जिनकी हँसलियाँ विषम हों तथा हाड़ों से बँधी हों वे दरिद्री होते हैं। जिनकी हँसलियाँ ऊँचीसी हों वे भोगी होते हैं। जिनकी हँसलियाँ निचलीसी हों वे निर्धनी होते हैं। जिनकी हँसलियाँ मोटीसी हों वे धनवान् होते हैं ॥ २ ॥

मुखे तिलं यस्य च तस्य लिङ्गे ह्यक्ष्णोरधस्तस्य च कुक्षिगं स्यात्। भुजे भवेत्तस्य च मूलजन्म पूर्वाद्वितीये जटुलं स्वदेहे ॥ ३ ॥

जिसके मुख में तिल हो उसके लिङ्ग देश में अवश्य ही तिल होता है। यदि स्त्रियों के मुख में तिल हो तो उनकी योनि में अवश्य ही तिल होता है। जिसकी आँखों के नीचे तिल हो उस नर व नारी की कोख में अवश्य ही तिल होता है। जिसकी भुजाओं में तिल हो उसका जन्म मूलनक्षत्र में कहा जाता है। जिसकी देह में लहसुन हो उसका जन्म पूर्वाषाढ में जानना चाहिए ॥ ३ ॥

भ्रुवोरन्ते ललाटे वा मशको राज्यसूचकः।
पुत्रदो ज्ञानदो भूत्वा दुःखदौर्भाग्यभञ्जकः ॥ ४ ॥

भौंहों के बीच या ललाट में मसा हो तो राज्यसूचक होता है। वह पुत्रदायक, ज्ञानदायक एवं दुःखनाशक होता है ॥ ४ ॥

वामे कपोले मशकः शोणो मिष्टान्नदः स्त्रियाः।
तिलकं लाञ्छनं वापि हृदि सौभाग्यकारणम् ॥ ५ ॥

बायें कपोल पर रक्तवर्णवाला मसा हो तो वह नारी के लिए शुभकारी तथा मिष्टान्नदायक होता है। जो हृदय में तिल हो तो वह सौभाग्य का कारण होता है ॥ ५ ॥

यस्या दक्षिणवक्षोजे भवेत्तिलकलाञ्छनम् ।
कन्याचतुष्टयं सूते सूते सा च सुतत्रयम् ॥ ६ ॥
तिलकं लाञ्छनं शोणं यस्या वामकुचे भवेत् ।
एकं पुत्रं प्रसूयादौ अन्ते च विधवा भवेत् ॥ ७ ॥

जिसके दाहने स्तन में तिल हो वह स्त्री चार कन्याओं एवं तीन लड़कों या दो लड़कों की माता होती है। जिसके बाएँ स्तन में लाल तिल हो वह स्त्री पहले पुत्र उपजाती और अन्त में विधवा होजाती है ॥ ६–७ ॥

गुह्यस्य दक्षिणे भागे तिलको यदि शोभते ।
तदा क्षितिपतेः पत्नी सूते च क्षितिपं सुतम् ॥ ८ ॥
नासाग्रे मशकः शोणो महिष्या एव जायते ।
कृष्णः स एव भर्तृघ्न्याः पुंश्चल्या वा प्रकीर्तितः ॥ ९ ॥

जिसके गुह्यदेश के दक्षिण भाग में तिल हो वह स्त्री रानी तथा राजकुमार की माता होती है। जिसकी नासिका के आगे लाल मसा हो वह स्त्री पटरानी होती है। जिसकी नासिका के आगे काला तिल हो वह स्वामीनाशक अथवा व्यभिचारिणी होजाती है ॥ ८–९ ॥

नाभेरधस्तात्तिलको मशको लाञ्छनं शुभम् ।
मशकस्तिलकश्चिह्नं गुल्फदेशे दरिद्रकृत् ॥ १० ॥
करे कर्णे कपाले वा कण्ठे वामे भवेद्यदि ।
एषां त्रयाणामेकं तु प्राग्गर्भो पुत्रदो भवेत् ॥ ११ ॥

अगर नाभि के नीचे तिल या मसा हो तो स्त्री को शुभदायक होता है। जो गुल्फदेश (गण्ठों) में मसा वा तिल हो तो दरिद्री करता है। हाथ, कान, गाल व कण्ठ के वामभाग में लहसुन, मसा या तिल इन तीनों में एक भी हो तो उस स्त्री का पहला गर्भ पुत्रदायक होता है ॥ १०–११ ॥

नासाग्रे दृश्यते यस्यास्तिलको मशकोपि च ।
कृष्णदन्ता कृष्णजिह्वा दशाहेन पतिं हरेत् ॥ १२ ॥
तिलको वामतो यस्याः कुक्षिदेशे च जायते ।
माषकस्य समो वापि राजपत्नी भवेद्ध्रुवम् ॥ १३ ॥

जिसकी नासिका के अग्रभाग में तिल या मसा हो, जिसके काले दाँत व काली जीभ हो वह स्त्री व्याह से दश दिन की अवधि में ही पति विनाशती है । जिसके कुक्षिदेश (कोख) के वामभाग में तिल या मसा हो वह स्त्री निश्चय ही राजपत्नी होती है ॥ १२ । १३ ॥

पार्श्वे स्याद्दीर्घतिलको यस्याः स्निग्धश्च जायते ।
वामहस्ते पतिं प्राप्य पुत्रपौत्रं प्रवर्धयेत् ॥ १४ ॥

जिसके पार्श्वदेश या बाएँ हाथ में चिकना दीर्घाकार तिल हो वह स्त्री पति पाकर पुत्र-पौत्रों को बढ़ाती है ॥ १४ ॥

यस्या गण्डेऽधरे वामे हस्ते कर्णे गले तथा ।
माषकं तिलकं विद्यात्सा कन्या सुखमेधते ॥ १५ ॥

जिसके गाल, ओठ, हाथ, कान तथा गला इनके वामभाग में मसा या तिल हो वह कन्या सुखको पाती है ॥ १५ ॥

आरक्तं वामके यस्याः कुक्षिदेशे च दृश्यते ।
माषकं तिलकं वापि सा कन्या सुखभागिनी ॥१६॥

जिसके कुक्षिदेश में बाईं तरफ़ लाल मसा या तिल हो वह कन्या सुख पाती है ॥ १६ ॥

पाणौ प्रदक्षिणावर्तो धर्म्यो वामो न शोभनः ।
नाभौ श्रुतावुरसि वा दक्षिणावर्त ईडितः ॥ १७ ॥

हाथ में रोमों या रेखाओं का 'दहिनावर्त' स्त्री के लिए धर्मवर्धक होता है, और 'वामावर्त' स्त्री को शुभदायक नहीं होता । तथा नाभि, कान व छाती में 'दहिनावर्त' स्त्री को शुभदायक कहाता है ॥ १७ ॥

सुखाय दक्षिणावर्तः पृष्ठवंशस्य दक्षिणे ।
अन्तःपृष्ठे नाभिसमो बह्वायुः पुत्रवर्धनः ॥ १८ ॥
राजपत्न्याः प्रदृश्येत भगमौलौ प्रदक्षिणः ।
सचेच्छकटभङ्गः स्याद्‍ बह्वपत्यः सुखप्रदः ॥ १९ ॥

पृष्ठवंश (पीठके बाँस) की दाहनी ओर दहिनावर्त सुख देता और पीठ के बीच में तोंदी के समान दहिनावर्त आयु तथा पुत्र बढ़ाता है। भग के ऊपरी भाग में दहिनावर्त निशान हो तो वह स्त्री रानी होती है। जो भग के ऊपरी भाग में शकटाकार निशान भङ्ग सा हो तो वह बहुत संतानयुक्त एवं सुखदायक होता है ॥ १८ । १९ ॥

कटिगो गुह्यवेधेन पत्यपत्यनिपातनः ।
स्यातामुदरवेधेन पृष्ठावर्तौ न शोभनौ ॥ २० ॥
एकेन हन्ति भर्तारं भवेदन्येन पुंश्चली ।
कण्ठगो दक्षिणावर्तो दुःखवैधव्यसूचकः ॥ २१ ॥

कमर में गुदा को वेधन कर दहिनावर्त निशान स्त्री के पति व पुत्रों का मारनेवाला होता है। पीठ में पेट का वेधन कर दो दहिनावर्त स्त्री को शुभदायक नहीं होते । बरन् वह स्त्री एक निशान से पति को मारती और दूसरे निशान से व्यभिचारिणी होजाती है । कण्ठ में दहिनावर्त निशान स्त्री के लिए दुःख व वैधव्यसूचक है ॥ २१—२२ ॥

सीमन्तेऽथ ललाटे वा त्याज्या दूरात्प्रयत्नतः ।
सा पतिं हन्ति वर्षेण यस्या मध्ये कृकाटिके ॥ २२ ॥
प्रदक्षिणो वा वामो वा रोम्णामावर्तकः स्त्रियाः ।
एको वा मूर्धनि द्वौ वा वामे वामगतौ यदि ।
आदशाहं पतिघ्नी सा त्याज्या दूरात्सुबुद्धिना ॥२३॥

जिसके शीश या ललाट में दहिनावर्त निशान हो उस स्त्री को बड़े यत्न के साथ त्याग देना चाहिए। जिसकी घाँटी के बीच दहिनावर्त निशान हो वह स्त्री ब्याह से एक ही वर्ष में पति को मार डालती है। जिसके मस्तक में

एकमात्र रोमों का दहिनावर्त या वामावर्त प्रतीत हो अथवा दो वामावर्त प्रतीत हों वह स्त्री ब्याह से दश दिवस में ही पति को मारती है। इसलिए बुद्धिमानों को वह स्त्री दूर ही से त्यागना चाहिए ॥ २२–२३ ॥

कट्यावर्ता च कुलटा नाभ्यावर्ता पतिव्रता।
पृष्ठावर्ता च भर्तृघ्नी कुलटाप्यथ जायते ॥ २४ ॥

जिसकी कमर में आवर्तरेखा हो वह स्त्री व्यभिचारिणी होती है। जिसकी नाभि में आवर्तरेखा हो वह पतिव्रता होती है। जिसकी पीठ में आवर्तरेखा हो वह पति को विनाशती अथवा वेश्या होजाती है ॥ २४ ॥

एकमुद्रो भवेद्राजा दशमुद्रो महाधनी।
मुद्राहीनस्तु दुःखी स्याद् द्वित्रिकाभ्यां तथैव च ॥ २५ ॥
एकमुद्रो भवेद्राजा द्विमुद्रो धनवान्नरः।
त्रिमुद्रो रोगसम्पन्नो बहुमुद्रो बहुप्रजः ॥ २६ ॥

जिसके करतल में एक मुद्रा हो वह राजा होता है। जिसके करतल में दश मुद्राएँ हों वह महाधनी होता है। जिसका करतल मुद्रारहित हो वह दुखी रहता है। जिसके करतल में दो व तीन मुद्राएँ देखी जायँ तो वह भी दुखी रहता है। जिसके करतल में एक मुद्रा का चिह्न हो वह राजा, दो मुद्राएँ हों तो वह धनवान्, तीन हों तो रोगी, बहुतसी मुद्राएँ हों तो वह बहुत स्त्री-सन्तानवाला होता है ॥ २५–२६ ॥

जनने प्रबलो यस्य राजयोगो भवेद्यदि ।
करे वा चरणेऽवश्यं राजचिह्नं प्रजायते ॥ १ ॥

जन्मकाल में यदि राजयोग प्रबल हो तो उसके करतल या पादतल में अवश्य ही राजचिह्न होता है ॥ १ ॥

अनामामूलगा रेखा सैव पुण्याभिधा मता ।
मध्यमाङ्गुलिमारभ्य मणिबन्धान्तमागता ॥ २ ॥
सोर्ध्वरेखा विशेषेण राज्यलाभकरी भवेत् ।
खण्डिता दुष्टफलदा क्षीणा क्षीणफला मता ॥ ३ ॥

करतल में जो रेखा अनामिका के मूल में होती है उसे पुण्यनामक रेखा सामुद्रकशास्त्रवेत्तागणों ने माना है । (देखो ग. ख. चित्र १२) जो मध्यमाङ्गुली से चलकर मणिबन्ध के पास तक आती है वह ऊर्ध्वरेखा विशेषता से राज्यलाभकारिणी होती है । (देखो चित्र नं. ११ भ. छ.) यदि ऊर्ध्वरेखा खण्डित हो तो दुष्टफलदायक होती है । यदि छिन्न-भिन्न हो तो क्षीणफल प्रदान करती है ॥ २।३ ॥ (ऐसा प्रायः सभी विद्वानों का मत है । सं०)

अङ्गुष्ठमध्ये पुरुषस्य यस्य विराजते चारु यवो यशस्वी ।
स्ववंशभूषासहितो विभूषा योषाजनैरर्थगणैश्च मर्त्यः ॥ ४ ॥
वैसारिणो वातपवारणो वा चेद्वारणो दक्षिणपाणिमध्ये ।
सरोवरं चाङ्कुश एव यस्य वीणा च राजा भुवि जायते सः ५ ॥

जिसके करतल में अँगूठे के बीच में यव का निशान हो वह विभूषणों, स्त्रीजनों व अर्थगणों समेत यशस्वी होकर अपने वंश में भूषण होता है । (देखो ज. व. चित्र १२) जिसके दहने करतल में मछली, छाता, हाथी, सरोवर, अंकुश व वीणा का निशान हो वह पृथ्वी में राजा होता है ॥ ४ । ५ ॥

मुकुरशैलकृपाणहलाङ्कितं करतलं किल यस्य स वित्तपः।
कुसुममालिकया फलमीदृशं नृपतिरेव नृपालभवो यदा॥ ६॥
करतलेपि च पादतले नृणां तुरगपङ्कजचापरथाङ्गवत्।
ध्वजरथासनदोलिकया समं भवति लक्ष्म रमापरमालये॥ ७॥

जिसका करतल दर्पण, पर्वत, तलवार व हल इन चिह्नों से चिह्नित हो वह धन का स्वामी होता है। जिसका करतल फूलों की माला से अङ्कित हो वह प्राणी धनशाली होता है। जिनके करतल व पादतल में घोड़ा, कमल, धनुष, चक्र, ध्वजा, रथ, आसन और हिंडोले या डोली के समान निशान हों उनके घर में महालक्ष्मीजी निवास करती हैं॥ ६। ७॥

कुम्भस्तम्भो वा तुरङ्गो मृदङ्गः पाणावङ्को वा द्रुमो यस्य पुंसः। चञ्चद्दण्डोऽखण्डलक्ष्म्या परीतः किंवा सोयं पण्डितः शौण्डिको वा॥ ८॥ विशालभालोम्बुजपत्रनेत्रः सुवृत्तमौलिः क्षितिमण्डले यः। आजानुबाहुः पुरुषं तमाहुः क्षोणीभृतां सौख्यतरं महान्तम्॥ ९॥

जिसके करतल में घड़ा, खंभा, घोड़ा, मृदङ्ग या वृक्ष अथवा दण्ड का निशान हो वह प्राणी अखण्ड लक्ष्मी से परिपूर्ण तथा पण्डित होता है, अथवा शौण्डिक (कलवार) होता है। जिसका भाल विशाल हो, लोचन कमलदल के समान हों, मस्तक गोलाकार हो, भुजाएँ जानुओं पर्यन्त देखी जायँ उसको भूतल में पण्डितों ने राजाओं में बड़ा राजा कहा है॥८।९॥

नाभिर्गभीरा सरला च नासा वक्षःस्थलं रक्तशिलातलाभम्।
आरक्तवर्णौ खलु यस्य पादौ मृदू भवेतां स नृपोत्तमः स्यात्॥ १०॥

जिसकी नाभि गहरी हो, नासिका सीधी हो, वक्षःस्थल लालशिलातल के समान हो और जिसके पैर लाल वर्णवाले तथा कोमल हों वह शाहंशाह होता है॥ १०॥

राजते करगो यस्य तिलोऽतुलधनप्रदः।
तथा पादतले पुंसां वाहनार्थसुखप्रदः॥ ११॥

राजवंशप्रजातानां समस्तफलमीदृशम् ।
अन्येषामल्पतां याति तथा व्यक्तं सुलक्षणम् ॥ १२ ॥

करतल में तिल अतुल धनदायक होता है। ऐसे ही पादतल में तिल सवारी, धन व सुखों का दायक होता है। यह सारा फल राजवंश में उपजे हुए महाराजों के लिए कहा है। अन्य साधारण जनों को थोड़ा फल प्राप्त होता है। उसी प्रकार जिनके करतल या पादतल में पूर्वोक्त निशान साफ़ ज़ाहिर न होते हों तोभी वे प्राणी थोड़ा सा फल पाते हैं ॥ ११ । १२ ॥

इति श्रीभावकुतूहले राजयोगादिः ।

यस्य प्रसूतिसमये प्रबला नृपालयोगा भवन्ति यदि वा पुरुषस्य नूनम् । सद्राज्यलाञ्छनवराणि पदे तदीये यद्वा भवन्त्यपि च पाणितलेऽमलानि ॥ १३ ॥

जन्मसमय यदि प्रबलराजयोग हों तो उसके पैर में निश्चय श्रेष्ठ राजचिह्न होते हैं, अथवा उसके करतल में भी अमल (साफ़) राजचिह्न होते हैं ॥ १३ ॥

अथ वाल्मीकीयरामायणबालकाण्डटीकायाः समुद्धृत्य श्रीमन्महाराजाधिराज-रामचन्द्रस्य सामुद्रकीयराजलक्षणानि व्याख्यायन्ते

कक्षः कुक्षिश्च वक्षश्च घ्राणस्कन्धौ ललाटिका।
सर्वभूतेषु निर्दिष्टा उन्नतास्ते सुखप्रदाः ॥ १ ॥

[इति वररुचिः]

काँख (बगल) कोख, वक्षस्थल, नासिका, स्कन्ध और ललाट ये सब प्राणियों में निर्दिष्ट हुए ऊँचे से प्रतीत हों तो सुखदायक होते हैं। यह महर्षि वररुचि ने कहा है ॥ १ ॥

शंखे ललाटश्रवणे ग्रीवा वक्षश्च हृत्तथा।
उदरं पाणिपादं च पृष्ठं दश महत्सुखम् ॥ २ ॥
दीर्घभ्रूबाहुमुष्कश्च चिरंजीवी महीपतिः।
लोके विख्यातकीर्तिः सन्महाराजो भवेन्नरः ॥ ३ ॥

[इति ब्राह्मे]

ललाट की हड्डियाँ, भाल, कान, ग्रीवा, वक्षःस्थल, हृदय, पेट, हाथ, पैर और पीठ ये दश ऊँचे से प्रतीत हों तो प्राणी के लिए सुखदायक होते हैं, और जिसकी भौंहें, बाहें और अण्डकोष दीर्घाकार हों वह पृथ्वी का स्वामी व चिरंजीवी होकर लोक में विख्यात कीर्तिवाला महाराजा होता है। यह ब्रह्मपुराण में कहा है ॥ २ । ३ ॥

समवृत्तशिराश्चैवच्छत्राकारशिरांस्तथा।
एकच्छत्रां महीं भुंक्ते दीर्घमायुश्च विन्दति ॥ ४ ॥

[इति नारदः]

---

१ भोगी धनी स्यादुदरे विशाले विशालकक्ष्याश्च कटौ विशाले। बहुपुत्रदारोऽपि विशालपादो धनान्वितः स्याच्च विशालचक्षुः ॥ १ ॥

२ छत्राकारं नरेन्द्राणां शिरो दीर्घं च दुःखिनाम्। अधमानां च पापानां येषां स्थूलपुटं पुनः ॥ स्थूलशीर्षो नरो यस्तु धनवान्परिकीर्तितः। शूलाकारेणशीर्षेण मानवो मानवाधिपः ॥ विषमेण तु शीर्षेण नरेन्द्रः पुण्यहेतुकः। दीर्घशीर्णशिरो यस्तु दुःखितो नात्र संशयः ॥ गजकुम्भशिरो यस्तु राजा स्यान्नात्र संशयः। शिरालमुन्नतं यस्य प्रशस्तं च शिरो यदि ॥ स राजा पृथिवीं भुङ्क्ते गजवाजिसमन्वितामिति ॥

जिसका शीश समान गोलाकार तथा छाते के आकार का हो वह एकछत्र-वाली पृथ्वी को भोग दीर्घायु पाता है। यह नारदजी ने कहा है ॥ ४ ॥

ललाटे यस्य दृश्यन्ते चतुस्त्रिद्व्येकरेखिकाः।
शतद्वयं शतं षष्टिस्तस्यायुर्विंशतिस्तथा ॥ ५ ॥

[इति कात्यायनः]

जिसके ललाट में चार रेखाएँ हों वह दो सौ वर्ष पर्यन्त जीता है। जिसके ललाट में तीन रेखाएँ हों वह सौ वर्ष की आयु पाता है। जिसके ललाट में दो रेखाएँ हों वह साठ वर्ष पर्यन्त जीता है। जिसके ललाट में एक रेखा हो वह बीस वर्ष की आयु पाता है। यह कात्यायन ने कहा है ॥५॥

स्वरोगतिश्च नाभिश्च गम्भीरः स प्रशस्यते।
षण्णवत्यङ्गुलोत्सेधो योनांशः स दिवौकसाम् ॥ ६ ॥

[इति ब्राह्मे]

जिसका स्वर, गमन और नाभि (तोंदी) ये तीनो गंभीर प्रतीत हों वह लोक में प्रशस्त होता है। जो ९६ अंगुल ऊँचा हो वह देवताओं का अंश होता है। यानी वह देवता का अवतार माना जाता है। यह ब्रह्मपुराण में कहा है ॥ ६ ॥

भ्रुवौ नासापुटे नेत्रे कर्णावोष्ठौ च चूचुकौ।
कूर्परौ मणिबन्धौ च जानुनी वृषणौ कटी ॥ ७ ॥
करौ पादौ स्फिजौ यस्य समौ ज्ञेयः स भूपतिः।
दानविख्यातकीर्तिः स्यादात्मज्ञानपरायणः ॥ ८ ॥

जिसकी भौंहें, नासापुट (नाक के पोर), नेत्र, कान, ओंठ, कुचाग्र, कोहनी, कब्जा, घुटना, अण्डकोष, कमर, हाथ-पैर और कूल्हे समानाकार हों वह पृथ्वीपाल होता है और दान से विख्यात कीर्तिवाला आत्मज्ञान में परायण रहता है ॥ ७ । ८ ॥

अथ पुनरपि वाल्मीकीयरामायणयुद्धकाण्डेऽष्टचत्वारिंशत्सर्गे श्रीमतीमहाराज्ञी-सीतानैं नानियानिसामुद्रकीयराजलक्षणानि त्रिजटां प्रत्युक्तवती तान्याह—

इमानि खलु पद्मानि पादयोर्वै कुलस्त्रियः।

आधिराज्येऽभिषिच्यन्ते नरेन्द्रैः पतिभिस्सह ॥ ९ ॥

अहो मातः, त्रिजटे ! पैरों में ये जो पद्मों के निशान हैं उनसे कुलीन स्त्रियाँ राज्यासन में नरेन्द्रपतियों के साथ निश्चयकर अभिषिक्त होती हैं। यानी उन स्त्रियों का पतियों के साथ राज्यासन में अभिषेक किया जाता है॥९॥

वैधव्यं यान्ति यैर्नार्य्योऽलक्षणैर्भाग्यदुर्लभाः ।
नात्मनस्तानि पश्यामि पश्यन्ती हतलक्षणा ॥ १० ॥

जिन कुलक्षणों से अभागिनी स्त्रियाँ राँड़ हो जाती हैं उनको मैं अपने शरीर में नहीं देखती हूँ। ऐसा कहकर मूर्छित रामजी को तथा लक्षण को भी देखती हुई सीताजी हतलक्षणोंवाली होगई ॥ १० ॥

सत्यनामानि पद्मानि स्त्रीणामुक्तानि लक्षणैः ।
तान्यद्य निहते रामे वितथानि भवन्ति मे ॥ ११ ॥

लक्षणज्ञाता पण्डितों या लक्षणप्रतिपादकशास्त्रों ने स्त्रियों के करतल या पादतल में जो पद्मों के निशान सच्चे नामवाले यानी सफल कहे थे वे आज मेरे, रामजी के निहत हो जाने पर, विफल होते हैं ॥ ११ ॥

केशाः सूक्ष्माः समा नीला भ्रुवौ चासंहते मम ।
वृत्ते चारोमके जङ्घे दन्ताश्चाविरला मम ॥ १२ ॥

मेरे केश पतले, समानाकार तथा काले हैं। मेरी भौंहें मिली हुई नहीं हैं। मेरी जाँघें गोलाकार, लोमरहित हैं, और मेरे दाँत अविरल कुन्दकली से हैं ॥ १२ ॥

शङ्खे नेत्रे करौ पादौ गुल्फावूरू समौ चितौ ।
अनुवृत्तनखाः स्निग्धाः समाश्चाङ्गुलयो मम ॥ १३ ॥

ललाट की हड्डियाँ, नेत्र, हाथ पैर, गंठे और ऊरू ये समानाकार, बढ़े से हैं। मेरे नख क्रम से गोलाकार तथा चिकने हैं। मेरी अंगुलियाँ समानाकार हैं ॥ १३ ॥

---

१ नाभिः स्थूला सूक्ष्मकेशी नातिदीर्घा सुमध्यमा । पीनस्तनी मृगाक्षी च सा नारी सुखमेधत इति ॥ १ ॥

स्तनौ चाविरलौ पीनौ मामकौ मग्नचूचुकौ ।
मग्ना चोत्सेधनी नाभिः पार्श्वोरस्कं च मे चितम् ॥ १४ ॥

मेरे स्तन मिले हुए, मोटे, घुसी ढेपुनियोंवाले हैं । मेरी नाभि मग्न हुई ऊँची सी है । मेरी पसलियाँ व छाती ऊँचा है ॥ १४ ॥

मम वर्णो मणिनिभो मृदून्यङ्गरुहाणि च ।
प्रतिष्ठितां द्वादशभिर्मामूचुः शुभलक्षणाम् ॥ १५ ॥

मेरा वर्ण मणि के समान है । मेरे रोम कोमल हैं । बायें पैर की पाँचों अंगुलियाँ, दाहने पैर की पाँचों अंगुलियाँ, दोनों पैरों के तलवे, इन बारह निशानों से प्रतिष्ठित मुझे मुनियों ने शुभ लक्षणोंवाली कहा है ॥ १५ ॥

समग्रयवमच्छिद्रं पाणिपादं च वर्णवत् ।
मन्दस्मितेत्येव च मां कन्यालाक्षणिका विदुः ॥ १६ ॥

मेरे हाथ पैर की सारी अंगुलियाँ यवों के निशानों से अङ्कित छिद्ररहित हैं । मेरे हाथ पैर वर्णवाले हैं । मेरा हास्य मन्द है । इसलिए कन्यालक्षणों के ज्ञाता पण्डित लोग मुझे शुभलक्षणोंवाली ही जानते हैं ॥ १६ ॥

आधिराज्येऽभिषेको मे ब्राह्मणैः पतिना सह ।
कृतान्तनिपुणैरुक्तं तत्सर्वं वितथीकृतम् ॥ १७ ॥

राज्यासन में पति के साथ मेरा अभिषेक होगा, यह ज्योतिःशास्त्रवेत्ता ब्राह्मणों ने कहा था । वह सब आज श्रीरामजी के न होने पर झूठा हो गया ॥ १७ ॥

इति स्त्रीणां राजयोगादिः ।

अथ सामुद्रकीयायुर्दाययोगा व्याख्यायन्ते—

गूढसन्धिशिरास्नायुः संहताङ्गः स्थिरेन्द्रियः ।
उत्तरोत्तरसुक्षेत्रो यः स दीर्घायुरुच्यते ॥ १८ ॥

---

१ वर्णाद् बहुतरो देहो देहाद् बहुतरः स्वरः । स्वराद् बहुतरं सत्त्वं सर्वं सत्त्वे प्रतिष्ठितमिति ॥ १ ॥

गर्भात्प्रभृत्यरोगो यः शनैः समुपचीयते ।
शरीरज्ञानविज्ञानैः स दीर्घायुः समासतः ॥ १६ ॥

जिसके शरीर में सन्धि, शिरा और स्नायु ये छिपे हुए हों, जिसका सारा अङ्ग मजबूत, इन्द्रियाँ स्थिर, शरीर उत्तरोत्तर सुदृश्य हो वह दीर्घायु कहा जाता है। जो गर्भ से लगाकर आरोग्य रहे, धीरे धीरे बढ़े और जिसका शरीर ज्ञान-विज्ञान से पूर्ण बना रहे वह दीर्घायु कहाता है ॥ १८–१६ ॥

मध्यमस्यायुषो ज्ञानमत ऊर्ध्वं निबोध मे ।
अधस्तादक्षयो यस्य लेखाः स्युर्व्यक्तमायताः ॥ २० ॥
द्वे वा तिस्रोऽधिका वापि पादौ कर्णौ च मांसलौ ।
नासाग्रमूर्ध्वं च भवेदूर्ध्वलेखाश्च पृष्ठतः ।
यस्य स्युस्तस्य परममायुर्भवति सप्ततिः ॥ २१ ॥

इसके अनन्तर मध्यम आयु लक्षण सुनिये। जिसकी आँखों के नीचे साफ़ दो, तीन या अनेक रेखाएँ हों, पैर तथा कान मांसल हों, नासिका का अग्रभाग ऊँचासा हो, पीठ में ऊर्ध्वरेखा हो उसकी आयु सत्तर वर्ष की होती है ॥ २०–२१ ॥

जघन्यस्यायुषो ज्ञानमत ऊर्ध्वं निबोध मे ।
ह्रस्वानि यस्य पर्वाणि सुमहच्चापि मेहनम् ॥ २२ ॥
तथोरस्यवलीढानि न च स्यात्पृष्ठमायतम् ।
ऊर्ध्वञ्च श्रवणौ स्थानान्नासा चोच्चा शरीरिणः ॥ २३ ॥
हसतो जल्पतो वापि दन्तमांसं प्रदृश्यते ।
प्रेक्षते यच्च विभ्रान्तं स जीवेत्पञ्चविंशतिम् ॥ २४ ॥

अब अल्पायु का ज्ञान सुनिए। जिसके करतल में अंगुलियों की पोरें छोटीसी हों, लिङ्ग बड़ा हो। वक्षःस्थल लोम या मांसविहीन हो, पीठ चौड़ी न हो, कान यथास्थान स्थित, कुछ ऊपर को चढ़े से हों, नाक ऊँचीसी हो, जिसके हँसने व बात करने में दाँतों का मांस दिखे, जो उन्मत्त की नाईं दिखे वह पचीस वर्ष पर्यन्त जीता है ॥ २२–२४ ॥

पादौ पाणी च पार्श्वे च पृष्ठं चैव तु चूचुकम्।
रदनावदनं चैव स्कन्धौ चैव ललाटिका ॥ २५ ॥
यस्यैतानि च दृश्यन्ते महान्ति च शरीरिणः।
अङ्गुलीनां च सर्वासां पर्वाण्युच्चानि यस्य वै ॥ २६ ॥
विशालौ च भुजौ यस्य नेत्रे स्यातां सुदीर्घके।
भ्रुकुट्योस्स्तनयोर्मध्यं वक्षश्चैव तु विस्तृतम् ॥ २७ ॥
जङ्घे च मेहनं चैव ग्रीवादेशश्च ह्रस्वकः।
नाभिः स्वरश्च बुद्धिश्च गम्भीरा यस्य दृश्यते ॥२८॥
स्तनौ चानुन्नतौ स्यातां कर्णौ चैव तु रोमशौ।
आयतौ विस्तृतौ यस्य मस्तकं चन्दनार्चितम् ॥ २९॥
विशुष्कं हृदयं यस्य शरीरं शुष्यमाणकम्।
दीर्घायुषं विजानीयात्तं नरं धर्मधारणम् ॥ ३० ॥
एतल्लक्षणहीनो यो ह्यल्पायुः स प्रकीर्तितः।
मिश्रलक्षणयुक्तो यो मध्यमायुरुदाहृतः ॥ ३१ ॥

जिसके पैर, हाथ, बगल, स्तनाग्र, दाँत, मुख, कन्धे और भाल ये अतीव विशाल हों, सारी अंगुलियाँ व उनकी पोरें बड़ीसी हों, जिसकी भुजाएँ विशाल हों, लोचन लम्बे से हों, भौंहें व स्तनों का मध्यभाग तथा वक्षःस्थल चौड़ासा हो, जाँघ, लिङ्ग और ग्रीवा ये छोटे से हों, नाभि, स्वर और बुद्धि ये गंभीर हों, दोनों स्तन ऊँचे न हों, कान लोमोंवाले लम्बे व चौड़े हों, मस्तक चन्दन से चर्चित हो, हृदय सूख गया हो, सारा शरीर सूखा हुआ हो, उस धर्मधारी को दीर्घायु जानना चाहिए। जो इन पूर्वोक्त लक्षणों से हीन दिखे वह अल्पायु कहाता है। और जो मिले लक्षणोंवाला हो उसे आचार्यों ने मध्यमायु कहा है ॥ २५–३१ ॥

---

१ अतिमेधातिकीर्तिश्च विक्रमश्च सुखानि च। प्रथमे वयसि दृश्यन्ते ह्यल्पायुश्च भवेन्नरः ॥ १ ॥

पुनरायुर्विबोधार्थमङ्गप्रत्यङ्गमुच्यते ।
हस्तपादादिकानीह ह्यङ्गानि कथितानि वै ॥ ३२ ॥
तदन्यानि च सर्वाणि प्रत्यङ्गानि विदुर्बुधाः ।
तेषां प्रमाणं वक्ष्यामि शृणुष्वावहिता प्रिये ॥ ३३ ॥

अब फिर आयुर्दाय के परिज्ञानार्थ अङ्ग व प्रत्यङ्ग कहे जाते हैं । हाथ, पाँव, मस्तक आदि अङ्ग कहे । इनसे भिन्न अन्य समस्त अवयवों को पण्डितों ने प्रत्यङ्ग कहा है । उनका प्रमाण सुनिये ॥ ३२-३३ ॥

पादाङ्गुष्ठप्रदेशिन्योरन्तरं द्व्यङ्गुलं मतम् ।
प्रदेशिन्याः कनिष्ठान्तं ज्ञेयं मानं मनीषिभिः ॥ ३४ ॥
यथोत्तरं प्रमाणं तु हीनं पञ्चमभागकैः ।
पादप्रपादतलयोरायतं चतुरङ्गुलम् ॥ ३५ ॥

पैरों का अँगूठा व तर्जनी इन दोनों का अन्तर दो अंगुल माना है। मध्यमा का प्रमाण तर्जनी के पाँच भाग का चार भाग कहा है। अनामिका की दीर्घता का मान मध्यमा के पाँच भाग का चार भाग है। कनिष्ठा की दीर्घता का प्रमाण अनामिका के पाँच भाग का चार भाग है। पैरों तथा पदाग्रों के तलों की दीर्घता का मान चार अंगुल कहा है ।३४-३५।

पञ्चाङ्गुलप्रमाणेन विस्तृतं प्रोच्यते बुधैः ।
पञ्चाङ्गुलप्रमाणेन पार्ष्ण्योरायतमुच्यते ॥ ३६ ॥
चतुर्भिरङ्गुलैः प्रोक्तं विस्तृतं बुद्धिमत्तरैः ।
पादयोरायतं ज्ञेयं चाङ्गुलैर्मनुसंमितैः ॥ ३७ ॥

पाँच अंगुल के प्रमाण से पण्डित लोग विस्तार कहते हैं। एँड़ियों की दीर्घता पाँच अंगुल के प्रमाण से कही जाती है । उनका विस्तार बुद्धिमानों ने चार अंगुल कहा है । और पैरों की दीर्घता चौदह अंगुल जानना चाहिए ॥३६-३७॥

पादगुल्फं समारभ्य यावज्जानु प्रदृश्यते ।
तन्मध्यविस्तृतं ज्ञेयमङ्गुलैर्मनुसंमितैः ॥ ३८ ॥

अष्टादशाङ्गुलैर्जङ्घा चायता मुनिसंमता।
जानूपरिष्टाद्द्वात्रिंशदङ्गुलैर्दीर्घमानकम् ॥ ३९ ॥

पैरों के गण्ठों से जानु (घुटनू) तक का विस्तार चौदह अंगुल जानना चाहिए। जङ्घाएँ चौड़ी अठारह अंगुल दीर्घ कहाती हैं—जानुओं के ऊपर दीर्घता का प्रमाण बत्तीस अंगुल कहा है ॥ ३८—३९ ॥

एवं प्रमाणं पञ्चाशदङ्गुलं प्रोच्यते बुधैः।
ऊरुमानप्रमाणेन तुल्या जङ्घा च कीर्तिता ॥ ४० ॥
वृषणौ चिबुके दन्ता तथैवं कर्णमूलकम्।
नासापुटौ च नयने तेषां मध्यं च द्व्यङ्गुलम् ॥ ४१ ॥

इस प्रकार सामुद्रकशास्त्रवेत्ता पण्डितलोग पचास अंगुल प्रमाण कहते हैं। और जंघाए ऊरुओं के मान के प्रमाण से समान कही जाती हैं। अण्डकोष, चिबुक (ठोढ़ी), दाँत, कर्णमूल, नासापुट और नेत्र का मध्यस्थल दो अङ्गुल का कहाता है ॥ ४०—४१ ॥

मेहनं वदनं चैव नासाकर्णौ ललाटिका।
एषां चैव शिरोधेश्च उच्चता चतुरङ्गुला ॥ ४२ ॥
चक्षुषोरायतं ज्ञेयमङ्गुलैर्वेदसंमितैः।
लिङ्गतो यावती नाभिर्नाभितो हृदयं तथा ॥ ४३ ॥
हृदयाद्यावती ग्रीवा तन्मानं द्वादशाङ्गुलम्।
मध्यं स्तनद्वयस्यैव दीर्घता वदनस्य च ॥ ४४ ॥
द्वादशाङ्गुलमानेन कथिता च सदा बुधैः।
प्रकोष्ठान्मणिबन्धान्तं स्थौल्यंस्याद्द्वादशाङ्गुलम्॥४५॥

लिङ्ग, मुख, नासिका, कान, ललाट और ग्रीवा की उच्चता चार अंगुल कहाती है। नेत्रों की दीर्घता चार अंगुल कही जाती है। लिङ्ग से जहाँ तक तोंदी व तोंदी से जहाँतक हृदय रहता है, हृदय से जहाँ तक ग्रीवा (घींच) रहती

है, इन सबका मान प्रत्येक बारह अंगुल कहा है। दोनों स्तनों का अन्तर तथा मुख की दीर्घता पण्डितों ने बारह अंगुल कही है, और प्रकोष्ठ से मणिबन्ध पर्यन्त स्थूलता बारह अंगुल कहाती है ॥ ४२-४५ ॥

नाभेर्निम्नतलस्यापि विस्तृतं षोडशाङ्गुलम् ।
कूर्परात्स्कन्धदेशान्तं चान्तरं षोडशाङ्गुलम् ॥ ४६ ॥
हस्तयोर्दीर्घता ज्ञेया चतुर्विंशाङ्गुला बुधैः ।
बाह्वोश्चैव प्रमाणं तु द्वात्रिंशदङ्गुलं स्मृतम् ॥ ४७ ॥

नाभि के निचले भाग का विस्तार सोलह अंगुल कहाता है। कोहनी से कन्धों तक बीच का भाग सोलह अंगुल होता है। हाथों की दीर्घता चौबीस अंगुल पण्डितों को जानना चाहिए और भुजाओं का प्रमाण बत्तीस अंगुल कहा है ॥ ४६-४७ ॥

ऊर्वोश्चैव तथा ज्ञेयं प्रमाणं पूर्वसंमतम् ।
मणिबन्धात्कूर्परान्तं प्रमाणं षोडशाङ्गुलम् ॥ ४८ ॥
दैर्घ्यं पाणितलस्यैव षडङ्गुलमितं स्मृतम् ।
एवन्तु विस्तृतं प्रोक्तमङ्गुलैर्वेदसंमितैः ॥ ४९ ॥

ऊरुओं का प्रमाण, जो कि पहले संमत हो चुका है, यानी बत्तीस अंगुल जानना चाहिए। करतल की दीर्घता छः अंगुल कही है। ऐसे ही करतल का विस्तार चार अंगुल कहा है ॥ ४८-४९ ॥

अङ्गुष्ठमूलादारभ्य यावत्स्यात्तु प्रदेशिनी ।
तदन्तरं बुधैर्ज्ञेयमङ्गुलद्वयमानकम् ॥ ५० ॥
कर्णतो लोचनोपान्तं पञ्चाङ्गुलमितं स्मृतम् ।
तर्जन्यनामिकाङ्गुल्योरन्तरं सार्धद्व्यङ्गुलम् ॥ ५१ ॥

अँगूठे के मूल से लेकर जहाँ तक तर्जनी रहती है, दोनों का मध्यस्थल पण्डितों को दो अंगुल जानना चाहिए। कानों से आँखों की कोरों तक

का मान पाँच अंगुल कहा है। तर्जनी व अनामिका का अन्तर ढाई अंगुल कहाता है॥ ५०–५१॥

कनिष्ठाङ्गुष्ठपर्यन्तमन्तरं सार्धत्र्यङ्गुलम्।
ग्रीवाया वदनस्यापि विस्तृतं द्वादशाङ्गुलम्॥ ५२॥
नासाछिद्रप्रमाणन्तु त्रिभागाङ्गुलसंमितम्।
चक्षुषोस्तारकामानं वेदभागत्रिभागकम्॥ ५३॥

कनिष्ठा से अँगूठे तक के अन्तर का प्रमाण साढ़े तीन अङ्गुल कहाता है। ग्रीवा और वदन (मुँह) का विस्तार बारह अंगुल कहा जाता है। नासिका के छेदों का प्रमाण एक अंगुल के चार भाग का तीन भाग कहाता है, और नेत्रों के तारे का प्रमाण नेत्र प्रमाण के चार भाग का तीन भाग होता है॥ ५२–५३॥

तारयोर्नवमो भागः पुत्तल्योर्मानमुच्यते।
मस्तकं तु समारभ्य केशान्तं यावदेव हि॥ ५४॥
एकादशाङ्गुलैरुक्तमन्तरं बुद्धिमत्तरैः।
मस्तकात्पृष्ठतो भागे केशान्तं यावदेव हि॥ ५५॥ *
तन्मानं तु बुधैरुक्तमङ्गुलैर्दशभिः प्रिये।
कर्णतो घाटिकामध्यं सप्ताङ्गुलकविस्तृतम्॥ ५६॥
कान्ताकटिप्रमाणेन पुरुषाणामुरः स्मृतम्।
अष्टादशाङ्गुलैः प्रोक्तं रमणीनामुरो बुधैः॥ ५७॥

ताराओं का नवाँ भाग पुतलियों का प्रमाण कहा जाता है। मस्तक से सम्मुख केशान्तों का मध्यस्थल बुद्धिमानों ने ग्यारह अंगुल कहा है। मस्तक से पीछे की तरफ़, जहाँतक बाल रहते हैं—उसका प्रमाण पण्डितगणों ने

---

* ये सब प्रमाण प्रायः प्राचीन शिल्प एवं चित्र-कला के साधारण सिद्धान्तों पर अवलंबित जान पड़ते हैं। वर्त्तमान समय में भी इसी प्रकार चित्रकला के नियम हैं—संपादक

दश अंगुल कहा है—कानों से घोंटा पर्यन्त मध्यस्थल के विस्तार का प्रमाण सात अंगुल कहा जाता है, और स्त्रियों के कमर का प्रमाण चौबीस अंगुल माना है। उसी प्रमाण से पुरुषों का वक्षःस्थल कहा जाता है। पण्डितों ने स्त्रियों के वक्षःस्थल का प्रमाण अठारह अंगुल कहा है ॥ ५६–५७ ॥

नराणां कटिदेशस्य मानं चाष्टादशाङ्गुलम् ।
एवं सर्वशरीरस्य मानं विंशाधिकं शतम् ॥ ५८ ॥
पञ्चविंशे ततो वर्षे पुमान्नारी तु षोडशे ।
समत्वागतवीर्यौ तौ जानीयात्कुशलः सुधीः ॥ ५९ ॥

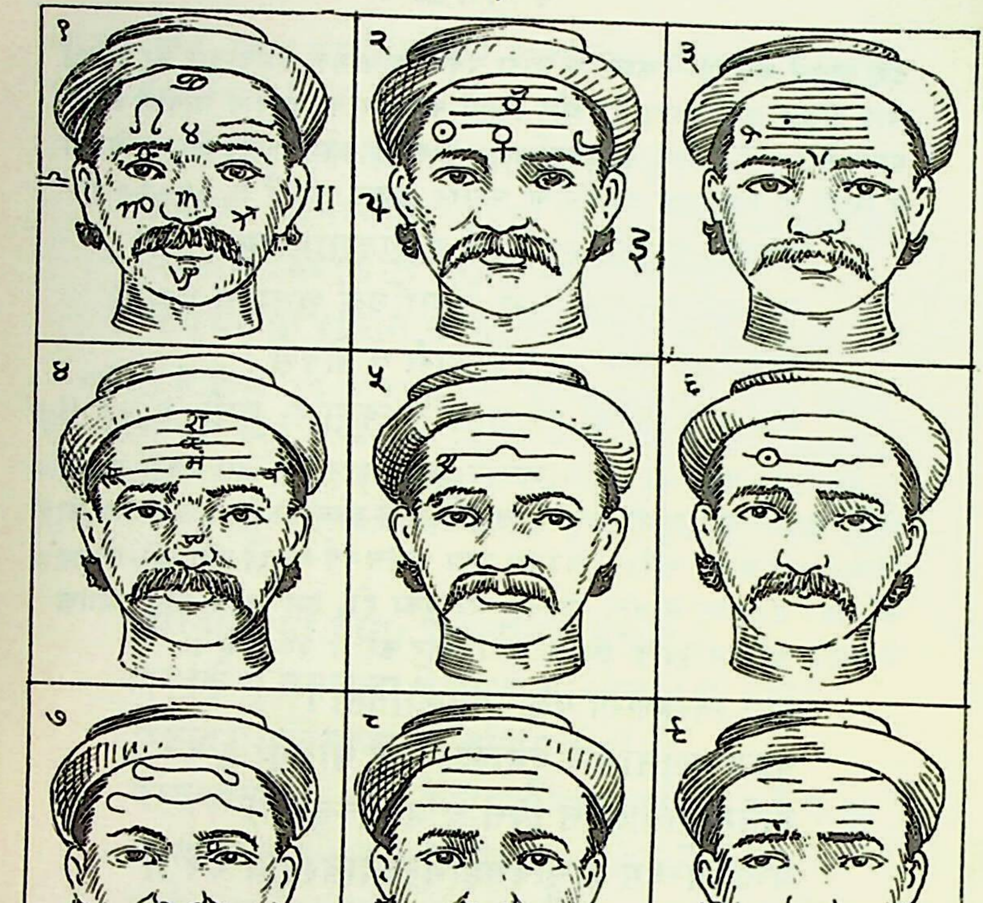
पुरुषों की कमर का प्रमाण अठारह अंगुल कहा है। इस प्रकार समस्त शरीर का प्रमाण एक सौ बीस अंगुल मुनियों ने बतलाया है। इस प्रमाण का विचार तभी करना चाहिए, जब कि पुरुष पचीस वर्ष का हो और स्त्री सोलह वर्ष की। समानता से वीर्य का बल आ चुका हो, उस समय सामुद्रकशास्त्र में प्रवीण पण्डित पूर्वोक्त प्रमाण का विचार करे ॥ ५८–५९ ॥

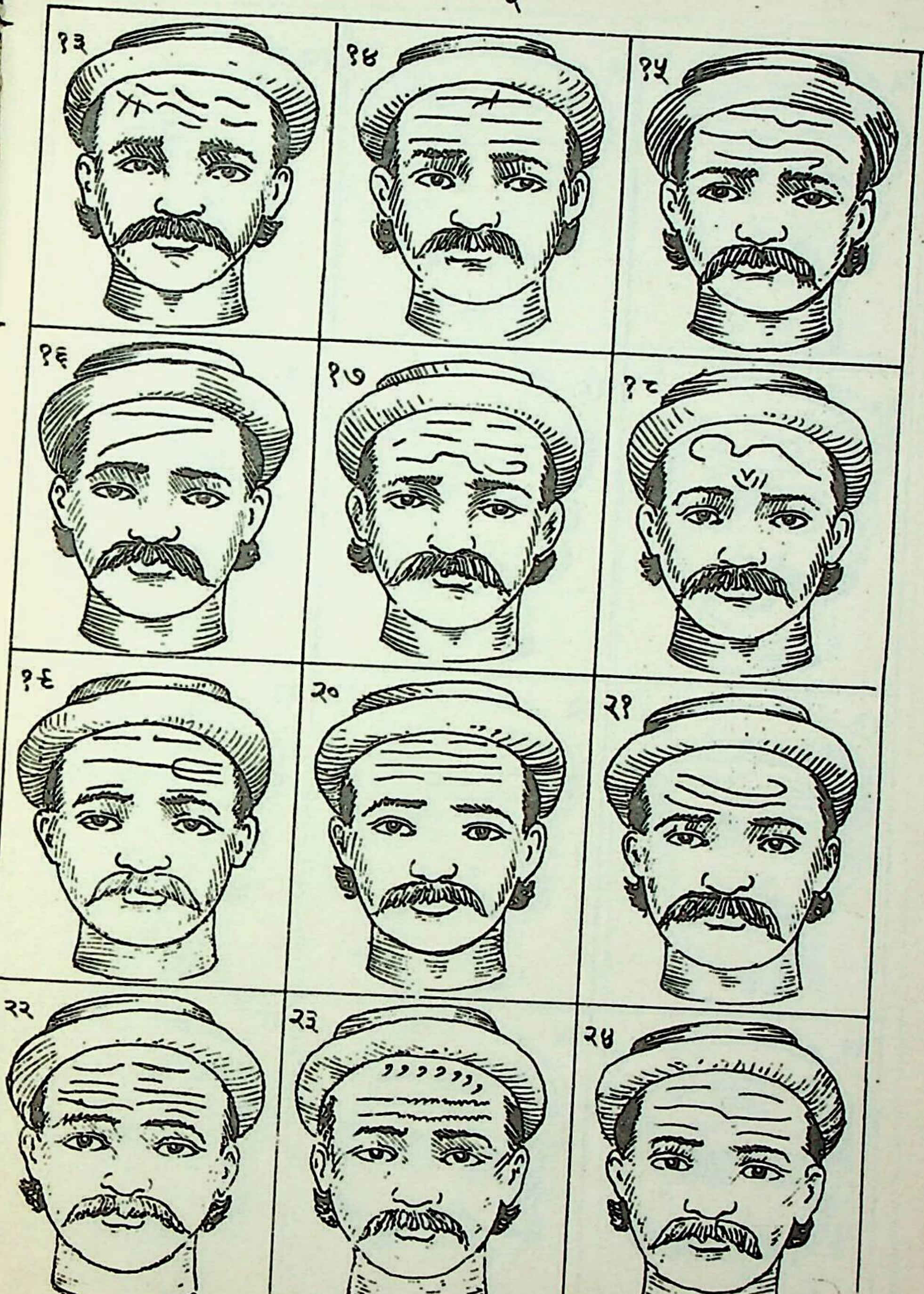
देहः स्वैरङ्गुलैरेष यथावदनुकीर्तितः ।
युक्तप्रमाणेनानेन पुमान्वा यदि वाङ्गना ॥ ६० ॥
दीर्घमायुरवाप्नोति वित्तं च महदृच्छति ।
मध्यमैर्मध्यमे वायुर्वित्तहीनैस्तथावरम् ॥ ६१ ॥

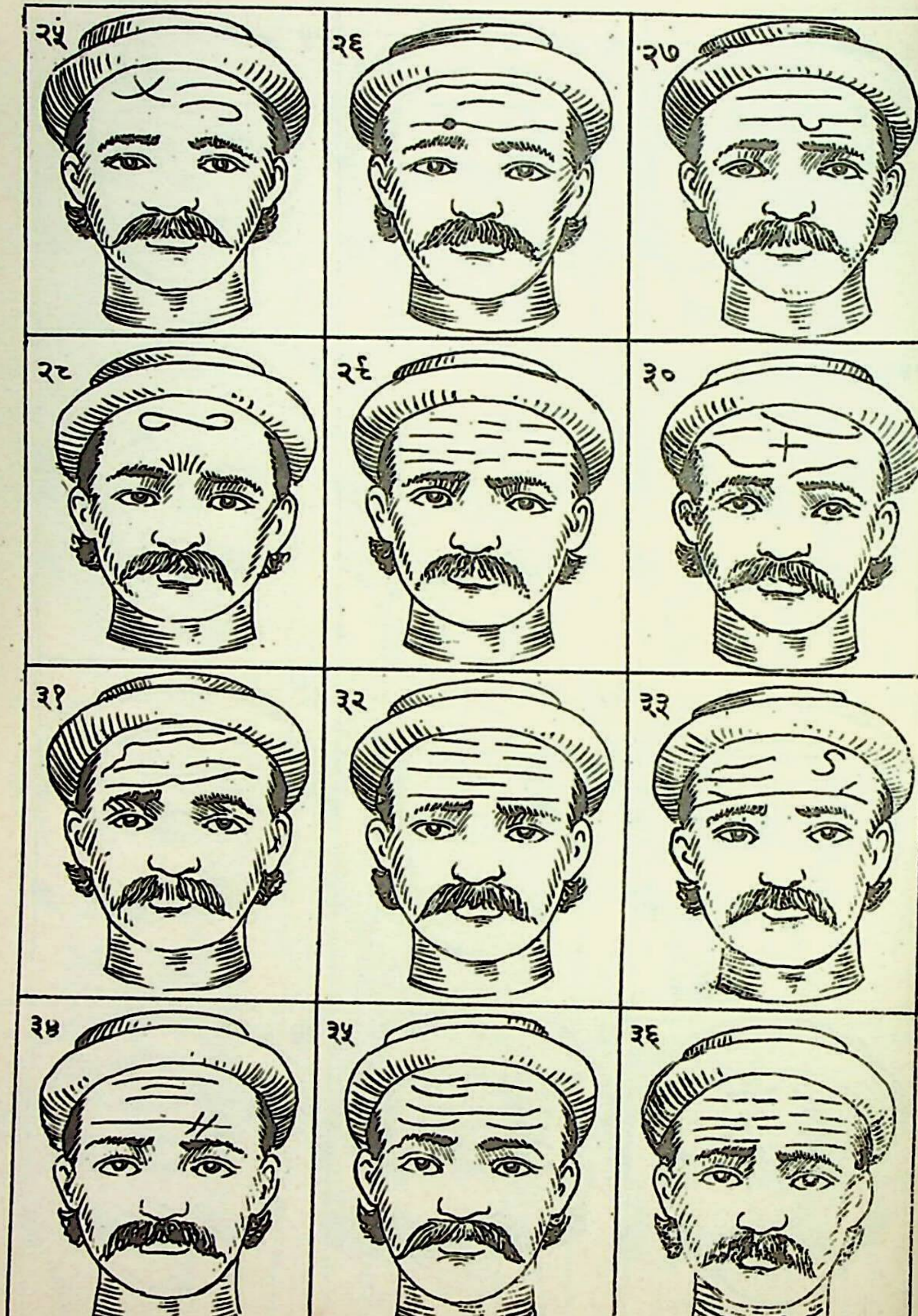
अपने अंगुलों से यह देह यथावत् कीर्तन किया गया है। स्त्री या पुरुष जो पूर्वोक्त प्रमाणों से संयुक्त हो तो दीर्घायु भोग बड़े धन को पाता है, और जो स्त्री अथवा पुरुष मध्यम प्रमाणों से प्रतीत हो वह मध्यमायु को भोग मध्यम धन को पाता है। जो पूर्वोक्त प्रमाणों से हीन लक्षणवाला हो वह अल्पायु भोग थोड़े से धन को पाता है ॥ ६०–६१ ॥

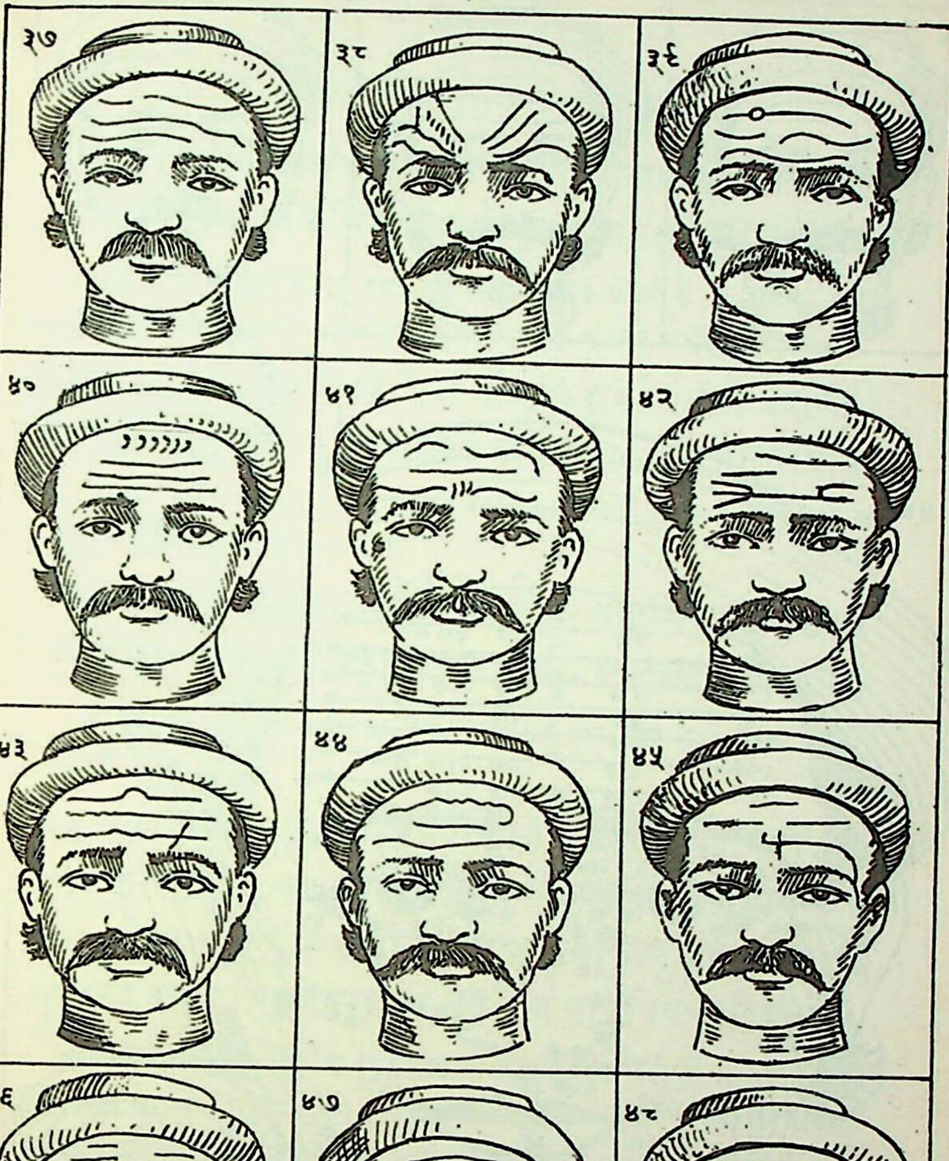
इत्यायुर्दायियोगाः ।

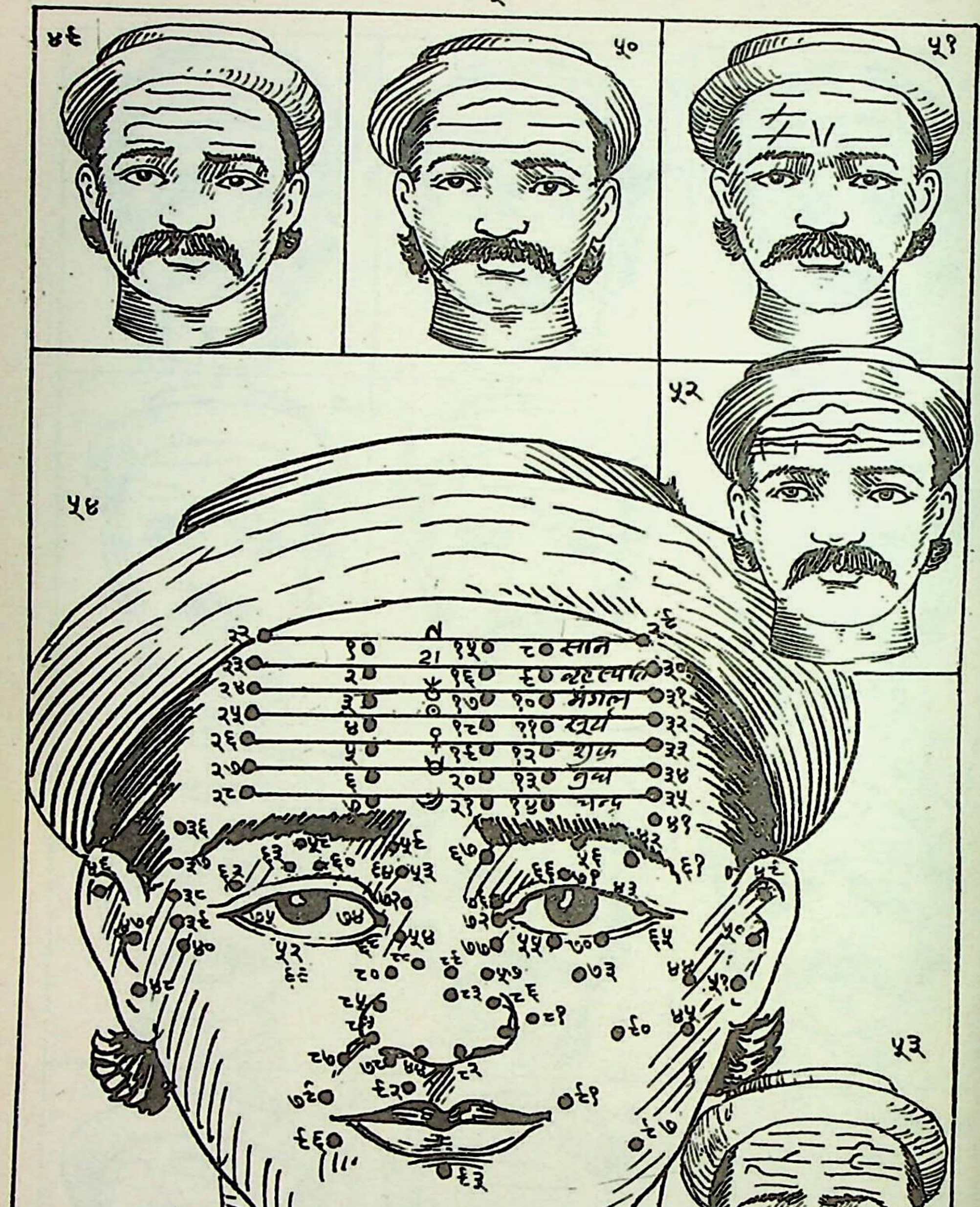
१




१३
१४
१५
१६
१७
१८
१९
२०
२१
२२
२३
२४


૨૫
૨૬
૨૭
૨૮
૨૯
૩૦
૩૧
૩૨
૩૩
૩૪
૩૫
૩૬


३७
३८
३९
४०
४१
४२
४३
४४
४५
४६
४७
४८



४९
५०
५१
५२
५३
५४
सनि
बृहस्पति
मंगल
सूर्य
शुक्र
बुध
चन्द्र

भालरेखातो वयःक्रमाब्दनिर्णय—

भाले विशाले खलु सप्त सन्ति रेखा विशुद्धा मुनिभिः प्रदिष्टा।
तासां स्वरूपं हृदये निधाय ब्रूयुः प्रमाणं वयसो बुधेन्द्राः ॥ १ ॥

भाल में मुनियों द्वारा कही गई सात रेखायें होती हैं। उनका स्वरूप अध्ययन कर बुधवरों को वयःक्रम का प्रमाण कहना चाहिये ॥१॥ *

केशस्य निम्ने प्रथमां हि रेखां सौराधिनाथां कवयो वदन्ति।
ततो द्वितीयां धिषणाधिपालां ततस्तृतीयां क्षितिसूनुनाथाम् २

केशों के निचले भाग की पहली रेखा का स्वामी शनि है। दूसरी का गुरु; तीसरी का मङ्गल ॥ २ ॥

ततश्चतुर्थी दिननाथनाथा शुक्राधिपा पञ्चमिका प्रसिद्धा।
बुधाधिनाथा खलु षष्ठिका सा या सप्तमी सा क्षणदाधिपेशा ३

चौथी का सूर्य, पाँचवीं का भृगु, छठी का बुध और सातवीं का स्वामी चन्द्र है ॥ ३ ॥

वयःक्रमस्याब्दनिरूपणेऽयं संप्रोच्यते वै नितरामुपायः।
एका कुरेखा यदि कर्णयुग्मस्नायुं समेतीह तदा विचार्यम् ४ ॥
एषा कुरेखा यदि वामकर्णस्नायोः समुत्था समुपैति सीमाम्।
भालस्य वामां निगदेद्दशाब्दं वयःक्रमं वा रविवर्षसम्मितम् ५

वयःक्रमसम्बन्धी वर्षों के निरूपण में यह उपाय कहा है कि जब एक क्षुद्रारेखा कानों की नस (रग) तक हो, उस समय पण्डितों को विचारना चाहिये और यदि यह क्षुद्रा रेखा बायें कान की रग से उठकर भाल की वाम सीमा तक हो तो दश या बारहवर्ष का वयःक्रम कहना चाहिये ॥ ४-५ ॥

---

* यहाँ यह देखिये कि भारतीय सामुद्रकशास्त्रवेत्ताओं ने केवल भालरेखा से कैसी विचित्र युक्ति द्वारा मनुष्य की आयु का निर्णय बड़ी सुगमता से करके बताया है। आज भी इसके अनेकों पण्डित हैं जो केवल भालरेखा द्वारा ही समस्त आयुनिर्णय करते हैं।—संपादक

आस्पष्टरूपा परिदृश्यमाना ह्येषा कुरेखा यदि भालमध्यम्।
संभेदयित्वा खलु विस्तृता चेदेकोनत्रिंशच्छरदं वदन्ति ॥ ६ ॥

यदि कुछेक स्पष्ट हो और कपाल के मध्यभाग तक जावे तो उन्तीस वर्ष का वयःक्रम कहते हैं ॥६ ॥

एषा कुरेखा यदि ह्रस्वरूपा वयःक्रमं ह्रस्वतरं वदन्ति ।
दीर्घा यदानीं खलु दीर्घरूपं न्यूनाधिकं वै स्वधिया विचार्यम्॥७

यदि यह क्षुद्रारेखा छोटी सी हो तो अल्पवयःक्रम और यदि बड़ी हो तो बड़ा वयःक्रम कहते हैं ॥ ७ ॥

चक्षुर्दर्शनाज्जन्मसमयनिर्णय—

यस्यास्ति चक्षुः खलु कालवर्णं रात्रौ द्वियामं जनने जनस्य।
आश्यामवर्णं तदपेक्षया चेद् घटीमितं वै समयं समीयात्॥८॥

जिसका नेत्र कालावर्ण प्रतीन हो तो उसका जन्मसमय मध्यरात्रि का कहना चाहिये । यदि उसकी अपेक्षा कुछ थोड़ासा कालावर्ण प्रतीत हो तो एक घटी का जन्म समय जानना चाहिये ॥ ८ ॥*

मधुव्रताभं यदि चेच्च चक्षुस्तारासमेतं यदिवा हि कृष्णम्।
तदा जनन्यां जनने जनस्य दिष्टं वदेद् द्वित्रिघटीप्रमाणम् ॥९॥

जिसका चक्षु भौंरे के समान वर्णवाला हो या तारा समेत कालावर्ण हो तो उसका जन्म समय दो या तीन घड़ी का जानना चाहिए ॥ ९ ॥

यन्नेत्रतारा परितः सिताढ्या सा केवला वा विशदा सनीला।
रात्रौ वदेद्वेदघटीप्रमाणं निरूपयेद्बाणघटीमितं वा ॥ १० ॥

जिसके नेत्र का तारा चारों तरफ़ सफ़ेद हो या केवल नीलवर्ण तथा सफ़ेद सा देख पड़े तो उसका जन्म समय रात्रि में चार या पाँच घड़ी का जानना ॥ १० ॥

---

* देखिये गणित ज्योतिष का क्रम भी सरलता से सामुद्रक द्वारा भी मिला कर कुण्डली तक खींच दी जा सकती है।—संपादक

यल्लोचनस्था खलु चार्धनीला तारा भवेद्वै ससिता सपीता ।
प्रातर्वदेच्छास्त्रघटीमितं वा प्रकाशयेत्सप्तघटीप्रमाणम् ॥ ११ ॥

जिसके लोचनों का तारा आधा नीलवर्णवाला, सफेद या पीला हो तो उसका जन्म समय प्रातःकाल छः या सात घड़ी का कहना चाहिये॥११॥

यस्याक्षितारामणिरेव नीलो ह्येको हि मिश्रो मणिभागको वा।
रात्रौ वदेदष्टघटीप्रमाणं निरूपयेन्नन्दघटीमितं वा ॥ १२ ॥

जिसके नेत्र का तारामणि ही नीलवर्ण हो या केवल मणिभाग ही मिश्रित वर्णवाला हो तो उसका जन्म समय रात्रि में आठ या नव घड़ी का कहना ॥ १२ ॥

चक्षुः समस्तं खलु नीलवर्णं क्षुद्रं सुचिह्नं यदि वा समीपे ।
रात्रौ वदेद्दिग्घटिकाप्रमाणं तथादिशेदीशघटीमितं वा ॥ १३ ॥

जिसका सारा नेत्र कालावर्ण हो या नेत्र के समीप छोटे-छोटे-से चिह्न हों तो उसका जन्म समय रात्रि में दश घड़ी या ग्यारह घड़ी का बताना चाहिये ॥ १३ ॥

नेत्रं यदेषद्धरितं च यस्य दिष्टं वदेत्सूर्यघटीमितं वै ।
अर्धं पलाशं यदि वार्धनीलं कालं वदेद्द्व्येकघटीमितं वा ॥१४॥

जिसका नेत्र कुछेक हरासा हो तो उसका जन्म समय बारह घड़ी का कहना चाहिये । जिसका नेत्र आधा हरा या आधा कालावर्ण हो तो उसका जन्म समय एक या दो घड़ी का कहना चाहिये ॥ १४ ॥

ईषत्पलाशं मलिनं च यस्य विलोक्यते चेन्मनुजस्य चक्षुः ।
दिवा वदेद्वह्निघटीप्रमाणं निरूपयेद्वेदघटीमितं वा ॥ १५ ॥

जिसका नेत्र कुछेक हरा या मैलासा हो उसका जन्म समय दिन में तीन या चार घड़ी का निरूपण करना ॥ १५ ॥

नेत्रस्य तारामणिरेव नीलो विदृश्यते वा हरितोऽपराह्ने ।
ब्रूयात्तदा बाणघटीप्रमाणं बुधो वदेच्छास्त्रघटीमितं वा ॥ १६ ॥

जिसके नेत्र का तारामणि ही नील या हरितवर्ण हो उसका जन्म समय अपराह्न में पाँच या छः घड़ी का बताना ॥ १६ ॥

बिडालनेत्रप्रतिमं च चक्षुः प्रतीयते यस्य जनस्य नूनम् ।
रात्रौ वदेत्सप्तघटीप्रमाणं विचारयेन्नागघटीमितं वा ॥ १७ ॥

जिसका नेत्र बिलार की आँखों के समान हो उसका जन्म समय रात्रि में सात या आठ घड़ी का विचारना चाहिये ॥ १७ ॥

मार्जारदृष्टिप्रभमेव चक्षुः संरक्तमध्यं यदि वा विभाति ।
रात्रौ नदेन्नन्दघटीप्रमाणं विज्ञो वदेद्दिग्घटिकामितं वा ॥ १८ ॥

जिसकी आँख बिलार की आँखों के समान हो; या आँख का मध्य भाग लालवर्णवाला हो उसका जन्म समय विद्वान् को नव या दश घड़ी का बताना चाहिये ॥ १८ ॥

आरक्तवर्णं यदि वा हि कृष्णं प्रतीयते यस्य नरस्य नेत्रम् ।
रात्रौ वदेदीशघटीप्रमाणं विचार्य सर्वं हृदये निदेशम् ॥ १९ ॥

जिसका नेत्र लाल या कालावर्ण हो उसका जन्म समय ग्यारह घड़ी का कहना चाहिये ॥ १९ ॥

चिह्नद्वारा जन्मलग्न

नार्या यदा वा पुरुषस्य भाले संदृश्यते चेद्विशदं च चिह्नम् ।
दशांशमध्ये खलु मेषकस्य जन्मं वदेत्तस्य जनस्य नूनम् ॥२०॥

जिस नारी या पुरुष के ललाट में यदि साफ सुथरा निशान हो तो उस का जन्म मेषलग्नगत दश अंशों के बीच में यानी पहले द्रेष्काण में कहना चाहिये ॥ २० ॥

भाले विशाले वदने च नेत्रे दक्षाद्विनिम्ने ह्यथवोर्ध्वभागे ।
ओष्ठोच्चदेशे यदि भाति चिह्नं कलायसाम्यं बहुलोमशं वा २१

विशालभाल, मुख, वामनेत्र, दाहने नेत्र का निचला भाग अथवा ऊपरला भाग और ओठों का ऊर्ध्व भाग यदि इनमें मटर समान या घने लोमोंवाला निशान सोहता हो ॥ २१ ॥

दशांशमारभ्य नखांशमध्ये मेषस्य ज्ञेया जनिरेव जन्तोः ।
अधःस्थले वै वदनस्ययस्यविभाति चिह्नं चिबुकेऽथ वा स्यात् २२

तो उसका जन्म मेष लग्न के दश अंश से लेकर बीस अंश के बीच में जानना चाहिये । जिसके मुख के निचले भाग में अथवा ठोढी में निशान सोहता हो ॥ २२ ॥

नखांशमारभ्य तदैडकस्य त्रिंशांशमध्ये पुरुषस्य जन्म ।
वदन्ति विप्राःखलु शास्त्रनिष्ठाःसाँव्वत्सरा वेदविदां वरेण्याः २३

तो ज्योतिषियों ने मेष लग्नगत बीस अंशों से लेकर तीस अंशों के भीतर उसका जन्म कहा है ॥ २३ ॥

रीत्या यदानीं खलु सूक्ष्मया चेद्विचारणां कर्तुमिहाभिवाञ्छेत् ।
आरभ्य भालाच्चिबुकान्तमेवं कुर्यात्तु भागत्रयमेव धीरः॥ २४॥

जब सामुद्रकशास्त्री सूक्ष्म रीति से विचार करना चाहे तो भाल से लेकर ठोढी पर्यन्त तीन भाग करे ॥ २४ ॥ †

आद्यं च भागं प्रवदेद्दिगंशं विंशांशतुल्यं खलु युग्मभागम् ।
त्रिंशांशसाम्यं प्रवदेत्त्रिभागं विज्ञाय चेत्थं क्रियतां विचारः २५

दश अंशवाला पहला भाग, बीस अंशवाला दूसरा और तीस अंशवाला तीसरा भाग कहना चाहिये । इस प्रकार विचार किया जावे ॥ २५ ॥

होरादिकान्वै सकलान्विचार्य ब्रूयात्फलादेशमिहैव धीमान् ।
ध्यात्वा हि रामं कुजया समेतं न तं विना को भणितुं समर्थः २६

होरा—द्रेष्काण—नवांश आदि समस्त षड्वर्गों का विचार कर बुद्धिमान् फलादेश को एकाग्रचित्त होकर शांतभाव से भगवत्स्मरण कर कहे ॥२६॥

कण्ठप्रदेशे यदि भाति चिह्नं क्षुद्रस्वरूपं यदिवा हि कोलम् ।
संरक्तवर्णं यदि वा बिडालं जनिं वदेद्दुत्तदिगंशमध्ये ॥ २७ ॥

यदि कण्ठभाग में छोटे बेर के बराबर निशान हो अथवा लाल, बिलार

---

† देखिये चित्रकला तथा विज्ञान आदि सामुद्रक का संबंध ।—संपादक

के समान आकारवाला निशान हो तो वृषलग्नगत दश अंशों के बीच में जन्म कहना ॥ २७ ॥

गलैकदेशे यदि भाति चिह्नं प्रागुक्तरूपं ह्यथवा किमन्यत् ।
द्रेष्काणयुग्मे वृषलग्नकस्य ब्रूयाज्जनिं वै मनुजस्य तस्य २८

यदि कण्ठ के एक देश में पूर्वोक्त निशान अथवा कोई अन्य निशान हो तो वृषलग्नगत दूसरे द्रेष्काण में उसका जन्म कहना चाहिये ॥ २८ ॥

कण्ठोपरिस्थं जलबुद्बुदाभं किंवा सरक्तं पिटकासमानम् ।
त्रिंशांशमध्ये वृषलग्नकस्य विद्याज्जनुर्वै पुरुषस्य तस्य ॥२६॥

यदि कण्ठ के ऊपरले भाग में जल के बुल्ले के समान या लाल फोड़े के समान निशान हो तो वृषलग्नगत तीसरे द्रेष्काण में उसका जन्म जानना चाहिये ॥ २६ ॥

विद्योतते चेत्खलु दक्षबाहौ स्कन्धद्वये वा यदि भाति चिह्नम् ।
दशांशमध्ये मिथुनस्य यस्य जनिं वदेत्तस्य नरस्य नूनम् ३०

जिसकी दाहिनी भुजा या दोनों कन्धों में यदि कोई निशान हो तो मिथुन लग्नगत दश अंशों के बीच में उसका जन्म कहना चाहिये ॥३०॥

विभाति चिह्नं यदि वामबाहौ तथांसयोर्वा निकटे विभाति ।
द्रेष्काणयुग्मे खलु युग्मकस्य ब्रूयाज्जनुर्वै मनुजस्य तस्य ३१॥

यदि बाईं भुजा या कन्धों के समीप हो तो मिथुनलग्नगत दूसरे द्रेष्काण में उसका जन्म कहना ॥ ३१ ॥

मध्ये यदानीं खलु दक्षबाहोर्विराजते चेद्विशदं च चिह्नम् ।
विंशांशतो वै शरविंशभागे युग्मस्य जन्म प्रवदेज्जनस्य ३२

जिसकी दाहिनी भुजा के बीच में साफ सुथरा निशान हो तो मिथुन लग्नगत बीस अंशों से लेकर पचीस अंशों के भीतर उसका जन्म बताना चाहिये ॥ ३२ ॥

विद्योतते चेत्खलु वामबाहोर्मध्ये सुचिह्नं विशदं च यस्य ।
आरभ्य विंशं सशरं तदानीं त्रिंशांशमध्ये मिथुनस्य जन्म ३३॥

जिसकी बाईं भुजा के बीच में यदि कोई निशान हो तो मिथुन लग्नगत पच्चीस अंशों से लेकर तीस अंशों के भीतर उसका जन्म कहना चाहिये ॥ ३३ ॥

वक्षःस्थले चेच्छशकाङ्घ्रिसाम्यं चिह्नं सपुष्पं ससितं विभाति ।
आद्ये दृकाणे खलु कर्कटस्य जनिं वदेद् बुद्धिवरो जनस्य ३४॥

जिसके वक्षःस्थल में यदि खरगोश के पैर के समान या फूल के समान सफ़ेद निशान हो तो कर्क लग्नगत पहले द्रेष्काण में उसका जन्म बताना चाहिये ॥ ३४ ॥

चिह्नं यदा चेत्कुचयोः समीपे कोलस्वरूपं कुसुमप्रभं वा ।
दशांशमारभ्य नखांशमध्ये कर्कस्य जन्मं प्रवदेज्जनस्य ॥३५॥

जिसके स्तनों के निकट यदि बेर के समान या फूल के समान निशान हो तो कर्क लग्नगत दश अंश से लेकर बीस अंशों के भीतर उसका जन्म कहना चाहिये ॥ ३५ ॥

उरोजनिम्ने यदि भाति चिह्नं पुष्पप्रभं वा खलु फेनिलाभम् ।
वह्नौ दृकाणे सति कर्कटस्य धीरो वदेज्जन्म जनस्य तस्य ॥३६॥

जिसके स्तनों के निचले भाग में यदि फूल के समान या बेर के समान निशान हो तो कर्क लग्न के तीसरे द्रेष्काण में उसका जन्म बताना चाहिये ॥ ३६ ॥

वक्षोपरिस्थं यदि वामगं चेच्चिह्नं विशुद्धं नितरां विभाति ।
आद्ये दृकाणे मृगराजकस्य ब्रूयाज्जनुर्वै मनुजस्य तस्य ॥३७॥

यदि वामभाग में वक्षःस्थल के ऊपर शुभ चिह्न हो तो सिंहलग्न के पहले द्रेष्काण में उसका जन्म बताना चाहिये ॥ ३७ ॥

वक्षस्य निम्ने यदि भाति चिह्नं प्रागुक्तरूपं ह्यथवा किमन्यत् ।
युग्मे दृकाणे खलु सिंहकस्य विचारयेद्वै जननं जनस्य ॥३८॥

यदि वक्षःस्थल के निचले भाग में पूर्वोक्त चिह्न अथवा अन्य कोई चिह्न हो तो सिंहलग्न के दूसरे द्रेष्काण में उसका जन्म विचारना चाहिये ॥३८॥

संप्रेक्ष्यते चेत्खलु पार्श्वभागे सातीलकाभं यदि वा कुरूपम् ।
कण्ठीरवस्यान्तिमिके दृकाणे जनिं प्रतीयात्पुरुषस्य तस्य ३९॥

पार्श्वभाग में यदि मटरसमान अथवा छोटासा निशान हो तो सिंहलग्न के तीसरे द्रेष्काण में उसका जन्म जानना चाहिये ॥ ३९ ॥

मध्योदरे वा कुचयोः समीपे बिन्दुस्वरूपं यदि नीलरक्तम् ।
आद्ये दृकाणे खलु कन्यकाया धीरो वदेद्वै जननं जनस्य ४०

पेट के बीच में या स्तनों के निकट काला या लाल बिन्दु सा निशान हो तो कन्यालग्न के पहले द्रेष्काण में उस प्राणी का जन्म बताना चाहिये ॥४०॥

कुचोदरे चेद्यदि नीचदेशे रक्तं सनीलं खलु बिन्दुयुक्तम् ।
युग्मे दृकाणे सति कन्यकाया विद्याज्जनिं वै मनुजस्य तस्य ४१

यदि स्तन या पेट के निचले भाग में लाल या काले रंगवाला बिन्दुयुक्त निशान हो तो कन्यालग्न के दूसरे द्रेष्काण में उसका जन्म जानना चाहिये ॥ ४१ ॥

तुन्दस्य निम्ने यदि वा सुनाभ्याश्चिह्नं किमन्यद्विशदं विभाति ।
वह्नौ दृकाणे सति कन्यकाया ब्रूयाज्जनुर्वै खलु मानवस्य ४२

यदि तोंद (पेट) या तोंदी के निचले भाग में कोई अन्य निशान हो तो कन्यालग्न के तीसरे द्रेष्काण में उस प्राणी का जन्म बताना चाहिये ॥४२॥

नाभौ कटौ वा यदि लोमयुक्तं क्षुद्रस्वरूपं मृदुतासमेतम् ।
आद्ये दृकाणे खलु तौलिकस्य विद्याद्विदीशो मनुजस्य जन्म ॥

यदि तोंदी या कमर में लोमयुक्त, कोमल, छोटासा निशान हो तो तुलालग्न के पहले द्रेष्काण में उसका जन्म जानना चाहिये ॥ ४३ ॥

प्रागुक्तचिह्नं यदि वामगं चेद्विभाति शुद्धं खलु नाभिनिम्ने ।
युग्मे दृकाणे सति तौलिकस्य बुधो वदेज्जन्म जनस्य तस्य४४

यदि पूर्वोक्त निशान वामभाग में नाभि के निचले भाग में हो तो तुला लग्न के दूसरे द्रेष्काण में उसका जन्म बताना चाहिये ॥ ४४ ॥

आलोच्यते चेदुदरस्य प्रान्ते चिह्नं सनीलं बहुलोमशं वा ।
वह्नौ दृकाणे सति तौलिकस्य जनिं वदेत्तस्य जनस्य सूरिः ४५

यदि उदर के प्रान्तभाग में काला या घने लोमोंवाला निशान हो तो तुला लग्नगत तीसरे द्रेष्काण में उसका जन्म बताना ॥ ४५ ॥

श्रोणीप्रदेशस्य तु वामभागे विभाति चिह्नं विशदस्वरूपम् ।
आद्ये दृकाणे खलु वृश्चिकस्य विद्याज्जनिं वै पुरुषस्य तस्य ४६

यदि कमर के वामभाग में निशान हो तो वृश्चिक लग्न के पहले द्रेष्काण में उसका जन्म जानना ॥ ४६ ॥

कटिप्रदेशस्य च दक्षभागे कलायसाम्यं खलु भाति चिह्नम् ।
युग्मे दृकाणे सति वृश्चिकस्य ब्रूयाज्जनिं वै मनुजस्य तस्य ४७

यदि कमर के दाहिने भाग में मटरसमान निशान हो तो वृश्चिकलग्न के दूसरे द्रेष्काण में उसका जन्म बताना ॥ ४७ ॥

अपाननिम्ने यदि भाति चिह्नं हरेणुरूपं विमलस्वरूपम् ।
वह्नौ दृकाणे सति वृश्चिकस्य वदेद् बुधेशो जननं जनस्य ४८

यदि गुदा के निचले देश में मटरसमान निशान हो तो वृश्चिकलग्न के तीसरे द्रेष्काण में उसका जन्म बताना चाहिये ॥ ४८ ॥

वामोरुसंस्थं विशदस्वरूपं विभाति चिह्नं जलबुद्बुदाभम् ।
आद्ये दृकाणे खलु चापकस्य जनिं वदेद्बुद्धिवरो जनस्य ४९

यदि बाईं ऊरु में जलबुल्ले के समान निशान हो तो धनलग्न के पहले द्रेष्काण में उसका जन्म बताना ॥ ४९ ॥

दक्षोरुसंस्थं विमलस्वरूपं प्रागुक्तचिह्नं नियतं विभाति ।
युग्मे दृकाणे हि धनुर्धरस्य ब्रूयाज्जनुर्वै मनुजस्य तस्य ॥५०॥

यदि दाहिनी ऊरु में पूर्वोक्त निशान हो तो धन लग्न के दूसरे द्रेष्काण में उसका जन्म कहना चाहिये ॥ ५० ॥

ऊरुद्वयस्यापि च तूर्ध्वभागे चिह्नं यदानीं विशदं विभाति ।
वह्नौ दृकाणे खलु कार्मुकस्य समुद्भवं वै कथयेज्जनस्य ॥५१॥

यदि दोनों ऊरुओं के ऊपरले भाग में निशान हो तो धनलग्न के तीसरे द्रेष्काण में उसका जन्म कहना चाहिये ॥ ५१ ॥

उच्चस्थले चेत्खलु दक्षजानोरनुच्चताराममेव भाति ।
आद्ये दृकाणे सति नक्रकस्य विद्याज्जनुर्वै मनुजस्य तस्य ५२

यदि दाहिने घुटनू के ऊपरले भाग में, उँचाई रहित, तारा के समान निशान हो तो मकरलग्न के पहले द्रेष्काण में उसका जन्म जानना चाहिये ५२

ऊर्ध्वस्थले चेत्खलु वामजानोः प्रागुक्तचिह्नं विशदं विभाति ।
युग्मे दृकाणे मकरस्य पुंसो ब्रूयाज्जनिं बुद्धिमतामधीशः ५३॥

यदि बायें घुटनू के ऊपरले भाग में पूर्वोक्त निशान हो तो मकर लग्न के दूसरे द्रेष्काण में उस पुरुष का जन्म बताना चाहिये ॥ ५३ ॥

अष्ठीवतश्चेत्खलु निम्नदेशे प्रागुक्तचिह्नं यदि भाति शुद्धम् ।
वह्नौ दृकाणे सति नक्रकस्य विद्याद् बुधेशो जननं जनस्य ५४॥

यदि जानुओं के निचले भाग में पूर्वोक्त निशान हो तो मकर के तीसरे द्रेष्काण में उसका जन्म बुधेशों को जानना चाहिये ॥ ५४ ॥

उच्चप्रदेशे खलु दक्षजङ्घा दीर्घं त्वनुच्चं भजते हि भङ्गम् ।
आद्ये दृकाणे सति कुम्भकस्य विज्ञो वदेद्वै पुरुषस्य जन्म ५५

यदि दाहिनी जाँघ के ऊपरले भाग में तरङ्गाकार निशान हो तो कुम्भ लग्नगत पहले द्रेष्काण में उसका जन्म बताना चाहिये ॥ ५५ ॥

वामा सुजङ्घा खलु चोर्ध्वभागे प्रागुक्तचिह्नं लभते यदानीम् ।
युग्मे दृकाणे घटलग्नकस्य विद्याज्जनिं वै मनुजस्य तस्य ५६

यदि बाईं जङ्घा के ऊपर के भाग में पूर्वोक्त निशान हो तो कुम्भलग्न के दूसरे द्रेष्काण में जन्म जानना चाहिये ॥ ५६ ॥

जङ्घाद्वयस्योपरिगं विभाति चिह्नं यदानीं बदरप्रमाणम् ।
वह्नौ दृकाणे सति कुम्भकस्य ब्रूयाज्जनुर्वै खलु मानुषस्य ५७

यदि दोनों जङ्घाओं के ऊपरी भाग में बेर के समान निशान हो तो कुम्भ लग्न के तीसरे द्रेष्काण में जन्म कहना ॥ ५७ ॥

अनुन्नतं चेद्यदि मांसलग्नं चोद्भाति चिह्नं खलु वामपादे।
आद्ये दृकाणे सति मीनकस्य वदेत्सुधीरो जननं जनस्य ५८

यदि उँचाई रहित मांस में लगा हुआ निशान वामपाद के ऊपरले भाग में हो तो मीनलग्न के पहले द्रेष्काण में जन्म कहना चाहिये ॥ ५८ ॥

ऊर्ध्वस्थले चेद्यदि दक्षपादे प्रागुक्तचिह्नं विशदं विभाति।
युग्मे दृकाणे पृथुलोमकस्य जनिं विपश्चित्प्रवदेज्जनस्य ५९

यदि दाहिने पाद के ऊपरी भाग में पूर्वोक्त निशान स्पष्ट हो तो मीन लग्न के दूसरे द्रेष्काण में जन्म बताना ॥ ५९ ॥

अधःस्थलस्थं पदयोर्यदानीं संप्रेक्ष्यते चेद्विशदं च चिह्नम्।
वह्नौ दृकाणे झषलग्नकस्य ब्रूयाज्जनुर्बुद्धिवरो जनस्य ॥६०॥

यदि दोनों पैरों के निचले भाग में साफ़ सुथरा निशान हो तो मीनलग्न के तीसरे द्रेष्काण में जन्म कहना चाहिये ॥ ६० ॥

भाले मुखे वा यदि लक्ष्म मेषं वृषं च कण्ठे मिथुनं च बाह्वोः।
कर्कं च चित्ते जठरे च सिंहं कट्यां च कन्यां कथयन्ति धीराः ६१॥

यदि ललाट या मुख में कैसा ही निशान हो तो मेष, कण्ठ में हो तो वृष, भुजाओं में हो तो मिथुन, हृदय में हो तो कर्क, पेट में हो तो सिंह, और यदि कमर में हो तो कन्या जन्मलग्न कहना चाहिये ॥ ६१ ॥

नाभेरधःस्थं प्रवदेत्तुलाख्यं गुह्यप्रदेशे खलु वृश्चिकाख्यम्।
ऊरुस्थलस्थं धनुरेव विद्याज्जानुस्थितं वै मकरं बुधेशः॥६२॥

यदि नाभि के निचले भाग में निशान हो तो जन्मलग्न तुला कहना चाहिये। यदि गुह्यप्रदेश में निशान हो तो वृश्चिक, ऊरुओं में हो तो धनलग्न, घुटनुओं में हो तो मकरलग्न जानना चाहिये ॥ ६२ ॥

जङ्घास्थितं वै कथयन्ति कुम्भं पादस्थितं चेत्खलु मीनमाहुः।
स्थूलां सुरीतिं हृदये निधाय व्याख्यायि लग्नं जनुषो जनानाम्॥

यदि निशान जाँघों में हो तो कुम्भ को जन्मलग्न कहा है। यदि पाद-

तलों में चिह्न हो तो आचार्यों ने मीन को जन्मलग्न बतलाया है। इस भाँति स्थूलरीति को हृदयंगम कर मनुष्यों का जन्मलग्न कहा गया है ॥ ६३ ॥

भालस्थमेषादिस्वरूपज्ञान

चिह्नं यदानीं विशदाङ्कुशाभं ♈ प्रोक्तं पुराणैः खलु मेषकस्य।
♉ वेदाङ्कसाम्यं वृषभस्य चिह्नं गायन्ति विप्रा वरबुद्धिमन्तः ६४

अङ्कुश के समान निशान को मेष लग्न का चिह्न कहा है। वृषलग्न का चिह्न चार अङ्क के समान है ॥ ६४ ॥

♊ कोणेन युक्तं सरलं द्विरेखं युग्मस्य चिह्नं कविभिः प्रयुक्तम्।
सप्ताङ्कयुग्मं यदि व्यस्तरूपं प्रकाशितं वै खलु ♋ कर्कटस्य ६५॥

कोण से युक्त सीधा दो रेखाओंवाला मिथुन ♊ का चिह्न है। यदि सात अङ्क का जोड़ा उलटे रूप से प्रतीत होता हो ♋ तो कर्कलग्न का चिह्न है ॥ ६५ ॥

ऋमातृकायुक्तपदं यदानीं विद्योतते चेत्खलु वृत्तकायम्।
♌ सिंहस्य चिह्नं विशदीकृतं वै सांवत्सरैर्वेदविदां वरिष्ठैः ६६

यदि ऋकार की मात्रा से जुड़े हुए पैरोंवाला वृत्ताकार निशान हो तो उसे सिंह का चिह्न जानना ॥ ६६ ॥

यन्त्रीस्वरूपं सरलं विशुद्धं प्रोक्तं हि चिह्नं खलु बालिकायाः।
नीचप्रदेशे कुटिलैकरेखं त्रिज्येन युक्तं धनुषा यदोर्ध्वे[१] ॥ ६७ ॥

सीधा व साफ यन्त्री ♍ के समान कन्या का चिह्न है। जिसके निचले देश में टेढ़ी एक रेखा हो व ऊपरले भाग में डोरारहित धन्वाकार निशान हो—

वदन्ति चिह्नं खलु तौलिकस्य ♎ यमस्वरूपं द्रुणिकस्य ♏ ज्ञेयम्
खर्जूरशाखासममेव रूपं चापस्य चिह्नं ♐ भणितं प्रवीणैः ६८

तो उसे तुला का ♎ चिह्न कहते हैं। ♏ यम के रूपवाला वृश्चिक

१ ऊर्ध्वभागे त्रिगुणेन धनुषा संमतम्।

का निशान जानना चाहिये। जिसका रूप खजूर की शाखा समान ही हो तो उसे  धनलग्न का चिह्न कहा है ॥ ६७–६८ ॥

 वीपीस्वरूपं कवयो वदन्ति नक्रस्यं चिह्नं गदितं सुधीभिः।
वक्रांद्विरेखंखलुकुम्भकस्य   षट्त्रिंशसाम्यंपृथुलोमकस्य।

 वीपी समान मकर का चिह्न कहा है।  टेढी दो रेखाओंवाला कुम्भ का चिह्न कहा है।  छत्तीस अङ्क सम रूपवाला निशान मीन लग्न का कहा जाता है ॥ ६९ ॥

एतानि चिह्नानि मयोदितानि मेषादिकानां खिलराशिकानाम्
विज्ञाय चेत्थं सुधिया विचार्यं शुभाशुभं वै मनुजस्य नूनम् ७०॥

मेष आदि समस्त राशियों के ये चिह्न मैंने कहे हैं इस भाँति उन सबों को जानकर मानवगणों का शुभाशुभ पण्डितों को विचारना चाहिये ॥७०॥*

भाल में मेषादिवासज्ञान

भालोर्चदेशे वसतीह कर्को मध्यस्थले वै वृषभो विभाति।
दक्षभ्रंकुट्यां भ्रमतीह सिंहो वामभ्रकुट्यां खलु कुम्भकोऽपि ७१॥

ललाट के ऊपरले भाग में कर्क व भाल के मध्य में वृष, दाहिनी भौंह पर सिंह और बाईं भौंह पर कुम्भ है ॥ ७१ ॥

दक्षाम्बकोर्ध्वे धनुरेव भाति दक्षश्रुतोर्ध्वे घटको विभाति।
वामश्रुतोर्ध्वे मिथुनं च मेषो नासोच्चदेशे खलु वृश्चिकोपि ७२॥

दाहिने नेत्र के ऊपरीभाग में धन है। दाहिने कान के ऊर्ध्वभाग में तुला है। बायें कान के ऊपरले भाग में मिथुन और मेष है। और नासिका के ऊर्ध्वदेश में वृश्चिक है ॥ ७२ ॥ †

---

१ मकरस्य २ मीनस्य ३ कथितानि ४ ललाटोर्ध्वदेशे ५ दक्षिणभ्रुकुटौ ६ दक्षिणनेत्रोर्ध्वे।

* यह सभी बातें पाठकों को ध्यान में रखने से उनके फलाफल कहने में सरलता होगी। —संपादक

† शरीर में राशियों की पहिचान तथा उनके स्थान कैसी बारीकी से कहे गये हैं।—संपादक

दक्षे तु गण्डे वसतीह बाला वामे च गण्डे खलु मीनकोऽपि ।
नक्रास्थितो वै चिबुकोर्ध्वदेशे वासो हि ज्ञेयोऽखिलराशिकानाम्॥

दाहिने गाल पर कन्या, बायें गाल पर मीन, ठोढी के ऊपरले भाग में मकर है । यह समस्त राशियों का वास जानना चाहिये ७३ (देखो चित्र नं० १)

रव्यादिग्रहों का स्वरूपज्ञान

वृत्तस्वरूपं खलु बिन्दुमध्यं ☉ मार्तण्डचिह्नं मुनयो वदन्ति ।
चापानुरूपं विशदस्वरूपं चन्द्रस्य चिह्नं ☽ गदितं सुधीभिः ७४

मध्य में बिन्दुवाला वृत्ताकार सूर्य का चिह्न ☉ है । निर्मल धन्वाकार चन्द्रमा का चिह्न ☽ है ॥ ७४ ॥

शीर्षत्रिशाखं क्षितिजस्य चिह्नं ♂ ठस्यानुरूपं कवयः कुर्वन्ति ।
धनाङ्कयुक्तं ☿ खलु वृत्तमध्यं मस्तद्विशाखं भणितं बुधस्य ७५

शीश में तीन शाखाओंवाला ठकार के अनुरूप मङ्गल का चिह्न ♂ है । धनाङ्कयुक्त, बीच में गोल तथा मस्तक में दो शाखाओंवाला बुध का चिह्न ☿ होता है ॥ ७५ ॥

रेखाविभिन्नं विशदस्वरूपं युग्माङ्कसाम्यं ♃ धिषणस्य चिह्नम् ।
धनाङ्कयुक्तं यदि नीचदेशे सुवृत्तकायं खलु ♀ भार्गवस्य ७६

रेखा से कटा हुआ साफ़ दो अंक के रूपवाला निशान बृहस्पति का चिह्न ♃ कहा जाता है । यदि निचले भाग में धनाङ्कयुक्त, गोलाकार ♀ निशान हो तो उसे शुक्र का चिह्न कहते हैं ॥ ७६ ॥

♄ इकारसाम्यं विशदस्वरूपं चिह्नं सतोक्तं रविजस्य नूनम् ।
विज्ञाय रूपं निखिलग्रहाणां संस्थापयेद्वै वदने बुधेशः ॥७७॥

विशुद्ध इकार के आकारवाला शनैश्चर का चिह्न ♄ है । इस भाँति समस्त ग्रहों का रूप हृदयंगम कर लेना चाहिये ॥ ७७ ॥

ललाट में सूर्यादिवासज्ञान

भाले विशाले वसतीह भौमो दक्षाम्बके वै दिनपो विभाति ।
वामे सुनेत्रे क्षणदाधिपेशः श्रोत्रे च दक्षे मृगराजवन्द्यः ७८ ॥

१ मयोक्तमिति वा पाठः २ दक्षिणनेत्रे ३ सूर्यः ४ चन्द्रः ५ बृहस्पतिः ॥

विशाल भाल में मङ्गल, दाहिने लोचन में सूर्य, बायें नेत्र में चन्द्रमा और दाहिने कान में बृहस्पति रहते हैं ॥ ७८ ॥

वामे च कर्णे रविजं वदन्ति नासास्थितं वै कथयन्ति काव्यम् ।
चन्द्रात्मजं वेदविदो मुखाब्जे वासो हि ज्ञेयोऽखिलखेचराणाम् ॥

बायें कान में शनैश्चर, नाक में शुक्र और मुखकमल में बुध हैं। इस भाँति समस्त ग्रहों का वास जानना चाहिये ॥ ७९ ॥ (देखो चित्र नं० २)

भालस्थरेखाज्ञान

भाले विशाले खलु सप्त सन्ति रेखा विशुद्धा मुनिभिः प्रदिष्टाः ।
तासां स्वरूपं हृदये निधाय ब्रूयात्फलादेशमिहैव धीमान् ८० ॥

विशाल भाल में मुनियों ने सात रेखायें कही हैं। उनके स्वरूप का भली भाँति अध्ययन कर फलादेश कहना चाहिये ॥ ८० ॥ *

केशस्य निम्ने रविजस्य रेखा ज्ञेया ततो वै धिषणस्य धेया ।
तन्नीचभागे खलु भौमकस्य तन्निम्नतोथो दिवसाधिपस्य ८१ ॥

बालों के निचले भाग में शनैश्चर की रेखा जानना चाहिये। उसके बाद बृहस्पति की रेखा, उसके नीचे मङ्गल की और फिर सूर्य का रेखा जानना चाहिये ॥ ८१ ॥

ततो ह्यधःस्थां किल भार्गवीयां तन्नीचदेशे विवदेद् बुधस्य ।
तन्निम्नदेशे क्षणदाधिपस्य रेखां वदेयुः खलु पण्डितेन्द्राः ८२ ॥

सूर्य की रेखा के नीचे शुक्र की रेखा, उसके अधःस्थल में बुध की रेखा और उसके नीचे चन्द्रमा की रेखा है ॥ ८२ ॥ (देखो चित्र नं० ३)

सूक्ष्मे विचारे दिनपस्य रेखां दक्षे च नेत्रे शशिनश्च वामे ।
भ्रूमध्यदेशे खलु भार्गवस्य ब्रूयात्सुधीरो विधुजस्य वक्त्रे ॥८३॥

सूक्ष्म विचार करने पर दाहिने नेत्र के ऊपरी भाग में सूर्य की रेखा, बायें नेत्र के ऊर्ध्वस्थल में चन्द्रमा की रेखा, भौंहों के बीच के भाग में शुक्र की रेखा और वदन में या नासिका के अग्रभाग में बुध की रेखा कहना चाहिये ॥ ८३ ॥ (देखो चित्र नं० ४)

---

* देखिये शरीर में कैसे गूढ़ रहस्य द्वारा ज्योतिष का समावेश है।—सं०

यस्यास्ति भाले धिषणस्य रेखा संभुग्नमध्या विशदा विभाति।
ज्ञानी धनी स्यान्मनुजस्तदानीं सद्वृत्तशाली सरलस्वभावः ८४॥

जिसके भाल में बृहस्पति की रेखा बीच में टेढ़ी तथा स्पष्ट हो वह ज्ञानी, धनी, महायशस्वी तथा सीधे स्वभाववाला होता है ॥८४॥ (देखो चित्र नं० ५)

वृत्तेन युक्ता सुरराजमन्त्रिरेखा विशुद्धा कुटिला विभाति।
वित्तस्य नाशं लभते मनुष्यो भ्रान्तो भवार्तो भयतामुपैति ८५॥

बृहस्पति की रेखा वृत्ताकार निशानयुक्त, टेढ़ी तथा साफ़ हो तो वह भ्रान्तचित्त तथा सांसारिक दुःखों से पीड़ित भययुक्त होता है ॥ ८५ ॥ (देखो चित्र नं० ६)

मन्दस्य रेखा कुटिला विभाति भौमस्य रेखा धनुषाकृतिश्चेत्।
दुष्टामवस्थामवलम्ब्य जन्तुर्जायाविहीनो जडतामुपैति ॥८६॥

शनैश्चर की रेखा टेढ़ी हो और मङ्गल की रेखा धन्वाकार हो तो वह बुरी दशा का अवलम्बन करता, जायारहित तथा मूर्ख होता है ॥ ८६ ॥ (देखो चित्र नं० ७)

भाले विशाले सरला हि तिस्रो रेखा विशुद्धा नितरां विभान्ति।
सौभाग्यशाली सरलस्वभावो नीतौ रतः स्यात्सकलप्रियश्च ॥
प्रवञ्चनाशून्यवपुर्विलासी प्रशंसनीयो महतामुपासी।
सतां चरित्रेण युतो मनस्वी सुती सुविद्यः सुखतामुपैति ८८॥

जिसके भाल में लम्बी तीन रेखायें चमकदार हों तो वह सीधे स्वभाववाला, सबका प्यारा, नीति में परायण और सौभाग्यशाली होता है। साथ ही प्रतारणा रहित, विलासी, प्रशंसनीय, महात्माओं का उपासक, सच्चरित्र, मनमौजी, पुत्रवान्, विद्यावान् और सुखसमूह पाता है ॥ ८७। ८८॥ (देखो चित्र नं० ८)*

मध्ये विभिन्ना यदि मन्दरेखा स्वल्पस्वरूपा सूरपूजितस्य।
भिन्ना यदानीमवनीसुतस्य सूर्याब्जयोश्चेत्खलु स्वल्परूपा ८९

---

* यह हमारा भी अनुभव है।—संपादक

सोऽयं नरः स्याद् बहुकार्यकारी संमानितो मानसशक्तिधारी।
सौभाग्यहीनो हि यदा कदापि चिन्तान्वितो वै चपलस्वभावः॥

यदि शनैश्चर की रेखा बीच में छिन्नभिन्न हो। बृहस्पति की रेखा छोटी सी हो। मङ्गल की रेखा भिन्न हो। सूर्य तथा चन्द्रमा की रेखा छोटी २ हों तो वह बहुत से कार्यों का करनेवाला, सम्माननीय, मानसगुणशाली, जबकब सौभाग्यहीन, चपलस्वभाववाला और चिन्तायुक्त रहता है॥८९।९०॥ (देखो चित्र नं० ९)

मन्दाररेखा सरलस्वरूपा तन्मध्यगा चेत्कुटिला गुरोश्च।
सौभाग्यशाली मनुजस्तदानीं मानी महौजा धनतामुपैति ९१

यदि शनैश्चर व मङ्गल की रेखा सीधी हों और उन दोनों के बीच में गई हुई बृहस्पति की रेखा टेढी हो तो वह सौभाग्यशाली, मानी, महाबली और धनसमूह को पाता है ॥ ९१ ॥ (देखो चित्र नं० १०)

सौरी सुरेखा विशदा विभाति सर्पानुरूपा सुरवन्दितस्य।
सोयं नरः स्याद्व्यवसायशाली वित्ताभिलाषी जनवञ्चकश्च॥

यदि शनैश्चर की रेखा साफ़ सीधी हो और बृहस्पति की रेखा सर्पाकार हो तो वह रोजगारी, धनाभिलापी तथा जनवञ्चक होता है॥ ९२॥ (देखो चित्र नं० ११)

भान्तीह भाले मनुजस्य यस्य छिन्ना विभिन्ना बहुशो हि रेखाः।
पीडाकराघातमुपैति देहे दौर्भाग्यशाली दयिताविहीनः ९३॥

जिसके भाल में बहुत सी रेखायें छिन्नभिन्न हों वह दौर्भाग्यशाली, नारीविहीन होता तथा देह में कष्टकारक आघात पाता है ९३॥ (देखो चित्र नं० १२)

नीचोर्ध्वभिन्ना वृजिना हि सौरी द्विच्छिन्नकण्ठा धिषणाधिपा स्यात्। कौजी कुरेखा यदि भाति भाले प्राप्त्वा त्वनिष्टं धननाशमेति ॥ ९४ ॥

यदि शनैश्चर की रेखा निचले तथा ऊपरी भाग में भग्न हो। बृहस्पति की रेखा टेढी तथा तीन खण्डवाली हो, और मङ्गल की रेखा छोटी हो तो उसका अनिष्ट तथा धनक्षय होता है॥ ९४॥ (देखो चित्र नं० १३)

द्विच्छिन्नमध्या सरलार्कसूनोर्मध्ये विभिन्ना गुरुभौमयोश्च ।
सम्पत्तिनाशं लभते मनुष्यस्तथाधिकारीकृतवस्तुहानिम् ९५ ॥

यदि शनैश्चर की रेखा सीधी हो और बीच में छोटी छोटी दो रेखाओं से कटी हो। साथ ही बृहस्पति और मङ्गल की रेखाएँ मध्यभाग में भग्न हों तो उस पुरुष की सम्पत्ति नाश होती तथा अधिकृत वस्तु की हानि होती है ॥ ९५ ॥ (देखो चित्र नं० १४)

मन्दस्य रेखा धनुषाकृतिश्चेद्गीर्वाणवन्द्यस्य तथा विभाति ।
भौमी गभीरा विनता यदा नीं दौर्जन्ययुक्तो मनुजोऽधमः स्यात् ॥

यदि शनैश्चर व बृहस्पति की रेखाएँ धन्वाकार हों और मङ्गल की रेखा गहरी तथा लचीली हो तो वह अधम और दुर्जनतायुक्त होता है ॥ ९६ ॥ (देखो चित्र नं० १५)

रेखा गभीरा विशदा हि सौरी विभाति वक्रा बृहतां पतेश्च ।
दुष्टामवस्थामवलम्ब्य जन्तुर्जायाभिभूतो भयतामुपैति ॥९७॥

यदि शनैश्चर की रेखा लम्बी—गहरी हो और बृहस्पति की रेखा वक्राकार हो तो वह दुष्ट अवस्था का अवलम्बन कर निज नारी से अनादृत हो भय पाता है ॥ ९७ ॥ (देखो चित्र नं० १६)

भाले विशाले मनुजस्य यस्य मध्ये विभग्ना यदि भाति मान्दी।
नीचोर्ध्वभग्ना वृजिना गुरोश्च साप्यासुभग्नाकुटिला हि कौजी
सोयं मनुष्यो नरघातकारी वेश्याविहारी वनितापहारी ।
दुरोदराक्रान्तमना मनस्वी प्राप्नोति मृत्युं स्वयमेव भीत्या ९९ ॥

जिसके भाल में शनैश्चर की रेखा बीच में कटी हो; निचले तथा ऊपरी भाग में बृहस्पति की रेखा भग्न और टेढ़ी हो और मङ्गल की रेखा सर्प आकार भग्न हो तो वह नरहत्याकारी, वेश्याविहारी, वनितापहारी, जुआड़ी, मनमौजी होता और डर से आप ही मौत पाता है ९८।९९ ॥ (देखो चित्र नं० १७)

यस्यास्ति भाले विशदा गभीरा रेखा यदैका धनुषाकृतिश्चेत् ।
सोयं जघन्यो मनुजो जनानां नीचस्वभावो भ्रमतेऽप्यजस्रम् ॥

जिसके भाल में उज्ज्वल, गहरी एक ही रेखा धन्वाकार हो तो वह मनुष्यों में अधम तथा नीच स्वभाववाला होता तथा हमेशा ही घूमता फिरता है ॥ १०० ॥ (देखो चित्र नं० १८)

संमध्यभग्ना रविजस्य रेखा वामात्रिशाखा धिषणस्य भाति ।
सोयं मनुष्यश्चपलस्वभावश्चञ्चत्प्रभावोऽनृतभावमेति ॥ १ ॥

शनैश्चर की रेखा बीच में भग्न हो, और बृहस्पति की रेखा वामभाग में तीन शाखाओंवाली हो तो वह चपल स्वभाववाला, प्रदीप्त प्रभाववाला, तथा झूठा होता हैं ॥ १ ॥ (देखो चित्र नं० १९)

रेखाश्चतस्रो यदि भान्ति भाले संमध्यभग्ना प्रथमा चतुर्थी ।
सोऽयं नरः स्यात्सरलस्वभावः सतां चरित्रेण युतो मनीषी॥२॥

यदि भाल में चार रेखाएँ हों और उनमें से पहली व चौथी बीच में कटी हो तो वह सीधे स्वभाववाला, बुद्धिमान्, तथा सज्जनों के चरित्र युक्त रहता है ॥ २ ॥ (देखो चित्र नं० २०)

सर्पाननाभा यदि भाति मान्दी कुजेज्ययोश्चेत्कुटिला विभाति ।
उच्चस्थलाद्धै पतितो मनुष्यो देहाभिघातं लभते नितान्तम्॥३॥

यदि शनैश्चर की रेखा सर्पफणाकार हो और मङ्गल व बृहस्पति की रेखा टेढी-सी हो तो वह ऊँचे स्थान से गिर देह में चोट खाता है ॥ ३ ॥ (देखो चित्र नं० २१)

मान्दी विभुग्ना यदि मध्यभग्ना नीचे विभग्ना धिषणस्य चाल्पा
भिन्ना यदोर्ध्वे सरला हि भौमी संमध्यभग्ना कुटिला रवेश्च॥४॥
दैत्यार्चिताल्पा क्षणदाधिपस्य द्वाभ्यां विभिन्ना यदि भाति भाले
सौभाग्यहीनो हि यदा कदापि पुनर्दरिद्री पुनरेव भोगी ॥ ५ ॥

शनैश्चर की रेखा टेढी तथा बीच में भग्न हो, बृहस्पति की रेखा निचले भाग में भग्न और छोटी-सी हो, मङ्गल की रेखा ऊपरी भाग में भिन्न और सीधी हो ; सूर्य की रेखा बीच में कटी, टेढी हो ; शुक्र की रेखा छोटी

१ शुक्रस्य २ चन्द्रस्य ॥

और चन्द्र की रेखा दो रेखाओं से कटी हुई हो तो वह कभी सौभाग्यहीन कभी दरिद्री और कभी भोगी होता है ॥ ४ । ५ ॥ (देखो चित्र नं० २२)

अर्धेन्दुसाम्याः[1] खलु केशनिम्ने क्षुद्रस्वरूपा यदि सप्त सन्ति ।
भाले विशाले गुरुभौमयोश्च सार्प्ये[2] द्विरेखे विशदे विभातः॥ ६॥

भाल में बालों के नीचे अर्धचन्द्राकार छोटी-छोटी-सी सात रेखायें हों और बृहस्पति तथा मङ्गल की रेखायें विशद एवं सर्पाकार हों ॥ ६ ॥

सोऽयं नरो मज्जति वारिवाहे कीलालगर्ते पतितोऽथवा स्यात् ।
भ्रान्तो भयार्तो भयतासमेतश्चिन्तान्वितो वै चपलस्वभावः ७॥

तो वह जल में डूबता, अथवा पानी के कुण्ड में गिरता तथा भ्रान्त, दुःखार्त, भयसमूह एवं चिन्ता और चपलस्वभाववाला होता है ॥ ७ ॥ (देखो चित्र नं० २३)

मन्दाररेखा यदि मध्यभग्ना तदन्तरे चेद्विनतागुरोश्च ।
सौभाग्यशाली मनुजस्तदानीं व्युत्पन्नबुद्धिर्धनतामुपैति ॥८॥

शनैश्चर एवं मङ्गल की रेखायें बीच में भग्न हों और दोनों के बीच में बृहस्पति की रेखा लची हुई हो तो वह सौभाग्यशाली, व्युत्पन्नबुद्धि तथा धनशाली होता है ॥ ८ ॥ (देखो चित्र नं० २४)

लग्ने मिथश्चेद्यदि मध्यभग्ने मन्देज्यरेखे कुटिले विभातः ।
पाशेन मृत्युं लभते मनुष्यो हत्याप्रकाण्डैः सहितो नराणाम् ९॥

शनैश्चर एवं बृहस्पति की रेखायें परस्पर सटी हुई, बीच में भग्न एवं टेढ़ी हों तो वह हत्यारा फाँसी की सज़ा द्वारा मौत पाता है ॥ ९ ॥ (देखो चित्र नं० २५)

मान्दी गभीरा विनता विभाति स्वल्पस्वरूपा सुरपूजितस्य ।
भौमी विभुग्ना जटुलेन युक्ता हत्याकरो वै पुरुषः कठोरः ॥१०॥

शनैश्चर की रेखा गहरी और झुकी-सी हो, बृहस्पति की रेखा छोटी-सी हो और मङ्गल की रेखा टेढ़ी हो तथा उस पर मसा हो तो वह वज्र हृदय एवं हत्यारा होता है ॥ १० ॥ (देखो चित्र नं० २६)

---

१ अर्धचन्द्रसमानाकाराः २ सर्पाकारे ॥

सौरी सुरेखा सरला विभाति सुरेन्द्रवन्द्यस्य च नीचभुग्ना।
स्वल्पस्वरूपा धरणीसुतस्य सौभाग्यशाली धनतासमेतः॥११॥

शनैश्चर की रेखा सीधी-सी हो, बृहस्पति की रेखा निचले भाग में टेढ़ी हो, और मङ्गल की रेखा छोटी-सी हो तो वह धनवान् और भाग्यशाली होता है ॥ ११ ॥ (देखो चित्र नं० २७)

सर्पाननाभा यदि भाति भाले भ्रूमध्यदेशे सरला विभान्ति।
सोऽयं मनुष्यो बहुभाषणाढ्यो वामाप्रसक्तो बलतासमेतः॥१२॥

यदि भाल में सर्पाकार एकही रेखा हो और भौंहों के बीच में बहुतसी सीधी रेखायें हों तो वह बड़ा वक्ता, रमणियों में रत तथा बलशाली होता है ॥ १२ ॥ (देखो चित्र नं० २८)

भाले विशाले मनुजस्य रेखाश्छिन्ना विभिन्ना बहुशो विभान्ति।
सोऽयं महेच्छो बहुकार्यकारी सामान्यमात्रोऽखिलमानवानाम्

जिसके भाल में बहुत-सी रेखायें छिन्न भिन्न सी हों वह महत्त्वाकांक्षी एवं अनेक प्रकार के कार्य करनेवाला होता है और सभी मनुष्यों में सामान्यमात्र होता है ॥ १३ ॥ (देखो चित्र नं० २९)

नीचोर्ध्वभग्ने कुजमन्दरेखे दक्षे च वामे भुजगानने स्तः।
तदन्तरं चेत्पविलाञ्छनाढ्यं पाशेन मर्त्यो मृतिमेति नूनम् १४॥

मङ्गल और शनैश्चर की रेखाएँ निचले तथा ऊपरी भाग में सर्पानन की नाईं हों और उन दोनों के मध्य में वज्राकार निशान हो तो निश्चयकर फाँसी से मृत्यु पाता है ॥ १४ ॥ (देखो चित्र नं० ३०)

सौरी सुरेखा विनता यदानीं भुग्नस्वरूपा धिषणस्य भाति।
संमध्यभग्ना धरणीसुतस्य दीर्घा गभीरा कुटिला रवेश्च॥१५॥
महाधनाढ्यो मनुजो मनीषी सौभाग्यशाली सुखदो जनानाम्।
दाता दयालुर्दयितानुरक्तो धन्यो धरायां धरया समेतः॥ १६॥

यदि शनैश्चर की रेखा लम्बी तथा लचीली हो, बृहस्पति की टेढ़ी हो, मङ्गल की बीच में भग्न हो और सूर्य की दीर्घाकार व गहरी तथा टेढ़ी

सी हो तो वह महाधनी, बुद्धिमान्, सौभाग्यशाली, जनसुखदायक, दाता, दयालु, दयिता में अनुरक्त तथा धरासमेत धरामण्डल में प्रशंसनीय होता है ॥ १५ । १६ ॥ (देखो चित्र नं० ३१)

मन्देज्यरेखे यदि मध्यभग्ने कौजी सुरेखा सरला विभाति ।
स्वल्पस्वरूपा दिनपस्य भाति वामे विभुग्ना किल भार्गवीया ॥
व्युत्पन्नबुद्धिर्मनुजो हि शास्त्री सौभाग्ययुक्तो धनतासमेतः ।
प्रवञ्चनाशून्यवपुर्विलासी सद्वृत्तशाली चतुरोतिकोपी ॥१८॥

यदि शनैश्चर व बृहस्पति की रेखाएँ बीच में भग्न हों, मङ्गल की दीर्घाकार सीधी हो, सूर्य की छोटीसी, शुक्र की बायें तरफ टेढ़ीसी हो तो वह प्राणी शास्त्री, व्युत्पन्नबुद्धि, सौभाग्यवान्, धनी, छलरहित, अच्छे चरित्रोंवाला, चतुर तथा महाक्रोधी होता है ॥ १७।१८ ॥ (देखो चित्र नं० ३२)

स्वल्पा विभुग्ना रविजस्य रेखा सर्पाननाढ्या धिषणस्य भग्ना ।
शाखासमेता विनता हि भौमी मूढो मनुष्यो नरघातकारी १९॥

यदि शनैश्चर की रेखा छोटी, टेढ़ी, बृहस्पति की बीच में भग्न तथा सर्पानन युक्त, और मङ्गल की शाखायुक्त लचीसी हो तो वह महामूर्ख, नरहत्यारा होता है ॥ १९ ॥ (देखो चित्र नं० ३३)

मान्दी गभीरा विनता विभाति स्वल्पस्वरूपा सुरपूजितस्य ।
पृथ्वीतनूजस्य तनुस्वरूपा दीर्घा द्विभिन्ना द्युमणेर्नता चेत् २० ॥
सोऽयं जनः स्यात्कलहानुरक्तो महाप्रकोपी मदनातुरात्मा ।
खड्गप्रहारेण हतस्समीके शस्त्रप्रहारैरुत खण्डितश्च ॥ २१ ॥

यदि शनैश्चर की रेखा गहरी, लचीसी हो, बृहस्पति की छोटीसी, मङ्गल की गहरी, पतली हो; सूर्य की झुकी, गहरी, दो रेखाओं से कटी हो तो वह कलहप्रिय, क्रोधी, कामी, तथा समर में तलवार अथवा शस्त्रों के प्रहारों से मृत्यु पाता है ॥ २०।२१ ॥ (देखो चित्र नं० ३४)

मान्दी विभुग्ना यदि नीचभग्ना बृहस्पतेश्चेद्विनता विभाति ।
भौमी सुदीर्घा वृजिना यदार्नी संमध्यभग्ना कुटिला रवेश्च २२॥

सोऽयं नरः स्यात्कलहानुरक्तो रूक्षस्वभावः शठतासमेतः।
उपद्रवाक्रान्तमना मनस्वी मन्दो मलाढ्यो जनवञ्चकश्च २३॥

शनैश्चर की रेखा टेढ़ी, निचले भाग में भग्न हो, बृहस्पति की लची-सी हो, मङ्गल की दीर्घाकार टेढ़ी हो, सूर्य की बीच में भिन्न वक्राकार हो तो वह कलही, कठोर स्वभाववाला, शठ, उपद्रवी, मनमौजा, मूर्ख, मैला एवं छलनेवाला होता है ॥ २२ । २३ ॥ (देखो चित्र नं० ३५)

मान्दी विभुग्ना परितो विभग्ना दीर्घा विभिन्ना सरला गुरोश्च।
मध्ये च भग्ना कुटिला कुजस्य चापानुरूपा द्युमणेर्यदानीम् २४॥
संमध्यभग्ना किल भार्गवीया रामारतो वै रसिको मनुष्यः।
सत्यप्रवक्ता सरलस्वभावो नम्रो हि वेत्ता विनयी जयी च ॥२५॥

शनैश्चर की रेखा चारों तरफ़ भग्न, टेढ़ीसी हो; बृहस्पति की दीर्घाकार सीधी हो; मङ्गल की बीच में कटी फटी टेढ़ीसी हो और सूर्य की धन्वाकार हो और यदि शुक्र की रेखा बीच में कटी हो तो वह रमणीरत, रसज्ञाता, सत्यवक्ता, सीधे स्वभाववाला, नम्र, वेत्ता, विनयी और विजयी होता है ॥ २४ । २५ ॥ (देखो चित्र नं० ३६)

दक्षे विभग्ना वृजिना हि मान्दी दीर्घा गभीरा विनता गुरोश्च।
स्वल्पा विभुग्ना धरणीसुतस्य व्याजेन व्याप्तः सरलस्वभावः २६

शनैश्चर की रेखा दाहिने भाग में भग्न, एवं टेढ़ी हो, बृहस्पति की गहरी, लचीसी हो और मङ्गल की छोटी टेढ़ी देख पड़े तो वह पुरुष कपटी तथा सीधे स्वभाववाला दिखता है ॥ २६ ॥ (देखो चित्र नं० ३७)

मध्ये विभिन्ना कुटिला हि मान्दी दक्षे च भग्ना बृहतां पतेश्च।
वक्रार्कयोश्चेत्खलु दक्षसार्प्या व्युत्पन्नबुद्धिर्धननाशमेति २७॥

जिसकी शनैश्चर की रेखा बीच में भिन्न, टेढ़ी हो, बृहस्पति की बीच में कटी व टेढ़ी तथा दाहिने भाग में भग्न हो; मङ्गल व सूर्य की दाहिनी तरफ़ सर्पाकार हो तो वह व्युत्पन्न बुद्धिवाला एवं धनहीन होता है ॥ २७॥ (देखो चित्र नं० ३८)

सौरी सुदीर्घा विनता गभीरा दक्षे च भागे ज टुलेन युक्ता ।
ऊर्ध्वे विभिन्ना कुटिला गुरोश्च सर्पानुरूपा यदि भाति भौमी २८
संभ्रान्तचित्तो मनुजोऽतिखिन्नो वेत्ता विशुद्धो विगताभिमानः।
उच्चस्थलाद्वै पतितो भयार्तः सांघातिकार्तिं लभते नितान्तम् २९

जिसकी शनैश्चर की रेखा दीर्घाकार, लची, गहरी दाहिने भाग में मसा युक्त हो, बृहस्पति की रेखा ऊपरी भाग में भिन्न, एवं टेढी हो और मङ्गल की सर्पाकार हो तो वह पुरुष संभ्रान्त मनवाला, महाखिन्न, ज्ञाता, पवित्रात्मा, अभिमान रहित होता है तथा ऊँचे स्थल से गिरता तथा भय से घबराकर सांघातिक पीड़ा पाता है ॥ २८।२९ ॥ (देखो चित्र नं० ३९)

अर्धेन्दुयुक्ते खलु चोर्ध्वभागे मन्देज्यरेखे सरले विभातः ।
सूर्येन्दुयोगो यदि भाति भाले सौभाग्यशाली पुरुषो नितान्तम्॥

जिसकी शनैश्चर व बृहस्पति की रेखाएँ ऊपरी भाग में अर्धचन्द्राकार निशान युक्त हों और यदि भाल में सूर्य व चन्द्रमा की रेखा का योग दिखे तो वह बड़ा सौभाग्यशाली होता है ॥ ३० ॥ (देखो चित्र नं० ४०)

ऊर्ध्वे विभिन्ना विनता हि मान्दी दीर्घा विनम्रा धिषणस्य रेखा।
संमध्यभिन्ना कुटिला हि कौजी भ्रूमध्यदेशे लसितं त्रिशूलम् ३१
देहाभिघातं लभते मनुष्यः पातस्य हेतोरतिहानिमेति ।
प्रेमास्पदो वै वनिताविलासी प्रसन्नमूर्तिर्जनरञ्जकश्च ॥३२॥

जिसकी शनैश्चर की रेखा ऊपरी भाग में कटी, तथा लचीसी हो, बृहस्पति की दीर्घाकार, लचीसी दिखे, मङ्गल की बीच में कटी, टेढीसी हो और यदि भौंहों के बीच में त्रिशूलाकार निशान हो तो वह देह में चोट पाता, तथा गिरने के कारण बड़ी हानि पाता है और प्रेम का घर होकर वनिताओं में विलास करता, प्रसन्नमूर्त्ति, और सबका मनोरञ्जक होता है ॥ ३१ । ३२ ॥ (देखो चित्र नं० ४१)

सर्पायमाना यदि भाति सौरी स्वल्पस्वरूपा सुरपूजितस्य ।
दक्षात्रिशाखा धरणीसुतस्य वामैकशाखा विशदा यदानीम् ३३

ऐश्वर्यहीनो मनुजोऽतिलोलो विश्वासघाती बलदर्पितश्च।
प्रवञ्चकोऽयं जगतो जनानां धूर्तस्वभावो ह्यतिगौरवाढ्यः ३४॥

जिसकी शनैश्चर की रेखा सर्पाकार हो, बृहस्पति की छोटी और मङ्गल की दाहिनी तरफ़ तीन शाखावाली, बायें भाग में एक शाखावाली हो तो वह ऐश्वर्यहीन, अतिचञ्चल, विश्वासघाती, बलगर्वित, छलिया, धूर्तस्वभाववाला और गौरवान्वित होता है ॥ ३३। ३४॥ (देखो चित्र नं० ४२)

धन्वाकृतिश्चेद्रविनन्दनस्य सर्पानुरूपा सुरवन्दितस्य।
वामे विभग्ना महिजस्य भुग्ना स्यान्मानवो वै नरघातकारी ३५

यदि शनैश्चर की रेखा धन्वाकार हो, बृहस्पति की सर्पाकार हो और मङ्गल की टेढ़ी, तथा वामभाग में कटी फटीसी हो तो वह नरघातक होता है ॥ ३५॥ (देखो चित्र नं० ४३)

सर्पाननाभां विशदस्वरूपां गुरोश्च स्वल्पा[1] समुपैति सौरीम्।
वक्रा यदाग्नौ शशिजस्य रेखा हिंस्रो विवादी कलही नरः स्यात्

जिसकी छोटीसी बृहस्पति की रेखा सर्पाकार मुखवाली; विशदरूप शनैश्चर की रेखा के पास पहुँची हो और यदि बुध की रेखा वक्राकार हो तो वह हिंसाशाली, विवादी, तथा लड़ाका होता है॥३६॥(देखो चित्र नं० ४४)

मन्दस्वरूपा यदि भाति मान्दी दक्षे विभिन्ना धिषणस्य[2] दीर्घा।
कण्ठे विभग्ना कुटिला हि कौजी[3] नीचे गभीरा श्रुतिमेति[4] वामाम्

शनैश्चर की रेखा पतली, बृहस्पति की दाहिने भाग में विभिन्न दीर्घाकार हो और यदि मङ्गल की कण्ठभाग में विभिन्न, तथा टेढ़ी व निचले भाग में गहरी बायें कान तक हो ॥ ३७॥

सोऽयं मनुष्यो नरघातकारी ह्यनिष्टकारी प्रमदाविहारी[5]।
द्यूताभिलाषी भ्रमते नितान्तं क्रोधाभिभूतो मदनाकुलश्च ३८॥

तो वह नरघातकी, अनिष्टकारक, प्रमदाविहारी, जुआड़ी; क्रोध से झुँझलाता, काम से घबड़ाता तथा हमेशा घूमा करता है ॥ ३८॥ (देखो चित्र नं० ४५)

---

१ स्वल्पस्वरूपा २ बृहस्पतेः ३ मङ्गलस्येयम् ४ कर्णम् ५ रमणीरतः।

स्वल्पस्वरूपा यदि भाति सौरी संमध्यभिन्ना विशदा गुरोश्च ।
दीर्घा विनम्रा कुटिला हि कौजी छिन्ना विभिन्ना किल भार्गवीया

शनैश्चर की रेखा छोटीसी हो, बृहस्पति की बीच में कटी और साफ़ हो और मङ्गल की लंबी, लची, टेढ़ी हो तथा शुक्र की रेखा दाहिने भाग में कटी व बीच में भग्न हो ॥ ३९ ॥

सोऽयं नरः स्यात्सरलस्वभावो दानी च मानी च महाभिमानी ।
क्रोधी परस्त्रीं भजतेऽप्यजस्रं मित्राभिभूतो मदनातुरश्च ॥४०॥

तो वह साधे स्वभाववाला, दाता, मानी व महाभिमानी तथा क्रोधी, मित्रों से तिरस्कृत, कामातुर और परस्त्रीसेवी होता है ॥४०॥ (देखो चित्र नं० ४६)

मान्दी गभीरा यदि भाति स्वल्पा वेत्रस्वरूपा बृहतांपतेश्च ।
भ्रूमध्यदेशो बहुकेशयुक्तः संपत्तिशाली धनिकः सुभार्यः ॥४१॥

यदि शनैश्चर की रेखा गहरी व छोटी हो, व बृहस्पति की रेखा वेत्ररूपा हो और यदि भौंहों का मध्यदेश बहुत बाल युक्त हो तो वह संपत्तिशाली, धनी एवं अनेक भार्याओंवाला होता है ॥४१॥ (देखो चित्र नं० ४७)

सौरस्य रेखा यदि भाति चाल्पा भुग्ना गुरोर्वै निकटार्धवृत्ता ।
दक्षभ्रकुट्यां लघितैकरेखा भ्रूमध्यदेशो बहुकेशयुक्तः ॥ ४२ ॥
मस्ताभिघातं लभते मनुष्यो विदंशितः स्यात्खलु कुकुराद्यैः ।
विषप्रयोगैरतिशङ्कितश्च क्रोधाभिभूतो भयतामुपैति ॥ ४३ ॥

जिसकी शनैश्चर की रेखा छोटीसी हो, बृहस्पति की टेढ़ी हो, निकटवर्ती अर्धवृत्त से युक्त हो, दाहिनी भृकुटी पर छोटीसी एक रेखा शृङ्गाकार हो और यदि भौंहों के बीच का भाग घने बालयुक्त हो तो वह मस्तक में चोट खाता है, कूकुर आदि दुष्टजीवों से डसा जाता, विषप्रयोगों से भीत, क्रोध से घबराता और भय पाता है ॥ ४२।४३ ॥ (देखो चित्र नं० ४८)

भुग्ना गभीरा यदि भाति मान्दी दीर्घा विनम्रा विशदा गुरोश्च ।

---

१ शनैश्चरस्य २ बृहस्पतेः ३ मङ्गलस्य ४ शुक्रस्य रेखेति यावत् ॥

सर्पाननाभा विनता हि कौजी संमध्यभिन्ना द्युमणेर्यदानीम् ४४

जिसकी शनैश्चर की रेखा टेढ़ी, गहरी हो, बृहस्पति की लंबी, लची हो, तथा मङ्गल की सर्पानन के समान, लचीसी हो; और यदि सूर्य की बीच में भग्न हुई हो ॥ ४४ ॥

सौभाग्यशाली सुषमासमेतः सौन्दर्ययुक्तो नितरामुदारः।
सुखी सुविद्यो महतामुपासी मान्यो जनानां सुखदोऽनुजानाम्

तो वह सौभाग्यशाली, सुन्दरता युक्त, उदार, सुखी, अच्छी विद्यावाला, महात्माओं का उपासी, आदरणीय एवं भाइयों को सुखदायक होता है॥४५॥
(देखो चित्र नं० ४९)

स्वल्पा गभीरा विनता हि सौरी संमध्यभिन्ना वृजिना गुरोश्च।
दीर्घा विशुद्धा विनता हि कौजी त्यागी धनी साहसिको नरःस्यात्

जिसकी शनैश्चर की रेखा छोटी, गहरी, लची हुई हो ; बृहस्पति की बीच में भग्न तथा टेढ़ी हो और मङ्गल की लंबी एवं लचीसी हो तो वह त्यागी, धनवान्, एवं साहसी होता है ॥ ४६ ॥ (देखो चित्र नं० ५०)

नीचोर्ध्वभिन्ना यदि भाति मान्दी संकर्तिताल्पा सुरपूजितस्य।
छिन्ना विभिन्ना वृजिना बुधस्य भ्रूमध्यदेशो विशदो द्विशूलः॥

यदि शनैश्चर की रेखा निचले तथा ऊपरी भाग में भिन्न हो, बृहस्पति की कटी हुई छोटीसी हो, और यदि बुध की छिन्न-भिन्न, टेढ़ी हो ; तथा भौंहों के बीच का विशुद्ध भाग दो रेखाओंवाला हो तो ॥ ४७ ॥

सोऽयं मनुष्यश्चतुरोऽतिविज्ञो मिष्टप्रभाषी परिणामदर्शी।
क्लान्त्याविहीनोऽखिलकार्यदक्षो व्युत्पन्नबुद्धिःखलुसाहसी स्यात्

वह चतुर, विज्ञ, मधुरभाषी, परिणामदर्शी, ग्लानिहीन, समस्त कार्यों में प्रवीण ; व्युत्पन्नबुद्धि तथा साहसी होता है ॥४८॥(देखो चित्र नं० ५१)

चापानुरूपा रविजस्य रेखा सर्पायमाना सुरवन्दितस्य।
भौमी सुदीर्घा खलु वामभुग्ना चाण्डी सशाखा यदि सव्यभुग्ना

जिसकी शनैश्चर की रेखा धन्वाकार हो, बृहस्पति की टेढ़ी-मेढ़ी हो,

मङ्गल की लंबी तथा वामभाग में टेढ़ी हो; और यदि सूर्य की रेखा शाखा युक्त बाईं तरफ टेढ़ी हो ॥ ४६ ॥

संमध्यभिन्ना किल भार्गवीया शान्त्या विहीनो मनुजोतिलुब्धः
नाप्नोति सिद्धिं सकले सुकार्ये परिश्रमं वै कुरुते नितान्तम् ॥ ५० ॥

और यदि शुक्र की रेखा बीच में कटी हो तो वह शान्तिहीन, अतिलोभी, तथा कार्यों में सिद्धि न पानेवाला, बड़ा परिश्रमी होता है ॥ ५० ॥ (देखो चित्र नं० ५२)

नीचे विभग्ना सरला हि सौरी वामप्रचापा धिषणस्य भग्ना।
कौजी सशाखा यदि नीचभिन्ना सार्प्या विभिन्ना दिनपस्य भाति

जिसकी शनैश्चर की रेखा निचले भाग में भग्न हुई, सीधी हो; बृहस्पति की जिसके वामभाग में धनुषाकार चिह्न हो; निचले बिचले तथा ऊपरी भाग में भग्न हो; मङ्गल की शाखा युक्त निचले भाग में भिन्न हो, और यदि सूर्य की रेखा सर्पाकार हो और ॥ ५१ ॥

ऊर्ध्वे गभीरा यदि मध्यभग्ना काव्यस्य रेखा नितरां विभाति।
सोऽयं नरःस्यात्सकलप्रधानः सच्छीलयुक्तो गुणभूषितश्च ॥ ५२ ॥

यदि शुक्र की रेखा ऊपरी भाग में गहरी, बीच में कटती हुई हो तो वह सबका मुखिया होता एवं भले स्वभाववाला और गुणी होता है ॥ ५२ ॥

विद्वान्विदेशी खलु धार्मिकश्च दाता धनी स्यादुपदेशकर्ता।
मान्यो वदान्यो ममताविहीनो विध्वस्तबाधोभ्रमतेऽप्यजस्रम् ॥

विद्वान्, विदेशवासी, धार्मिक, दाता, धनवान्, उपदेशक, माननीय, वक्ता, ममता रहित, बाधाविहीन, निरन्तर विचरा करता है ॥ ५३ ॥ (देखो चित्र नं० ५३)

भालस्थतिलादिलाञ्छनादन्याङ्गेषु तिलादिज्ञानम्

नार्या यदा वा पुरुषस्य भाले दक्षे च मध्ये च तथा हि वामे।
तिलादिचिह्नं यदि दृश्यते चेदन्यत्र चिह्नं विदुषा विचिन्त्यम् ॥

यदि नारी या नर के भाल में दाहिने, मध्य अथवा वामभाग में तिल

आदि का चिह्न हो तो विद्वान् को अन्य अङ्गों में भी तिल आदि का चिह्न विचारना चाहिये ॥ ५४ ॥ (देखो चित्र नं० ५४)

*१दक्षे च भागे खलु मन्दनिम्ने चन्द्राङ्कपार्श्वे तिलको विभाति
स्पृशेन्न मन्दं यदि दक्षभागे ब्रूयादुरस्थं तिलकं तदानीम् ॥५५॥

यदि शनैश्चर की रेखा के नीचे, दाहिने भाग में "१" अङ्क के समीप तिल का चिह्न हो और वह यदि शनि रेखा को छूता न हो तो दाहिनी ओर वक्षस्थल में तिल कहना ॥ ५५ ॥ †

२गुरोश्च निम्ने खलु दक्षभागे युग्माङ्कपार्श्वे तिलकादिकं स्यात्।
नो स्पृश्यते चेत्तु गुरुर्न भौमो दक्षे च पार्श्वे प्रवदेत्तिलाद्यम् ५६

यदि बृहस्पति की रेखा के नीचे भाग में दाहिनी ओर "२" अङ्क के समीप तिल हों और यदि गुरुरेखा व भौमरेखा को न छूते हों तो दाहिने पार्श्व में तिल आदि को कहना ॥ ५६ ॥

३ दक्षे च भागे खलु भौमनिम्ने वह्न्यङ्कपार्श्वे यदि भाति चिह्नम्।
नो स्पृश्यते चेद्धरणीतनूजो दक्षे च बाहौ भणितं तिलाद्यम् ५७॥

यदि मङ्गल रेखा के नीचे दाहिने भाग में "३" अङ्क के निकट तिल का चिह्न हो और यदि वह भौमरेखा को न छूता हो तो दाहिनी भुजा के ऊपर तिल का चिह्न कहा जाता है ॥ ५७ ॥

४ सूरस्य निम्ने खलु दक्षभागे वेदाङ्कपार्श्वे यदि भाति चिह्नम्।
नो स्पृश्यते चेद्दिनपस्य रेखा पृष्ठस्य दक्षे तिलकं वदन्ति ॥५८॥

यदि सूर्य की रेखा के नीचे दाहिनी ओर "४" अङ्क के निकट तिल का चिह्न हो और यदि वह सूर्यरेखा को स्पर्श न करे तो पीठ के दाहिने भाग में तिल कहते हैं ॥५८ ॥

---

* चेहरे के सबसे बड़े चित्र में इन्हीं नंबरों पर देखिये। उसीका वर्णन इन श्लोकों में आगे भी बताया गया है । इस अंक से उचित स्थान चित्र में बताया गया है। —संपादक

† यथार्थ में तिलज्ञान सामुद्रक के अंतर्गत अत्यावश्यक है । इससे मनुष्य के समस्त आचार विचार ज्ञात हो जाते हैं। यह मनन करने योग्य विषय है। —संपादक

५काठ्यस्य निम्ने खलु दक्षभागे बाणाङ्कपार्श्वे यदि भाति चिह्नम्।
नो स्पृश्यते चेद्भृगुजस्य रेखा विद्यात्तिलाद्यं जठरस्य दक्षे ॥५६॥

यदि शुक्र की रेखा के नीचे के भाग में दाहिनी ओर "५" अङ्क के पास तिल हो और यदि पूर्वोक्त रेखा को न छूता हो तो पेट की दाहिनी ओर तिल जानना ॥ ५६ ॥

६दक्षे च भागे खलु सौम्यनिम्ने शास्त्राङ्कपार्श्वे यदि भाति चिह्नम्।
नो स्पृश्यते चेच्छशिजस्य रेखा वक्षस्य दक्षे प्रवदेत्तिलाद्यम् ६०

यदि बुधरेखा के नीचे के भाग में दाहिनी तरफ़ "६" अङ्क के समीप तिल का चिह्न हो और यदि पूर्वोक्त रेखा को न छूए तो वक्षस्थल के दाहिनी ओर तिल कहना ॥ ६० ॥

७ दक्षे च भागे खलु चन्द्रनिम्ने शैलाङ्कपार्श्वे तिलको विभाति।
नो कर्तिता चेत्किल सोमरेखा तुन्दस्य दक्षे तिलकं भणन्ति ६१

यदि चन्द्ररेखा के नीचे के भाग में दाहिनी ओर "७" अङ्क के समीप तिल का चिह्न हो और यदि उक्तरेखा का स्पर्श न करे या कटा हुआ न हो तो पेट के दाहिनी तरफ़ तिल कहते हैं ॥ ६१ ॥

८वामे च भागे खलु सौरिनिम्ने नागाङ्कपार्श्वे यदि भाति चिह्नम्।
स्पृशेन्न मन्दं न गुरुं यदानीं पृष्ठस्य वामे तिलकं वदन्ति ॥६२॥

यदि शनिरेखा के नीचे के भाग में बाईं तरफ़ "८" अङ्क के समीप तिल का चिह्न हो और यदि शनैश्चर व बृहस्पति रेखा को न स्पर्श करे तो पीठ के बाईं ओर तिल कहते हैं ॥ ६२ ॥

९ वामे च भागे धिषणस्य निम्ने नन्दाङ्कपार्श्वे यदि भाति चिह्नम्।
ब्रूयात्सुधीरो जठरस्य वामे तिलादिचिह्नं भणितं सुधीभिः ॥६३॥

यदि गुरुरेखा के नीचे वामभाग में "९" अङ्क के समीप तिल का चिह्न हो तो पेट के बाईं ओर तिल का चिह्न कहना ॥ ६३ ॥

१०भालस्य वामे कुजकस्यनिम्ने दिशाङ्कपार्श्वे यदि लाञ्छनं चेत्।
वदेत्तदानीं खलु वामबाहौ चिह्नं तिलाद्यं मुनिभिः प्रणीतम् ६४॥

जिस प्राणी के विशाल भाल में बाईं ओर भौमरेखा के नीचे "१०" अङ्क के समीप यदि तिल का चिह्न प्रतीत होता हो तो उसकी बाईं भुजा में तिल का चिह्न बताना ॥ ६४ ॥

११ ब्रध्नस्य वामे यदि नीचभागे रुद्राङ्कपार्श्वे तिलकादिकं चेत्।
वक्षस्य वामे प्रवदेत्तिलाद्यं वेत्ता विपश्चित्पुरुषस्य नूनम्॥६५॥

यदि सूर्य के वाम भाग में नीचे तरफ़ "११" अङ्क के समीप तिल का चिह्न हो तो उसके वक्षस्थल में बाईं ओर तिल का चिह्न कहना चाहिये॥६५॥

१२वामे च भागे भृगुजस्य निम्ने सूराङ्कपार्श्वे तिलको विभाति।
नो स्पृश्यते चेच्छशिजो न शुक्रो वामांसके वै प्रवदेत्तिलाद्यम् ॥

यदि शुक्ररेखा के वामभाग में नीचे तरफ़ "१२" अङ्क के समीप तिल का निशान हो और यदि बुधरेखा व शुक्ररेखा को न छूता हो तो बायें स्कन्ध के ऊपर तिल को कहना चाहिये ॥ ६६ ॥

१३सौम्यस्य निम्ने खलु वामभागे विश्वाङ्कपार्श्वे तिलकादिकंचेत्
वदेद्विपश्चिन्मनुजस्य तस्य पार्श्वे च वामे विशदं तिलाद्यम्६७

जिसके भाल में बुधरेखा के नीचे बाईं तरफ़ "१३" अङ्क की जगह में यदि तिल का निशान हो तो उसके वामपार्श्व में तिल का चिह्न कहना चाहिये ॥ ६७ ॥

१४शक्राङ्कपार्श्वे खलु वामभागे चन्द्रस्य निम्ने तिलको यदानीम्
स्पृशेन्न भिन्द्यान्न हि चन्द्ररेखां ब्रूयात्तिलाद्यं जठरे च नाभ्याम्६८

जिसके भाल में चन्द्ररेखा के नीचे बाईं ओर "१४" अङ्क के समीप तिल का चिह्न हो और यदि पूर्वोक्त रेखा को न छूता हो और न भेदन करे तो उसके पेट और तोंदी में तिल कहना ॥ ६८ ॥

१५भाले विशाले यदि मध्यदेशे मन्दस्य निम्ने तिलको विभाति।
नो स्पृश्यते चेत्खलु मन्दरेखां विद्यात्तिलाद्यं जठरस्य मध्ये ६९॥

यदि भाल में शनिरेखा के नीचे मध्यभाग में तिल का चिह्न हो और यदि मन्दरेखा को न छुए तो पेट के बीच में तिल का निशान कहना चाहिये ॥६९॥

१६ कपालमध्ये धिषणस्य निम्ने चिह्नं तिलाद्यं खलु दृश्यते चेत्।
स्पृशेन्न रेखां सुरवन्दितस्य वक्षस्थले वै प्रवदेत्तिलाद्यम् ॥७०॥

ललाट के मध्यभाग में बृहस्पति की रेखा के नीचे यदि तिल दिखे और यदि पूर्वोक्त रेखा का स्पर्श न करे तो वक्षस्थल में तिल कहना चाहिये ॥७०॥

१७ चिह्नं यदानीमलिकस्य मध्ये भौमस्य निम्ने विशदं विभाति।
स्पृशेन्न रेखां धरणीसुतस्य प्रोच्यात्तिलाद्यं जठरस्य वामे ॥७१॥

यदि ललाट के मध्यभाग में भौमरेखा के नीचे तिल हो और यदि मङ्गल की रेखा का स्पर्श न करे तो पेट के वामभाग में तिल कहना चाहिये ॥७१॥

१८ ललाटमध्ये दिनपस्य निम्ने तिलादिचिह्नं यदि दृश्यते चेत्।
स्पृशेन्न रेखां दिननायकस्य ब्रूयात्तिलाद्यं जठरस्य मध्ये ॥७२॥

यदि कपाल के बीच में सूर्यरेखा के नीचे तिल दिखे और यदि पूर्वोक्त रेखा को न छूए तो उसके पेट के मध्य में तिल कहना ॥ ७२ ॥

१९ भालस्य मध्ये भृगुजस्य निम्ने तिलादि चिह्नं यदि लक्ष्यते चेत्
स्पृशेन्न रेखां खलु भार्गवस्य वक्षस्य मध्ये प्रवदेत्तिलाद्यम् ॥७३॥

यदि ललाट के मध्य में शुक्र के नीचे तिल हो और यदि पूर्वोक्त रेखा को न छूता हो तो उसके वक्षस्थल में तिल कहना चाहिये ॥ ७३ ॥

२० सौम्यस्य निम्ने हि कपालमध्ये चिह्नं तिलाद्यं यदि दृश्यते चेत्
स्पृशेन्न रेखां किल भार्गवीयां वक्षस्य निम्ने तिलकं वदन्ति ७४॥

यदि कपाल के मध्य में बुध के नीचे तिल हो और यदि शुक्ररेखा का स्पर्श न करे तो वक्षस्थल के नीचे तिल जानना ॥ ७४ ॥

२१ चिह्नं यदा चेदलिकान्तराले चन्द्रस्य निम्ने विशदं विभाति।
स्पृशेन्न रेखां क्षणदाधिपस्य ब्रूयादपाने तिलकं तदानीम् ॥७५॥

यदि ललाट के मध्यभाग में चन्द्ररेखा के नीचे चिह्न हो और यदि पूर्वोक्त रेखा का स्पर्श न करे तो उसके गुदादेश में तिल कहना चाहिये ॥ ७५ ॥

२२ भाले विशाले खलु दक्षभागे मन्दस्य शेषे यदि भाति चिह्नम्।
संस्पृश्यते चेत् खलु सौरिरेखा दक्षोरुसंस्थं प्रवदेत्तिलाद्यम् ॥७६॥

जिसके भाल में दाहिनी तरफ़ शनिरेखा के शेषभाग में तिल हो और यदि सौरिरेखा को भलीभाँति छूता हो तो दाहिनी ऊरु में तिल कहना चाहिये ७६

२३ भालस्य दक्षे धिषणस्य शेषे चिह्नं तिलाद्यं यदि दृश्यते चेत् ।
दक्षोरुसन्धौ मनुजस्य तस्य ब्रूयात्सुधीरो विशदं तिलाद्यम् ७७॥

ललाट की दाहिनी तरफ़ गुरुरेखा के शेषभाग में यदि तिल दिखे तो उसके दाहिनी ऊरु की सन्धि के ऊपर तिल कहना ॥ ७७ ॥

२४ ललाटदक्षे खलु भौमशेषे तिलादिचिह्नं यदि लक्ष्यते चेत् ।
वदेद्विदीशो मनुजस्य तस्य दक्षे च बाहावमलं तिलाद्यम् ॥७८॥

यदि कपाल के दाहिनी तरफ़ मङ्गलरेखा के शेषभाग में तिल दिखे तो उसकी दाहिनी भुजा के ऊपर तिल कहना चाहिये ॥ ७८ ॥

२५ शूरस्य शेषे यदि भालदक्षे चिह्नं तिलाद्यं विशदं विभाति ।
कटस्य दक्षे भणितं तिलाद्यं प्राज्ञैः सुधीरैः खलु मानवस्य ॥७९॥

यदि ललाट के दाहिनी तरफ़ सूर्यरेखा के शेषभाग में तिल हो तो उसकी कमर के दाहिनी ओर तिल कहना ॥ ७९ ॥

२६ भालस्य दक्षे भृगुजस्य शेषे चिह्नं तिलाद्यं यदि दीप्यते चेत् ।
वक्षस्य मध्ये मनुजस्य तस्य धीरो वदेद्वै तिलकादिचिह्नम् ८०॥

यदि भाल के दाहिनी तरफ़ शुक्ररेखा के शेषभाग में तिल हो तो उसके वक्षस्थल के बीच में तिल जानना चाहिये ॥ ८० ॥

२७ कपालदक्षे खलु सौम्यशेषे तिलादिचिह्नं यदि दृश्यते चेत् ।
वक्षस्य दक्षे पुरुषस्य तस्य ब्रूयात्तिलाद्यं विदुषामधीशः ॥८१॥

यदि कपाल के दाहिनी ओर बुधरेखा के शेषभाग में तिल दिखे तो उसके वक्षस्थल की दाहिनी ओर तिल बताना चाहिये ॥ ८१ ॥

२८ दक्षे ललाटे खलु चन्द्रशेषे विदृश्यते चेत्तिलकादिचिह्नम् ।
ब्रूयाद्विदीशो मनुजस्य तस्य दक्षे तिलाद्यं जठरे च नाभ्याम् ८२

यदि ललाट की दाहिनी तरफ़ चन्द्ररेखा के शेषभाग में तिल दिखे तो उसके पेट की दाहिनी ओर या तोंदी के समीप तिल कहना चाहिये॥८२॥

२९ भालस्य वामे खलु मन्दशेषे चिह्नं तिलाद्यं यदि लक्ष्यते चेत्।
प्रोक्तं कवीन्द्रैर्मनुजस्य तस्य पृष्ठस्य वामे विशदं तिलाद्यम् ॥८३॥

यदि भाल की बाईं तरफ़ शनिरेखा के शेषभाग में तिल दिखे तो उसकी पीठ के वामभाग में तिल होता है ॥ ८३ ॥

३० भाले विशाले यदि वामभागे देवेज्यशेषे तिलको विभाति।
धीरो वदेद्वै पुरुषस्य वामे वत्सस्य निम्ने तिलकं विशालम् ॥८४॥

भाल में बाईं तरफ़ गुरुरेखा के शेषभाग में तिल हो तो उसके वक्षस्थल के नीचे वामभाग में तिल बताना चाहिये ॥ ८४ ॥

३१ वामे कपाले खलु भौमशेषे तिलादिचिह्नं यदि दृश्यते चेत्।
ब्रूयात्सुधीरो मनुजस्य तस्य पृष्ठस्य वामे रुचिरं तिलाद्यम् ॥८५॥

यदि कपाल की बाईं तरफ़ भौमरेखा के शेषभाग में तिल दिखे तो उसकी पीठ की बाईं ओर तिल कहना चाहिये ॥ ८५ ॥

३२ वामे ललाटे दिनपस्य शेषे चिह्नं तिलाद्यं यदि लक्ष्यते चेत्।
ब्रूयाद्बुधेन्द्रो मनुजस्य तस्य वामांसनिम्ने ललितं तिलाद्यम् ८६।

यदि भाल के बायें तरफ़ सूर्यरेखा के शेषभाग में तिल हो तो उसके बायें कन्धे के नीचे तिल बताना चाहिये ॥ ८६ ॥

३३ भालस्य वामे भृगुजस्य शेषे संलक्ष्यते चेत्तिलकादिचिह्नम्।
प्रोक्तं सुधीभिर्मनुजस्य तस्य तुन्दस्य वामे विशदं तिलाद्यम्८७॥

यदि ललाट के वाम ओर शुक्ररेखा के शेषभाग में तिल हो तो उसके पेट के बायें तरफ़ उज्ज्वल तिल होगा ॥ ८७ ॥

३४ भाले विशाले यदि वामभागे सौम्यस्य शेषे तिलकादिकं चेत्
वत्सस्य वामे खलु पञ्जरे वा चिह्नं तिलाद्यं ध्वनितं कवीन्द्रैः ॥८८॥

भाल में बायें तरफ़ बुधरेखा के शेषभाग में तिल हो तो उसे वक्षस्थल के वामभाग में या पाँजर में तिल होगा ॥ ८८ ॥

३५ भालस्य वामे खलु चन्द्रशेषे चिह्नं तिलाद्यं यदि दृश्यते चेत्।

प्रोक्तं तिलाद्यं पुरुषस्य तस्य नाभौ च पार्श्वे जठरस्य वामे ॥८९॥

यदि ललाट के बायें तरफ़ चन्द्ररेखा के शेषभाग में तिल दिखे तो उसकी तोंदी, पार्श्व और पेट के वामभाग में तिल होता है ॥ ८९ ॥

३६दक्षे कपालस्य च नेत्रचुल्ल्यां संदृश्यते चेत्तिलको यदानीम्।
गीतं तदानीं खलु मानवस्य चिह्नं तिलाद्यं जठरस्य दक्षे ॥९०॥

यदि कपाल के दाहिने तरफ़ नेत्र के ऊपर तिल दिखे तो उसके पेट के दाहिने तरफ़ तिल कहना ॥ ९० ॥

३७पार्श्वे च दक्षे पुरुषस्य भाले भ्रुवः समीपे तिलको विभाति।
प्रोक्तं तदानीं खलु पण्डितेन्द्रैश्चिह्नं तिलाद्यं कटकोपरिस्थम् ९१॥

जिसके भाल में दाहिने तरफ़ भौंह के निकट तिल हो तो उसकी कमर के ऊपर तिल जानना ॥ ९१ ॥

३८भाले विशाले खलु दक्षपार्श्वे नेत्रान्तिके चेत्तिलकादिकं स्यात्।
नितम्बदक्षे पुरुषस्य तस्य चिह्नं तदानीं मुनिभिः प्रणीतम् ॥९२॥

भाल में दाहिने नेत्र के समीप तिल हो तो उसके चूतड़ों के दाहिनी ओर तिल कहना ॥ ९२ ॥

३९भालस्य निम्ने खलु दक्षपार्श्वे चक्षुस्समीपे तिलकालकः स्यात्
दक्षे च पार्श्वे किल पञ्जरस्य प्रोक्तं तिलाद्यं पुरुषस्य धीरैः ॥९३॥

यदि भाल के नीचे दाहिने तरफ़ नेत्र के समीप तिल हो तो उसकी पाँजर के दाहिने भाग में तिल कहा है ॥ ९३ ॥

४०ललाटनिम्ने खलु दक्षपार्श्वे नेत्रान्तिके चेत्तिलको विभाति।
दक्षोरुनिम्ने लसितं तिलाद्यं प्रोक्तं पुराणैः पुरुषस्य तस्य ॥९४॥

यदि ललाट के नीचे दाहिने तरफ़ नेत्र के समीप तिल हो तो उसकी दाहिनी ऊरु के नीचे तिल कहा है ॥ ९४ ॥

४१वामे कपाले खलु नेत्रकोणे संदृश्यते चेत्तिलको यदानीम्।
वामोरुनिम्ने कटिदेशके वा चिह्नं तिलाद्यं कथितं कवीन्द्रैः॥९५॥

यदि कपाल के वामभाग में नेत्रकोण के ऊपर तिल दिखे तो उसकी बाईं ऊरु के नीचे या कमर पर तिल कहा है ॥ ९५ ॥

४२ वामे ललाटे खलु नेत्रपाते संलक्ष्यते चेत्तिलको यदानीम्।
नितम्बवामे मनुजस्य तस्य चिह्नं तिलाद्यं भणितं सुधीभिः ९६॥

यदि ललाट के वामभाग में नेत्रपात के समीप तिल हो तो उस प्राणी के चूतड़ों के बायें तरफ तिल पण्डितों ने कहा है ॥ ९६ ॥

४३ भाले विशाले खलु वामनेत्रे विदृश्यते चेत्तिलको यदानीम्।
वामे नितम्बे पुरुषस्य तस्य ज्ञेयं तिलाद्यं कथितं कवीन्द्रैः॥९७॥

भाल में बायें नेत्र के ऊपर तिल दिखे तो उसके बायें चतड़ के ऊपर तिल जानना चाहिये ॥ ९७ ॥

४४ वामाम्बकोणे खलु निम्नभागे कर्णस्य चुल्ल्यां तिलको विभाति
पृष्ठे च भागे यकटकस्तस्य ख्यातं तिलाद्यं विदुषामधीशैः॥९८॥

यदि बायें नेत्रकोण के निचलेभाग में कर्णचूल्हे के ऊपर तिल हो तो उसकी कमर के पीछे तिल कहा है ॥ ९८ ॥

४५ गण्डोपरिस्थं खलु वामभागे कर्णस्य निम्ने तिलकादिकं चेत्।
वामोरुनिम्ने पुरुषस्य तस्य चिह्नं तिलाद्यं प्रवदेत्सुधीरः ॥ ९९ ॥

जिसके बाईं ओर कान के नीचे गाल के ऊपर टिके हुए तिल हों तो उसकी बाईं ऊरु के नीचे तिल कहना चाहिये ॥ ९९ ॥

४६ ऊर्ध्वे च भागे खलु दक्षकर्णे प्रतीयते वै तिलको यदानीम्।
प्रोक्तं तिलाद्यं मनुजस्य तस्य दक्षे च देशे जठरस्य नूनम् २००॥

दाहिने कान के ऊपर तिल हो तो उसके पेट के दाहिने तरफ तिल कहा है ॥ २०० ॥

४७ विद्योतते चेद्विशदे कपाले दक्षे च कर्णे तिलको यदोर्ध्वे।
वदन्ति विप्राः पुरुषस्य तस्य दक्षे च पार्श्वे तिलकं तदानीम्१॥

यदि कपाल में दाहिने कान के ऊपर तिल हो तो उसकी दाहिने पार्श्व के नीचे तिल कहा है ॥ १ ॥

४८दक्षस्य कर्णस्य च कोणदेशे संलक्ष्यते चेत्तिलको यदानीम्।
दक्षस्य पार्श्वस्य च निम्नभागे प्रोक्तं तिलाद्यं पुरुषस्य तस्य॥२॥

यदि दाहिने कान के कोणदेश में तिल हो तो उसकी दाहिनी पार्श्व के नीचे तिल कहा है ॥ २ ॥

४६ ऊर्ध्वे च भागे खलु वामकर्णे प्रतीयते चेत्तिलको यदानीम्।
ख्यातं तिलाद्यं पुरुषस्य तस्य वामे च भागे जठरस्य चिह्नम्॥३॥

यदि वामकर्ण के ऊपरी भाग में तिल हो तो उसके पेट के वामभाग में तिल कहा है ॥ ३ ॥

५० वामस्य कर्णस्य च मध्यदेशे संलक्ष्यते चेत्तिलकालको वै।
वामस्य पार्श्वस्य च निम्नभागे चिह्नं तिलाद्यं भणितं प्रवीणैः॥४॥

बायें कान के मध्य में तिल हो तो उसको बाईं पार्श्व के नीचे तिल कहा है ॥ ४ ॥

५१ वामस्य कर्णस्य च निम्नदेशे विराजते चेत्तिलको यदानीम्।
वामस्य पार्श्वस्य च निम्नदेशे चिह्नं तिलाद्यं मुनयो वदन्ति॥५॥

यदि बायें कान के निचलेदेश में तिल हो तो उसकी बाईं पार्श्व के नीचे तिल मुनियों ने कहा है ॥ ५ ॥

५२दक्षाम्बकमध्ये खलु निम्नभागे संलक्ष्यते चेत्तिलको हि यस्य।
ब्रूयात्तिलाद्यं पुरुषस्य तस्य दक्षे च पार्श्वे किल गुह्यकस्य ॥६॥

जिसके दाहिने नेत्र के मध्यदेश में नीचे तरफ तिल हो तो उसकी गुदा की दाहिनी ओर तिल कहना चाहिये ॥ ६ ॥

५३दक्षाम्बकोणे मनुजस्य यस्य नासाविलग्नं यदि भाति चिह्नम्।
तदा शरीरस्य च मध्यमाङ्गे प्रोक्तं तिलाद्यं वदतां वरेण्यैः ॥ ७ ॥

जिसके दाहिने नेत्रकोण में नासिका के पास तिल हो तो उसके मध्य-माङ्ग में तिल कहा है ॥ ७ ॥

५४दक्षे च भागे खलु नासिकायाः संदृश्यते चेत्तिलको यदानीम्।
गुह्यप्रदेशे मनुजस्य तस्य प्रोक्तं तिलाद्यं मुनिभिस्तदानीम् ॥८॥

यदि नासिका के दाहिने भाग में तिल दिखे तो उसकी गुदा में तिल कहा है ॥ ८ ॥

५५ वामाम्बनिम्ने पुरुषस्य यस्य घ्राणस्य मध्ये तिलको विभाति।
वामे च देशे खलु गुह्यकस्य चिह्नं तिलाद्यं मुनयो वदन्ति ॥९॥

जिसके वामलोचन के नीचे नासिका के बीच में तिल हो तो उसकी गुदा के वामभाग में तिल कहते हैं ॥ ९ ॥

५६ वामाम्बपातस्य च मध्यदेशे विद्योतते चेत्तिलको यदानीम्।
अपानद्वारे मनुजस्य तस्य वामे च भागे तिलकं वदन्ति ॥१०॥

वामलोचन के पातस्थल के मध्यदेश में यदि तिल हो तो उसके गुदा द्वार पर वामभाग में तिल कहते हैं ॥ १० ॥

५७ वामस्य नेत्रस्य च निम्नदेशे विराजते चेत्तिलको यदानीम्।
गुदस्य द्वारे खलु वामभागे चिह्नं तिलाद्यं त्वपरं भणन्ति ॥११॥

यदि वामलोचन के निचले भाग में तिल हो तो उसके गुदाद्वार के बायें भाग में अपर तिल जानना ॥ ११ ॥

५८ कपालपार्श्वे खलु दक्षनेत्रपातस्य रम्भे ह्यथवा च मध्ये।
विद्योतते चेत्तिलकालको वै तुन्दस्य दक्षे त्वपरं तिलाद्यम् १२॥

यदि कपाल के पार्श्व में दाहिने नेत्रपात के आरम्भ में अथवा मध्य में, तिल हो तो पेट के दाहिने भाग में अपर तिल कहा है ॥ १२ ॥

५९ दक्षाम्बपातो परितोऽथवा चेदारम्भदेशे खलु नासिकायाः।
संलक्ष्यते वै तिलको हि तस्य नाभ्याश्च दक्षे तिलकं वदन्ति १३

जिसके दाहिने नेत्रपात के ऊपर अथवा नासिका के आरम्भदेश में तिल हो तो उसकी नाभि के दाहिने भाग में तिल कहना ॥ १३ ॥

६० वामाम्बपातस्य च मध्यदेशे आरम्भके वा तिलकादिकं चेत्।
तुन्दस्य वामे पुरुषस्य तस्य चिह्नं तिलाद्यं कवयो भणन्ति ॥१४॥

जिसके दाहिने या बायें नेत्रपात के मध्य या आरम्भदेश में तिल हो तो उसके पेट के वामभाग में तिल कहना चाहिये ॥ १४ ॥

६१ सव्याम्बपातस्य च मध्यभागे किंवा च शेषे तिलको विभाति।
ब्रूयात्सुधीरो मनुजस्य तस्य वामे च पार्श्वे कटकस्य चिह्नम् १५॥

जिसके वामलोचन के पातस्थल के मध्यभाग में अथवा शेषभाग में तिल हो तो उसकी कमर के बायें तरफ़ तिल कहना चाहिये ॥ १५ ॥

६२ नार्या यदा वा पुरुषस्य वक्त्रे दत्ताम्बपातोपरितस्तिलाद्यम्।
वदेत्सुचिह्नं मनुजस्य तस्य मुष्कस्य पार्श्वे कटिदत्तपार्श्वे॥ १६॥

जिस नारी या नर के वदन में दाहिने नेत्रपात के ऊपर तिल हो तो उसके गलहरी या कमर के दाहिने तरफ़ तिल कहना चाहिये ॥ १६ ॥

६३ दत्ताम्बपातस्य च मध्यदेशे संदृश्यते चेत्तिलको यदानीम् ।
दत्ताङ्गमध्ये विशदं तिलाद्यं विद्वद्भिराद्यैर्भणितं तदानीम्॥ १७॥

जिसके दाहिने नेत्रपात के मध्यदेश में तिल दिखे तो उसके दाहिने अङ्ग के बीच विशद तिल कहा है ॥ १७ ॥

६४ दत्ताम्बपातस्य च शेषदेशे नासान्तिके चेत्तिलको विभाति।
कटिप्रदेशस्य च निम्नभागे चिह्नं तिलाद्यं कथितं नरस्य ॥ १८॥

जिसके दाहिने नेत्रपात के शेषदेश में नासा के समीप तिल हो तो उसकी कमर के निचले भाग में तिल कहा है ॥ १८ ॥

६५ वामाम्बपातस्य च निम्नदेशे चिह्नं यदानीं विशदं विभाति ।
कुचस्य वामे मनुजस्य तस्य विद्यात्तिलाद्यं विदुषामधीशः १९॥

जिसे वामनेत्रपात के नीचे भाग में तिल हो उसे कुच के वामभाग या गलहरी के बायें तरफ़ तिल अवश्य होना चाहिये ॥ १९ ॥

६६ वामाम्बपातस्य च मध्यदेशे विराजते चेत्तिलको यदानीम् ।
ब्रूयाद्विपश्चित्पुरुषस्य तस्य गुदान्तिके वै विशदं तिलाद्यम् २०

जिसे यदि वामनेत्रपात के मध्यदेश में तिल हो उसे गुदा के निकट विशद तिल होगा ॥ २० ॥

६७ आरम्भदेशे खलु सव्यनेत्रे घ्राणस्य मूले यदि भाति चिह्नम्।
ब्रूयात्तदानीं मनुजस्य तस्य कटेश्च वामे त्वपरं तिलाद्यम्॥ २१॥

जिसके वामनेत्र के आरम्भदेश में या नासिका की मूल में तिल हो उसकी कमर के वामभाग में अपर तिल कहना चाहिये ॥ २१ ॥

६८दक्षाम्बकोणस्य च निम्नदेशे समीक्ष्यते चेत्तिलको हि यस्य।
वदेद् बुधेशः खलु पञ्जरस्य दक्षे च पार्श्वे विशदं तिलाद्यम्॥२२॥

जिसके दाहिने नेत्रकोण के निचले भाग में यदि तिल हो तो उसके पाँजर के दाहिने तरफ़ विशद तिल कहना चाहिये ॥ २२ ॥

६९दक्षस्य नेत्रस्य च मध्यदेशे विदृश्यते चेत्तिलको यदानीम्।
विज्ञा महान्तो मनुजस्य तस्य गुदाप्रदेशे तिलकं वदन्ति॥२३॥

जिसके दाहिने नेत्र के मध्यभाग में तिल दिखे उसके गुदा प्रदेश में तिल जानना चाहिये ॥ २३ ॥

७०वामाम्बनिम्नस्य च मध्यदेशे प्रतीयते चेत्तिलको यदानीम्।
प्राज्ञैः सुधीरैः पुरुषस्य तस्य कुचस्य वामे भणितं तिलाद्यम् २४॥

जिसे वामलोचन के नीचे मध्यदेश में तिल हो उसे कुच के वामभाग में तिल होगा ॥ २४ ॥

७१वामाम्बपातस्य च निम्नदेशे संलक्ष्यते चेत्तिलको यदानीम्।
गुदाप्रदेशस्य च वामपार्श्वे चिह्नं तिलाद्यं भणितं सुधीभिः २५॥

जिसके वामनेत्रपात के नीचे भाग में तिल हो उसकी गुदा के बायें तरफ़ तिल कहा है ॥ २५ ॥

७२वामाम्बपातस्य च कोणदेशे तथा च मध्ये तिलको विभाति।
गुह्याङ्गमध्ये मनुजस्य तस्य चिह्नं तिलाद्यं मुनयो वदन्ति॥२६॥

जिसके वामनेत्रपात के कोणदेश में एवं नेत्रपात के निचले भाग में तिल हो उसकी गुदा के मध्य भाग में तिल कहते हैं ॥ २६ ॥

७३वामाम्बनिम्ने खलु पातमध्ये नासान्तिके वा तिलको विभाति।
ब्रूयात्तदानीं पुरुषस्य तस्य मुष्कस्य वामे त्वपरं तिलाद्यम्॥२७॥

जिसे वामलोचन के नीचे पात के मध्य में या नासा के निकट तिल हो उसे गलहरी के वामभाग में अपर तिल अवश्य होगा ॥ २७ ॥

७४भालस्य पार्श्वे पुरुषस्य यस्य दक्षाम्बमध्ये यदि भाति चिह्नम्।
वत्सस्य दक्षे जठरान्तिके वा प्रोक्तं तिलाद्यं विशदं सुधीभिः २८॥

जिसके भाल के पार्श्व में दाहिने लोचन के बीच में यदि चिह्न हो उसके वक्षस्थल के दाहिने तरफ़ या पेट के पास विशद तिल कहा है ॥ २८ ॥

७५दक्षाम्बकोणे खलु नेत्रमध्ये नासान्तिके वा तिलको विभाति।
वत्सस्य दक्षे पुरुषस्य चाग्रे संकीर्तितं वै विशदं तिलाद्यम्॥ २९॥

यदि दाहिने नेत्र के मध्य में या नासिका के समीप तिल हो तो उसके वक्षस्थल के दाहिने या अग्रभाग में तिल कहा है ॥ २९ ॥

७६वामाम्बकोणे पुरुषस्य भाले विद्योतते चेत्तिलको यदानीम्।
वत्सस्य वामे विशदं तिलाद्यं संभाषितं वै वदतां वरेण्यैः ॥३०॥

जिसके भाल में वामलोचन के कोण में तिल हो उसके वक्षस्थल के बायें तरफ़ तिल होता है ॥ ३० ॥

७७वामाम्बकोणस्य तु चाग्रभागे संलक्ष्यते चेत्तिलको यदानीम्
वामे च पार्श्वे खलु वत्सकस्य संवर्णितं वै त्वपरं तिलाद्यम्॥३१॥

जिसके वामलोचनकोण के अग्रभाग में तिल हो उसके वक्षस्थल के बायें तरफ़ अपर तिल होगा ॥ ३१ ॥

७८वक्त्रस्य दक्षे खलु नासिकाया रन्ध्रस्य निम्ने तिलको विभाति
ऊर्ध्वे च भागे किल दक्षिणांसे चिह्नं तिलाद्यं मुनयो भणन्ति ३२

यदि मुख के दाहिने नासिकारन्ध्र के नीचे तिल हो तो दाहिने कन्धे के ऊपर तिल होगा ॥ ३२ ॥

७९ओष्ठस्य शेषे खलु दक्षनासाशेषे च भागे तिलको यदानीम्।
ब्रूयात्तदानीं पुरुषस्य तस्य कुचोर्ध्वदेशे विशदं तिलाद्यम्॥ ३३॥

जिसके ओष्ठ के शेषभाग या दक्षिण नासा के शेषभाग में तिल हो तो उसके कुच के ऊपर या गलहरी के ऊपर विशद तिल कहना चाहिये॥३३॥

८०दक्षे च भागे खलु नासिकाया ऊर्ध्वस्थितश्चेत्तिलको विभाति
विद्याद्बुधेन्द्रो मनुजस्य तस्य गुह्याङ्गदक्षे त्वपरं तिलाद्यम् ३४॥

जिसके दाहिने तरफ़ नासिका के ऊपर तिल हो उसकी गुदा के दाहिने तरफ़ अपर तिल जानना चाहिये ॥ ३४ ॥

८१ वामे च भागे खलु नासिकायाः शेषे चदेशे यदि लाञ्छनं चेत्।
वत्सस्य वामे त्वपरं तिलाद्यं गायन्ति विप्रा गुणगौरवाढ्याः ३५

जिसके बाईं तरफ़ नासिका के शेष देश में तिल दिखे उसके वक्षस्थल के वामभाग में अपर तिल अवश्य ही जानना ॥ ३५ ॥

८२ घ्राणस्य निम्ने खलु वामभागे वक्त्रस्यमध्ये ह्यथवातिलश्चेत्।
ब्रूयात्तिलाद्यं पुरुषस्य तस्य गुह्यस्य मेढ्रस्य च मध्यदेशे ॥३६॥

जिसकी नासिका के नीचे वामभाग में अथवा वदन के बीच में तिल हो उसकी गुदा व लिङ्ग के बीच में तिल अवश्य होना चाहिये ॥ ३६ ॥

८३ वामे च भागे खलु नासिकाया मध्यस्थले चेत्तिलको विभाति।
गुह्यस्य मेढ्रस्य च मध्यदेशे विद्वद्भिराद्यैर्भणितं तिलाद्यम्॥३७॥

जिसे बायें तरफ़ नासिका के बिचले भाग में तिल हो उसे गुदा या लिङ्ग के मध्यभाग में तिल होना आवश्यक है ॥ ३७ ॥

८४ भाले विशाले मनुजस्य यस्य नासाग्रभागे तिलकोविभाति।
वदेत्तदानीं वदतां प्रधानो गुह्याग्रभागे त्वपरं तिलाद्यम् ॥३८॥

जिसके विशालभाल में नासिका के अग्रभाग में तिल है उसकी गुदा के अग्रभाग में अपर तिल कहना चाहिये ॥ ३८ ॥

८५ दक्षे च भागे खलु नासिकाया नासापुटे चेत्तिलको यदानीम्।
विद्यात्तदानीं पुरुषस्य तस्य गुह्याङ्गदक्षे त्वपरं तिलाद्यम्॥३९॥

नासिका के दाहिने तरफ़ नासापुट के बीच में तिल हो उसे गुदा के दाहिने भाग में अपर तिल होगा ॥ ३९ ॥

८६ वामे च पार्श्वे खलु नासिकाया मध्ये च नासापुटकस्य किंवा।
विद्योतते चेत्तिलको यदानीं लिङ्गस्य वामे भणितं तिलाद्यम्४०

नासिका के वामपार्श्व में या नासापुट के मध्य में तिल हो उसे लिङ्ग के वामभाग में तिल होगा ॥ ४० ॥

८७दक्षे च भागे खलु नासिकायाः पुटोपरिस्थस्तिलको विभाति।
विज्ञा महान्तो मनुजस्य तस्य गुह्याङ्गदेशे तिलकं वदन्ति ४१॥

दाहिने तरफ़ नासापुट के ऊपर तिल हो तो उसे गुह्याङ्गदेश में तिल होगा ॥ ४१ ॥

८८नासोपरिस्थस्तिलको विभाति दक्षे च भागे पुरुषस्य यस्य।
गुह्यस्य लिङ्गस्य च मूलमध्ये दक्षे तिलाद्यं भणितं सुधीभिः४२॥

जिसके दाहिने तरफ़ नासिका के ऊपर तिल हो उसकी गुदा व लिङ्ग के मूल के मध्य में दाहिनी ओर तिल अवश्य होना चाहिये ॥ ४२ ॥

८९घ्राणोपरिस्थः खलु वामभागे विराजते चेत्तिलको यदानीम्।
गुदस्य मेढ्रस्य च मूलमध्ये वामे तिलाद्यं कवयो वदन्ति॥४३॥

जिसके बाईं तरफ़ नासिका के ऊपर तिल हो उसको गुदा व लिङ्ग के मूल के मध्य में बाईं ओर तिल होना चाहिये ॥ ४३ ॥

९०प्रान्ते यदानीं खलु वामगण्डे प्रतीयते चेद्विशदं तिलाद्यम्।
गुह्याङ्गनिम्ने किल दक्षभागे चिह्नं तिलाद्यं कथितं कवीन्द्रैः ४४॥

वामगण्ड के प्रान्तदेश में उज्ज्वल तिल हो उसे दाहिने तरफ़ गुदा के नीचे तिल होगा ॥ ४४ ॥

९१वामे च भागे वदनस्य यस्य चिह्नं तिलाद्यं यदि लक्ष्यते चेत्।
ऊर्ध्वे च भागे किल वामपाणौ वदेत्सुधीरो विशदं तिलाद्यम् ४५

जिसके वदन के वामभाग में तिल हो उसे बायें हाथ के ऊपर विशद तिल होगा ॥ ४५ ॥

९२ऊर्ध्वस्थले चेदधरस्य मध्ये संलक्ष्यते वै तिलको यदानीम्।
गीतं तदानीं मनुजस्य तस्य गुह्याग्रभागे त्वपरं तिलाद्यम्४६॥

ओष्ठ के ऊपर मध्य भाग में तिल हो उसे गुदा के अग्रभाग में अपर तिल होगा ॥ ४६ ॥

९३निम्नौष्ठमध्ये यदि भाति चिह्नं दक्षे च जानौ भणितं तिलाद्यम्।
नो मध्यदेशे खलु वामजानौ दक्षे च दृष्टे किल दक्षजानौ ४७॥

जिसके निचले ओष्ठ के मध्य में तिल हो उसकी दाहिनी जानु में और यदि मध्यदेश में न हो तो बाईं जानु में तिल कहना चाहिये । यदि दाहिनी तरफ़ दिखे तो दाहिनी घुटनू में तिल होगा ॥ ४७ ॥

९४मध्यस्थले चेच्चिबुकस्य यस्य प्रतीयते वै तिलको यदानीम् ।
पादोपरिस्थं तिलकं तदानीमाहुर्मुनीन्द्रा मनुजस्य तस्य॥४८॥

जिसकी ठाढ़ी के बीच में तिल हो उसके पाँवों के ऊपर तिल होगा ॥ ४८ ॥

९५वक्रे विशाले चिबुकस्य मध्ये संदृश्यते चेत्तिलकालको वै ।
जङ्घोपरिस्थं त्वपरं तिलाद्यं वदन्ति विप्रा वदतांवरेण्याः॥ ४९ ॥

विशाल वदन में ठोढ़ी के बीच यदि तिल दिखे तो जाँघ के ऊपर अपर तिल जानना ॥ ४९ ॥

९६दक्षे च भागे चिबुकस्य शेषे संलक्ष्यते चेत्तिलको यदानीम् ।
ब्रूयात्तदानीं पुरुषस्य तस्य ऊरोश्च संधावपरं तिलाद्यम् ॥५०॥

यदि दाहिने भाग में ठोढ़ी के शेष देश में तिल हो तो उसकी ऊरु की संधि में अपर तिल कहना चाहिये ॥ ५० ॥

९७वामे च भागे चिबुकस्य यस्य प्रतीयते चेत्तिलको यदानीम् ।
सन्धिस्थलस्थं खलु सक्थिनोश्च चिह्नं तिलाद्यं त्वपरं वदन्ति५१

जिसकी ठोढ़ी के वामभाग में तिल हो तो ऊरु (निरोंह) की सन्धि में अपर तिल होगा ॥ ५१ ॥

९८ऊर्ध्वस्थले चेत्खलु कण्ठनल्या विराजते वै तिलको हि यस्य ।
गुह्याङ्गमध्ये किल नाभिदेशे गायन्ति चिह्नं त्वपरं तिलाद्यम्५२

जिसकी कण्ठनली के ऊपरी भाग में तिल हो तो गुदा के मध्य में या तोंदी के ऊपर अपर तिल जानना ॥ ५२ ॥

९९गलस्य नल्याः खलु दक्षपार्श्वे चिह्नं तिलाद्यं विशदं विभाति ।
वदेत्तदानीं मनुजस्य तस्य ऊरोश्च दक्षे भणितं तिलाद्यम् ५३॥

यदि गले की नला के दाहिने तरफ़ तिल हो तो ऊरु के दाहिने भाग में भी तिल जानना ॥ ५३ ॥

१००कण्ठस्य नल्याःखलु वामपार्श्वे प्रतीयते चेद्धिशदं तिलाद्यम्।
ब्रूयात्सुचिह्नं पुरुषस्य तस्य ऊरोश्च सन्धेः किल सव्यदेशे ॥५४॥

यदि कण्ठनली के वामभाग में तिल हो तो ऊरु सन्धि के बाईं तरफ़ भी तिल कहना चाहिये ॥ ५४ ॥*

इति तिलादिज्ञानम्

भालाङ्कविज्ञानमिदं मयोक्तं नारीनराणां शुभदं शिवेशे ! ।
अभ्यासमात्रेण नराःसुपूज्याः भूयासुरुर्व्यां सकलप्रियास्ते५५॥

अहो शिवेशे ! यह भालरेखा के सुलक्षणों का विज्ञान हमने कहा है, जो कि नर-नारीगणों को जानना अच्छा है । इसके अभ्यासमात्र से मनुष्य पूजनीय होते हैं और वे ही लोग भूमण्डल में सब के प्यारे होंगे ॥ ५५ ॥

कल्याणं कलयत्वीशः पठतस्सादरात् प्रिये ।
लोके धन्यतरो भूयान्मङ्गलानां च मङ्गलः ॥ ५६ ॥

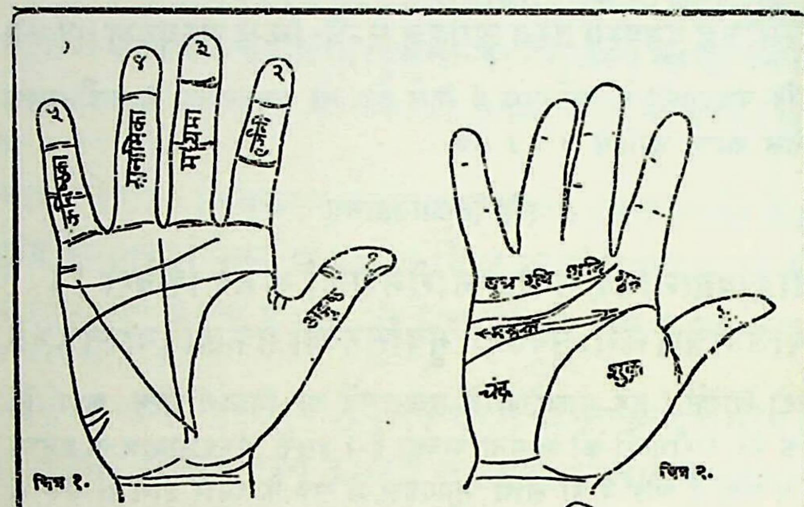
अहो प्रिये ! आदर समेत पढ़नेवालों को मङ्गलों का मङ्गलरूप हो । परमेश्वर कल्याण देवे । इसका अध्ययनकर्त्ता लोक में धन्यवाद का पात्र होगा ॥ ५६ ॥

इति श्रीमद्द्विजवरपं०शर्ङ्गिधरसंकलितसामुद्रकशास्त्रस्य भालरेखा-
लक्षणं नाम प्रथमः खण्डः समाप्तिं पफागेति शम् ।

---

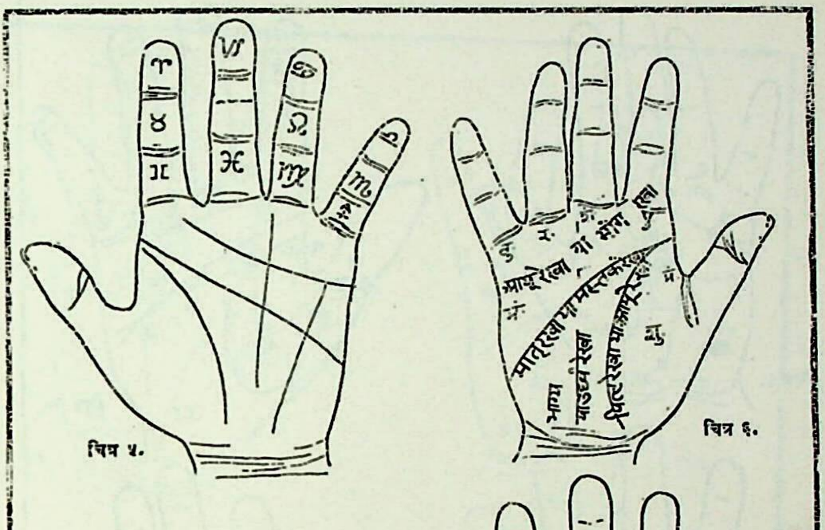
* भारत देश में आज भी सैकड़ों लोग केवल तिलों को देखकर ही पुरुष अथवा स्त्री के शुभाशुभ लक्षण शकल से जान लेते हैं । संपादक

हस्तरेखा।



चित्र १. चित्र २. चित्र ३. चित्र ४

हस्तरेखा।



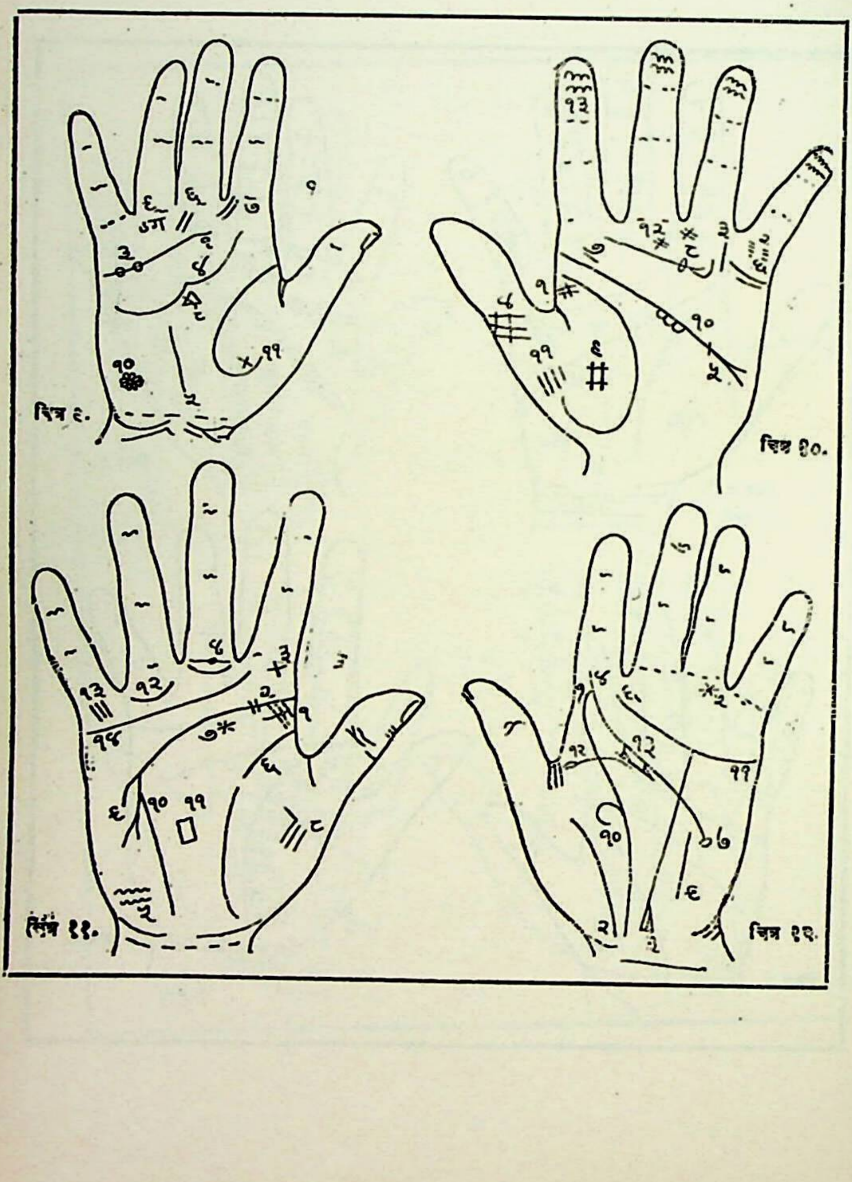
चित्र ५.

चित्र ६.

चित्र ७.

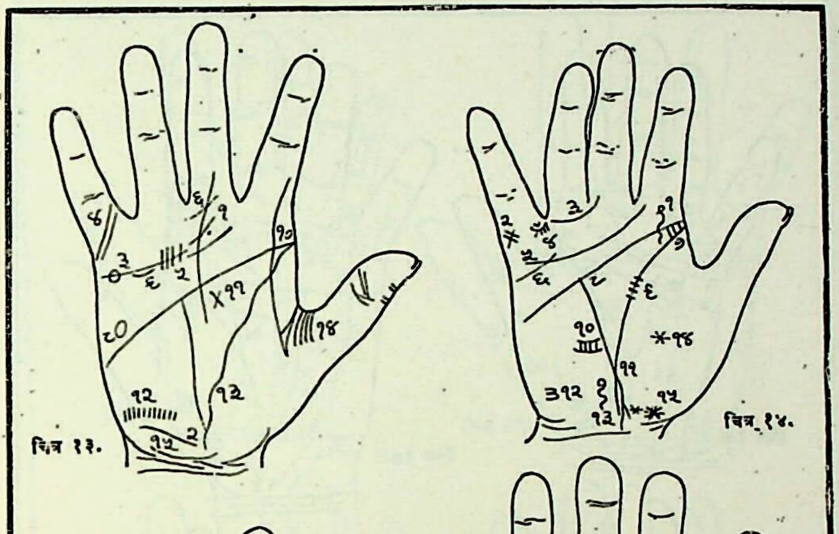
चित्र ८.

हस्तरेखा ।



चित्र ९. चित्र १०. चित्र ११. चित्र १२.

हस्तरेखा।



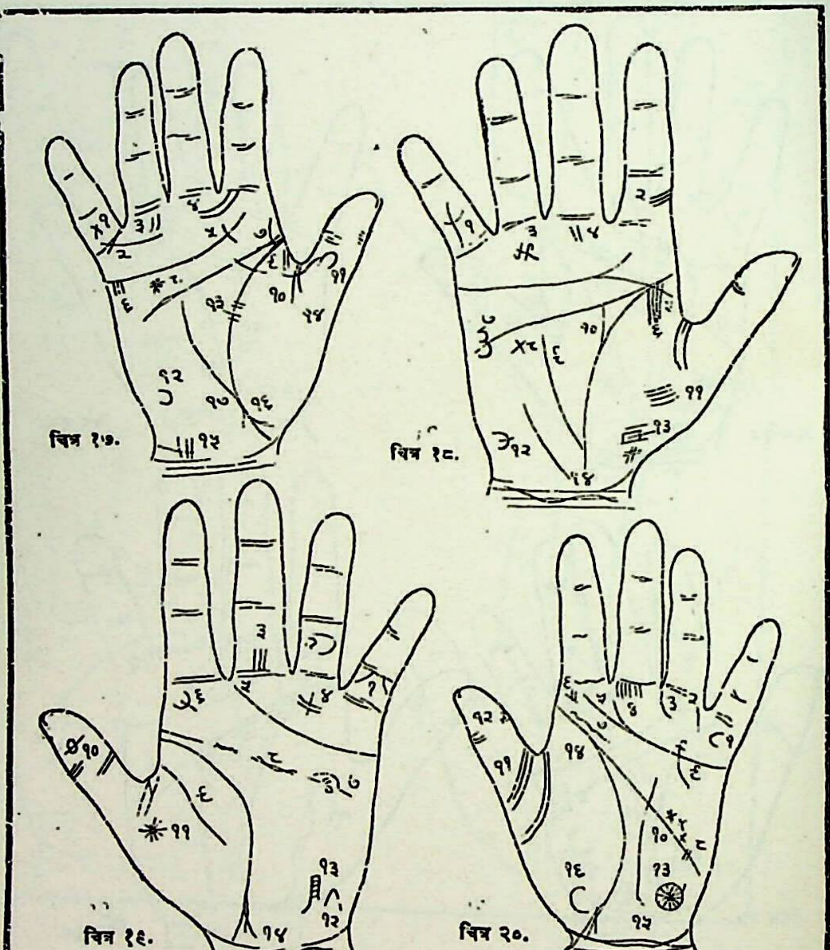
चित्र १३.

चित्र १४.

चित्र १५.

चित्र १६.

हस्तरेखा।



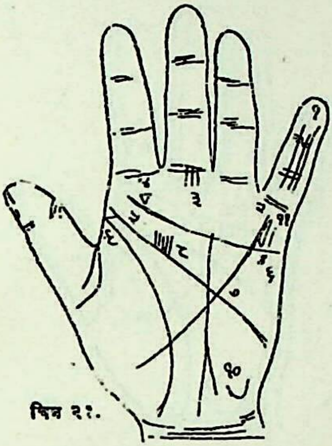
चित्र १७.

चित्र १८.

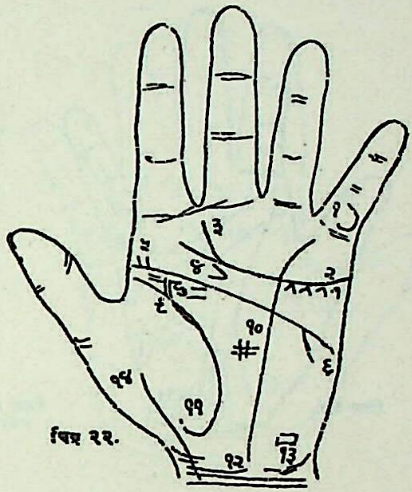
चित्र १९.

चित्र २०.

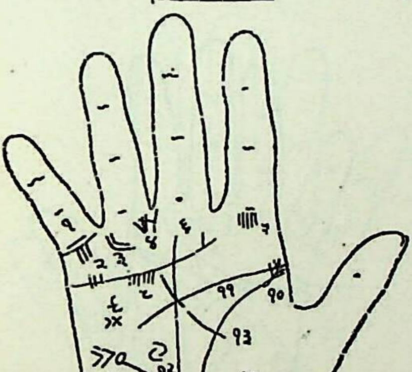
हस्तरेखा।



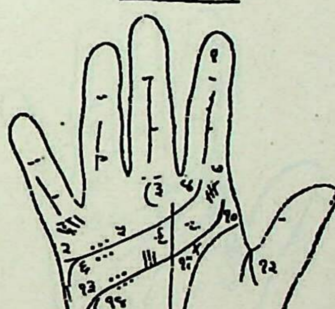
चित्र २१.



चित्र २२.

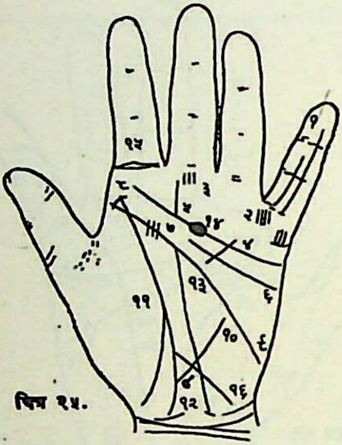


चित्र २३.

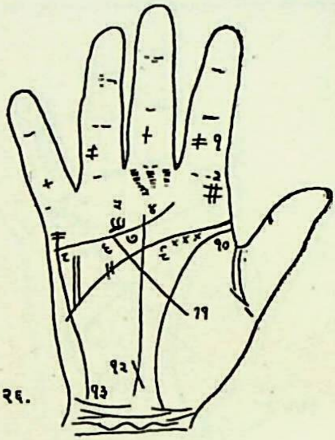


चित्र २४.

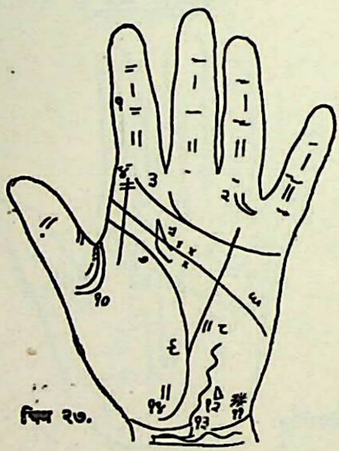
हस्तरेखा।



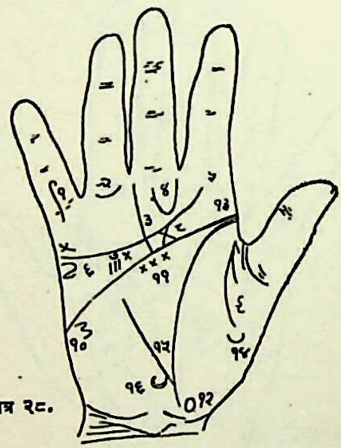
चित्र २५.



चित्र २६.

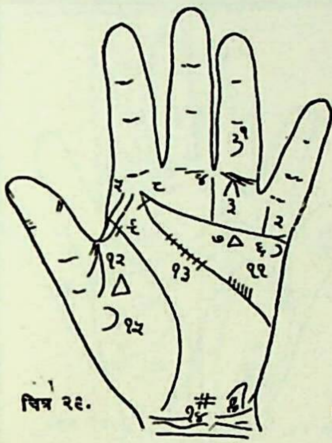


चित्र २७.

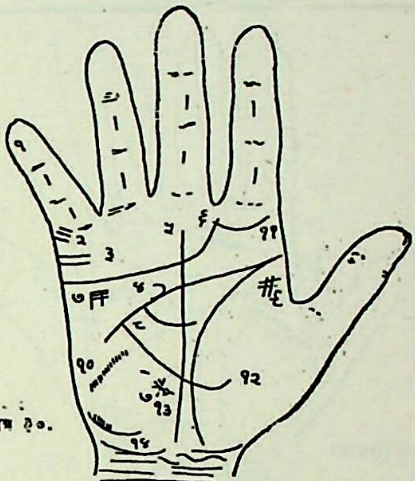


चित्र २८.

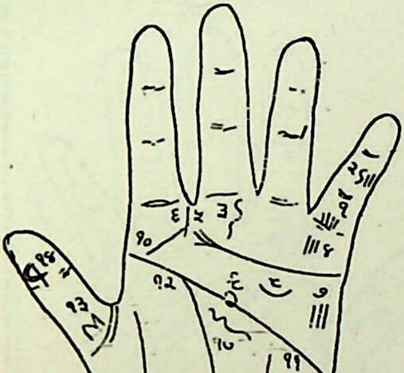
हस्तरेखा।



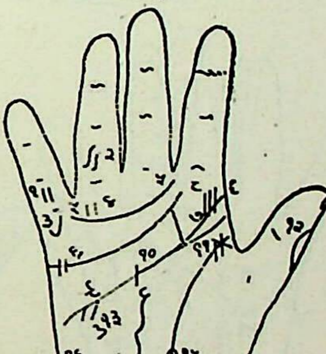
चित्र २९.



चित्र ३०.

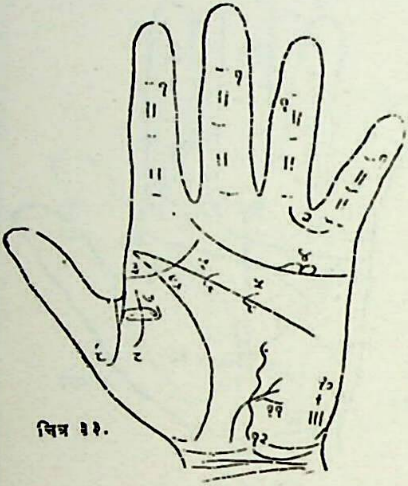


चित्र ३१.

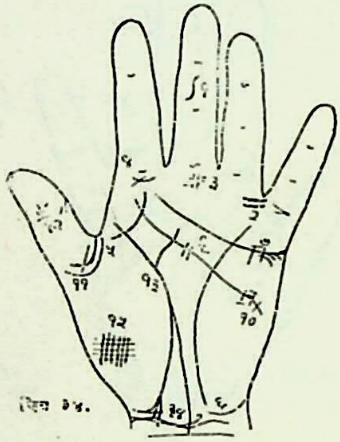


चित्र ३२.

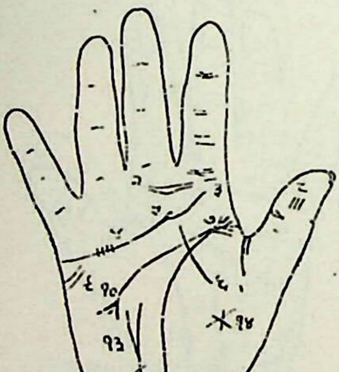
हस्तरेखा।



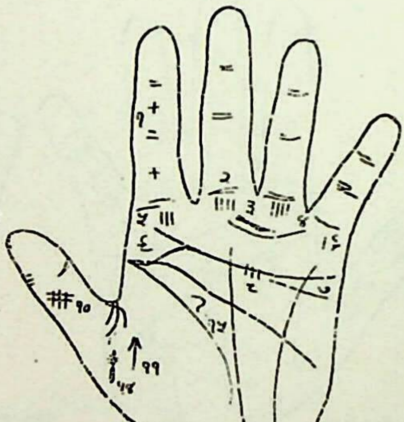
चित्र ३३.



चित्र ३४.

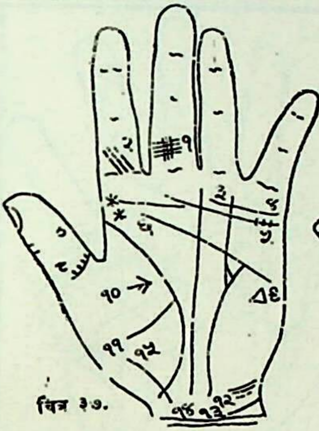


चित्र ३५.

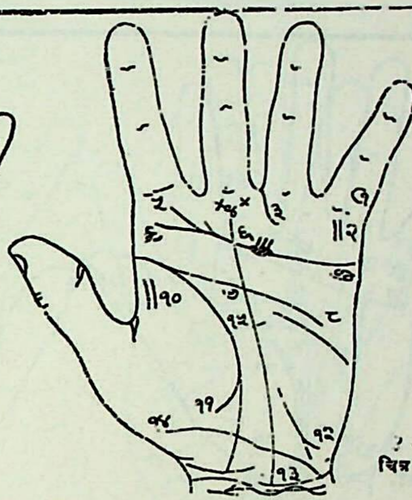


चित्र ३६.

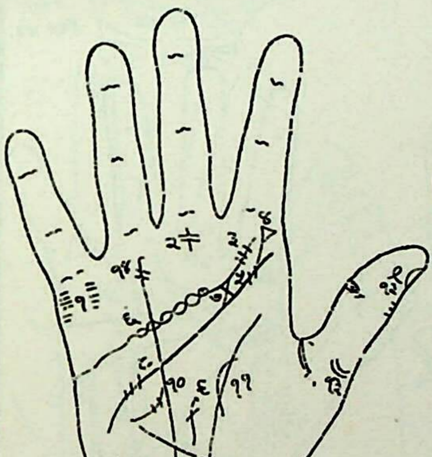
हस्तरेखा।



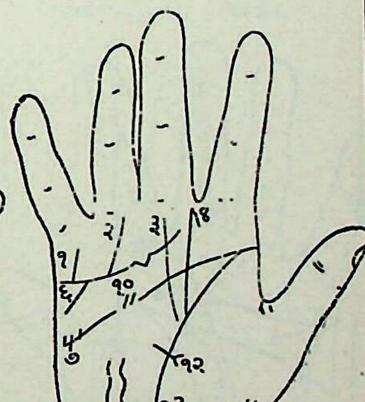
चित्र ३७.



चित्र ३८

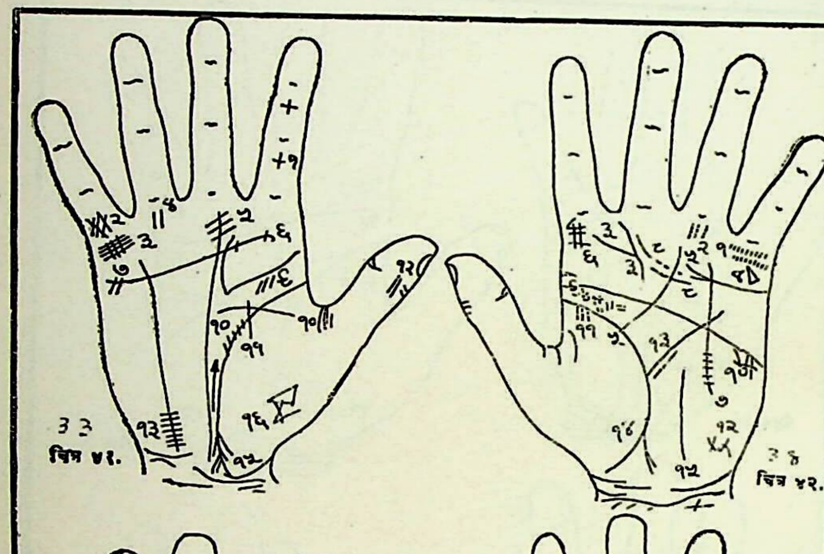


चित्र ३९.



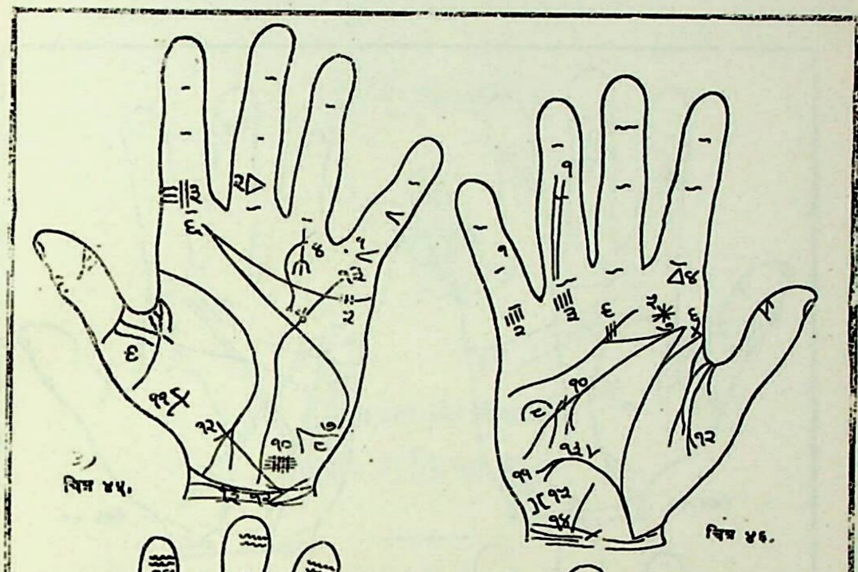
चित्र ४०.

हस्तरेखा।



चित्र ४१. चित्र ४२. चित्र ४३ चित्र ४४

हस्तरेखा।



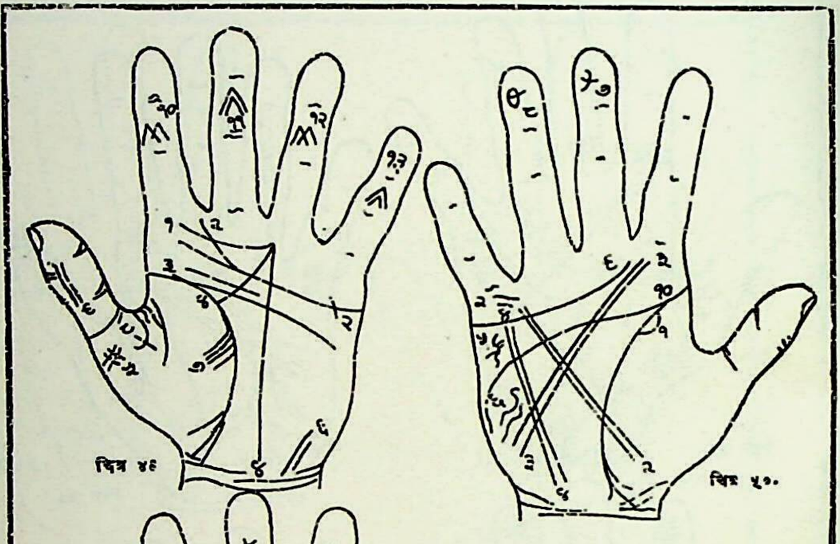
चित्र ४५.

चित्र ४६.

चित्र ४७.

चित्र ४८.

हस्तरेखा ।



चित्र ४९

चित्र ५०

चित्र ५१

सामुद्रिकशास्त्र

द्वितीयखण्ड

संग्रहकर्ता और टीकाकार

पं० शक्तिधर शुक्ल

व्यास प्रकाशन, वाराणसी

सामुद्रकशास्त्र के द्वितीयखण्ड का सूचीपत्र ।

सामुद्रकशास्त्र

द्वितीयखण्ड

(हस्तरेखालक्षण)

मङ्गलाचरण

शान्तं शान्तिकरं सदा सुखकरं सर्वाधिपं शर्मदं
कान्तं कान्तिकरं कलाधरधरं धर्म्यं धरेशं परम् ।
नित्यानन्दकरं महाभयहरं सौन्दर्यरत्नाकरं
वन्देऽहं सकलेश्वरं सुरवरं सर्वार्थसिद्ध्यै शिवम् ॥ १ ॥

शान्त, शान्तिकर, सदासुखकर, सर्वेश, कल्याणदायक, कमनीयरूपधारी, कान्तिकर, चन्द्रशेखर, धर्मी, धरेश, परेश, नित्यानन्दकर, महाभयहारी, सौन्दर्य-रत्नाकर, महादेव भगवान् शङ्कर की सर्वार्थसिद्धि के लिए मैं वन्दना करता हूँ ॥ १ ॥

आदौ पाणितलव्याख्या भण्यते मुनिसंमता ।
श्रूयतां देवि, देवेशि ! समाधाय मनोमलम् ॥ २ ॥

शिवजी बोले, पहले पाणितल (हाथ) की मुनिसंमत व्याख्या कही जाती है । अतएव हे देवि ! अपने अमल मनको सावधान कर सुनिए ॥ २ ॥ *

---

* टिहुनी से अंगुलियों के छोर तक एक विशेष स्थान है । कलाई से अंगुलियों तक दोनों ओर हाथ कहाता है । यह मानसिक क्रिया को क्रियात्मक रूप देनेवाला सर्वश्रेष्ठ साधन है । मानव शरीर में गले से ऊपर का भाग समस्त शरीर का कोष है तो हाथ उसकी कुंजी है ।—संपादक

करतल में अङ्गुलिज्ञान

अङ्गुल्यः करशाखाः स्युः पुंस्यंगुष्ठः प्रदेशिनी ।
मध्यमानामिका चापि कनिष्ठा चेति ताः क्रमात् ॥३॥

अंगुलियाँ हाथों की शाखाएँ होती हैं; उनमें अँगूठे को पहली अंगुली जानना चाहिए । दूसरी तर्जनी है और मध्यमा तीसरी अंगुली कहाती है । अनामिका चौथी और कनिष्ठा पाँचवीं अँगुली है । इसी क्रम से पाँचों अँगुलियों को जानना चाहिए ॥ ३ ॥ † देखो चि० नं० १

करतलग्रहस्थितिज्ञान

कनिष्ठामूलगः सौम्यो ह्यनामामूलगो रविः ।
मध्यमामूलगो मन्दस्तर्जनीमूलगो गुरुः ॥ ४ ॥

---

† जिस प्रकार आजकल विज्ञान की सहायता से इंजीनियर लोग बड़े-बड़े मकानों पर नोकदार काँटे (लोहे के) बिजली आदि से बचने के लिए लगाया करते हैं, इसी प्रकार सर्वेश्वर उस महा इंजीनियर ने मानव शरीर (महल) पर हाथ की अंगुलियाँ नोकदार काँटे रूप में उत्पन्न की हैं। स्पर्श-ज्ञान का प्रधान ज्ञानतन्तु हाथ है, और हाथ में प्रधान अंगुलियाँ हैं। उन सबमें प्रधान अंगुष्ठ है ।—संपादक

कुछ इंगलिश, अमेरिकन, तथा फ्रेंच विद्वानों ने अँगूठे को अंगुली नहीं माना । जिस प्रकार हाथ में शुक्र ग्रह स्थान समस्त जीवन की कुंजी है, इसी प्रकार स्वभाव, गुण तथा मानसिक शक्ति का द्योतक एक यही अँगूठा होता है। इस पर प्रायः सभी ने विशेष ज़ोर दिया है । The thumb is the greatest index to the character अर्थात् अँगूठा आचरण का सबसे बड़ा परिचायक है । Latin भाषा में इसे pollex (पोलेक्स) कहते हैं । इसका अर्थ है "सबसे पुष्ट" । प्रसिद्ध फ्रेंच विद्वान् Montaigne ने इसे "Master finger" (सबमें प्रधान अंगुली) कहा है । इसमें मनोवैज्ञानिक प्रधानता है। प्रसिद्ध विद्वान् कीरो ने तो अँगूठे में हस्तरेखा-विज्ञान के समस्त सत्यांश की नींव मानी है । इसी प्रकार भारतीय एवं चीन के हस्तरेखाविशारदों ने भी अँगूठे को आचरण तथा मानसिक शक्तियों का खास सूचक माना है। (So great a revealer of character is the thumb that many of the Hindus base their entire work upon it. The Chinese have a most minute and intricate system based solely...on first phalanx.)—संपादक

१-इङ्गलण्डीयसामुद्रिकवेत्तॄणां मते बुधस्य मर्करी संज्ञा, सूर्यस्य सनसंज्ञा, शनैश्चरस्य स्यटर्न संज्ञा, गुरोर्जुपिटरसंज्ञा, मंगलस्य मार्ससंज्ञा, शुक्रस्य वीनससंज्ञा, चन्द्रस्य मूनसंज्ञा कथितेति ।

मातृपित्रोरुपर्य्यारः शुक्रो ह्यंगुष्ठमूलगः ।
मातृपित्रोरधश्चन्द्रो ज्ञेया खेटस्थितिः क्रमात् ॥ ५ ॥

कनिष्ठा के मूल में बुध, अनामा के मूल में सूर्य, मध्यमा के मूल में शनि, तर्जनी के मूल में बृहस्पति, माता पिता की रेखा के ऊपर व मध्य में मङ्गल, अँगूठे के मूल में शुक्र और माता-पिता की रेखा के नीचे चन्द्र रहता है। इस क्रम से ग्रहों का स्थान जानना चाहिए ॥ ४—५ ॥ (देखो चित्र नं० १व२)*

वृत्ताकारं ☉ रवेश्चिह्नं चन्द्रस्याप्यर्द्धचन्द्रकम् ☽ ।
एतादृशं ♂ कुजस्यैव बुधस्यापीदृशं ☿ मतम् ॥ ६ ॥
गुरोश्चापीदृशं ♃ ज्ञेयं भृगोश्चापीदृशं ♀ स्मृतम् ।
शनैश्चापीदृशं ♄ प्रोक्तं विद्वद्भिर्वेदपारगैः ॥ ७ ॥

वृत्ताकार ☉ सूर्यका चिह्न, चन्द्र का ☽ अर्धचन्द्राकार, मंगल का चिह्न ♂ ऐसा होता है। बुध का चिह्न ☿ ऐसा है। बृहस्पति का ♃ ऐसा चिह्न जानना चाहिए। शुक्र का ♀ ऐसा चिह्न है, और शनि का ♄ ऐसा चिह्न जानना चाहिए ॥ ६—७ ॥ देखो चि० नं० ३

करतलद्वादशराशिस्थितिज्ञान

अङ्गुलीषु च सर्वासु पर्वत्रयमुदाहृतम् ।
तर्जनीपर्वके चाद्ये मेषस्तिष्ठति सर्वदा ॥ ८ ॥
द्वितीये च वृषो ज्ञेयस्तृतीये मिथुनं स्मृतम् ।
अनामापर्वके चाद्ये सदा तिष्ठति कर्कटः ॥ ९ ॥
द्वितीये सिंहको ज्ञेयस्तृतीये कन्यका स्थिता ।
कनिष्ठापर्वके चाद्ये तुला ज्ञेया मनीषिभिः ॥ १० ॥
द्वितीये वृश्चिको ज्ञेयस्तृतीये धनुरुच्यते ।
मध्यमापर्वके मुख्ये मृगस्तिष्ठति सर्वदा ॥ ११ ॥

---

* कई पाश्चात्य विद्वानों ने उपर्युक्त ग्रहों को ज्योतिष के ग्रह नहीं माना; किंतु यह गलत है। आप आगे चलकर ज्योतिष और सामुद्रक में घनिष्ठ संबंध देखेंगे। इससे स्पष्ट हो जायगा कि हथेली पर के ग्रह यथार्थ में ज्योतिष के ग्रह ही हैं। —संपादक

द्वितीये कुम्भको ज्ञेयस्तृतीये मीनको मतः।
एवं द्वादशराशीनां स्थितिः प्रोक्ता मया प्रिये ॥१२॥

शिवजी बोले, प्रिये ! प्रत्येक अंगुली में तीन-तीन पर्व होते हैं, उनमें तर्जनी के पहले पर्व में मेष, दूसरे पर्व में वृष, तीसरे में मिथुन है। अनामिका के पहले पर्व में कर्क, दूसरे में सिंह, तीसरे में कन्या है। कनिष्ठा के पहले पर्व में तुला, दूसरे में वृश्चिक, तीसरे पर्व में धन है। मध्यमा के पहले पर्व में मकर, दूसरे में कुम्भ, और तीसरे पर्व में मीन माना जाता है। इस प्रकार बारह राशियों का स्थितिक्रम मैंने कहा ॥ ८–१२ ॥ (देखो चित्र नं० १) *

मेषादिनाम

मेषाजविश्वक्रियतुम्बुराद्या वृषोक्षगोतावुरगोकुलानि।
द्वन्द्वं नृयुग्मं जुतुमं यमं च युगं तृतीयं मिथुनं वदन्ति ॥१३॥

मेष, अज, विश्व, क्रिय, तुम्बुर और आद्य ये मेषराशि के नाम हैं। वृष, उक्षा, गो, तावुर और गोकुल वृषराशि के नाम हैं। द्वन्द्व, नृयुग्म, जुतुम, यम, युग, तृतीय और मिथुन, मिथुनराशि के नाम आचार्यों ने कहे हैं ॥ १३ ॥

कुलीरकर्काटककर्कटाख्याः कण्ठीरवः सिंहमृगेन्द्रलेयाः।
पाथोनकन्यारमणीतरण्यस्तौलीवणिक्जूकतुलाधटाश्च १४॥

कुलीर, कर्काटक और कर्कट कर्कराशि के नाम हैं। कण्ठीरव, सिंह मृगेन्द्र और लेय सिंहराशि के नाम हैं। पाथोन, कन्या, रमणी और तरणी कन्या राशि के नाम हैं। तौलि, वणिक्, जूक, तुला और धट तुलाराशि के नाम हैं ॥ १४ ॥

अलपष्टभं वृश्चिककौपकीटा धन्वी धनुश्चापशरासनानि।
मृगोमृगास्यो मकरश्च नक्रःकुम्भो घटस्तोयधराभिधानः ॥१५॥

* पाठक अब ज्योतिष और सामुद्रिक का संबंध देखें। यहाँ राशि, ग्रह आदि वही हैं और वही फल देते हैं, जैसा कि ज्योतिष की राशि तथा ग्रह हैं। —संपादक

अल्पवृषभ, वृश्चिक, कार्पि और कीट वृश्चिकराशि के नाम हैं। धन्वी, धनु, चाप और शरासन धनराशि के नाम हैं। मृग, मृगास्य, मकर और नक्र मकरराशि के नाम हैं। कुम्भ, घट और तोयधर कुम्भराशि के नाम हैं ॥ १५ ॥

मीनालिमत्स्यपृथुरोमझषा वदन्ति
दस्रादिकर्क्षनवपादयुताः क्रियाद्याः।
चक्रस्थितादिविचरादिननाथसंख्या
क्षेत्रर्क्षराशिभवनानि भसंस्थितानि ॥ १६ ॥

मीन, अलि, मत्स्य, पृथुरोम तथा झष मीनराशि के नाम आचार्यों ने कहे हैं। अश्विन्यादि नक्षत्रों के नव चरणों से संयुत व आकाश में चलनेवाली व चक्र में टिका हुई मेषादिक बारह राशियाँ होती हैं और राशियों में भली भाँति टिके हुए क्षेत्र, ऋक्ष, राशि व भवन ये स्थानों के नाम होते हैं ॥ १६ ॥

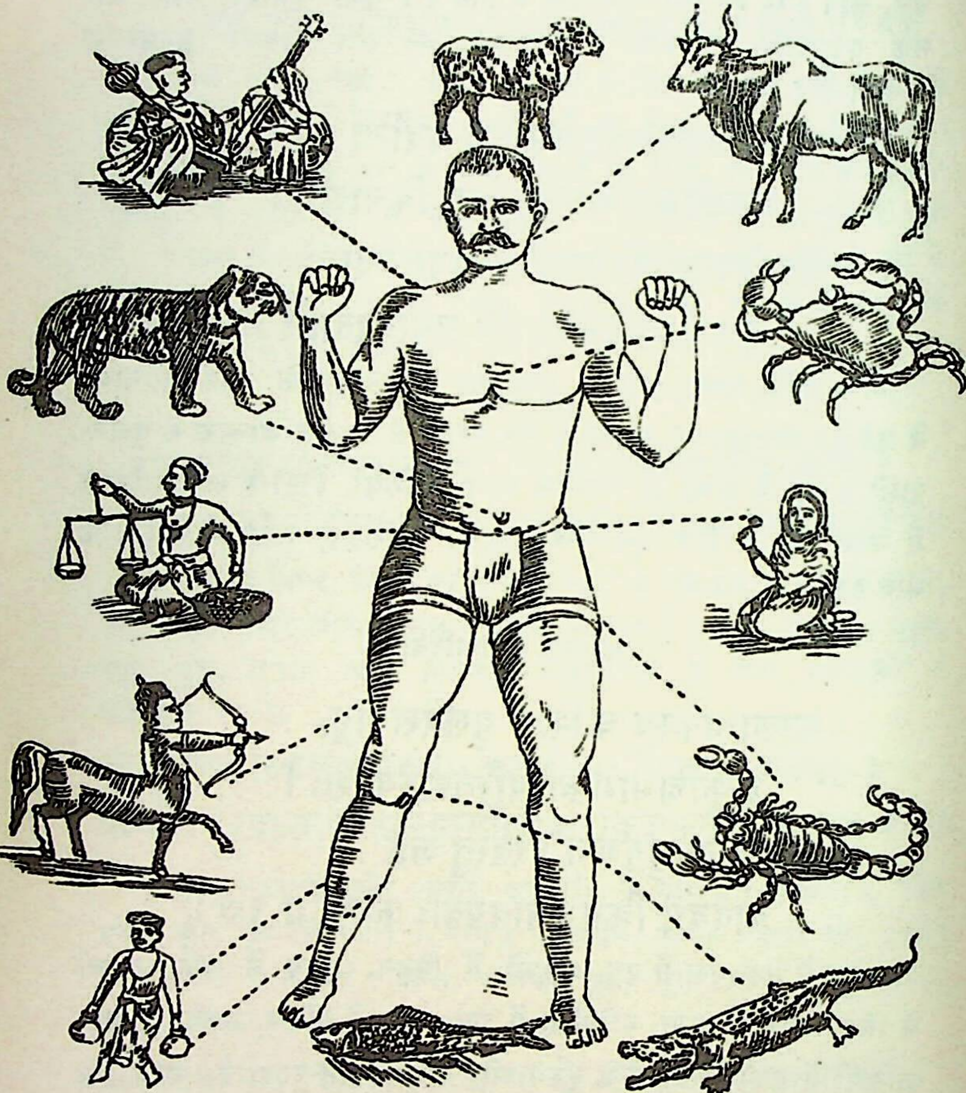
कालाङ्ग में मेषादिवास

कालात्मकस्य च शिरो मुखदेशबाहु-
हृत्कुक्षिभागकटिबस्तिरहस्यदेशः।
ऊरू च जानुयुगलं परतस्तु जङ्घे
पादद्वयं क्रियमुखावयवाः क्रमेण ॥ १७ ॥

शीश में मेष, मुख में वृष, बाहुओं में मिथुन, हृदय में कर्क, कोखों में सिंह, कमर में कन्या, बस्तिदेश में तुला, गुदा में वृश्चिक, ऊरुओं में धन, जानुओं में मकर, जंघाओं में कुम्भ और पैरों में मीन रहता है। ये क्रम से मेषादिराशियों के अवयव कहाते हैं ॥ १७ ॥ *

* पाठक! ध्यानपूर्वक देखें, समस्त शरीर में तथा हथेली में किस प्रकार ग्रह, एवं राशियों का विचित्र समावेश है। इसे भली भाँति मनन करना चाहिए। —संपादक

उदाहरण



राशिस्वरूप

व्यत्यस्तोभयपुच्छमस्तकयुतौ मीनौ सकुंभौ नर-
स्तौलीचापधरस्तुरङ्गजघनो नक्रो मृगास्यो भवेत्।
वीणाढ्यं सगदं नृयुग्ममबला नौस्था ससस्यानला
शेषाः स्वस्वगुणाभिधानसदृशाः सर्वे स्वदेशाश्रयाः॥ १८॥

उलटे-पलटे दोनों तरफ पूँछ व मस्तकयुक्त दो मीन कहाते हैं। कुम्भ समेत तुला नर कहाते हैं। धन जघनदेश से घोड़े का रूप रखता है। मकर मृगमुखवाला होता है। मिथुन वीणायुक्त रोगी रहता है। कन्या नौका में बैठी हुई धान्यसमेत अनल से पूर्ण रहती है। शेष सभी अपने अपने नाम और गुण के समान अपने अपने देश का आश्रय रखते हैं *॥ १८॥

मेषादि का अधिवास

मेषस्य धातुकररत्नधरातलं स्यादुक्षस्तु सानुकृषिगोकुलकाननानि। द्यूतक्रियारतिविहारमहीयुगस्य वापीतटाकपुलिनानि कुलीरराशेः॥ १९॥

धातु, रत्नों की खान और धरातल में मेष का अधिवास है। पर्वतों का किनारा या सम भूभाग, खेत, गोकुल तथा वन में वृष का अधिवास है। जुआँ, रति और विहार करने की भूमि में मिथुन का अधिवास कहा जाता है। बावली, तालाब व पुलों में कर्क का वास रहता है॥ १९॥

कण्ठीरवस्य घनशैलगुहावनानि षष्ठस्य शाद्वलवधूरतिशिल्पभूमिः। सर्वार्थसारपुरपण्यमहीतुलायाः कीटस्य चाश्मविषकीटबिलप्रवेशाः॥ २०॥

घने पहाड़ों, गुहाओं और वनों में सिंह का अधिवास रहता है। हरी घास, रमणियों के रतिस्थान तथा कारीगरी की भूमि में कन्या का अधिवास कहाता है। समग्र अर्थसार, पुर, बाजार या दूकानों की भूमि में

---

* राशि तथा ग्रहों के वास, स्वरूप आदि से उनके स्वभाव और फल का ज्ञान होता है। अतएव उपर्युक्त सभी बातें पाठकों को कंठस्थ कर लेनी आवश्यक हैं। आगे चलकर इनसे भारी काम निकलेगा।—संपादक

तुला का अधिवास है। पत्थर, विष, कीट व बिलप्रदेश में वृश्चिक का वास कहा जाता है ॥ २० ॥

चापस्य वाजिरथवारणवासभूमिरेणाननस्य सरिदम्बुवनप्रदेशाः। कुम्भस्य तोयघटभाण्डगृहस्थलानि मीनाधिवाससरिदम्बुधितोयराशिः ॥ २१ ॥

घोड़े, रथ और हाथियों के रहने की भूमि में धन का वास है। नदी, जल तथा जंगलों में मकर का वास होता है। जल, घट, भांडगृह व स्थलों में कुंभ का अधिवास कहा जाता है, और नदी, समुद्र और जलराशियों में मीन का अधिवास होता है ॥ २१ ॥

मेषादि की ह्रस्वादिसंज्ञा

ह्रस्वागोजघटास्समामृगनृयुक्चापान्त्यकर्कटका
दीर्घावृश्चिककन्यकाहरितुलामेषादिपुंयोषितौ।
प्रागादिक्रियगोनृयुक्कटकभान्येतानि कोणान्विता-
न्याहुः क्रूरशुभौ चरस्थिरतरद्वन्द्वानि तानि क्रमात् ॥२२॥

वृष, मेष, कुम्भ ये ह्रस्व संज्ञक हैं। मकर, मिथुन, धन, मीन और कर्क ये समसंज्ञक हैं। वृश्चिक, कन्या, सिंह और तुला ये दीर्घसंज्ञक हैं। मेषादि राशियाँ पुरुष तथा स्त्रीसंज्ञक भी कहाती हैं। यानी मेष पुरुष, वृष स्त्री, मिथुन पुरुष, कर्क स्त्री, सिंह पुरुष, कन्या स्त्री, तुला पुरुष, वृश्चिक स्त्री, धन पुरुष, मकर स्त्री, कुम्भ पुरुष, मीन स्त्री संज्ञक है। मेष, वृष, मिथुन व कर्क ये चार चार पूर्वादि दिशाओं में रहती हैं। अर्थात् मेष पूर्व में रहता है। दक्षिण में वृष, पश्चिम में मिथुन, उत्तर में कर्क रहता है। तथा सिंह पूर्व में, कन्या दक्षिण में, तुला पश्चिम में, वृश्चिक उत्तर में बसता है। पूर्व में धन, दक्षिण में मकर, पश्चिम में कुम्भ, उत्तर में मीन है। मेषादि बारह राशियाँ क्रूर व सौम्य संज्ञक भी कहाती हैं। अर्थात् मेष क्रूर, वृष शुभ, मिथुन क्रूर, कर्क सौम्य, सिंह क्रूर, कन्या सौम्य, तुला क्रूर, वृश्चिक सौम्य, धन क्रूर, मकर सौम्य, कुम्भ क्रूर और मीन सौम्य कहा जाता है। मेषादि बारह राशियाँ चर, स्थिर या द्विस्वभावसंज्ञक कहाती हैं। यानी मेष चर, वृष स्थिर, मिथुन द्विस्वभाव, कर्क चर, सिंह स्थिर, कन्या द्विस्वभाव, तुला चर,

वृश्चिक स्थिर, धन द्विस्वभाव, मकर चर, कुम्भ स्थिर और मीन द्विस्वभाव संज्ञक कहा जाता है ॥ २२ ॥

पृष्ठोदयादिसंज्ञा

वीर्योपेता निशि वृषनृयुक्कर्किचापाजनक्रा
हित्वा युग्मं भवनमपरे पृष्ठपूर्वोदयाश्च ।
शेषाः शीर्षोदयदिनबला श्रेष्ठता राशयस्ते
मीनाकारद्वयमुभयतः काललग्नं समेति ॥ २३ ॥

वृष, मिथुन, कर्क, धन, मेष और मकर ये राशियाँ रात्रि में बलवान् कहाती हैं। इनमें मिथुनराशि को छोड़कर अन्य राशियाँ पृष्ठोदयसंज्ञक होती हैं। सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक व कुम्भ ये राशियाँ दिनमें बली व श्रेष्ठ होकर शीर्षोदय कहाती हैं। मीनराशि दिन और रात्रि में बलवान् व उभयोदयी होकर काललग्न को प्राप्त होती है ॥ २३ ॥

मीनालिकर्कटमृगाः सलिलाभिधानास्तोयाश्रयाघटवधूयुगगोपसंज्ञाः । निस्तोयभूतलचराः क्रियचापतौलिकण्ठीरवाश्च बहवः प्रवदन्ति सन्तः ॥ २४ ॥

मीन, वृश्चिक, कर्क और मकर ये जलसंज्ञक कहाते हैं । कुम्भ, कन्या, मिथुन और वृष ये जल का आश्रय रखते हैं। मेष, धन, तुला और सिंह ये निर्जल भूतल में चरते हैं। ऐसा भी बहुत से सन्तलोग कहते हैं ॥२४॥

चतुष्पदादिसंज्ञा

चापापरार्धहरिगोमकरादिमेषा मीनास्थिता बलयुताश्च चतुष्पदाख्याः । कन्यानृयुग्मघटतौलिशरासनाद्या लग्नान्विता यदि नरा द्विपदा बलाढ्याः ॥ २५ ॥

धन का परार्द्ध, सिंह, वृष, मकर का पूर्वार्ध, मेष और मीन ये बलवान् होने हुए चतुष्पद संज्ञावाले होते हैं। कन्या, मिथुन, कुम्भ और धन का पूर्वार्ध ये नररूपधारी द्विपद कहाते हैं। यदि लग्न में हों तो बलवान कहे जाते हैं ॥ २५ ॥

मृगापरार्धान्त्यकुलीरसंज्ञा जलाभिधाना बलिनश्चतुर्थे ।
जलाश्रयो वृश्चिकनामधेयःसप्तमस्थानगतो बलीस्यात् २६

मकर का परार्ध, मीन और कर्क ये जलचर कहाते हैं। यदि चौथे घर में हों तो बलवान् कहे जाते हैं। वृश्चिक जलाश्रयी कहाता है। यदि सातवें घर में हो तो बलवान् होता है ॥ २६ ॥

दिवारात्रिबल

केन्द्रं गतोऽह्नि द्विपदो बलाढ्यश्चतुष्पदाः केन्द्रगता रजन्याम् । कीटास्तु सर्वे यदि कण्टकस्थाः सन्धिद्वये वीर्ययुता भवन्ति ॥ २७ ॥

दिन के समय केन्द्र में बैठा हुआ द्विपद बलवान् होता है। रात्रि के समय केन्द्र के चतुष्पद बलवान् होते हैं । और समस्त कीटसंज्ञक यदि केन्द्र में हों तो दोनों सन्धियों में बली होते हैं ॥ २७ ॥

धातुमूलजीवचिन्ताज्ञान

धातुर्मूलं जीवमित्याहुरार्या मेषादीनामोजयुग्मे तथैव ।
स्वर्णाद्धातुर्मृत्तिकान्तं तृणान्तं वृक्षान्मूलं जीवकूटःसजीवः२८

मेषादि के सम व विषम में धातु, मूल और जीव इन चिन्ताओं को आर्यों ने कहा है। वहाँ सोने से लेकर मृत्तिकापर्यन्त धातु कहाती है। वृक्ष से लेकर तिनकापर्यन्त मूल कहाता है। जो जीव-समुदाय दिखता है, वह जीव कहा जाता है ॥ २८ ॥

मेषादि से चिन्ताज्ञान

मेषे च द्विपदां चिन्ता वृषे चिन्ता चतुष्पदाम् ।
मिथुने गर्भचिन्ता च व्यवसायस्य कर्कटे ॥ २९ ॥
सिंहे च जीवचिन्ता स्यात् कन्यायां च स्त्रियास्तथा ।
तुलायां धनचिन्ता च व्याधिचिन्ता च वृश्चिके ॥३०॥
चापे च धनचिन्ता स्यान्मकरे शत्रुचिन्तनम् ।
कुम्भे स्थानस्य चिन्ता स्यान्मीने चिन्ता च दैविकी ३१

मेष में द्विपदों की चिन्ता होती है। वृष में चौपायों की, मिथुन में गर्भ की, कर्क में रोजगार की, सिंह में जीवों की, कन्या में स्त्रियों की, तुला में धन की, वृश्चिक में व्याधि की, धन में धन की, मकर में शत्रु की, कुम्भ में स्थान की और मीन में दैवीचिन्ता जानना चाहिए ॥ २९–३१ ॥

वर्णज्ञान

मीनालिकर्कटा विप्राश्चापाजहरयो नृपाः।
कुम्भयुग्मतुलाः शूद्रा वैश्या वृषमृगाङ्गनाः ॥ ३२ ॥

मीन, वृश्चिक और कर्क ये ब्राह्मण कहाते हैं। धन, मेष और सिंह ये क्षत्रिय कहाते हैं। वृष, मकर और कन्या ये वैश्यवर्ण कहे जाते हैं और कुम्भ, मिथुन और तुला ये शूद्रवर्ण होते हैं * ॥ ३२ ॥

अन्धबधिरादिज्ञान

महानिशान्धाः क्रियगोमृगेशा मध्यन्दिने कर्कटयुग्मकन्याः। पूर्वाह्णकाले बधिरौ तुलाली धन्वी मृगाख्यश्च तथापराह्णे ॥ ३३ ॥

मेष, वृष, मकर महानिशा में अन्धे रहते हैं। कर्क, मिथुन और कन्या मध्याह्न में अन्धे कहाते हैं। तुला, वृश्चिक ये पूर्वाह्ण में बहरे होते हैं, तथा धन और मकर अपराह्ण में बहरे होते हैं ॥ ३३ ॥

मृगाननश्चापधरश्च पङ्गुः सन्धिद्वये नाशकरौ भवेताम्।
स्यादृक्षसन्धिः कटकालिमीनभान्तं प्रगण्डान्तमिति प्रसिद्धम्

मकर और धन पंगुसंज्ञक कहाते हैं। ये दोनों सन्धियों में नाशकारक हैं। कर्क, वृश्चिक और मीन पर्यन्त ऋक्षसन्धि कहाती है। यह भान्त व प्रगण्डान्त इस नाम से विख्यात है ॥ ३४ ॥

रक्तादिवर्णज्ञान

रक्तगौरशुककान्तिपाटलाः पाण्डुचित्ररुचिनीलकाञ्चनाः।
पिङ्गलःशबलबभ्रुपाण्डुरास्तूवरादिभवनेषु कल्पिताः ॥ ३५ ॥

---

* इनके वर्ण-गुणादि का ज्ञान होने से हस्तरेखाएँ पढ़ने में बड़ी सहायता मिलती है। —संपादक

मेष रक्त, वृष गौर, मिथुन हरित, कर्क श्वेत-रक्त, सिंह पाण्डु, कन्या विचित्र, तुला कृष्ण, वृश्चिक सुवर्णसदृश, धन पिंगल, मकर कर्बुर, कुम्भ बभ्रु और मीन स्वच्छवर्ण कहाता है। ये मेषादि बारह राशियों में कल्पित हैं ॥ ३५ ॥

द्रव्य

वस्त्राद्यं शालिमुख्यं वनफलनिचयः कन्दलीमुख्यधान्यं
त्वक्सारं मुद्गपूर्वं तिलवसनमुखं त्विक्षुलोहादिकं च।
शस्त्रास्त्रं काञ्चनाद्यं जलजनिकुसुमं तोयजातं समस्तं
द्रव्याण्याहुः क्रियादिष्वबलबलयुतेष्वल्पताधिक्यभाञ्जि॥३६॥

वस्त्रादि मेष का द्रव्य है। शालिमुख्य वृष का, वन्यफलों का समुदाय मिथुन का, कन्दली मुख्यधान्य कर्क का, त्वक्सार सिंह का, मूँग आदि कन्या का, तिल वसन तुला का, इक्षु लौहादि वृश्चिक का, शस्त्रास्त्र धन का, सुवर्ण आदि मकर का, जलजातपुष्प कुम्भ का, और जल से उपजा समस्त द्रव्य मीन का है। यदि मेषादि बली या अबली हों तो पूर्वोक्त द्रव्य उसी क्रम से कम अथवा अधिक जानना चाहिए ॥ ३६ ॥

करतल में मेषादिचिह्न

मेषस्यैतादृशं ♈ चिह्नं वृषस्यापीदृशं ♉ मतम्।
द्वन्द्वस्यैतादृशं ♊ ज्ञेयं कर्कस्यापीदृशं ♋ स्मृतम् ॥३७॥
सिंहस्यैतादृशं ♌ ख्यातं कन्यायाश्चेदृशं ♍ मतम्।
घटस्यापीदृशं ♎ व्यक्तं वृश्चिकस्य ♏ ततः परम् ॥३८॥
चापस्यैतादृशं ♐ गीतं मृगस्यापीदृशं ♑ मतम्।
कुम्भस्यैतादृशं ♒ प्रोक्तं मीनस्यैतादृशं ♓ बुधैः ३९ ॥

यह मेष राशि का ♈ चिह्न है। यह वृष का ♉ है। यह मिथुन का ♊ जानना चाहिए। कर्क का यह ♋ है। यह सिंहराशि का ♌ है। कन्या का ♍ यह माना है। यह तुला का ♎ है। वृश्चिक

का ♏ यह है । यह ♐ धन का है । मकर का ♑ यह निशान है । यह कुम्भ का ♒ और मीन का ♓ ऐसा निशान कहा है * ॥ ३७–३९ ॥ देखो चि० नं० ५

मेषाधीश

धराजशुक्रज्ञशशीनसौम्यसितारजीवार्कजमन्दजीवाः ।
क्रमेण मेषादिषुराशिनाथास्तदंशपाश्चेति वदन्तिसन्तः॥४०॥

मेष का स्वामी मङ्गल, वृष का शुक्र, मिथुन का बुध, कर्क का चन्द्रमा, सिंह का सूर्य, कन्या का बुध, तुला का शुक्र, वृश्चिक का मङ्गल, धन का गुरु, मकर व कुम्भ का शनैश्चर और मीन का अधिपति व अंशप बृहस्पति है ॥ ४० ॥ (पाठक ! देखा राशि तथा ग्रह का संबंध । यही ग्रह हाथ पर हैं ।—संपादक)

ग्रहों का शरीरविभाग

ग्रहाणां मण्डलं चैव शृणु वक्ष्यामि पार्वति ।
नादचक्रे स्थितः सूर्यो बिन्दुचक्रे च चन्द्रमाः ॥ ४१ ॥
लोचने मङ्गलः प्रोक्तो हृदि सोमसुतस्तथा ।
उदरे च गुरुश्चैव शुक्रे शुक्रस्तथैव च ॥ ४२ ॥
नाभिस्थितोऽथ मन्दो वै मुखे राहुस्तथा स्थितः ।
पादे पाणौ च केतुश्च शरीरे ग्रहमण्डलम् ॥ ४३ ॥

शिवजी बोले हे पार्वती ! मैं ग्रहों का मण्डल कहूँगा, उसे सुनिए । सूर्य नादचक्र में बैठा है । चन्द्रमा बिन्दुचक्र में है । मङ्गल लोचनों में रहता है । बुध हृदय में, उदर में बृहस्पति, शुक्र (बीज) में शुक्र, नाभि (तोंदी) में शनैश्चर, मुख में राहु और हाथ-पैरों में केतु है । यह शरीर का ग्रहमण्डल कहाता है ॥४१–४३॥ (जिसप्रकार समस्त शरीर में हम राशि कह आये हैं इसी प्रकार ग्रहों का राज्य भी समस्त शरीर पर है । इसे ध्यान में रखना चाहिए ।—संपादक)

---

* ग्रहों तथा राशियों के चिह्न अत्यावश्यक हैं । इनका ज्ञान होने एवं फल जानने से हाथों में स्थित उनके स्थान से फल कहने में बड़ी सुविधा मिलेगी ।—संपादक

कालात्मादिज्ञान

कालस्यात्मा भास्करश्चित्तमिन्दुः सत्त्वं भौमः स्याद्वच-श्चन्द्रसूनुः। देवाचार्यः सौख्यविज्ञानसारः कामः शुक्रो दुःखमेवार्कसूनुः ॥ ४४ ॥

सूर्य काल की आत्मा है। चन्द्रमा काल का चित्त (दिल) है। मङ्गल बल है। बुध वचन है। बृहस्पति सौख्य व विज्ञान का सार है। शुक्र कामदेव है और शनैश्चर दुःखरूप कहाता है ॥ ४४ ॥

राजादिज्ञान

दिनेशचन्द्रौ राजानौ सचिवौ जीवभार्गवौ।
कुमारो वित्कुजो नेता प्रेष्यस्तपननन्दनः ॥ ४५ ॥

सूर्य और चन्द्रमा राजा कहाते हैं। अर्थात् सूर्य राजा तथा चन्द्रमा[१] रानी कहाता है। बृहस्पति तथा शुक्र मन्त्री कहाते हैं। बुध कुमार और मङ्गल नेता कहाता है। शनैश्चर दास कहलाता है ॥ ४५ ॥

सूर्यादिनाम

हेतिः सूर्यस्तपनदिनकृद्भानुपूषारुणार्काः
सोमः शीतद्युतिरुडुपतिग्लौर्मृगाङ्केन्दुचन्द्राः।
आरो वक्रक्षितिजरुधिराङ्गारकक्रूरनेत्राः
सौम्यस्तारातनयबुधविद्बोधनश्चेन्दुपुत्रः ॥ ४६ ॥

हेति, सूर्य, तपन, दिनकृत्, भानु, पूषा, अरुण और अर्क सूर्य के नाम हैं। सोम, शीतद्युति, उडुपति, ग्लौ, मृगाङ्क, इन्दु और चन्द्र चन्द्रमा के नाम हैं। आर, वक्र, क्षितिज, रुधिर, अङ्गारक और क्रूरनेत्र मङ्गल के नाम हैं। सौम्य, तारातनय, बुध, वित्, बोधन और इन्दुपुत्र बुध के नाम हैं ॥४६ ॥

मन्त्री वाचस्पतिगुरुसुराचार्यदेवेज्यजीवाः
शुक्रः काव्यः सितभृगुसुताच्छास्फुजिद्दानवेज्याः।

---

१. आंग्लभाषा में चन्द्र को स्त्रीलिंग माना है; पर हम लोग पुंलिंग मानते हैं। "कमलाकान्तेर दफ्तर" (चौथे का चिट्ठा) में श्रीबंकिमचन्द्रजी चट्टोपाध्याय भी चिदानंद चतुर्वेदी द्वारा यह निर्णय न करा सके कि चन्द्र पुंलिंग है या स्त्री-लिंग।--संपादक

छायासूनुस्तरणितनयः कोणशन्यार्किमन्दा
राहुस्सर्पासुरफणितमः सैंहिकेयागवश्च ॥ ४७ ॥

मन्त्री, वाचस्पति, गुरु, सुराचार्य, देवेज्य और जीव बृहस्पति के नाम हैं। शुक्र, काव्य, सित, भृगुसुत, अच्छ, आस्फुजित् और दानवेज्य शुक्र के नाम हैं। छायासूनु, तरणितनय, कोण, शनि, आर्कि और मन्द शनैश्चर के नाम हैं। राहु, सर्प, असुर, फणी, तम, सैंहिकेय और अगु राहु के नाम हैं ॥ ४७ ॥

ध्वजःशिखीकेतुरिति प्रसिद्धा वदन्ति तज्ज्ञा गुलिकश्चमान्दिः।
उपग्रहा भानुमुखग्रहांशाः कालादयः कष्टफलप्रदाः स्युः॥४८॥
क्रमशः कालपरिधिधूमार्द्धप्रहराह्वयाः।
यमकण्टककोदण्डमान्दिपातोपकेतवः॥ ४९ ॥

ध्वज, शिखी, केतु, गुलिक और मान्दि केतु के नाम हैं। रव्यादि ग्रहों के अंश कालादिक उपग्रह कहाते हैं। ये कष्टकारी फल के देनेवाले होते हैं। उनको क्रम से कहते हैं—काल, परिधि, धूम, अर्धपहर, यमकण्टक, कोदण्ड, मान्दि, पात और उपकेतु उन उपग्रहों के नाम हैं ॥ ४८–४९ ॥

वर्णज्ञान

भानुः श्यामललोहितद्युतितनुश्चन्द्रस्सिताङ्गो युवा
दूर्वाश्यामलकान्तिरिन्दुतनयः संरक्तगौरः कुजः।
मन्त्री गौरकलेवरः सिततनुः शुक्रोसिताङ्गः शनि-
श्चानीलाकृतिदेहवानहिपतिः केतुर्विचित्रद्युतिः ॥ ५० ॥

सूर्य श्याम तथा लाल वर्णवाला होता है। चन्द्रमा सफ़ेद अङ्गवाला तथा जवान रहता है। बुध दूब के समान श्याम अङ्गवाला होता है। मङ्गल लाल और गोरा है। बृहस्पति गोरे रंगवाला होता है। शुक्र सफ़ेद अङ्गवाला, शनैश्वर काला, राहु नीला और केतु विचित्र वर्णवाला कहलाता है ॥५०॥

[इस वर्ण-ज्ञान से हस्तरेखा-विशारद ग्रहों की पीड़ादि के निवारणार्थ उपाय बता सकेगा। इसके ज्ञान से हृदय के भाव का प्रवाह भी जाना जा सकेगा। अतएव यह भी आवश्यक है। संपादक]

प्रकाशकादिज्ञान

प्रकाशकौ शीतकरप्रभाकरौ तारा ग्रहाः पञ्च धरासुतादयः। तमःस्वरूपौ शिखिसिंहिकासुतौ शुभाः शशिज्ञामरवन्द्यभार्गवाः ॥ ५१ ॥

चन्द्रमा और सूर्य प्रकाशक कहाते हैं। मङ्गल आदि पाँच ग्रह तारा कहाते हैं। राहु तथा केतु दोनों तमोरूपी कहे जाते हैं। चन्द्र, बुध, बृहस्पति और शुक्र ये शुभग्रह कहलाते हैं ॥ ५१ ॥ [इस शुभाशुभ-ज्ञान से हम जान सकते हैं कि अमुक ग्रह किससे प्रभावित होकर अपना स्वभाव बदल देता है। उसी प्रकार उसका फल भी बदल जाता है। संपादक]

पापादिज्ञान

क्षीणेन्दुमन्दरविराहुशिखिक्ष्माजाः पापास्तु पापयुतचन्द्रसुतश्च पापः। तेषामतीव शुभदौ गुरुदानवेज्यौ क्रूरौ दिवाकरसुतक्षितिजौ भवेताम् ॥ ५२ ॥

क्षीण चन्द्रमा, शनैश्चर, सूर्य, राहु, केतु और मङ्गल ये पापग्रह कहाते हैं। पापग्रहों से युक्त बुध पापी कहाता है। उनके बीच में बृहस्पति और शुक्र अत्यन्त शुभदायक हैं। शनैश्चर तथा मङ्गल दोनों क्रूरग्रह कहलाते हैं ॥५२॥

चन्द्र का बलाबल

शुक्लादिकानि दशकेहनिमध्यवीर्य-
शाली द्वितीयदशकेऽतिशुभप्रदोऽसौ।
चन्द्रस्तृतीयदशके बलवर्जितस्तु
सौम्येक्षणादिमहितो यदि शोभनः स्यात् ॥ ५३ ॥

शुक्लपक्ष की परेवा से दशमी तक चन्द्रमा मध्यम वीर्यवाला रहता है। दशमी से कृष्णपक्ष की पञ्चमी पर्यन्त यही चन्द्रमा शुभदायक है। पञ्चमी से लेकर अमावस पर्यन्त चन्द्रमा क्षीण बलवाला कहाता है। यदि शुभ ग्रहों से दृष्ट तथा संयुक्त हो तो शुभदायक हो जाता है ॥ ५३ ॥*

---

* ग्रहों के नाम, उपनाम, वर्ण, प्रकाश और बलाबल आदि का ज्ञान हस्तरेखा-विचारक के लिए परमावश्यक है।—संपादक।

पृष्ठोदयादिज्ञान

रव्यारराहुमन्दाश्च पृष्ठेनोद्यन्ति सर्वदा।
शिरसा शुक्रचन्द्रज्ञा जीवस्तूभयतो व्रजेत् ॥ ५४ ॥

सूर्य, मङ्गल, राहु और शनैश्चर सदैव पीठ से उदय होते हैं। शुक्र, चन्द्रमा और बुध शीश से, और बृहस्पति दोनों से उदय होते हैं ॥ ५४ ॥

विहगादिस्वरूप

दिवाकरज्ञौ विहगस्वरूपौ सरीसृपाकारयुतः शशाङ्कः।
पुरन्दराचार्यसितौ द्विपादौ चतुष्पदौ भानुसुतक्षमाजौ ॥५५॥

सूर्य तथा बुध दोनों पक्षीरूप हैं। चन्द्रमा सरीसृपरूपी होता है। बृहस्पति तथा शुक्र दोनों द्विपद कहाते हैं। शनैश्चर और मङ्गल दोनों चतुष्पदसंज्ञक होते हैं ॥ ५५ ॥

बालाद्यवस्थानिर्णय

बालो धराजः शशिजः कुमारक-
स्त्रिंशद्गुरुः षोडशवत्सरः सितः।
पञ्चाशदर्को विधुरब्दसप्ततिः
शताब्दसंख्याः शनिराहुकेतवः ॥ ५६ ॥

मङ्गल बालक, बुध कुमार, बृहस्पति तीस वर्षवाला, शुक्र सोलह वर्षवाला, सूर्य पचास वर्षवाला, चन्द्रमा सत्तर वर्षवाला तथा शनैश्चर, राहु और केतु सौ सौ वर्ष वाले होते हैं ॥ ५६ ॥

जलाशयाद्यधिवास

जलाशयौ चन्द्रसुरारिवन्द्यौ बुधालयग्रामचरौ गुरुज्ञौ।
कुजाहिमन्दध्वजवासरेशा भवन्ति शैलाटविसंचरन्तः॥ ५७ ॥

चन्द्रमा और शुक्र जलाशयों में वास करते हैं। बृहस्पति तथा बुध पण्डितों के घर व गाँवों में घूमते हैं। मङ्गल, राहु, शनैश्चर, केतु और सूर्य पहाड़ों और जङ्गलों में विचरते रहते हैं ॥ ५७ ॥

धातुमूलादिज्ञान

शाखाधिपा जीवसितारबोधना
धातुस्वरूपौ द्युचरौ कुजारुणौ।

मूलप्रधानौ तुहिनाकरार्कजौ
जीवौ सितार्यौ तु विमिश्रमिन्दुजः ॥ ५८ ॥

बृहस्पति, शुक्र, मङ्गल और बुध शाखाधिप कहाते हैं। आकाशचारी मङ्गल व सूर्य धातुरूपी कहे जाते हैं। चन्द्रमा और शनैश्चर मूलप्रधान और शुक्र व बृहस्पति जीवरूप कहाते हैं। और, बुध विमिश्ररूप कहाता है ॥ ५८ ॥

दीप्ताद्यवस्थाक्रम

दीप्तः स्वस्थः प्रमुदितः शान्तः शक्तः प्रपीडितः।
दीनः खलस्तु विकलो भीतोवस्था दश क्रमात् ॥ ५९ ॥

दीप्त, स्वस्थ, प्रमुदित, शान्त, शक्त, प्रपीडित, दीन, खल, विकल और भीत, ये क्रम से रव्यादि ग्रहों की दस अवस्थाएँ कहाती हैं ॥ ५९ ॥

स्वोच्चत्रिकोणोपगतः प्रदीप्तः
स्वस्थः स्वगेहे मुदितः सुहृद्भे।
शान्तस्तु सौम्यग्रहवर्गयातः
शक्तोऽतिशुद्धः स्फुटरश्मिजालैः ॥ ६० ॥

जो ग्रह अपने उच्च या त्रिकोण में है वह प्रदीप्त कहाता है। जो अपने घर में है वह स्वस्थ कहा जाता है। अपने मित्र के घर में बैठा ग्रह मुदित होता है। जो शुभ ग्रहों के वर्ग में पहुँचा है वह शान्त कहाता है, और जो स्फुट-किरण जालों से अतिशुद्ध होता है वह शक्त कहाता है ॥ ६० ॥

ग्रहाभिभूतस्त्वतिपीडितः स्यादरातिराश्यंशगतोतिदीनः।
खलस्तु पापग्रहवर्गयोगान्नीचोऽतिभीतो विकलोस्तयातः ६१ ॥

जो ग्रहों से तिरस्कृत हुआ है वह अतिपीड़ित होता है। जो शत्रु के राश्यंश में प्राप्त है वह अतिदीन कहाता है। पाप ग्रहों के योग से खल होता है। नीच ग्रह अतिभीत कहा जाता है। अस्तंगत ग्रह विकल होता है ॥ ६१ ॥ *

* देखिए, यहाँ ज्योतिष तथा सामुद्रिक से कैसा घनिष्ठ सम्बन्ध है। सं०

ताम्रादिवर्णज्ञान

वर्णास्ताम्रसितारक्तहरितापीतकर्बुराः ।
कृष्णकान्तिरिनादीनां नष्टादौ च प्रकीर्तिताः ॥ ६२ ॥

सूर्य ताम्रवर्ण, चन्द्रमा श्वेतवर्ण, मङ्गल रक्तवर्ण, बुध हरित, बृहस्पति पीतवर्ण, शुक्र कर्बुरवर्ण और शनैश्चर कृष्णवर्ण कहाता है ॥ ६२ ॥

द्रव्यादि

द्रव्याणि ताम्रमणिकाञ्चनशुक्तिरौप्य-
मुक्तान्ययश्च दिननाथमुखग्रहाणाम् ।
वह्न्यम्बुषण्मुखहरीन्द्रशचीविरिञ्च्य-
मुख्या दिवाकरमुखादधिदेवताः स्युः ॥ ६३ ॥

ताम्र, मणि, कांचन, सीपी, रूपा, मोती और लोहा सूर्यादि ग्रहों के द्रव्य कहाते हैं । अर्थात् सूर्य का ताम्र, चन्द्रमा का मणि, मङ्गल का सुवर्ण, बुध का सीपी, बृहस्पति का रूपा, शुक्र का मोती और शनैश्चर का लोह द्रव्य है । अग्नि, जल, स्वामिकार्त्तिक, विष्णु, इन्द्र, शची और ब्रह्मा सूर्यादिकों के अधिदेवता हैं ॥ ६३ ॥

माणिक्यादिज्ञान

माणिक्यं दिननायकस्य विमलं मुक्ताफलं शीतगो-
र्माहेयस्य च विद्रुमं मरकतं सौम्यस्य गारुत्मतम् ।
देवेज्यस्य च पुष्परागमसुराचार्यस्य वज्रं शने-
र्नीलं निर्मलमन्ययोश्च गदिते गोमेदवैडूर्य्यके ॥ ६४ ॥

सूर्य का माणिक्य, चन्द्रमा का अमल मोती, मङ्गल का मूँगा या मरकत, बुध का गारुत्मत, बृहस्पति का पुखराज, शुक्र का हीरा, शनैश्चर का नीलम, राहु का गोमेद और केतु का वैडूर्य्य कहाता है ॥ ६४ ॥*

---

* यह माणिक्य ज्ञान बड़ा मार्के का है । जब किसी ग्रह की चाल हाथ से मालुम हो तथा वह अनिष्टकारक जान पड़े तो फिर उसी ग्रह का माणिक्य उसकी अंगुली में नीचे की ओर झुकाकर पहनने से उस ग्रह की बहुत कुछ शांति होती है—संपादक ।

वस्त्र

स्थूलाम्बरं नूतनचारु चेलं
कृशानुतोयाहतमध्यमानि ।
दृढांशुकं जीर्णमिनादिकानां
वस्त्राणि सर्वे मुनयो वदन्ति ॥ ६५ ॥

सूर्य का मोटा कपड़ा, चन्द्रमा का नया, मङ्गल का सुन्दर, बुध का रेशमी, बृहस्पति का फटा, शुक्र का मज़बूत और शनैश्चर का पुराना कपड़ा कहा है॥६५॥

प्रागाद्यधीश

प्रागादिका भानुसितारराहुमन्देन्दुविद्देवपुरोहिताः स्युः ।
शुक्रारचन्द्रज्ञसुरेज्यमन्दा वसन्तमुख्यर्त्वधिपा दृगाणैः ॥६६॥

पूर्व का सूर्य, आग्नेय का शुक्र, दक्षिण का मङ्गल, नैर्ऋत्य का राहु, पश्चिम का शनि, वायव्य का चन्द्रमा, उत्तर का बुध और ईशान का बृहस्पति स्वामी है। शुक्र, मङ्गल, चन्द्र, बुध, बृहस्पति और शनैश्चर ये दृगाणों से वसन्तादि ऋतुओं के अधिपति हैं। यानी वसन्त का शुक्र, ग्रीष्म का मङ्गल, वर्षा का चन्द्रमा, शरत् का बुध, हेमन्त का बृहस्पति और शिशिर का अधिपति शनैश्चर कहाता है ॥ ६६ ॥

विप्रादिजातिक्रम

विप्रौ जीवसितौ दिनेशरुधिरौ भूपालकौ वैश्यरा-
डिन्दुः शूद्रकुलाधिपः शशिसुतो मन्दोऽन्त्यजानां पतिः ।
आदित्यामरमन्त्रिशीतकिरणाः सत्त्वप्रधाना ग्रहाः
शुक्रज्ञौ सरजोगुणौ शनिधरापुत्रौ तमःस्वामिनौ ॥ ६७ ॥

बृहस्पति और शुक्र ब्राह्मण कहाते हैं। सूर्य तथा मङ्गल क्षत्रिय हैं। चन्द्रमा वैश्य है। बुध शूद्रों का स्वामी है। शनैश्चर अन्त्यजों का अधिपति है। सूर्य, गुरु तथा चन्द्रमा सत्त्वगुणवाले कहाते हैं। शुक्र और बुध रजोगुणी तथा शनैश्चर और मङ्गल तमोगुणी हैं ॥ ६७ ॥

पुरुषादिज्ञान

नराकारा भानुक्षितिजगुरवः शुक्रशशिनौ
वधूरूपौ षण्ढौ प्रकृतिपुरुषौ मन्दशशिजौ ।

वियत्क्षोणीतेजःपवनपयसामेव पतयः
सुराचार्यज्ञारद्युमणिसुतदेवारिसचिवाः ॥ ६८ ॥

सूर्य, मङ्गल और बृहस्पति पुरुषसंज्ञक हैं। शुक्र और चन्द्रमा स्त्रीसंज्ञक हैं। बुध तथा शनैश्चर प्रकृति पुरुष होते हुए नपुंसक कहे जाते हैं। आकाश, पृथ्वी, तेज, पवन और जल के अधिपति बृहस्पति, बुध, मङ्गल, शनैश्चर व शुक्र हैं ॥ ६८ ॥

मज्जाद्यधिप

कक्ष्यायां क्रमशो दिनेशतनयाज्ज्योतिर्भचक्राश्रिताः
छायासूनुगुरुक्षमाजदिनकृच्छुक्रेन्दुपुत्रेन्दवः।
मज्जास्नायुवसास्थिशुक्ररुधिरत्वग्धातुनाथाः क्रमा-
दारार्किज्यदिनेशशुक्रशशभृत्तारासुताः कीर्तिताः ॥ ६९ ॥

कक्षा में क्रमसे सूर्यपुत्र के सकाश से शनैश्चर, गुरु, मङ्गल, सूर्य, शुक्र, चन्द्रमा और बुध ये ज्योतिर्भचक्र में टिके हुए प्रतीत होते हैं। मज्जा, स्नायु, वसा, अस्थि, शुक्र, रुधिर और त्वचा के स्वामी क्रमसे मङ्गल, शनि, गुरु, सूर्य, शुक्र, चन्द्र और बुध कहाते हैं ॥ ६९ ॥

लवणादिरस

लवणकटुकषायस्वादुतिक्ताम्लमिश्राः
शशिरविशनिजीवारासुरेज्यज्ञनाथाः।
अयनदिवसपक्षर्त्वब्दमासक्षणेशा
रविकुजसितसौम्या मन्दजीवेन्दवश्च ॥ ७० ॥

लवण, कटु, कषाय, स्वादु, तिक्त, अम्ल और मिश्र, इन रसों के चन्द्रमा, सूर्य, शनि, गुरु, मङ्गल, शुक्र और बुध अधिपति हैं। अयन, दिन, पक्ष, ऋतु, अब्द (वर्ष), मास और क्षण, इनके सूर्य, मङ्गल, शुक्र, बुध, शनि, गुरु और चन्द्र स्वामी हैं ॥ ७० ॥

उच्चादिज्ञान

मेषो वृषो मकरषष्ठकुलीरमीना-
स्तौली च कुम्भभवनानि तदस्तनीचाः।

१० ३ २८ १५ ५ २७ २०
नित्यांगना हरिमया मनुसारनीर-
संख्यादिवाकरमुखादतितुङ्गनाथाः ॥ ७१ ॥

मेष, वृष, मकर, कन्या, कर्क, मीन, तुला और कुम्भ ये सूर्यादिकों के उच्च स्थान हैं। उनके सातवें २ भवन नीचसंज्ञक होते हैं। यानी, तुला, वृश्चिक, कर्क, मीन, मकर, कन्या और मेष ये सूर्यादिकों के नीच स्थान हैं। १०-३-२८-१५-५-२७-२० इन अंशों से मेषादि परमोच्च होते हैं। इन्हीं पूर्वोक्त अंशों से तुलादि परम नीच कहाते हैं ॥ ७१ ॥ *

मूलत्रिकोण

मूलत्रिकोणा हरितावृषक्रिया वधूधनुस्तौलिघटादिवाकरात्। सितासितार्काङ्गिरसां नखांशकास्त्रिकोणमादौ परतः स्वमन्दिरम् ॥ ७२ ॥

सिंह, वृष, मेष, कन्या, धन, तुला और कुंभ ये सूर्य से मूलत्रिकोण होते हैं। शुक्र, शनि, सूर्य और गुरु के बीस अंश आदि में मूलत्रिकोण होकर पीछे से अपने घर को जाते हैं ॥ ७२ ॥

वृषादिभागत्रयमुच्चमिन्दोः मूलत्रिकोणं परतस्तु सर्वम्।
मेषादिका द्वादशभागसंज्ञाः कुजस्य कोणं परतः शुभं स्यात् ॥

वृषादि के तीन अंश चन्द्रमा का उच्च कहाता है। पीछे का सारा मूलत्रिकोण होता है। मेषादि के बारह अंश मङ्गल का मूलत्रिकोण होता है। पीछे का अपना घर होना है ॥ ७३ ॥

कन्यार्धमुच्चं शशिजस्य कोणं दशांशकाः स्वर्क्षफलं शरांशः।
कुम्भस्त्रिकोणं फणिनायकस्य तुङ्गं नृयुग्मं रमणीगृहं स्यात् ॥

---

* यदि बड़ी बारीकी से ध्यान देकर देखा जाय तो हस्त पर स्थित ग्रहों का झुकाव तथा उनके अंश भी अनुमान कर बताये जाते हैं। इसी पर फिर केवल हाथ देखकर जन्मकुण्डली बना लेना हस्तरेखाविशारद के लिए सरल हो जाता है। कुछ पाश्चात्य विद्वान् हस्तरेखाएँ देखकर नाम तक बता देते थे। फिर कुण्डली बन जाने पर तो भविष्य बता देना सरल हो जाता है। इससे यह भी ज्ञात हो जाता है कि हस्तरेखा का सामुद्रक एवं ज्योतिषशास्त्र से बड़ा गूढ़ संबंध है। विपक्ष कहनेवालों के लिए यहाँ फिर जरा भी गुंजाइश नहीं रह जाती—संपादक।

कन्या का आधा बुध का उच्च होता है। दश अंश मूलत्रिकोण होता है। पाँच अंश अपने राशिफल को देता है। कुम्भ राहु का मूलत्रिकोण मिथुन उच्च तथा कन्या अपना घर कहाता है ॥ ७४ ॥

ग्रहों का फलविचार

स्वोच्चे पूर्णं स्वर्क्षकेऽर्द्धं सुहृद्भे पादं द्विड्भेऽल्पं शुभं खेचरेन्द्रः।
नीचस्थायी नास्तगो वा न किंचिन्नूनं पादं स्वत्रिकोणे ददाति॥

अपने उच्च में बैठा हुआ ग्रह पूर्णफल देता है। अपनी राशि में स्थित आधा फल देता है। अपने मित्र के घर में चौथाई फल देता है। शत्रु के घर में थोड़ा फल देता है। नीच व अस्तंगत हुआ ग्रह कुछ फल नहीं देता। अपने मूलत्रिकोण में बैठा हुआ ग्रह चौथाई फल निश्चय देता है ॥ ७५ ॥

ग्रहों का स्थानविशेष से विफल

सभानुरिन्दुः शशिजश्चतुर्थे गुरुः सुते भूमिसुतः कुटुम्बे।
भृगुः सपत्ने रविजः कलत्रे विलग्नतस्ते विफला भवन्ति ७६

सूर्य समेत चन्द्र तथा बुध लग्न से चौथे में हों, गुरु पाँचवें घर में हो, मङ्गल दूसरे में हो, शुक्र छठे में और शनि सातवें हो तो विफल होते हैं ॥७६॥

बालाद्यवस्थाज्ञान

बालाद्यवस्थाः क्रमशो ग्रहाणामोजे समे तद्विपरीतमाहुः।
बालः कुमारोऽथ युवा च वृद्धो मृतो लवानामृतुभिः क्रमेण॥
बालाद्यवस्थानुगुणं व्रजन्ति तत्पाककाले दिननाथमुख्याः७७

विषम राशि में ग्रहों की क्रम से बालादि अवस्थाएँ होती हैं। सम राशियों में वे अवस्थाएँ उलटे क्रमसे हो जाती हैं। बाल, कुमार, युवा, वृद्ध और मृत ये अवस्थाएँ छः अंशों से विषम राशियों में क्रम से होती हैं। मृत, वृद्ध, युवा, कुमार और बाल इस क्रम से सम राशियों में कहाते हैं। इसलिए सूर्यादि ग्रह उक्त अवस्थाओं के पाककाल में बालादि अवस्थाओं के अनुरूप (समान) फल देते हैं ॥ ७७ ॥

रव्यादिग्रहों का स्वरूप

प्रतापशाली चतुरस्रदेहः श्यामारुणाङ्गो मधुपिङ्गलाक्षः।
पित्तात्मकः स्वल्पकचाभिरामो दिवाकरः सत्त्वगुणप्रधानः७८

सूर्य प्रतापशाली, चौकोण देहवाला, काला तथा लाल अंगवाला, शहद के रंग के पिंगल नयनोंवाला, पित्त स्वभावयुक्त और थोड़े बालोंवाला और सतोगुणप्रधान होता है ॥ ७८ ॥ *

चन्द्रस्वरूप

संचारशीलो मृदुवाक् विवेकी शुभेक्षणश्चारुतरः स्थिराङ्गः।
सदैव धीमांस्तनुवृत्तकायः कफानिलात्मा च सुधाकरः स्यात्॥

चन्द्र संचारशाली, कोमल वाग्विलासी, विवेकी, शोभन दृष्टिवाला, बड़े सुन्दर तथा पुष्ट अंगवाला, सदा बुद्धिमान्, छोटे गोल आकारवाला, कफ व वात प्रकृतिवाला होता है ॥ ७९ ॥

भौमस्वरूप

क्रूरेक्षणस्तरुणमूर्तिरुदारशीलः
पित्तात्मकः सुचपलः कृशमध्यदेशः।
संरक्तगौररुचिरावयवः प्रतापी
कामी तमोगुणरतस्तु धराकुमारः॥ ८० ॥

मङ्गल क्रूरदृष्टिवाला, तरुणमूर्तिधारी, उदारशील, पित्तप्रकृतिवाला, महाचपल, क्षीण कटिवाला, लाल एवं गोरे अंगोंवाला, कामी तथा प्रतापी और तमोगुण में रत होता है ॥ ८० ॥

बुधस्वरूप

दूर्वादलद्युतितनुः स्फुटवाक् कृशाङ्गः
स्वामी रजोगुणवतामतिहासलोलः।
हानिप्रियो विपुलवित्तकफानिलात्मा
सद्यः प्रतापविभवः शशिजश्च विद्वान्॥ ८१ ॥

बुध दूर्वादल के समान शरीरवाला, साफ़ वाणी बोलनेवाला, दुबले शरीर का, रजोगुणवालों का स्वामी, हँसने में चपल, हानि करनेवाला, महाधनी, कफी, वादी, वैभव तथा प्रतापशाली और विद्वान् होता है ॥८१॥

* मनुष्य के भिन्न २ प्रकार के स्वभाव बता देने में उपर्युक्त ज्ञान बड़ा सहायक होता है। अतएव यह ध्यान से पढ़ना चाहिए—संपादक।

गुरुस्वरूप

बृहदुदरशरीरः पीतवर्णः कफात्मा
सकलगुणसमेतः सर्वशास्त्राधिकारी।
कपिलरुचिकचाक्षः सात्त्विकोतीव धीमान्
अलघुनृपतिचिह्नश्रीधरो देवमन्त्री ॥ ८२ ॥

गुरु महोदर शरीरवाला, पीला, कफी, सर्वगुणयुक्त, सकलशास्त्राधिकारी, पीली आँखों तथा बालोंवाला, सतोगुणी, अत्यन्त बुद्धिमान्, अल्पराज-चिह्नवाला और शोभायुक्त है ॥ ८२ ॥

भृगुस्वरूप

असितकुटिलकेशः श्यामसौन्दर्यशाली
समतररुचिराङ्गः सौम्यदृक्कामशीलः।
अतिपवनकफात्मा राजसश्रीनिधानः
सुखबलसुगुणानामाकरश्चासुरेज्यः ॥ ८३ ॥

शुक्र श्याम तथा घुँघराले केशवाला, श्यामतनुधारी, सौन्दर्यशाली, एवं सुन्दर अंगोंवाला, शोभन आँखोंवाला, कामी, अतिवादी, कफी, रजोगुण की शोभा का निधान, सुख-बल और गुण की खान है ॥ ८३ ॥

शनिस्वरूप

काठिन्यरोमावयवः कृशात्मा दूर्वासिताङ्गः कफमारुतात्मा।
पीनाद्विजश्चारुपिशङ्गदृष्टिःसौरिस्तमोबुद्धिरतोलसःस्यात् ८४

शनि कर्कश रोमों तथा अंगोंवाला, दुबला, काला, कफी, वादी, बड़े दाँतों-वाला, सुन्दर पीले नयनोंवाला, तमोगुणी और आलसी है* ॥८४॥

ग्रहवध

अर्केण मन्दः शनिना महीसुतः कुजेन जीवो गुरुणा निशाकरः।
सौम्येन शुक्रो सुरमन्त्रिणा बुधो बुधेन चन्द्रः खलु वध्यतेसदा८५

---

* उपर्युक्त समस्त ग्रहों के स्वरूप का अच्छी प्रकार ज्ञान आवश्यक है। यही फल हाथ देखकर कहना पड़ेगा। जितने परिमाण में अमुक ग्रह की स्थिति हाथ में दिखे उसी परिमाण में फल कहना चाहिए।—संपादक,

सूर्य से शनि, शनि से मङ्गल, मङ्गल से गुरु, गुरु से चन्द्रमा, बुध से शुक्र, शुक्र से बुध और बुध से चन्द्र सदैव वध किया जाता है ॥ ८५ ॥

ग्रहों के मित्रादि

मित्राणि भानोःकुजचन्द्रजीवाःशत्रू सितार्की शशिजःसमानः।
चन्द्रस्य मित्रे दिननायकज्ञौ समा गुरुक्ष्माजसितासिताःस्युः८६

मङ्गल, चन्द्रमा और गुरु सूर्य के मित्र हैं। शुक्र तथा शनि शत्रु हैं। बुध सम है। सूर्य एवं बुध चन्द्र के मित्र हैं; गुरु, मङ्गल, शुक्र और शनि शत्रु हैं ॥८६॥

आरस्य मित्राणि रवीन्दुजीवाश्चान्द्रीरिपुःशुक्रशनी समानौ।
सूर्यासुरेज्यौसुहृदौ बुधस्य समाःशनीज्यावनिजास्त्वरीन्दुः ८७

सूर्य, चन्द्र एवं गुरु मङ्गल के मित्र हैं। बुध शत्रु है। शुक्र और शनि सम हैं। सूर्य तथा शुक्र बुध के मित्र हैं। शनि, गुरु एवं मङ्गल सम हैं। चन्द्र वैरीहै ॥८७॥

सूर्यारचन्द्राः सुहृदस्तु सूरेः शत्रू सितज्ञौ रविजः समानः।
मित्रे शनिज्ञौ भृगुनन्दनस्येन्द्विनावरी जीवकुजौ समानौ ८८

सूर्य, मङ्गल और चन्द्र गुरु के मित्र हैं। शुक्र और बुध शत्रु हैं, और शनि सम (उदासीन) है। शनि तथा बुध शुक्र के मित्र हैं। चन्द्र तथा सूर्य शत्रु हैं। गुरु और मङ्गल सम हैं ॥ ८८ ॥

मन्दस्य सूर्येन्दुकुजाश्च शत्रवःसमः सुरेज्यः सुहृदौ सितेन्दुजौ।
तत्कालनैसर्गिकतश्च पञ्चधा पुनःप्रकल्प्यास्त्वतिमित्रशत्रवः॥

सूर्य, चन्द्र और मङ्गल शनि के शत्रु हैं। गुरु सम (उदासीन) हैं। शुक्र और बुध मित्र हैं। तात्कालिक नैसर्गिक मित्रता से अतिमित्र एवं अतिशत्रु पाँच प्रकार कहना चाहिए * ॥ ८९ ॥

स्थिरादिसंज्ञा

रविः स्थिरः शीतकरश्चरः स्यादुग्रः कुजश्चन्द्रसुतस्तु मिश्रः।
मृदुः सुरेज्यो भृगुजो लघुश्च शनिस्तु तीक्ष्णःकथितो मुनीन्द्रैः

---

* ग्रहों की परस्पर मैत्री भी बड़ी विचित्र तथा जानने योग्य बात है। आप जब हाथ में किसी ग्रह को दूसरे ग्रह की ओर झुका देखेंगे, तब उसके मैत्री भाव अथवा वैर भाव का फल कहना पड़ेगा।—संपादक

सूर्य स्थिर, चन्द्र चर, मङ्गल उग्र, बुध मिश्र, गुरु मृदु, शुक्र लघु और शनि तीक्ष्णसंज्ञक है ॥ ६० ॥

ग्रहों का ईक्षण

पादेक्षणं भवति सोदरमानराश्योरर्धं त्रिकोणयुगलेखिलखेचराणाम् । पादोनदृष्टिनिचयश्चतुरस्रयुग्मे सम्पूर्णदृग्बलमनङ्गगृहे वदन्ति ॥ ६१ ॥

तीसरी एवं दसवीं राशि में समस्त ग्रहों की पाददृष्टि होती है । पाँचवें एवं नवें अर्धदृष्टि होती है । चौथे एवं आठवें पादोनदृष्टि कहाती है, और सातवें घर में संपूर्ण दृष्टि होती है ॥ ६१ ॥

शनिरतिबलशाली पाददृग्वीर्ययोगे
सुरकुलपतिमन्त्री कोणदृष्टौ शुभः स्यात् ।
त्रितयचरणदृष्ट्या भूकुमारः समर्थः
सकलगगनवासाः सप्तमे दृग्बलाढ्याः ॥ ६२ ॥

पाददृष्टि बल के योग में शनि अतिबलशाली होता है । कोणदृष्टि में गुरु शुभदायक है । तीन चरण की दृष्टि से मङ्गल समर्थ होता है । संपूर्ण ग्रह सातवें घर में दृष्टिबल से संपन्न रहते हैं ॥ ६२ ॥

अथोर्ध्वदृष्टी दिननाथभौमौ दृष्टिः कटाक्षेण कवीन्दुसून्वोः ।
शशाङ्कगुर्वोस्समभागदृष्टिरधोक्षिपातस्त्वहिनाथशन्योः ६३

सूर्य एवं मङ्गल दोनों ऊर्ध्वदृष्टिवाले हैं । शुक्र एवं बुध कटाक्ष (नेत्रों की कोर से) दृष्टि रखते हैं । चन्द्र एवं गुरु दोनों सम दृष्टिवाले हैं । राहु एवं शनि की दृष्टि नीचे रहती है ॥ ६३ ॥

रव्यादिग्रहों से फलविचार

सूर्यादात्मपितृप्रभावनिरुजाशक्तिश्रियश्चिन्तये-
च्चेतोबुद्धिनृपप्रसादजननीसंपत्करश्चन्द्रमाः ।
सत्त्वं रोगगुणानुजावनिसुताञ्ज्ञातीन्धरासूनुना
विद्याबन्धुविवेकमातुलसुहृद्वाक्कर्मकृद्बोधनः ॥ ६४ ॥

आत्मा एवं पिता का प्रभाव, नैरोग्य, शक्ति और संपत्ति या शोभा को सूर्य से विचारे। मन, बुद्धि, राजा की प्रसन्नता, माता और संपदा को चन्द्र से विचारे। बल, रोग, गुण, भाई, भूमि, पुत्र और कुटुम्ब को मङ्गल से विचारे। विद्या, बन्धु, विवेक, मामा, मित्र और वाक्कर्म को बुध से विचारना चाहिए॥९४॥

प्रज्ञावित्तशरीरपुष्टितनयज्ञानानि वागीश्वरा-
त्पत्नीवाहनभूषणानि मदनव्यापारसौख्यं भृगोः।
आयुर्जीवनमृत्युकारणविपत्संपत्प्रदाता शनिः
सर्पेणैव पितामहन्तु शिखिना मातामहं चिन्तयेत्९५

प्रज्ञा, धन, तनुपुष्टि, पुत्र और ज्ञान को गुरु से विचारे। पत्नी, वाहन, आभूषण, कामकेलि, रोजगार और सौख्य को शुक्र से विचारे। आयु, जीवन, मरणकारण, सम्पत्ति और विपत्ति का दाता शनि है। बाबा का राहु से और नाना का केतु से विचार करे॥ ९५ ॥

कारक

द्युमणिरमरमन्त्री भूसुतः सोमसौम्यौ
गुरुरिनतनयारौ भार्गवो भानुपुत्रः।
दिनकरदिविजेड्यौजीवभानुज्ञमन्दाः
सुरगुरुरिनसूनुः कारकाः स्युर्विलग्नात्॥ ९६ ॥

सूर्य तनुकारक, गुरु धनकारक, मङ्गल सहजकारक, सोम एवं बुध सुखकारक, गुरु पुत्रकारक, शनि एवं मङ्गल शत्रुकारक, शुक्र स्त्रीकारक, शनि मृत्युकारक, सूर्य एवं गुरु धर्मकारक, गुरु, सूर्य, बुध एवं शनि राजकारक, गुरु लाभकारक और शनि व्ययकारक है। ये लग्न से कारक होते हैं॥ ९६ ॥*

---

* विज्ञान की दृष्टि से तथा आयुर्वेद की दृष्टि से भी यह सिद्ध हो चुका है कि हाथ शरीर में प्रधान है। तथा उस पर स्थित रेखाओं एवं ग्रहादिकों का यथार्थ में मनुष्य के मस्तिष्क देश से घनिष्ठ संबंध है और मस्तिष्क से धारा तथा विद्युत्संचार हाथों की उँगलियों की ओर होता है और साथ ही ज्ञानकेन्द्र से विचारप्रवाह का सम्मिश्रण होने से हाथ पर रेखाएँ तथा ग्रहों की स्थिति है। ग्रहों का पूर्ण ज्ञान होने से उन पर स्थित रेखाओं का फल कहने में सहूलियत होती है। --सम्पादक।

अरिष्टदायक

कामावनीनन्दनराशिजाताः सितेन्दुपुत्रामरवन्द्यमानाः।
अरिष्टदास्तेऽखिलजातकेषु सदाष्टमस्थःशनिरिष्टदःस्यात्॥९७॥

सातवें घर में मेष, वृश्चिक राशि में शुक्र, बुध और गुरु हों तो समस्त जातकों में अरिष्टदायक कहाते हैं। अष्टम शनि सदैव अभीष्टदायक है॥९७॥

ग्रहों का शुभाशुभविचार

आकृत्यो २२ जिन २४ संमिता गजकरा २८ नेत्राग्नयः ३२ षोडश १६ तत्त्वा २५ न्यङ्गगुणा ३६ द्विवेद ४२ प्रमिताः सूर्यादिकानां समाः। यः खेटः स्वगृहे स्वतुङ्गभवने षड्वर्ग-शुद्धश्च यस्तस्याब्दे हि नृणां भवेदतिसुखं भाग्योदयं निश्चितम्॥ ९८॥

सूर्य २२ वर्ष में फल देता है। चन्द्रमा २४ में, मङ्गल २८ में, बुध ३२ में, गुरु १६ में, शुक्र २५ में, शनि ३६ में, राहु ४२ में और केतु ४८ वर्ष में फल देता है। जो ग्रह अपने घर एवं अपने उच्च में बैठा हो और जो ग्रह षड्वर्ग से शुद्ध हो उसी के वर्ष में मनुष्यों को निश्चय सुख और भाग्योदय होता है॥ ९८॥

ग्रहाणामरिष्टहर

राहुदोषं बुधो हन्यादुभयोस्तु शनैश्चरः।
त्रयाणां भूमिजो हन्ति चतुर्णां दानवार्चितः॥ ९९॥
पञ्चानां देवमन्त्री च षण्णां दोषं तु चन्द्रमाः।
सप्तदोषं रविर्हन्याद्विशेषादुत्तरायणे॥ १००॥

बुध राहुदोष को विनाशता है। शनि दोनों के दोषों को हरता है। मङ्गल चारों के दोषों को हरता है। गुरु पाँचों के दोषों को विनाशता है। चन्द्र छः ग्रहों के दोषों को हरता है। सूर्य सातों ग्रहों के दोषों को विनाशता है। परन्तु उत्तरायण में विशेषतः सातों ग्रहों के दोषों को हरता है॥ ९९-१००॥

रव्यादिकृतकष्ट

मन्दाग्निरोगज्वरवृद्धिदीपनक्षयातिसारादिकरोगसंकुलैः ।
नृपालदेवावनिदेवकिङ्करैः करोति चित्तव्यसनं दिवाकरः॥१॥

अग्निरोग, ज्वरवृद्धि, ज्वरदीपन, क्षय एवं अतीसार आदि रोगों से तथा राजा, देवता, ब्राह्मण और किंकरों द्वारा सूर्य सदा चित्त में दोष को करता है ॥ १ ॥

चन्द्रकृतरोग

पाण्डुदोषजलदोषकामलापीनसादिरमणीकृतामयैः ।
कालिकासुरसुवासिनीगणैराकुलं च कुरुते तु चन्द्रमाः ॥२॥

पाण्डुदोष, जलदोष, कामला, पीनस आदि रोग एवं नारियों द्वारा उत्पन्न रोग कालिका, देवता और सुवासिनीगणों से चन्द्र मनुष्य को व्याकुल करता है ॥ २ ॥

मङ्गलकृतदोष

पीनबीजकफशस्त्रपावकग्रन्थिरुक्व्रणदरिद्रजामयैः ।
वीरशैवगणभैरवादिभिर्भीतिमाशु कुरुते धरासुतः ॥ ३ ॥

स्थूलता, बीजदोष, कफ, हथियार, अग्नि एवं गिलटियों से उपजे रोग, घाव एवं दरिद्र से पैदा हुए रोग, वीरगण, शैवगण एवं भैरवादिगणों द्वारा मङ्गल भय उत्पन्न करता है ॥ ३ ॥

बुधकृतदोष

गुह्योदरादृश्यसमीरकुष्ठं मन्दाग्निशूलग्रहणीरुगाद्यैः ।
बुधादिविष्णुप्रियदासभूतैरतीवदुःखं शशिजः करोति ॥४॥

गुदा, उदर, दृष्टि, वात, कुष्ठ, मन्दाग्नि, शूल, संग्रहणी आदि रोग तथा बुधादि विष्णु के प्रियदास प्राणियों से बुध अत्यन्त दुःख को करता है ॥ ४ ॥

गुरुभृगुकृतदुःख

आचार्यदेवगुरुभूसुरशापदोषैः
शोकं च गुल्मरुजमिन्द्रगुरुः करोति ।

कान्ताविकारजनिमेहरुगासुराद्यैः
स्वेष्टाङ्गनाजनकृतैर्भयमासुरेज्यः ॥ ५ ॥

आचार्य, देवता, गुरु और ब्राह्मणों द्वारा दिये शाप-दोषों से गुरु शोक और गुल्म रोग उत्पन्न करता है। तथा स्त्रियों के विकारों से उत्पन्न प्रमेह-रोग एवं असुरादिकों व अपनी चाही अङ्गनाओं के दोषों से शुक्र भय उपजाता है ॥ ५ ॥

शनिकेतुकृतदुःख

दारिद्र्यदोषनिजकर्मपिशाचचौरैः
क्लेशं करोति रविजः सहसन्धिरोगैः।
कण्डूमसूरिरिपुकृत्रिमकर्मरोगैः
स्वाचारहीनलघुजातिगणैश्च केतुः ॥ ६ ॥

दारिद्र्यदोष, अपने कर्म, पिशाच, चोर और सन्धिरोगों से शनि क्लेश उत्पन्न करता है। खाज, मसूरिका, शत्रु, कृत्रिम कर्मरोग और आचार-हीन छोटी जातिवालों द्वारा केतु कष्ट उत्पन्न करता है ॥ ६ ॥

राहुकृतदोष

करोत्यपस्मारमसूरिरज्जुक्षुद्दृक्कृमिप्रेतपिशाचभूतैः।
उद्बन्धनाच्चारुचिकुष्ठरोगैर्विधुन्तुदश्चातिभयं नराणाम् ॥७॥

अपस्मार (मिरगी), मसूरिका, रज्जु, क्षुत् (छींक या क्षुधा), दृष्टि-रोग, कीड़े, प्रेत, पिशाच, भूत, उद्बन्धन, अरुचि और कुष्ठरोगों से राहु मनुष्यों को बड़ा भय करता है ॥ ७ ॥

पुत्रलाभार्थ उपाय

हरिवंशो रविणा शशी त्रिपुरहा भौमे च रुद्री क्रिया
सौम्ये सम्पुटचण्डिका च विधिवज्जीवे च पैत्री तिथिः।
शुक्रे गोप्रतिपालनं च कथितं मन्दे च मृत्युञ्जयः
कन्यादानभुजङ्गकेतुकपिलासन्तानसौख्यप्रदा ॥ ८ ॥

जो पुत्र के लिए सूर्य अरिष्टदायक हो तो हरिवंश का श्रवण करे चन्द्रमा अरिष्टदायक हो तो महादेव का आराधन करे। मङ्गल अरिष्टदायक

हो तो रुद्राभिषेक की क्रिया करे। बुध अरिष्टदायक हो तो विधान से संपुट चण्डी का आराधन करे। बृहस्पति अरिष्टदायक हो तो पितरों की तिथि में आमान्नदान करे। शुक्र अरिष्टदायक हो तो गौओं का प्रतिपालन करे। शनि अरिष्टदायक हो तो मृत्युञ्जय का आराधन करे। राहु अरिष्टदायक हो तो कन्यादान करे, और जो केतु अरिष्टदायक हो तो संतानसौख्यदायिका कपिला गौ का दान करे ॥ ८ ॥

आद्यन्तमध्यफलदायक

इलातनूजश्च पतिर्नलिन्याः प्रवेशकाले फलदः किल स्यात्।
राश्यर्धभोगे भृगुजामरेज्यौ प्रान्ते शनीन्दू च सदेन्दुसूनुः ॥९॥

मङ्गल और सूर्य प्रवेशकाल में फलदायक होते हैं। शुक्र एवं गुरु मध्य में फलदायक होते हैं। शनि एवं चन्द्र अंत में फलदायक होते हैं। बुध सदैव ही फल देता है ॥ ९ ॥

यद्धातुकोपजनिताखिलरोगशान्त्यै
तन्नाथमाशु जपतर्पणहोमदानैः।
संपूज्य रोगभयशोकविमुक्तचिन्ताः
सर्वे नराः सुखयशोबलशालिनः स्युः ॥ १० ॥

जिन ग्रहों के धातुकोप से अखिल रोग उपजे हों उनकी शान्ति के लिए जप, तर्पण, होम और दानों से उनके स्वामी को भलीभाँति पूजन करे तो मनुष्य रोग, भय और शोकविमुक्त होते तथा सुखी, यशस्वी और बलशाली होते हैं ॥ १० ॥

इति जातकपारिजाते ग्रहस्वरूपादिः।

करतलदिग्ज्ञान

यत्र चाङ्गुलयः सन्ति तां दिशं विद्धि पूर्विकाम्।
यत्रास्ति मणिबन्धो हि पश्चिमां विद्धि तां दिशम् ॥११॥
वृद्धाङ्गुलिस्तु यत्रास्ति चोत्तरां विद्धि तां दिशम्।
क्षपाकरस्तु यत्रास्ति तां दिशं दक्षिणां विदुः ॥ १२ ॥

जहाँ अंगुलियाँ रहती हैं उसे पूर्व दिशा जानिए। जहाँ मणिबन्ध (कब्जा)

है उसे पश्चिम जानिए। जहाँ अँगूठा है उसे उत्तर दिशा जानिए। और जहाँ चन्द्रमा रहता है उसे दक्षिण कहा है ॥ ११–१२ ॥*

फलों का तारतम्य

यत्र यत्र स्थितः खेटस्तत्रस्थोऽपि यदा भवेत्।
तदा शुभं फलं वाच्यमित्युक्तं गणकोत्तमैः ॥ १३ ॥
ये ग्रहा दक्षिणस्थाः स्युस्ते यदा चोत्तरे स्थिताः।
ये ग्रहाः पूर्वभागस्थास्ते यदा पश्चिमांगताः ॥ १४ ॥
तदा फलं ग्रहाः सर्वे विपरीतं दिशन्ति वै।
तारतम्यं फलस्यैवं विज्ञेयं विदुषां प्रिये ॥ १५ ॥

अहो प्रिये ! करतल में जहाँ जहाँ ग्रह बैठे हैं वहीं यदि टिके रहें तो शुभ फल कहना चाहिए। जो ग्रह दक्षिण तरफ़ टिके हों वे यदि उत्तर में बैठे हों और जो ग्रह पूर्वभाग में बैठे हों वे यदि पश्चिम में चले जावें तो समस्त ग्रह विपरीत फल को देते हैं। इस भाँति फलों का तारतम्य जानना चाहिए ॥ १३–१५ ॥ †

करतल में रेखाज्ञान

सौम्याद्दधस्तिष्ठति या सुरेखा संपूर्णरूपा यदि मध्यमान्ता।
आयुष्यरेखां कवयः कुर्वन्ति संभोगरेखां प्रवदन्ति चान्ये ॥१६॥

बुध ग्रह के नीचे जो रेखा है वह यदि मध्यमा पर्यन्त चली गई हो तो उसे आयुरेखा कहा है। मतान्तर में अन्य लोग उसे संभोगरेखा कहते हैं ॥ १६ ॥

आयुष्यरेखातलगास्ति रेखा
तां मातृरेखां कथयन्ति धीराः।

---

* शास्त्रों में लिखा है "कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।
करमूले स्थितो ब्रह्माऽतः प्रातः करदर्शनम्॥" संपा०।

† अथवा जो ग्रह जिसकी ओर झुका है उसी के अनुसार उसका स्वभाव फलादि बदल जायँगे। इसलिए परस्पर मैत्रीभाव का ज्ञान आवश्यक है। —संपादक

तस्यास्त्वधस्तिष्ठति पितृरेखा
तां केपि सन्तो निवदन्ति चायुः ॥ १७ ॥

आयुरेखा के नीचे की रेखा को मातृरेखा कहा है तथा उसके नीचे पितृरेखा रहती है। उसे भी अनेक विद्वानों ने आयुरेखा बताया है ॥१७॥

मध्यांगता या मणिबन्धनोत्था
रेखा यदा पाणितले विभाति।
तामूर्ध्वरेखां सुधियो भणन्ति
साम्राज्यदात्रीं धनधान्यदां च ॥ १८ ॥

यदि करतल में मणिबन्ध (कब्जे) से उठी रेखा मध्यमा पर्यन्त पहुँचे तो उसे सामुद्रकवेत्तागणों ने ऊर्ध्वरेखा (भाग्यरेखा) कहा है। यह धन धान्य एवं साम्राज्य देती है ॥ १८ ॥

कुजान्तिकं या प्रतिभाति रेखा समागता सा मणिबन्धनान्तम्।
ददाति वित्तं परपूरुषाणामतः परस्वाप्तिरियं प्रसिद्धा ॥ १९ ॥

मङ्गल के समीप की रेखा यदि कब्जे तक चली आवे तो पराया धन प्राप्त होना है। इसलिये "परस्वाप्ति" नाम से प्रसिद्ध है ॥ १९ ।
देखो चि नं० ६

करतलभग्नरेखा

भग्ना यदा स्यात्परमायुरेखा ह्रासं प्रयायान्मनुजस्य चायुः।
मातुःसुरेखापरिकर्तिताचेन्मानोविनाशंसमियान्नितान्तम् २०

भग्न आयुरेखा अल्प आयु की द्योतक है। यदि मातृरेखा भग्न या कटी सी प्रतीत हो तो ऐसे व्यक्ति का प्रायः अपमान हुआ करता है ॥ २० ॥

पितुः सुरेखा यदि कर्तिता स्यात्तदा पितानाशमुपैति नूनम्।
यदा भवेद्भिन्नतमस्वरूपा भयं भवेत्ताततनौ सुगाढम् ॥ २१ ॥

यदि पिता की रेखा कटी सी प्रतीत हो तो पिता का नाश होता है। यदि पूर्वोक्त रेखा भिन्नरूप हो तो पिता के शरीर को बड़ा भय होता है॥२१॥

संभिन्नरूपा यदि भाग्यरेखा भाग्यस्य ह्रासं मनुजः प्रयाति ।
भग्ना यदा स्यात्परस्त्राभिरेखा नो पारवित्तं लभते मनुष्यः २२

भिन्नरूप भाग्यरेखा वाला अल्प भाग्य पाता है। यदि परस्त्राभिरेखा कटी हो तो पराया धन नहीं पाता ॥ २२ ॥ देखो चित्र नं० ८

करतल में परमायुरेखादिफल

पितुः सुरेखां परमायुरेखां शताब्दसंख्याकृतमानयुक्ताम् ।
श्रुतिप्रमाणं हृदये निधाय वदन्ति विप्रा बहुशास्त्रविज्ञाः ॥२३॥

अनेकानेक शास्त्रों के विज्ञाता बुद्धिमान् लोग पितृरेखा (मतान्तर में आयुरेखा) को सौ वर्ष की संख्या से विभाजित करते हैं ॥ २३ ॥

आयुष्यरेखा यवमात्रभागं काष्ठाब्दसंज्ञं प्रवदन्ति सन्तः ।
तन्मानतः स्यात्तु वयोविभागे कष्टादिकं चेति समूहनीयम् २४

आयुरेखा के यवमात्रभाग को दश वर्ष की संज्ञावाला कहते हैं। इसी प्रमाण से अवस्था के विभाग होते हैं। इसी प्रकार समस्त रेखाओं में विचार करना चाहिए। अर्थात् एक जौभर आयुरेखा दश वर्ष की होती है। इसी प्रमाण से जहाँ जहाँ रेखा कटी हो वहाँ वहाँ पीड़ा आदि का विचार करे ॥ २४ ॥

मातुः सुरेखा मिलिता यदा स्यान्नो जारजातं मुनयो वदन्ति ।
पित्रा वियुक्ता यदि मातृरेखा जारोद्भवं तं मनुजं करोति ॥२५॥

करतल में यदि मातृरेखा पितृरेखा से मिली हो तो उसे जारजात नहीं कहते। यदि मातृरेखा पिता की रेखा से जुदी हो तो उसे *जारजात करती है। अथवा पिता माता में जुदाई रहती है, ऐसा फल कहना चाहिये ॥ २५ ॥

संभोगरेखा बहुकर्तिता चेत्पूर्वोक्तमानेन विचारणीया ।
तस्यास्त्वधस्तिष्ठति बालभावस्ततो ह्यधो यौवनमेव ज्ञेयम् २६

यदि संभोगरेखा अनेक स्थलों में कटी हो तो पूर्वोक्त मान से यानी

* इस विषय पर हम इस पुस्तक के प्रथम खण्ड में अच्छी तरह समझा कर लिख आये हैं। अधिक जानने के लिए कृपया उसे पढ़िए।—संपादक।

दश वर्ष के हिसाब से फल को विचारना चाहिए। उसके नीचे बालभाव (बालपन) रहता है। उसके नीचे यौवन जानना चाहिए ॥ २६ ॥ *

तस्मादधस्तिष्ठति वृद्धभावो नो भिन्नरूपो नहि कर्तितः स्यात्।
तत्तत्सुकाले शुभदो जनानामेवं बुधैः सर्वफलं विचिन्त्यम् २७

उसके नीचे बुढ़ापा रहता है जो भिन्नरूप एवं कटा हुआ न हो तो अपने अपने समय में मनुष्यों को शुभदायक होता है ॥ २७ ॥देखोचित्र नं० (८)

अंग्रेज़िमतानुसार जन्मवारमासादिज्ञान

सुतर्जनी निम्नतलाच्चलन्ती रेखा गभीरा मणिबन्धमेति।
तां वै सुपैत्रीं प्रवदन्ति सन्तो ह्यायुष्यरेखां कथयन्ति केऽपि२८

तर्जनी के निचले भाग से चली गहरी रेखा यदि मणिबन्ध के पास पहुँचे तो उसे पैत्रीरेखा कहा है। कुछ अंगरेज़ विद्वान् उसे आयुष्य रेखा (लाइफ़लाइन) भी कहते हैं ॥ २८ ॥

तन्निम्नदेशाच्चलिता गभीरा रेखा यदा चन्द्रमसं प्रयाति।
तां मातृकां वै प्रवदन्ति प्राज्ञा विज्ञा महान्तो नितरामुदाराः२९

पैत्रीरेखा के निचले देश से गहरी रेखा यदि चन्द्रालयपर्यन्त जावे तो उसे मातृरेखा (हेडलाइन) कहा है ॥ २९ ॥

एषा सुरेखा खलु दर्शनीया कुत्र स्थले वै गमनं करोति।
तदन्तिके चेत्कति सन्ति वज्राश्छिन्ना न भिन्ना बहुरेखिकाभिः॥

निश्चयकर यह मातृरेखा किस स्थल में गमन करती है, उसके समीपवर्ती कितने वज्राकार चिह्न प्रतीत होते हैं, और यदि वे बहुतसी रेखाओं से छिन्न-भिन्न प्रतीत न हों तो वक्ष्यमाण जन्म वारादि कहना चाहिए ॥३०॥

---

* समयनिर्णय हस्तरेखा-विज्ञान में बड़ी भारी चीज़ है। किसी भी घटना का उल्लेख करने के साथ ही उसका समय बताना अत्यावश्यक होता है। समय-क्रम में प्रायः सभी आचार्यों के विभिन्न मत हैं। यही एक ऐसी बात है, जो हस्तरेखाविशारद को हाथ देखते-देखते प्राक्टिस करते रहने पर अच्छी तरह आ जाती है। इसमें ज़रा सावधानी से काम लेना चाहिए। अन्यथा कुछ का कुछ बता देने से परिणाम में भयंकरता उपस्थित हो सकती है।--संपादक।

रेखास्वरूपं सकलं विचार्य ध्यात्वा सुदेवं गणपं गुरुं च ।
वारं वदेद्वै जनुषो विपश्चिद्ब्रूयात्सुमासं तु तथा तिथींश्च ३१

देवाधिप गणनायक और गुरुदेव का ध्यान कर और रेखा का समस्त विचार कर विद्वान् को वार, महीना एवं तिथि (तारीख) बताना चाहिए ॥ ३१॥

मैत्रीसमुत्था विशदा गभीरा मात्री सुरेखा शशिनं समेति ।
तत्रस्थले चेत्खलु चैकवज्रं ज्येष्ठं सजूनं प्रवदेत्ससोमम् ॥ ३२॥

पैत्रीरेखा से उठी साफ़ सुथरी व गहरी मात्रीरेखा यदि चन्द्रालयपर्यन्त गई हो और यदि उसी स्थान में एक वज्राकार निशान हो तो ज्येष्ठमास अथवा चन्द्रवार समेत जूनमास कहना चाहिए ॥ ३२ ॥

वज्रैकचिह्ने विशदे प्रयाते दिनानि ब्रूयाद्दशसंख्यकानि ।
वज्रद्वये चेत्खलु विंशकानि वज्रत्रये स्युः सति त्रिंशकानि ३३

यदि शुद्धरूप एकही वज्राकार चिह्न हो तो दश दिन, दो वज्र हों तो बीस दिन एवं तीन वज्र हों तो तीस दिन कहना चाहिए ॥ ३३ ॥

मात्रीसुरेखा विशदा गभीरा भौमालयं चेद्व्रजते यदा तु ।
आक्टूबरं चैव तथा सुमार्चं ब्रूयात्सुमासं सह भौमवारम् ३४

यदि साफ़ सुथरी व गहरी मात्रीरेखा मंगलालय पर्यन्त जावे तो भौमवार समेत आक्टूबर या मार्च मास कहना ॥ ३४ ॥

सौम्यालयान्तं यदि याति मात्री रेखा गभीरा विशदस्वरूपा ।
आगस्टमासं सबुधं मयं वा ब्रूयान्न वज्राः खलु चेद्विभिन्नाः ३५

साफ़ सुथरी व गहरी मातृरेखा यदि बुधालय पर्यन्त जावे और यदि वज्राकार चिह्न भिन्न हो तो बुधवार समेत आगस्टमास या मई मास कहना चाहिए ॥ ३५ ॥

मात्रीसुरेखा विशदाऽविभिन्ना गंभीररूपा धिषणं प्रयाति ।
नवम्बरं वा खलु फ़ेब्रुआरिं बृहस्पतिं वारमुदाहरन्ति ॥ ३६ ॥

यदि साफ़ सुथरी एवं गहरी मातृरेखा अन्य रेखाओं से न कटे और बृहस्पति स्थान पर्यन्त पहुँचे तो गुरुवार समेत नवम्बर मास या फरवरी मास जानना ३६॥

रेखा जनन्या विशदस्वरूपा शुक्रालयं याति गभीररूपा।
एप्रेलमासं भृगुवासराढ्यं सेप्टेम्बरं वा प्रवदन्ति विज्ञाः॥ ३७॥

साफ़ सुथरी एवं गहरी मातृरेखा यदि शुक्रालय पर्यन्त जावे तो शुक्रवार समेत अपरैल मास या सितम्बरमास कहना चाहिए॥ ३७॥

धात्रीसुरेखा धवलस्वरूपा मन्दालयस्याभिमुखं प्रयाति।
डिसेम्बरं वा खलु जानुवारिं सूरात्मजं वै कथयन्ति घस्रम् ३८

यदि स्पष्ट मात्रीरेखा शन्यालय पर्यन्त जावे तो शनिवार समेत दिसम्बर या जनवरी मास कहना॥ ३८॥

धात्रीसुरेखा विशदस्वरूपा सूर्यालयस्याभिमुखं प्रयाति।
जौलाइमासं रविवासराढ्यं वदन्ति विज्ञा वदतां वरेण्याः॥३९॥

यदि उज्ज्वल मात्रीरेखा सूर्यालय के सामने आवे तो रविवार समेत जुलाईमास जानना॥ ३९॥

मासद्वयं चेत्कथितं तु यत्र कथं विचार्यं विदुषा च तत्र।
एषा सुरेखा विशदा यदा स्यादाद्यो हि मासो भणितः सुधीभिः॥

जिस स्थान में दो मास कहे गये हैं वहाँपर कैसे विचारना चाहिए, यह बताते हैं। यदि यह पूर्वोक्त उज्ज्वल मात्रीरेखा हो तो पहला मास कहना चाहिए॥ ४०॥

रेखा सुमात्री मलिना यदा चेन्मासो द्वितीयो विदुषा विचार्यः।
एषा यदा चन्द्रममं प्रयाति मातुः स्वरूपं लभते हि प्राणी ४१

यदि मात्रीरेखा मैली हो तो दूसरा मास कहना चाहिए। यदि पूर्वोक्त मात्रीरेखा चन्द्रालयपर्यन्त जावे तो वह माता का स्वरूप पाता है॥ ४१।

रक्ता सुमात्री धवलस्वरूपा रेखा गभीरा समुपैति सूरम्।
वप्रस्वरूपं भजते हि जन्तुर्जाज्वल्यमानो जडताविहीनः ४२

यदि मात्रीरेखा लाल, उजली तथा गहरी हो और सूर्यालय पर्यन्त जावे

१ शन्यालयाभिमुखम्।

तो वह बुद्धिशाली तथा निजतेज से प्रकाशित होता और पिता का रूप पाता है ॥ ४२ ॥

तिस्रः सुरेखा मणिबन्धसंस्था एकैकशश्चेत्खलु त्रिंशदब्दम् ।
वयःक्रमं वै मुनयो वदन्ति संकीर्तिताश्चेत्खलु चोनत्रिंशत् ४३

मणिबन्ध में जो तीन रेखाएँ हों उनमें से प्रत्येक रेखा का वयःक्रम तीस-तीस वर्ष का है । यदि पूर्वोक्त तीनों रेखाएँ कटी प्रतीत हों तो उनतीस वर्ष का वयःक्रम जानना चाहिए ॥ ४३ ॥

महाराष्ट्रों के मत से करतलफल

सुकोमलं पाणितलं च यस्य नरो भवेत्कामिजनप्रधानः ।
कलाप्रवीणः कलहेन हीनः कान्ताविलासी कमनीयकायः ४४

जिसकी हथेली बहुतही कोमल हो वह कामी जनों में मुख्य, कलाचतुर, एवं कलहहीन, कान्ताविलासी और सुन्दर शरीरवाला होता है ॥ ४४ ॥

कठोरकं पाणितलं च यस्य नरो भवेत्कार्यकरो बलाढ्यः ।
परिश्रमासक्तमना मनस्वी मन्दो मदार्तो ममतासमेतः ॥४५॥

जिसका हस्ततल कठोर हो वह कार्यकारी व बली, परिश्रमी, मनमौजी, मूर्ख तथा मदार्त और ममतासंपन्न होता है ॥ ४५ ॥

यदा महत्योऽङ्गुलयो हि सन्ति मनुष्यपाणेस्तु तलात्तदानीम् ।
सोऽयं जनः शिल्परतः कलाढ्यःकुशाग्रबुद्धिः कृतकृत्यकःस्यात्

हथेली से यदि अंगुलियाँ बड़ी हों तो वह मनुष्य कारीगरी में रत, कलायुक्त, कुशाग्रबुद्धिवाला और कृतकृत्य कहलाता है ॥ ४६ ॥*

मनुष्यपाणेस्तु तलाद्यदानीं करस्य शाखाः खलु सन्ति ह्रस्वाः ।
सोयं नरः संसृतिलाभकारी बाल्ये स्ववृत्तं नितरां प्रवेत्ति ४७†

यदि करतल से अंगुलियाँ छोटी हों तो दुनिया का लाभ उठाता है, और बाल्यावस्था में ही अपनी हालत समझने लगता है ॥ ४७ ॥†

संक्षेपतः सप्तविधा हि सन्ति नारीनराणां कथिताः कराश्च ।
आद्यो हि मुख्यो मुनिसम्मतोपि तथा द्वितीयः श्रुतिकोणयुक्तः

* Material Life. † Real Life.

स्त्री पुरुषों के हाथ संक्षेप से सात * प्रकार के कहे हैं । उनमें से पहला मुख्य कहा जाता है । उसी प्रकार दूसरा चौकोण कहलाता है ।। ४८ ।।

वक्रस्तृतीयो भणितो हि शास्त्रे कोटिस्वरूपः कथितश्चतुर्थः ।
कोणस्वरूपःशरसंमितश्च ज्यौतिष्यरूपः खलु षष्ठकोयम्४६॥

तीसरा टेढ़ेरूपवाला कहाता है । चौथा नोकीला, पाँचवाँ कोनीला और छठा ज्यौतिष्यरूप कहा है ।। ४६ ।।

प्रोक्तः पुराणैः खलु सप्तमश्च मिश्रस्वरूपो मिलितांगुलीकः ।
आरक्तवर्णो मृदुतासमेतो सौमांसलो लोमशवृन्दहीनः॥५०॥

मिश्रस्वरूप, मिली अंगुलियोंवाला सातवाँ हाथ होता है । जो कुछ लालवर्ण, कोमल, मांसल और लोमहीन होता है ।। ५० ।।

स्थौल्येन युक्तो दृढतासमेतो वृद्धांगुलीको यदि भाति पाणिः ।
सोयं नरः शूरतरः सुधीरः प्रोक्तो हि मल्लो विदितो धरायाम्५१

यदि मोटा-मज़बूत बड़ी अंगुलीवाला हाथ हो तो वह सूरमा, सुधीर, तथा पहलवान कहलाता है ।। ५१ ।।

गोलांगुलीको मनुजस्य यस्य विभाति पाणिर्मृदुतासमेतः ।
सोयं जनः शुद्धतरस्वभावो भेदस्य वेत्ता खलु गुप्तकस्य ५२॥

गोल अंगुलीवाला कोमल हाथ सीधे स्वभाववाले तथा गुप्त भेद-ज्ञाता पुरुष का होता है ।। ५२ ।।

गोलांगुलीको यदिनास्तिपाणिःपारुष्ययुक्तोमनुजस्तदानीम् ।
कामी कलावान्कलहेन युक्तो मन्दो मलाढ्यो ममताविहीनः ॥

यदि गोल अंगुलीवाला हाथ न हो तो वह कठोर, कामी, कलावान्, कलही, मन्द, मलाढ्य और ममताविहीन होता है ।। ५३ ।।

वक्रांगुलीको यदि भाति पाणिश्चारक्तवर्णो मलिनः कठोरः ।
परिश्रमासक्तमना मनुष्यस्त्वारामसक्तो रमया समेतः ॥५४॥

---

* कुछ लोगों ने चार प्रकार के भी माने हैं । यह क्रम छोटे रूपवाला कहाता है ।--संपादक

जिसका हाथ कुछ लालवर्ण, मैला, कठोर तथा टेढ़ी अंगुलीवाला हो वह मेहनती, आरामतलब और लक्ष्मीवान् होता है ॥ ५४ ॥

पालीस्वरूपो यदि भाति पाणिः प्रीत्यायुतो दिव्यतनुर्दयालुः ।
नानांशुकालङ्करणैः समेतो मानी महौजा मदनातुरश्च ॥५५॥

यदि नोकीला हाथ हो तो वह प्रीतिमान्, दिव्यशरीर, दयावान्, अनेक वस्त्र एवं अलंकारवाला, मानी, महाबली तथा कामी होता है ॥ ५५ ॥

कोणस्वरूपो यदि भाति पाणिः प्रसन्नताहीनवपुर्मनुष्यः ।
धनाभिलाषी भ्रमतेऽप्यजस्रं भ्रान्तो भयार्तो धनतामुपैति ५६

जिसका कोनीला हाथ हो वह प्रसन्न, क्षीण शरीर, धनाभिलाषी, निरंतर घूमता, और भ्रान्त व भयार्त होकर धन पाता है ॥ ५६ ॥

ज्यौतिष्यरूपो मनुजस्य यस्य विभाति पाणिः खलु शुद्धरूपः ।
सोऽयं नरः स्यान्निगमागमज्ञः सत्यप्रवक्ता निजदेवभक्तः॥५७॥

जिसका हाथ शुद्ध ज्यौतिष्य रूपवाला हो वह मनुष्य वेद एवं शास्त्र का ज्ञाता, सत्यवक्ता तथा अपने इष्टदेव का भक्त होता है ॥ ५७ ॥

मिश्राङ्गुलीको मलताविहीनो विभाति पाणिः पुरुषस्य यस्य ।
सोऽयं मनुष्यो धनतासमेतो विपत्तिमल्पां लभते कदापि ५८

जिसका हाथ साफ़ तथा मिला अंगुलीवाला हो वह धनसंपन्न होता तथा किसी समय थोड़ी विपत्ति पाता है ॥ ५८ ॥

नखफल

लम्बायमानानि तथायतानि संरक्तवर्णानि नखानि यस्य ।
सोऽयं जनःस्यात्कविवृन्दमुख्यःसाँवत्सरो वेदविदां वरेण्यः५९

जिसके लम्बे चौड़े तथा लालवर्ण वाले नख हों वह कवियों में प्रधान, ज्योतिःशास्त्र का ज्ञाता तथा वेदवेत्ताओं में श्रेष्ठ होता है ॥ ५९ ॥

वक्रस्वरूपाणि नखानि सन्ति दीर्घायमाणानि जनस्य यस्य ।
सोऽयं नरो वक्रतरस्वभावो वेश्याप्रसक्तो वनिताविहीनः ॥६०॥

जिसके नख लम्बे और टेढ़े हों वह टेढ़े स्वभाववाला, वेश्यागामी और रमणीहीन होता है ॥ ६० ॥

स्वल्पस्वरूपा मनुजस्य यस्य आपीतवर्णाश्च पुनर्भवाः स्युः ।
सोऽयं जनः स्यात्सभिको हि धूर्तो मिथ्याप्रभाषी ममतासमेतः॥

जिस मनुष्य के छोटे तथा पीले से नख हों वह फड़बाज़, दगाबाज़, छलछन्दी, झूठा और ममतासम्पन्न होता है ॥ ६१ ॥

श्यामायमाना नखरा हि सन्ति क्षुद्रस्वरूपाः पुरुषस्य यस्य ।
धूर्तस्वभावो मनुजस्तदानीं व्याजेन युक्तो विदितो धरायाम्॥६२

जिस पुरुष के नख काले और छोटे से हों वह कपटी तथा धूर्तस्वभाव का होता है ॥ ६२ ॥

पुनर्भवाश्चेच्चिपिटा हि यस्य श्यामायमानाः पृथुताविहीनाः ।
सोऽयं मनुष्यश्छलतासमेतो निर्लज्जरूपो नितरां विलासी॥६३

जिसके नख चौड़ाई से विहीन व काले वर्णवाले तथा चपटे हों वह छली, निर्लज्ज और बड़ा भोगी होता है ॥ ६३ ॥

लम्बायमानानि तथा सितानि नखानि शुद्धानि भवन्ति यस्य ।
सोऽयंनरःस्यादुपकारकारी मान्यो वदान्योऽवनिराजवन्द्यः॥६४

जिसके नख लम्बे, सफ़ेद तथा स्वच्छ हों वह उपकारी, मान्य और वदान्य तथा वन्दनीय होता है ॥ ६४ ॥

आरक्तवर्णा नखरा यदानीं भवन्ति कार्श्या मनुजस्य यस्य ।
व्युत्पन्नबुद्धिश्चपलः कृशाङ्गो व्याख्याकरः स्यादुपदेशकारी॥६५

जिस मनुष्य के नख पतले, रक्तवर्ण हों वह व्युत्पन्न बुद्धिवाला, चलता पुर्जा, दुबला, व्याख्याकारी और उपदेशक कहाता है ॥ ६५ ॥

गोलस्वरूपा नखरा हि सन्ति श्वेतेन हीना मनुजस्य यस्य ।
चिन्तासमूहेन युतो मनुष्यो धनाभिलाषी भ्रमते भयार्तः॥ ६६॥

जिस पुरुष के नख गोल सफ़ेद हों वह चिन्ता से घिरा व धनाभिलाषी डरता और घूमा करता है ॥ ६६ ॥*

नखस्थचिह्नफल

वृद्धाङ्गुलेश्चेन्नखरोपरिस्थं विभाति चिह्नं धवलस्वरूपम् ।
प्रेमी मनुष्यो रमणीसमेतो धन्यो धरायां धनतामुपैति ॥६७॥

यदि अंगूठे के नख पर टिका हुआ सफ़ेद निशान हो तो वह प्रेमी, पत्नीपरायण तथा धनी होता है ॥ ६७ ॥

वृद्धाङ्गुलेश्चेन्नखरोपरिस्थं श्यामायमानं यदि भाति चिह्नम् ।
सोऽयं जनो मन्दमतिर्महौजा मानेन हीनो ममतां प्रयाति ६८

अंगूठे के नख पर काला निशान हो तो वह मन्द-मति, महाबली एवं मानहीन होता है ॥ ६८ ॥

आद्याङ्गुलेश्चेन्नखरोपरिस्थं श्वेतस्वरूपं यदि भाति चिह्नम् ।
सम्पत्समूहं लभते नितान्तं श्यामे तु चिह्ने धनहानिमेति ६९

---

* अनेकों विद्वानों का मत है कि कोमल या मुलायम नाख़ून कमज़ोर या शक्तिहीनतासूचक हैं। कड़े या चटकदार नाख़ून अस्वास्थ्यकर कहाते हैं।

पुष्ट नख सुन्दर स्वास्थ्यके द्योतक हैं। नुकीले नाख़ून, आलसी तथा झूठे स्वभावके द्योतक हैं। किंतु ऐसे मनुष्य कला तथा सौंदर्य के बड़े उपासक हुआ करते हैं। बड़े चपटे तथा पीठ पर गोल नाख़ून चपल और चालाक स्वभाव बताते हैं। पहले सकरे और अंत में (छोर पर) चौड़े नाख़ून स्वातंत्र्यप्रिय के हुआ करते हैं। गुलाबी नाख़ून दृढ़तासूचक हैं। भूरे, पीले और गोल नाख़ूनवाले से सदैव सतर्क रहना चाहिए । कारण, ऐसा मनुष्य हर हालत में भयंकर हुआ करता है। रक्तवर्ण नाख़ून कम हिम्मत और उदासप्रियता की निशानी हैं।

लम्बे नाख़ून बारीक तबियत के तथा छोटे नाख़ून शीघ्र निष्कर्षप्रिय के होते हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि नखों पर सफ़ेद धब्बे शुभ नहीं; अर्थात् वे रक्तप्रवाह विकारी हो जाने से इस प्रकार धब्बे आ जाना मानते हैं। पर कुछ विद्वानों का कथन है कि नाख़ूनों पर सफ़ेद धब्बे तो बड़े शुभ हैं; पर वे लोग ज़रा कमहिम्मती ज़रूर होते हैं। नाख़ूनों पर काले धब्बे अवश्य ही अशुभ हैं।

साधारणतः एक नाख़ून की जड़ नोक तक आने के लिए लगभग छै महीने लगते हैं। पूरे नाख़ून का लगभग एक तिहाई हिस्सा तो सफ़ेद अर्द्ध चन्द्राकार दिखेगा जो भविष्य-सूचक होता है। अथवा चार मास का भविष्य उस पर से कहा जा सकता है। नख का मध्य भाग वर्तमान सूचक है, और अंतिम तिहाई भूतकाल बताता है। —सम्पादक

यदि तर्जनी के नखपर सफ़ेद दाग़ दिखे तो दौलत को पाता है। यदि वह निशान काला हो तो धनहानि होती है ॥ ६९ ॥

मध्याङ्गुलेश्चेन्नखरोपरिस्थं गौरस्वरूपं यदि भाति चिह्नम्।
सांयात्रिकः स्यान्मनुजस्तदानीमाकस्मिकं मृत्युमुपैति नीले ॥

यदि मध्यमा के नख पर सफ़ेद निशान हो तो जहाज़ी होता है। यदि वह निशान काला हो तो अचानक मौत पाता है ॥ ७० ॥

अनामिकाया नखरोपरिस्थं चिह्नं यदा निमवदातरूपम्।
कीर्तिं च वित्तं लभते नितान्तं श्यामायमाने त्वपकीर्तिमेति ७१

यदि अनामिका के नख पर सफ़ेद दाग़ दिखे तो नामवरी एवं दौलत पाता है। यदि काला निशान हो तो बुराई पाता है ॥ ७१ ॥

कनिष्ठिकाया नखरोपरिस्थं शुक्लस्वरूपं यदि भाति चिह्नम्।
साँवत्सरः कीर्तियुतो धनाढ्यो व्यापारवृन्दाद्बहुवृद्धिमेति ॥

यदि कनिष्ठिका के नखपर सफ़ेद निशान हो तो ज्योतिषी, कीर्तिमान्, धनवान् तथा वृद्धि पाता है ॥ ७२ ॥

श्यामायमानं यदि भाति चिह्नं पीतस्वरूपं यदि वा विभाति।
सोयं नरो व्याधिपरो नितान्तमल्पे वयस्के मरणं प्रयाति ७३

यदि कनिष्ठा के नखपर काला या पीला निशान हो तो अत्यन्त रोगी बना रहता है। थोड़ी ही उम्र में मर जाता है ॥ ७३ ॥

गुरुस्थानफल

प्रदेशिनीमूलगतं विशुद्धं बृहस्पतेः स्थानमुदाहरन्ति।
समुन्नतं यस्य करे विभाति सुखी सुविद्यो विषयी नरः स्यात् ७४

तर्जनी के मूल में बृहस्पति का स्थान है। वह जिसके हाथ में ऊँचा हो वह सुखी विद्वान् तथा विषयी होता है ॥ ७४ ॥*

---

*गदेली पर सतग्रह विराजमान हैं। प्रत्येक उँगली के नीचे जो छोटी-छोटी सी एक-एक मांसल गद्दी उठी रहती है वही ग्रह स्थान है। अंगूठे के मूल में तथा कलाई के ऊपर कोने में और कनिष्ठा के नीचे तथा कोने के ऊपर भी इसी प्रकार की एक गद्दी होती है।

गुरु—समाज प्रियता तथा अगम सम्मान तथा धार्मिकता का सूचक है।

अधोनतं चेन्मनुजस्य यस्य गुरुस्थलं वै विशदं विभाति।
महालसी स्यात्पुरुषो धनाशी सुमाहसी काव्यकरो विवादी ॥

जिसके पाणितल में बृहस्पति का स्थान साफ तथा नीचा हो वह महालसी, सुसाहसी, बहसी, धनाशी और कविता करनेवाला होता है ॥७५॥*

देवेन्द्रवन्द्यालयगा यदानीं मृज्वी सुरेखा विशदा विभाति।
सोयं मनुष्यो महतामुपासी सर्वेषु कार्येषु च सिद्धिमेति ॥७६॥

यदि बृहस्पतिस्थान में साफ सीधी रेखा हो तो वह बड़े आदमियों का अनुयायी होता और सब कामों में सिद्धि पाता है ॥ ७६ ॥

पूज्यालयस्था विशदा यदानीं क्षुद्राः सुरेखाः बहुशो विभान्ति।
सोयं नरो धर्मपरो नितान्तं सिद्धिं स्वकार्ये लभते कदापि ७७

जिसके बृहस्पतिस्थान में बहुतसी छोटी २ रेखाएँ हों वह अत्यन्त धर्मपरायण और कभी-न-कभी अपने कार्य में सिद्धि पाता है ॥ ७७ ॥

यदि अधिक है तब गर्व और कोरी शेखी बताता है। यदि कम है तब तो नम्र स्वभाव जानना चाहिए।

शनि गंभीरता तथा आकर्षण शक्ति का द्योतक है। अधिक होने पर उदासीन स्वभाववाला तथा कम में कुछ ज्ञानहीनता समझना चाहिए।

सूर्य—दयालुता, सरलता, कलाप्रियता का सूचक है। अधिक होने पर रसिकताप्रिय और कमी में कटुताप्रिय बताता है।

बुध--आशावादी तथा प्रसन्नचित्त, कर्तव्यशील तथा आविष्कारप्रियता का द्योतक है। अधिक होने पर असावधानी और कमी होने पर निराश तथा कम हिम्मत होना बताता है।

मंगल—आत्मनियंत्रण, हिम्मत और बहादुरी का सूचक है। अधिकता में अड़ूली और गोपनीयमंत्रणा तथा हिंसाप्रिय और कम होने पर बुजदिली का सूचक है।

शुक्र—आमोदप्रियता, स्वरप्रियता, प्रेम और कामुकता का द्योतक है। अधिक होने पर दुष्ट विचारपूर्ण तथा ऐयाशी बताता और न्यूनता में शुष्क, नीरस तथा भावहीनता का सूचक है।

चंद्र—विचारपूर्ण तथा कल्पनाशक्ति का सूचक है। अधिकता में सनक या कल्पनापूर्ण तथा न्यूनता में बोदापन, कमहिम्मती और प्रारंभिक विचारशून्यता बताता है। विशेष रूप से प्रत्येक ग्रह के संबंध में पिछले पृष्ठों में वर्णन हो ही चुका है। — सम्पादक

* सब ग्रहों के स्थान हम पहले ही लिख आये हैं। —संपादक

एका कुरेखा गुरुगा यदानीं पारंगता स्यान्मनुजस्य यस्य ।
शीर्षाभिघातं लभते मनुष्यो मन्दस्वभावो ममतामुपैति ॥७८॥

जिस मनुष्य के करतल में बृहस्पतिस्थान में एक छोटी सी रेखा आर-पार गई हो वह सिर में चोट खाता, तथा मन्दस्वभाववाला और मोही होता है ॥ ७८ ॥

रक्तस्वरूपा विशदैकरेखा पूज्यालयस्था विरला विभाति ।
वामां मनोज्ञां लभते मनुष्यो धर्मानुयायी धनतासमेतः ॥७९॥

जिसके बृहस्पतिस्थान में एक साफ़ रेखा हो तो वह रमणी पाता है, और धनसंपन्न तथा धर्मानुयायी होता है ॥ ७९ ॥

देवेशवन्द्यालयगं विशुद्धं तारास्वरूपं यदि भाति चिह्नम् ।
सोयं कुलीनो मनुजो महेच्छो धन्यो धरायां धनदानुगः स्यात्॥

यदि बृहस्पति के स्थान में तारा के समान साफ़ निशान हो तो कुलीन, महाशय और धनेश का अनुगामी होता है ॥ ८० ॥

नार्या यदा चेन्महतां जनानां तारानुरूपं गुरुगं विभाति ।
सा नष्टकीर्तिर्विधनाभिमाना स्वच्छन्दरूपा विचरेन्नितान्तम् ॥

यदि बड़ों की रमणियों के करतल में बृहस्पतिस्थान में तारा के समान निशान हो तो उस नारी की नामवरी जाती रहती है । धन व अभिमान भी चला जाता है । वह स्वेच्छाचारिणी होकर विचरती है ॥ ८१ ॥

गुर्वालयस्थं विशदस्वरूपं चिह्नं चतुष्कोणयुतं विभाति ।
बाधाविमुक्तो मनुजस्तदानीं सौभाग्यशाली सुखतासमेतः८२

जिसके बृहस्पतिस्थान में साफ़ चार कोनोंवाला निशान हो वह बाधाओं से विमुक्त, सौभाग्यशाली और सुसंपन्न होता है ॥ ८२ ॥

इज्यालयस्थं विशदस्वरूपं बिन्दुप्रयुक्तं यदि भाति चिह्नम् ।
आत्मम्भरिःस्यान्मनुजस्तदानीं नैजे कुटुम्बे त्वपकीर्तिमेति ८३

यदि बृहस्पतिस्थान में साफ़ बिन्दु (नुक्तेवाला) चिह्न हो तो वह पेटू होता और अपने ही कुटुम्ब में बुराई पाता है ॥ ८३ ॥

चिह्नं त्रिकोणं धिषणालयस्थं भिन्नं त्वयोगं यदि दृश्यते चेत्।
सोयंजनोदीपशलाकिकाढ्योदौर्भाग्यशाली जनतापकारी॥८४

यदि बृहस्पतिस्थान में त्रिकोणाकार निशान हो तो दियासलाई के बनाने से धनाढ्य होकर दौर्भाग्यशाली होता तथा जनापकारी होता है॥८४॥

समुन्नतं चेद्धिषणालयस्थं चिह्नं त्रिकोणं विशदं विभाति।
सोयं नरो मन्त्रिवरो महौजा विख्यातकीर्तिर्विमलस्वभावः८५

यदि बृहस्पतिस्थान में साफ़ त्रिकोण का ऊँचा सा निशान हो तो वह प्रधान मन्त्री, बलवान, प्रख्यात कीर्तिवाला और अमल स्वभाववाला होता है ॥ ८५ ॥

पूर्वोक्तचिह्नं विशदं विशालं गम्भीररेखं यदि भ्राजमानम्।
गर्वी धनाढ्यो मनुजस्तदानीं स्वार्थी सहायी विमना विरोधी॥

यदि पूर्वोक्त निशान साफ़, सुथरा, बड़ा व गहरी रेखावाला हो तो वह गर्वी, धनाढ्य, स्वार्थी, सहायी, विमन और विरोधी होता है ॥ ८६ ॥

आयुष्यरेखाफल*

प्रदेशिनीमूलतलाच्चलन्ती चाक्रान्तशुक्रा मणिबन्धमेति।

---

* जिस प्रकार मानव शरीर पर आँख कान नाक आदि के लिए प्राकृतिक निश्चित स्थान होते हैं उसी प्रकार हथेली पर आयु (पितृ) मस्तक (मातृ) एवं हृदय (आयु) आदि रेखाओं के लिए भी निश्चित स्थल हैं। यदि किसी पुरुष की नाक नियत स्थान पर न होकर कहीं कान के समीप जावे तो आप तुरंत उसे "असाधारण व्यक्ति" पुकारने लगेंगे, अथवा उसे विचित्रता पूर्ण कहेंगे। इसी प्रकार यदि किसी व्यक्ति की हथेली पर कोई रेखा नियत स्थान से दूसरी ओर दिखे तो वह अवश्य ही विचित्र कहावेगा। यदि ये सभी रेखाएँ स्पष्ट, सुन्दर एवं गुलाबी रंग की दिखें तो उन्हें अति-उत्तम समझना चाहिए। कटी-फटी होने से विद्युत्संचार अथवा रक्तप्रवाह में बाधा पड़ने से उस रेखा के गुणों में भी बाधा आ जाती है। यदि उस रेखा पर कोई चिह्न हो तब तो प्रवाह का उसी चिह्न के अनुसार घूम जाना अथवा अचानक रुक जाना और अनियमित रूप धारण कर लेना बताती है। फल भी उसी प्रकार परिवर्तित हो जाता है। हस्तरेखा-विशारद को सभी रेखाएँ सूक्ष्मदर्शक यंत्र से भली भाँति देखना चाहिए। तब विचार स्थिर कर उसके गुण अवगुण कहना अच्छा है। —संपादक

आयुष्यरेखां कथयन्ति सन्तः पैत्रीं सुरेखां प्रवदन्ति केपि॥८७॥

जो तर्जनी के मूलतल से चलती व शुक्रालय को घेरती मणिबन्ध के पास पहुँचे उसे आयुरेखा कहते हैं। कुछ आचार्य उसे पैत्रीरेखा भी कहते हैं ॥ ८७ ॥

एषा सुरेखा विशदा यदानीं छिन्ना न भिन्ना खलु लम्बिता चेत्।
शुद्धस्वभावो मनुजोऽतिधन्यो जैवातृकः स्याद्विपदाविहीनः॥

यदि यह रेखा साफ कटी न हो और लम्बी हो तो वह शुद्धस्वभाववाला, धनवान्, आयुष्यवान् तथा विपद्हीन होता है ॥ ८८ ॥

श्यामायमाना वितता विभाति पैत्री सुरेखा पुरुषस्य यस्य।
मात्सर्ययुक्तो मनुजो मलाढ्यो दौर्जन्यशाली कृशतासमेतः ८९

जिसके हाथ में पैत्रीरेखा चौड़ी, काली सी हो वह डाहयुक्त, मलाढ्य, दौर्जन्यशाली तथा दुबला रहता है ॥ ८९ ॥

पैत्री सुरेखा यदि लम्बमाना संरक्तवर्णा विशदा विभाति।
सोयं जनः क्रोधयुतो नितान्तं वन्यस्य बुद्धिं भजते बलाढ्यः९०

यदि पैत्री रेखा लम्बी, साफ व लाल वर्णवाली हो तो वह बड़ा क्रोधी, बली तथा वनेचरबुद्धि होता है ॥ ९० ॥

वयस्य रेखा मिलिता जनन्यामन्यासमेता विशदा विभाति।
सोयं जनो दुर्बलतासमेतो दान्तस्वभावो दयितारतश्च ॥९१॥

यदि पैत्रीरेखा मात्रीरेखा में मिली और अन्य रेखाओं से युक्त हो तो वह दुर्बल, दान्तस्वभाववाला तथा दयिता में रत रहता है ॥ ९१ ॥

हस्तद्वये चेन्मनुजस्य यस्य मध्ये विवर्णा यदि भाति पैत्री।
आजन्मरोगी मनुजस्तदानीं नीचस्वभावः कृशतामुपैति ९२

जिस मनुष्य के दोनों हाथों में यदि पैत्रीरेखा फीके रंगवाली हो वह जन्मपर्यन्त बीमार बना रहता और नीच स्वभाववाला तथा दुर्बल होता है ॥ ९२ ॥

गुर्वालयाच्चेच्चलिता सुपैत्री चाक्रम्य शुक्रं मणिबन्धमेति।
सोयं कुलीनो धनतासमेतश्चातुर्ययुक्तश्चपलस्वभावः ॥९३॥

यदि बृहस्पतिस्थान से चली पैत्रीरेखा शुक्रालय की परिक्रमा कर मणिबन्ध के पास पहुँचे तो वह कुलीन, धनवान्, चतुर तथा चञ्चलस्वभाव-वाला होता है ॥ ६३ ॥

वप्रोपरिस्था विशदस्वरूपा भौमी सुरेखा पुरुषस्य यस्य ।
व्यापद्विहीनो मनुजस्त्वरोगी संपत्तिशाली सुखतामुपैति ६४

जिस पुरुष की पैत्रीरेखा के ऊपर साफ़ मङ्गलरेखा हो वह विपदाहीन, नीरोगी, सम्पत्तिशाली, और सुखी होता है ॥ ६४ ॥*

पैत्रीसुमध्याच्चलिता यदानीं शुक्रोच्चगा चेद्विशदा विभाति
सोयं जनो गच्छति सर्वदेशं सौभाग्यशाली सरलस्वभावः ६५

यदि पैत्रीरेखा के मध्यभाग से चली साफ़ सुथरी एक रेखा शुक्रालय में हो तो वह सब मुल्कों का सफ़र करता और सौभाग्यशाली तथा सीधे स्वभाववाला होता है ॥ ६५ ॥

पैत्रीसमुत्था सरलैकरेखा देवेन्द्रवन्द्योपरिगा विभाति ।
सोयं नरः कीर्तियुतः सुविद्यः सर्वार्थसिद्धिं लभते धनाढ्यः ६६

यदि पैत्रीरेखा से उठी एक सीधी रेखा बृहस्पतिस्थान के ऊपर हो तो वह यशस्वी, विद्वान्, धनवान् तथा सर्वसिद्धि पाता है ॥ ६६ ॥

पैत्रीसमुत्था यदि भाग्यरेखा मन्दालयं याति विशुद्धरूपा ।
सोयं जनो ग्रामधनादियुक्तो भूम्यश्वयानादिभिरावृतः स्यात्॥

यदि पैत्रीरेखा से उठी साफ़ भाग्यरेखा शन्यालयपर्यन्त जावे तो वह गाँव, धन आदि से युक्त होता और जमीन, घोड़ा एवं गाड़ी आदि सवारियों का स्वामी होता है ॥ ६७ ॥

आरम्भदेशे मिलिता यदानीं त्रित्तादिरेखा निखिला विभान्ति।
रोगाभिभूतो मनुजस्तदानीमाकस्मिकं मृत्युमुपैति नूनम् ६८

---

* इस रेखा को पाश्चात्य विद्वान् भी मंगल रेखा (Line of mars) मानते हैं। यदि यह रेखा स्पष्ट और सुन्दर हो तो निश्चय ही ऐसे मनुष्य का स्वास्थ्य अच्छा रहता है। कुछ विद्वान्, धनी एवं ऐश्वर्यशाली होना भी मानते हैं' संपादक

यदि प्रारम्भ में सौभाग्य आदि रेखाएँ आपस में मिली हों तो वह बीमार रहता तथा उसकी एकाएकी मृत्यु होती है ॥ ९८ ॥

वृद्धाङ्गुलेर्वै निकटाच्चलन्ती पैत्री सुरेखा रविजं प्रयाति ।
सन्तानहीनो मनुजस्तदानीं संतापशाली सुखतावियुक्तः ९९

यदि पैत्री रेखा अंगूठे के समीपवर्ती देश से चलकर शन्यालयपर्यन्त जावे तो वह सन्तानरहित, संतापशाली तथा सुखहीन बना रहता है ॥ ९९ ॥

सौभाग्यरेखाफल

सौम्यालयाच्चेच्चलिता यदानीं रेखा गभीरा गुरुगा विभाति ।
सौभाग्यरेखां प्रवदन्ति सन्तश्चित्तस्य रेखां कथयन्ति केपि १००

यदि बुधालय से चली गहरी रेखा गुरुगेहगामिनी हो तो उसे विद्वानों ने सौभाग्यरेखा कहा है, और कई आचार्य चित्तरेखा भी कहते हैं ॥१००॥

एषा सुरेखा विशदा यदानीं विस्तीर्णरूपा धिषणं प्रयाति ।
वित्ताभिलाषी मनुजोतिलुब्धः स्वार्थी सुशंकी भ्रमतेऽप्यजस्रम्॥

साफ सुथरी एवं चौड़ी सौभाग्यरेखा बृहस्पतिस्थान को जावे तो वह धनाभिलाषी, लोभी, मतलबी, बड़ी शङ्का करनेवाला तथा हमेशा घूमता है ॥ १०१ ॥

सौभाग्यरेखा विशदा यदानीं पीतस्वरूपा गुरुगा विभाति ।
सोयं नरो धूर्ततरस्वभावो दौर्भाग्यशाली प्रथितो धरायाम् १०२

यदि साफ व पीली सौभाग्यरेखा गुरुगेह तक हो तो वह धूर्तस्वभाववाला, दौर्भाग्यशाली, तथा प्रख्यात होता है ॥ १०२ ॥

आपीतवर्णा यदि चित्तरेखा गम्भीररूपा गुरुगेहमेति ।
सोयं मनोव्याधियुतो मनुष्योरोगाभिभूतो रमयाविहीनः १०३

यदि चित्तकी रेखा (हार्टलाइन) कुछ पीली एवं गहरी हो और बृहस्पति स्थान को पहुँचे तो वह मानसीव्याधि-संयुक्त रोगी तथा लक्ष्मीहीन होता है॥ १०३ ॥

स्वान्तस्य रेखा किल रक्तवर्णा गुर्वालयस्था मनुजस्य यस्य ।
दौर्जन्यहीनोऽधर्मताविहीनः सौभाग्यशाली सुखतामुपैति ॥

जिसके करतल में लाल वर्णवाली सौभाग्य रेखा बृहस्पतिस्थान तक हो वह सौभाग्यशाली, सज्जन और सुखी होता है ॥ १०४ ॥

सूर्यालयाच्चेच्छनिगेहतो वा चित्तस्य रेखा चलिता यदानीम् ।
आजन्मरोगी मनुजस्तदानीं जीवेच्छ्ववृत्त्या भयतासमेतः १०५

यदि सूर्यालय या शन्यालय तक ही चित्त रेखा (हार्टलाइन) हो तो जन्मपर्यन्त रोगी और श्ववृत्ति से जीना बताती है ॥ १०५ ॥

सौभाग्यरेखा यदि सर्वदेशे छिन्ना विभिन्ना गुरुगेहगा चेत् ।
भार्यावियुक्तो मनुजस्तदानीमप्रीतिकारी धनतापहारी ॥ १०६ ॥

यदि सारी सौभाग्यरेखा कटी-फटी हो और बृहस्पति के स्थान में पहुँचे तो वह भार्यावियुक्त, अप्रीतिकारी और धननाशक होती है ॥ १०६ ॥

शाखाद्वयेनापि युता यदानीमेका गुरुस्था शनिगाऽपरा चेत् ।
रामासमेतः पुरुषस्तदानीमानन्दयुक्तो रमते रसायाम् ॥ १०७ ॥

यदि सौभाग्यरेखा दो शाखाओं से युक्त हो, उनमें से एक बृहस्पतिस्थान में और दूसरी शनैश्चरस्थान में पहुँचे तो वह सुन्दरी समेत आनन्दयुक्त होता है ॥ १०७ ॥

शाखाविहीना विशदा यदानीं गम्भीररूपा गुरुगा विभाति ।
दौर्भाग्यशाली विधनो मनुष्यो दारिद्र्ययुक्तो भ्रमते भयार्तः ॥

यदि साफ सुथरी एवं गहरी सौभाग्य रेखा शाखाहीन गुरुस्थान में पहुँचे तो दौर्भाग्यशाली, दरिद्री, तथा डरकर घूमना बताती है ॥ १०८ ॥

मन्दालये चेन्मनुजस्य पाणौ सौभाग्यमात्र्यौ मिलिते यदानीम्
नानार्तियुक्तो मनुजस्तदानीमाकस्मिकं मृत्युमुपैति नूनम् १०९

जिसके पाणितल में शनि के स्थान में सौभाग्यरेखा और मातृरेखा मिली होवें वह नानाव्याधि संयुक्त होता तथा एकाएकी मर जाता है ॥ १०९ ॥

मातृरेखाफल *

चन्द्रालयाच्चेच्चलिता सुरेखा गंभीररूपा पितरं प्रयाति ।
तां शीर्षरेखां कवयो वदन्ति मात्रीं तु रेखां प्रवदन्ति केऽपि ११०

चन्द्रालय से चली एक गहरी रेखा पैत्रीरेखा के पास पहुँचे तो उसे शीर्षरेखा (हेडलाइन—मस्तक रेखा) कहा है और कई आचार्य मातृरेखा भी कहते हैं ॥ ११० ॥

एषा सुरेखा यदि नास्ति भिन्ना शाखाविहीना विशदा विभाति ।
सोयं नरो बुद्धिवरो बलाढ्यो विख्यातकीर्तिर्विदितो धरायाम् ॥

जिसकी यह 'मातृरेखा' कटी फटी न हो तथा शाखाहीन और उज्ज्वल रूप हो वह बुद्धिमान् व बलवान् और प्रसिद्ध होता है ॥ १११ ॥

मात्री सुरेखा यदि पीतवर्णा विस्तीर्णरूपा जनकान्तिके चेत् ।
सोयं जनः स्यात्कृशतासमेतः स्मृत्या विहीनः सरलस्वभावः ॥

पीली एवं चौड़ी मातृरेखा पैत्रीरेखा के पास पहुँचे तो वह दुर्बल, स्मरणशक्तिरहित, और सीधे स्वभाववाला होता है ॥ ११२ ॥

शीर्षस्य रेखा कृशगा यदानीं लम्बायमाना मनुजस्य पाणौ ।
सोयं नरः स्यात्सभिको हि धूर्तो नाज्ञाकरः कर्मकरः कृशाङ्गः ॥

जिस मनुष्य के करतल में पतली एवं लम्बी मातृरेखा हो वह फड़बाज (दगाबाज), छलछन्दी और दुर्बल होता है; आज्ञाकारी नहीं होता ११३ ॥

विस्तीर्णरूपा यदि मातृरेखा श्यामायमाना पुरुषस्य यस्य ।
सोयं जनो वै जठरस्य रोगं प्राप्नोति नित्यं सुखताविहीनः ॥

जिस पुरुष के पाणितल में चौड़ी एवं काली मातृरेखा हो वह सुखहीन रहता और हमेशा पेट की बीमारी से कष्ट पाता है ॥ ११४ ॥

मातुः सुरेखोपरिगं विशुद्धं संरक्तवर्णं यदि भाति चिह्नम् ।
शीर्षाभिघातं लभते मनुष्यो गौरे तु वैद्यो विदितोधरायाम् ११५

यदि मातृरेखा के ऊपरी भाग में साफ़ सुथरा एवं लालवर्णवाला निशान हो तो वह सिर में चोट पाता है । यदि पूर्वोक्त निशान सफ़ेद हो तो वैद्य-डाक्टर या हकीम तथा प्रख्यात होता है ॥ ११५ ॥

---

* Line of Head.

ऊर्ध्वरेखाफल*

रेखा चलन्ती मणिबन्धदेशान्मध्याङ्गुलिं याति गभीररूपा ।
तामूर्ध्वरेखां प्रवदन्ति सन्तो वित्तस्य रेखां कथयन्ति केपि ११६॥

मणिबन्ध देश से गहरी जो रेखा मध्यमा के पास जाती है उसे ऊर्ध्व-रेखा कहते हैं । कई आचार्य उसे दौलत की रेखा (धनरेखा) भी बतलाते हैं ॥ ११६ ॥

भाग्यस्य रेखा मणिबन्धदेशाद्गम्भीररूपा यदि याति मन्दम् ।
सोयं धनाढ्यो मनुजो मनीषी संपत्तिशाली सुखतामुपैति ११७॥

मणिबन्ध से चली यह गहरी भाग्यरेखा यदि शन्यालय पर्यन्त जावे तो धनवान्, बुद्धिमान्, सम्पत्तिशाली और सुखी होना बताती है ॥११७॥

आक्रम्य चन्द्रं यदि भाग्यरेखा मन्दालयं याति विशुद्धरूपा ।
सोयं जनो मध्यधनो हि लोके लावण्ययुक्तां ललनामुपैति ११८

जब विशुद्ध रूपवाली भाग्यरेखा चन्द्रालय को आक्रमण कर मन्दालय (शन्यालय) पर्यन्त जाती है तो लोक में मध्यम धनवाला और सुन्दरता-संपन्न सुन्दरी स्त्री पाना सूचित करती है ॥ ११८ ॥

पैत्रीसमुत्था यदि भाग्यरेखा गम्भीररूपा विशदा विभाति ।
नैजात्कुटुम्बात्सुखतां समेत्य संपत्तिशाली सरलस्वभावः ११६॥

यदि गहरी व साफ़ भाग्यरेखा पैत्रीरेखा से उठी हो तो अपने कुटुम्ब से सुख पाना, संपत्तिशाली होना तथा सीधे स्वभाववाला होना बताती है ११६

भाग्यस्य रेखा विशदा यदानीं देवेन्द्रवन्द्यालयगा विभाति ।
सोयं नरो नीतिपरो नराणां सर्वाधिकारी प्रभुतासमेतः १२०

जिसकी साफ़ सुथरा भाग्यरेखा बृहस्पतिस्थान में पहुँचे वह नीतिपरा-यण, सर्वाधिकारी और प्रभुतासंपन्न होता है ॥ १२० ॥

भौमात्समुत्था यदि भाग्यरेखा मध्याङ्गुलिं याति विशुद्धरूपा।
भाग्येनहीनो मनुजस्तदानीं कार्येसमस्ते न हि सिद्धिमेति १२१

---

* Line of fate.

भौमालय से उठी साफ़ सुथरी भाग्यरेखा यदि मध्यमा पर्यन्त जावे तो वह भाग्यहीन तथा कार्यों में सिद्धि नहीं पाता ॥ १२१ ॥

प्रारम्भदेशे वृजिना विभाति प्रान्ते तु भाग्या सरला यदानीम्।
महादरिद्रोपि भवेद्धनाढ्यो वृद्धे वयस्के सुखतामुपैति ॥१२२॥

यदि भाग्यरेखा प्रारम्भ में टेढी हो और आखीर में सीधी तो वह महादरिद्री, पर धनी होता तथा वृद्धावस्था में सुख पाता है ॥ १२२ ॥

आरम्भदेशे सरला च रक्ता भिनत्ति भाग्या यदि चित्तरेखाम्।
सोयं जनः स्याच्चरमे वयस्के सौभाग्यशाली धनतामुपैति १२३

यदि आरम्भ में सीधी व लालवर्णवाली भाग्यरेखा चित्तरेखा (सौभाग्य रेखा) को भेदती है तो वह आखिरी अवस्था में सौभाग्यशाली और धनी होता है ॥ १२३ ॥

नो भाति पाणौ मनुजस्य यस्य भाग्यस्य रेखा विशदा यदानीम्।
सोयं नरः स्याद्बलवीर्यहीनो दीनोधरायां न तु मांसभक्षी १२४

जिस मनुष्य के पाणितल में साफ़ सुथरी भाग्यरेखा न हो वह बल-वीर्यहीन तथा दीन बना रहता है। परन्तु मांस नहीं खाता ॥ १२४ ॥

सूर्यरेखाफल *

चन्द्रारगेहात्खलु भाग्यतो वा रेखा यदैका दिनपं प्रयाति।
तां सूर्यरेखां कथयन्ति सन्तो ह्यपोसुरूपां प्रवदन्ति चान्ये १२५॥

चन्द्रमा या मङ्गलस्थान से या भाग्यरेखा से उठी जो रेखा सूर्य के स्थान में जाती है उसे सूर्यरेखा कहते हैं ॥ १२५ ॥

एषा सुरेखा विशदा यदानीं विभाति पाणौ पुरुषस्य यस्य।
सोयं जनःस्यान्निपुणोऽतिविज्ञोविख्यातकीर्तिर्विदितोधरायाम्

जिस पुरुष के पाणितल में साफ़ सुथरी सूर्य रेखा हो वह निपुण, विज्ञ और प्रसिद्ध होता है ॥ १२६ ॥

भाग्यात्समुत्था दिनपस्य रेखा गम्भीररूपा विशदा विभाति।
सोयं मनुष्यो हि महायशस्वी विद्वान्धनाढ्यो गणितागमज्ञः॥

*Line of Apollo or Sun.

यदि भाग्यरेखा से उठी गहरी एवं साफ़ सूर्यरेखा हो तो वह यशस्वी, विद्वान्, धनवान्, गणितशास्त्र का ज्ञाता होता है ॥ १२७ ॥

भौमात्समुत्था तपनस्य रेखा रक्ता विशुद्धा यदि भाति पाणौ ।
सोयं महौजा मनुजो मनस्वी नैजाद्गुणात्संलभते हि वित्तम् ॥

यदि भौमरेखा से उठी लाल एवं साफ़ सूर्यरेखा हो तो वह बलवान्, मनमौजी तथा अपने ही गुण से धन पाता है ॥ १२८ ॥

शैर्षीसमुत्था सवितुः सुरेखा विद्योतते चेत्पुरुषस्य पाणौ ।
सोयं धनाढ्यो मनुजोहि लोके विख्यातकीर्तिःकृषिकारकःस्यात्

यदि शैर्षीरेखा (मातृरेखा=मस्तकरेखा) से सूर्यरेखा उठी हो तो वह धनवान्, विख्यातकीर्ति, तथा खेती-किसानी करनेवाला होता है ॥१२९॥

वक्राङ्गुले पाणितले गभीरे ऋज्वी सुरेखा दिनपस्य भाति ।
सोयं मनुष्यः सकले स्वकार्ये नाप्नोति सिद्धिं सरलस्वभावः ॥

यदि टेढ़ी उँगलीवाले गहरे पाणितल में सूर्यरेखा सीधी हो तो वह सीधे स्वभाववाला होता तथा अपने सारे कामों में सिद्धि नहीं पाता ॥१३०॥

ब्रध्नस्य रेखा यदि द्वित्रिशाखा गम्भीररूपा विशदा विभाति।
नाना सुकार्यं कुरुते मनुष्यो नाप्नोति सिद्धिं चरमे च कार्ये १३१

यदि सूर्यरेखा दो-तीन शाखाओंवाली एवं साफ़ तथा चटकीले रंग-वाली हो तो वह अनेक कार्य करता है । परन्तु आखिरी कार्य में सिद्धि नहीं पाता ॥ १३१ ॥

सूर्यस्य रेखोपरिगं विशुद्धं तारानुरूपं यदि भाति चिह्नम् ।
सोयं मनुष्यः सरलस्वभावः सख्यु. सकाशाल्लभते हि वित्तम् ॥

यदि सूर्यरेखा पर तारा का साफ़ निशान हो तो वह सीधे स्वभाव-वाला तथा मित्र के द्वारा धन पाता है ॥ १३२ ॥

चित्तार्कयोगे यदि बिन्दुरूपं श्यामायमानं विशदं विभाति ।
नेत्रामयं वै लभते मनुष्यो हस्तद्वये चेज्जनुपान्धकः स्यात् १३३॥

चित्तरेखा (हार्टलाइन) और सूर्यरेखा (अपोलोलाइन) के योग

में काला तथा साफ़ बिन्दुचिह्न हो तो वह नेत्ररोग पाता है। यदि दोनों हाथों में पूर्वोक्त निशान हो तो जन्म से ही अन्धा होता है ॥ १३३ ॥

बलरेखाफल *

रेखा चलन्ती मणिबन्धदेशात्संयुज्य पैत्रीं यदि सौम्यमेति ।
वीर्यस्य रेखांप्रवदन्तितज्ज्ञा हैल्थस्वरूपांकथयन्ति चान्ये १३४

यदि मणिबन्धदेश से चली एक रेखा पैत्रीरेखा से मिलकर बुधालय-पर्यन्त जावे तो उसे विद्वान् वीर्यरेखा कहते हैं। कई आचार्य उसे (हिपेटिका हेल्थलाइन) या स्वास्थ्यरेखा कहते हैं ॥ १३४ ॥

एषा सुरेखा पुरुषस्य पाणौ संरक्तवर्णा विशदा विभाति ।
सोयं मनुष्यो बलतासमेतस्त्वारामसक्तः सुखतां प्रयाति॥१३५॥

जिस पुरुष के पाणितल में यह वीर्य रेखा साफ़-सुथरी एवं लालवर्ण-वाली हो वह बलसंपन्न, आरामतलब तथा सुखी होता है ॥ १३५ ॥

आरम्भदेशे मिलिता सुपैत्र्यां वीर्यस्य रेखा धवला विभाति ।
सोयं मनो व्याधियुतो मनुष्यो दौर्बल्ययुक्तो दयितारतश्च १३६

यदि आरम्भ में वीर्यरेखा पैत्रीरेखा से मिली तथा साफ़ हो तो वह मानसी व्याधि से पीड़ित, दुर्बल और प्यारी में परायण रहता है ॥१३६॥

श्यामायमाना यदि वीर्यरेखा विद्योतते चेन्मनुजस्य पाणौ ।
सोयं जनो व्याधियुतो नितान्तं वृद्धे वयस्के विपदामुपैति १३७

जिस मनुष्य के पाणितल में काली वीर्यरेखा हो वह हमेशा रोगी रहता तथा वृद्धावस्था में विपदा भोगता है ॥ १३७ ॥

एषा सुरेखा विशदा गभीरा संरक्तवर्णा यदि भाति पूर्णा ।
गर्वी गुणाढ्यो मनुजस्तदानीं व्यापारयुक्तो व्ययतासमेतः १३८

यह स[illegible]सुथरी, गहरी एवं लालवर्णवाली वीर्यरेखा यदि पूर्णरूप हो तो गर्वीला, गुणी, व्यापारी और खर्चीला होना बताती है ॥ १३८ ॥

---

* Line of Liver or Health.

एषोर्ध्वशाखा यदि चैकशाखा संस्पृश्य शैर्षीं कुरुते त्रिकोणम् ।
सोयं सुकीर्तिः सुखतासमेतः सौन्दर्यशाली लभते धनौघम् १३९

या रेखा ऊपरी भाग में शाखावाली हो और यदि एक शाखा मात्रीरेखा को छूकर त्रिकोणाकार निशान बनाती हो तो वह बड़े नामवाला, सुख-संपन्न, सुन्दर और धनी होता है ॥ १३९ ॥

संस्पृश्य शैर्षीं तु तथा च भाग्यामेषा सुरेखा कुरुते त्रिकोणम् ।
सोयं जनो भाविफलस्य वक्ता चाकृष्टशक्तिं समवैति नूनम् १४०

वीर्यरेखा, मातृरेखा तथा भाग्यरेखा (फेटलाइन) को छूकर त्रिकोणाकार निशान बना हो तो वह भविष्यद्वक्ता या मिसमेरेजम विद्या जानता है १४०

एषा सुरेखा विनता यदानीं छिन्ना न भिन्ना शशिनं समेति ।
दौर्बल्ययुक्तो मनुजस्तदानीं धातुक्षयं वै लभतेऽप्यजस्रम् १४१

झुकी तथा अस्पष्ट वीर्यरेखा यदि चन्द्रालय को जावे तो वह दुबला तथा हमेशा धातुक्षीणता सूचित करती है ॥ १४१ ॥

वेलास्किवरेखाफल *

भाग्यासमाना विशदस्वरूपा रेखा यदैका समुपैति सौम्यम् ।
वेलास्किवाख्यांप्रवदन्तितां वै महानुभावा वदतांवरेण्याः १४२

यदि भाग्यरेखा के बराबर साफ सुथरी एक रेखा बुधालय पर्यन्त जावे तो उसे वेलास्किव रेखा कहते हैं ॥ १४२ ॥

काव्यालयाच्चेच्चलिता सुरेखा वक्रस्वरूपा यदि याति चान्द्रिम् ।
चौर्ये प्रवृत्तो मनुजस्तदानीं हत्याप्रकाण्डैःसहितो नराणाम् १४३

यदि शुक्रालय से चली वेलास्किव टेढ़ी रेखा बुधालय पर्यन्त जावे तो वह चोरी करने का आदी तथा हत्यारा होता है ॥ १४३ ॥

एषा सुरेखा ऋजुतासमेता सौम्यालयं याति गभीररूपा ।
सौभाग्यशाली मनुजो मनीषी विख्यातकीर्तिर्विदितो धरायाम्

---

* The Via Lasciva.

सीधी व गहरी वेलास्फित्र रेखा बुधालय पर्यन्त जावे तो सौभाग्यशाली, विद्वान्, विख्यातकीर्तिवाला और प्रसिद्ध होना बताती है ॥ १४४ ॥

गर्डलरेखाफल *

रेखा चलन्ती शशिसूनुगेहाद्गोलार्धरूपा धिषणं प्रयाति ।
तां गर्डलाख्यां कवयो वदन्ति वृत्तार्धरूपां प्रवदन्ति चान्ये १४५

यदि बुधालय से चला गोलार्धरूप रेखा बृहस्पति के स्थान में जावे तो उसे 'गर्डल' कहते हैं । अन्याचार्य इसे 'वृत्तार्धरूप' बताते हैं ॥ १४५ ॥

एषा सुरेखा विशदा सरक्ता छिन्ना न भिन्ना यदि भाति पाणौ ।
सोयं नरस्तूच्चपदाधिकारी सौन्दर्यशाली सुखतामुपैति १४६ ॥

जिसके पाणितल में यह साफ व लालवर्णवाली 'गर्डलरेखा' कटी फटी न हो तो वह ऊँचेपद का अधिकारी, सौन्दर्यशाली तथा सुखी होता है १४६

श्यामा च पीता खलु धूसरा वा छिन्ना च भिन्ना यदि भाति चैषा ।
सोयं बलिष्ठो हि पदाधिकारी स्वार्थी सहायी लभते धनौघम् ॥

यदि पूर्वोक्त रेखा काली, पीली या भूरी तथा कटी हो तो वह बड़ा बली, पदाधिकारी, मतलबी सहायी व धनी होता है ॥ १४७ ॥

मन्दालयाच्चेच्चलिता यदानीं वृत्तार्धरूपा समुपैति सौम्यम् ।
सोयं जनो धूर्ततरो हि दम्भी मिथ्याप्रभाषी मदनातुरश्च १४८

शनिस्थान (मन्दालय) से चली गोलार्ध रेखा यदि बुधालय पर्यन्त जावे तो वह बड़ा धूर्त, छली एवं झूंठा तथा कामी होना सूचित करती है १४८

एषा सुरेखा विशदा यदानीं ब्रध्नेन भिन्ना शशिजं समेति ।
सोयं मनुष्यो व्यभिचारयुक्तो दुष्टस्वभावो धनतामुपैति १४९

पाणितल में यह पूर्वोक्त साफ रेखा सूर्यरेखा से कटकर बुधालय पर्यन्त जावे तो वह व्यभिचारी, बुरे स्वभाववाला और धनी होता है ॥ १४९ ॥

क्षुद्राविभिन्ना यदि गर्डलाख्या काण्येन्दुरेखे विशदे विभातः ।
सोयं ह्यपस्मारयुतो मनुष्यो मान्यो वदान्यो ममताविहीनः ॥

* Girdle of Venus.

यदि गर्डल रेखा छोटी छोटी रेखाओं से कटी हो और यदि शुक्र एवं चन्द्र की रेखाएँ साफ़ हों तो वह मिरगी रोगवाला होता तथा मान्य, वदान्य तथा ममताहीन रहता है ॥ १५२ ॥

एषा विशुद्धा यदि भाति पाणौ चारक्तवर्णा पुरुषस्य यस्य ।
सोयं सुकीर्तिर्मनुजो धनाढ्यो नान्दीकरो नीतिपरो नितान्तम्

जिस पुरुष के पाणितल में यह गर्डल रेखा साफ़ व कुछ लालवर्णवाली हो वह बड़ी कीर्तिवाला, धनी, नान्दी, वादी एवं बड़ा नीतिपरायण होता है ॥ १५३ ॥

आध्यापिकीवृत्तिपराः प्रवीणाः संपादका ये किल पत्रकाणाम्।
तेषां हि पाणावियमेव भाति रेखा गभीरा विशदा सदैव१५४

जो लोग पढ़ाने की जीविका करते हैं तथा जो प्रवीण हैं और जो अखबारों के संपादक हैं उन्हीं लोगों के पाणितल में यह पूर्वोक्त रेखा स्पष्ट एवं गहरी होती है ॥ १५४ ॥

नार्या यदा पाणितले विभाति रेखा विशुद्धा वितता हि यस्याः।
भूतादिबाधापरिपीडिताङ्गा संगीतरक्ता प्रमदा तदा स्यात् १५५

जिस नारी के पाणितल में साफ़ व चौड़ी गर्डल रेखा हो वह भूत-प्रेत की बाधाओं से पीड़ित और गानेवाली होती है ॥ १५५ ॥

मणिबन्धस्थरेखाफल *

तिस्रो हि रेखा मणिबन्धदेशे वित्तस्य चाद्या गदिता सुधीभिः।
प्रोक्ता द्वितीयाखिलशास्त्रकाणामेव तृतीया भणिता हि भक्तेः॥

मणिबन्धदेश (कब्ज़े) में तीन रेखाएँ तिरछी (आड़ी) होती हैं। उनमें से पहली धन की, दूसरी शास्त्रों की, और तीसरी भक्ति की रेखा कहाती है ॥ १५६ ॥

मतान्तर

रेखाश्चतस्रो मणिबन्धदेशे द्रव्यस्य मुख्या द्वितयी च शास्त्री।

---

* पहुँचे रेखा एकधन, द्वितिये पण्डित जान। तीन सुरेखा भक्तनर, चार दरिद्र बखान ॥

१ किसी-किसी का कथन है कि ये चारों रेखाएँ क्रम से अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष की सूचक हैं। —संपादक

भक्तेस्तृतीया भणिता बुधेन्द्रैर्दारिद्र्ययुक्ता श्रुतिसंमिता स्यात् ॥

मणिबन्ध देश में तिरछी चार रेखाएँ होती हैं। उनमें से पहली धन की, दूसरी शास्त्री रेखा, तीसरी भक्ति की, और चौथी दारिद्र्य की रेखा कहलाता है ॥ १५७ ॥*

पुनरप्याह

हेल्थस्वरूपा प्रथमा हि रेखा प्रोक्ता द्वितीया किल वेल्थरूपा ।
प्रास्पेरिटी वै भणिता तृतीया रेखा कवीन्द्रैर्बुधसंमता च १५८

पहुँचे में पहली आरोग्य का रेखा होती है। दूसरी धन दौलत की और तीसरी बढ़ती की रेखा मानी है ॥ १५८ ॥

एतास्तु तिस्रो मणिबन्धदेशे गम्भीररूपा विशदा विभान्ति।
सोयं बलिष्ठो मनुजो धनाढ्यो गभीरबुद्धिर्विदितो धरायाम् १५९

जिसके पहुँचे (क़ब्ज़े) में ये तीनों रेखाएँ गहरी एवं साफ़ हों वह बलवान्, धनवान्, गम्भीर बुद्धिवाला और प्रसिद्ध होता है ॥ १५९ ॥

आद्या तु रेखा मिलिता यदानीं विद्योतते चेत्खलु स्वल्परूपा।
यत्नेन जीवेन्मनुजस्तदानीमुद्विग्नचित्तो भ्रमतेप्यजस्रम् १६०

यदि पहली रेखा कम या ज़्यादः जुड़ी और छोटी हो तो वह बड़े उपाय से जीता और उद्विग्न चित्तवाला होकर हमेशा घूमा करता है १६० ॥

आरोग्यरेखा मणिबन्धदेशे गम्भीररूपा यदि भाति भिन्ना ।
दौर्भाग्ययुक्तो मनुजस्तदानीमल्पं च वित्तं लभते कदापि १६१

यदि पहुँचे में आरोग्य एवं धन की रेखा गहरी और स्पष्ट हो तो वह दौर्भाग्यशाली तथा कभी थोड़ा धन पाता है ॥ १६१ ॥

रेखात्रयीणां यदि मध्यदेशे चिह्नं त्रिकोणं विशदं विभाति ।
सोऽयं जनो हृष्टमना महौजा वृद्धे वयस्के सुखतामुपैति॥ १६२॥

---

* The Bracelets-

१ द्रव्यस्य रेखा इति वा पाठः ।

यदि पहुँचे में तीन रेखाओं के बीच त्रिकोण का साफ़ निशान हो तो वह हर्षित मनवाला, महाबली होता और वृद्धावस्था में सुख पाता है ॥१६२॥

संछिन्नकाया यदि भाति चाद्या रेखा गभीरा विशदस्वरूपा ।
सोयं बलिष्ठो मनुजो मदान्धो मन्दस्वभावो ममतामुपैति १६३

यदि कब्जे में पहली रेखा गहरी व साफ़ तथा कटी प्रतीत हो तो वह महाबली, मदान्ध, नीच स्वभाववाला व मोही होता है ॥ १६३ ॥

रेखात्रयीतश्चलिता यदानीं भाग्यस्य रेखा तनुतासमेता ।
मिथ्याप्रभाषी मनुजस्तदानीं संस्थाविहीनोऽप्यधमो नराणाम्

यदि तीनों रेखाओं से चली तथा पतली भाग्य रेखा हो तो वह झूठा, मर्यादाहीन और अधम होता है ॥ १६४ ॥

रेखात्रयस्थं विशदस्वरूपं तारानुरूपं यदि भाति चिह्नम् ।
प्राप्नोति वित्तं मनुजोप्यलभ्यं भूमिस्थितं वा लभते धनौघम् १६५

यदि तीनों रेखाओं पर साफ़ तारा का निशान हो तो वह अलभ्य धन पाता है, या भूमि में गड़े हुए धन को पाता है ॥ १६५ ॥

पूर्वोक्तचिह्नं मणिबन्धदेशे नो भाति सम्यङ्मनुजस्य यस्य ।
सोयं मनुष्यो व्यभिचारशाली प्राप्नोति वित्तं गणिकादिकेभ्यः

जिस मनुष्य के कब्ज़े में पूर्वोक्त निशान भली भाँति हो वह व्यभिचारी होता तथा वेश्या आदि से धन पाता है ॥ १६६ ॥

आक्रम्य शुक्रं यदि भाग्यभग्नी संभिद्य पैत्रीं शशिनं समेति ।
सांयात्रिकःस्यान्मनुजस्तदानीं व्यापारशाली व्ययतासमेतः॥

यदि शुक्रालय को आक्रमण कर भाग्यरेखा की भगिनी रेखा पैत्रीरेखा (लाइफ़ लाइन) को भेदकर चन्द्रमा के पास पहुँचे तो वह जहाज़ी एवं व्यापारी तथा ख़र्चीला होता है ॥ १६७ ॥

समुत्थिता चेन्मणिमन्धदेशादृज्वी सुरेखा यदि याति चान्द्रिम् ।
प्राज्यं धनं वै लभते मनुष्यः संपत्तिशाली सरलस्वभावः॥ १६८॥

यदि मणिबन्ध (कब्जे) से उठी सीधी भाग्यभगिनी रेखा बुधालय पर्यन्त चली जाय तो वह सम्पत्तिशाली, सीधे स्वभाववाला और धनी होता है ॥ १६८ ॥

एषा सुरेखा विशदा यदानीं गम्भीररूपा दिनपं प्रयाति ।
सोयंजनो वित्तवतां सहायात्प्राप्नोति वित्तंसुखदो नराणाम् १६९

जब यह साफ़ गहरी रेखा सूर्यालय पर्यन्त जाय तो वह धनवानों की सहायता से धन पाता और मनुष्यों को शुभदायक होता है ॥ १६९ ॥

अथ करतलफलानि

एकादशलक्षणयुतकरतलफल

१ संभोगरेखा यदि याति मध्यां शाखाविहीना नहि तत्र लग्ना।
नैजेन दोषेण समाकुलात्मा यायाज्जनो मृत्युमुखं नितान्तम् १॥

जिसके करतल में संभोग रेखा (आयुरेखा) मध्यमापर्यन्त चली जाय और शाखाहीन होकर उस अंगुली से न मिले वह स्वकृत दोष से व्याकुल होता तथा मृत्यु पाता है ॥ १ ॥

२ मातुः सुरेखा यदि खण्डिता सा चापानुरूपा समियात्सुभोगाम्। मानापमानेन युतो जनः स्यादात्मापघाती कथितः सुधीभिः ॥ २ ॥

जिसकी माता की रेखा खण्डित और धनुषाकार होकर भोगरेखा के सामने पहुँच जाय वह मान व अपमान से युक्त हो आत्मघात करता है॥२॥

३ छिद्रद्वयेनापि युता यदा स्यात्संभोगरेखा परिपूर्णदेहा।
कट्यार्तियुक्तं मनुजं करोति दौर्बल्यगात्रं ह्युदरामयं तम् ॥ ३ ॥

यदि संभोगरेखा (आयुरेखा) पूर्ण हो तथा उसमें दो छेद हों तो उसको कमरव्याधि से युक्त, दुर्बलगात्रवाला एवं पेट का रोगी करती है॥३॥

४ रेखाविहीना यदि मातृरेखा मिथ्याप्रलापी मनुजस्तदा स्यात्।
नैष्ठुर्यभावेन युतः सलोभो वासो भवेत्तस्य च दूरदेशे ॥ ४ ॥

जिसकी मातृरेखा रेखाहीन हो वह मिथ्याभाषी, लोभी एवं निष्ठुर होता है। उसका वास दूर देश में होता है ॥ ४ ॥

५ भाग्यस्य रेखा यदि स्वल्पगा स्यात्पितुः सुरेखा खलु वेत्ररूपा।
तदन्तरं यत्प्रतिभाति सम्यक् तदा भवेन्मूढतमो व्ययी ना॥५॥

यदि भाग्यरेखा छोटीसी हो एवं पिता की रेखा वेत के समान दिखे तथा उन दोनों का अन्तर (मध्यभाग) भली भाँति दिखता हो तो वह खर्चीला और महामूर्ख होता है ॥ ५ ॥

६ यदा भवेन्मध्यमिकासुमूले रेखाद्वयं क्षुद्रतरस्वरूपम् ।
तदा जनं चातिश्रमं करोति शोकाकुलं तापयुतं च खर्वम् ॥६॥

मध्यमा के मूल में की छोटी दो रेखाएँ परिश्रमी, शोक से व्याकुल, तापयुक्त व सर्वकार्य में अल्पता रखनेवाले की द्योतक हैं ॥ ६ ॥

७ यदा भवेत्तर्जनिकासुमूले रेखाद्वयं क्षुद्रतमं विभिन्नम् ।
तदा शिराघातयुतो जनः स्यात्पाषाणकार्ये बहुलाभकारी ॥७॥

तर्जनी के मूल की छोटी व कटी दो रेखाएँ मत्थे के आघात से संयुक्त तथा पत्थरों के कार्य में महालाभ का चिह्न हैं ॥ ७ ॥

८ मातुः सुरेखा यदि मध्यभिन्ना वियुक्तरूपा खलु पितृरेखा ।
तदन्तरे भाति त्रिकोणचिह्नं संखण्डितं चेज्जनकस्य हन्ता ॥८॥

यदि माता की रेखा बीच में कटी हो एवं पिता की रेखा उससे अलग से निकली हो और उन दोनों के बीच में खण्डित त्रिकोणाकार निशान हो तो ऐसा मनुष्य पितृहन्ता नाम से विख्यात होता है ॥ ८ ॥

९ अनामिकामूलगतं सुचिह्नं गकाररूपं नहि तत्र लग्नम् ।
चौर्ये रतं तं मनुजं करोति चित्ते कृतघ्नं चपलस्वभावम् ॥ ९ ॥

यदि सुव्यक्त चिह्न गकाररूप अनामिका के मूल में हो पर वहाँ लगा न हो तो उसको चौरकर्म में रत, चित्त में कृतघ्न एवं चपल स्वभाववाला करता है ॥ ९ ॥

१० निशाकरस्थानगतं सुचिह्नं कञ्जानुरूपं वसुपर्णगं स्यात् ।
बाल्ये च मध्ये च तथा च वृद्धे वित्तस्य वृन्दं लभते मनुष्यः॥ १०॥

यदि कमल के आकार का आठपत्तोंवाला, सुव्यक्त चिह्न चन्द्रमा के स्थान में हो तो वह बालपन, युवा और वृद्धावस्था में धनसमूह पाता है ॥ १० ॥

११ पितुः सुरेखोपरिगं विशुद्धं चिह्नं गुणाख्येन युतं यदा स्यात् ।
कार्योन्नतं तं पुरुषं करोति संनष्टवित्तं विगतासनं च ॥ ११ ॥

यदि पिता की रेखा के ऊपर गुणानामक साफ़ चिह्न हो तो उसको

कार्यों में उन्नत, नष्ट धनवाला एवं विगत पदाधिकारी करता है॥ ११ ॥
(देखो चित्र नं० ६)

त्रयोदशलक्षणाङ्कितकरतलफल

१ पित्रोः सुरेखे नहि संगते चेद्रेखाद्वयेनापि युते च खण्डिते।
कर्तव्यकार्ये सरलं सुबोधं धत्तो जनं तं विगतारिवृन्दम् ॥१२॥

मातृरेखा, पितृरेखा ये दोनों आपस में न मिली हों एवं दो रेखाओं से युक्त हों तथा दो रेखाओं से खण्डित दिखें तो उसको कर्तव्य में सीधा, भला जाननेवाला एवं विना शत्रुवाला करती हैं॥ १२॥

२ कनिष्ठिकामूलगता यदा स्यू रेखाः सुक्षुद्रा बहुला विपूर्णाः।
विश्वासहीनं पुरुषं वदन्ति चौर्ये रतं घोरतरं दरिद्रम् ॥१३ ॥

जिसके करतल में कनिष्ठा के मूल में अनेक छोटी एवं कटी रेखाएँ हों तो वह विश्वासहीन, चौरकर्म में परायण, भयंकर तथा दरिद्री होता है॥ १३ ॥

३ अनामिकामूलगता यदैका रेखा सुपूर्णाऽपविखण्डिता स्यात्।
व्युत्पन्नबुद्धिं विमलस्वभावं कुर्यान्नरं तं महदाश्रयं च ॥ १४ ॥

अनामिका के मूल में यदि एक पूरी अखंडित रेखा हो तो उसे शास्त्रों में व्युत्पन्नबुद्धि, उत्तम स्वभाववाला एवं राजों के आश्रित बनाती है। यदि पूर्वोक्त रेखा वज्र से खण्डित हो तो उक्त फल का अभाव होता है *॥ १४॥

४ अङ्गुष्ठमध्ये विशदा सुरेखा रेखात्रयेणापि विखण्डिता स्यात्।
सद्वंशजातं मनुजं करोति सद्वंशहीनं यदि लम्बमाना ॥१५॥

अँगूठे के मूल में स्पष्टरूपवाली एक रेखा तीन रेखाओं से कटी हो तो उसे अच्छे वंश में उपजा हुआ जानना। यदि पूर्वोक्त रेखा तीन रेखाओं से लटकी हुई दिखे तो उसे अच्छे वंश का नहीं करती॥ १५ ॥

५ मातुः सुरेखा यदि नीचभागे संकर्तिता पुच्छयुता भवेत्तु।
धर्मेण हीनं मनुजं करोति पापे प्रवृत्तं पुरुषाधमं तम् ॥ १६ ॥

---

* इस रेखा के विषय में हम अन्यत्र टिप्पणी दे चुके हैं।—सम्पादक।

जिसके माता की रेखा नीचे की ओर कटी एवं पूँछ युक्त हो तो उसे अधर्मी पापी एवं पुरुषों में महानीच जानना ॥ १६ ॥

६ संभोगरेखा यदि नीचदेशे संखण्डिता चेत्पृथगा विभाति।
पुत्रैर्वियुक्तं पुरुषं करोति रक्ताधिकं रोगयुतं विमूढम् ॥ १७ ॥

जिसकी संभोगरेखा (आयुरेखा) नीचे की ओर खण्डित एवं फ़ासिले पर हो उसे सन्तानहीन, अधिक रक्तवाला, रोगी तथा मूर्ख जानना चाहिए ॥ १७ ॥

७ संभोगरेखोपरिगं यदा स्याद्रेखाद्वयं तर्जनिकासुमूले।
व्याजेन युक्तं ध्रुववाक्यहीनं कुर्याज्जनं चातिश्रमं सदुःखम् ॥ १८ ॥

तर्जनी के मूल के सामने संभोगरेखा के ऊपर मिली हुई दो रेखाएँ दिखें तो उसे कपटी, स्थिरवाक्यहीन, महापरिश्रमी एवं दुःखी जानना ॥ १८ ॥

८ संभोगरेखा यदि मध्यभागे वज्रास्ययुक्ता च गभीररूपा।
कुर्यान्नरं तं परुषस्वभावं नीचेन साकं कलहे प्रवृत्तम् ॥ १६ ॥

यदि संभोगरेखा (आयुरेखा) बीच में वज्रमुखी एवं गहरी-सी हो तो ऐसे प्राणी को कठिनहृदयवाला तथा अधम जातियों से बखेड़ा रखनेवाला बनाती है ॥ १६ ॥

९ पितुः सुरेखोपरिगं यदा स्याद्रेखाद्वयं रेखयुगेन भिन्नम्।
भार्यासमूहेन युतं करोति भार्याविहीनं बहुखण्डितं चेत् ॥ २० ॥

पिता की रेखा के ऊपर दो रेखाओं से खण्डित दो रेखाएँ हों तो उसे भार्यासमूहयुक्त रखती हैं। यदि पूर्वोक्त दोनों रेखाएँ अनेक रेखाओं से खण्डित हों तो उसे भार्याविहीन कर देती हैं ॥ २० ॥

१० मातुः सुरेखा यदि मध्यदेशे वज्रास्ययुक्ता च विभिन्नरूपा।
वाग्वज्रयुक्तं मनुजं करोति पुरोहितेनापि विवादवन्तम् ॥ २१ ॥

जिसके वज्रमुख के निशान से युक्त मातृरेखा बीच में कटी हो वह अपने पुरोहित से लड़ाई रखता तथा कठोर वाणी बोलता है ॥ २१ ॥

११अङ्गुष्ठमूले विशदं यदा स्याद्रेखाचतुष्कं च पृथक्स्वरूपम्।
चित्ते कृतघ्नं मनुजं करोति व्यायामसक्तं विविधार्तियुक्तम्२२॥

यदि स्पष्ट अलग अलग अँगूठे के मूल में चार रेखाएँ दिखें तो वह अकृतज्ञ होता, कसरत करता तथा अनेक रोगों से घिरा रहता है ॥ २२ ॥

१२स्यातां गते मध्यमिकासुमूले रेखे सुरेखाद्वयखण्डिते चेत्।
शूलाख्यरोगेण युतं दधाते कारुण्यहीनं विकलं जनं तम्२३

जिसकी मध्यमा के मूल में दो रेखाएँ दो दो रेखाओं से खण्डित हों, उसको विकल, करुणाहीन तथा शूलपीड़ा से पीड़ित जानना ॥२३॥

१३सर्वाङ्गुलीनां प्रथमे परुष्के कुम्भाख्यलग्नं यदि राजते तु।
तदा जनो मज्जति वारिराशौ विमुक्तसंगो विरहातुरश्च २४॥

यदि सब अंगुलियों के पहले पर्व में कुम्भराशि का चिह्न हो तो वह विरह-व्याकुल होता तथा तालाब या नदी में डूब जाता है ॥ २४ ॥ (देखो चित्र नं० १०)*

चतुर्दशलक्षणाङ्कितकरतलफल

१पित्रा वियुक्ता यदि मातृरेखा रेखात्रयेणापि युता च भिन्ना।
हत्यासहस्रेण युतो जनः स्याद्द्वीपान्तरं चैति कुटुम्बशत्रुः२५

जिसकी माता की रेखा पिता की रेखा से जुदी हो तथा तीन रेखाओं से संयोग कर कटी सी दिखे, वह हजारों हत्या करनेवाला एवं भाई बन्धुओं से विरोधी होकर द्वीपान्तर-वास का दंड पाता है ॥ २५ ॥

२मातुस्सुरेखा यदि पूर्वभागे रेखाद्वयेनापि विकर्तिता स्यात्।
तदा जनो गच्छति दूरदेशं चान्यायकार्ये समुपैति घातम्२६

जिसकी माता की रेखा पूर्वभाग में दो रेखाओं से कटी हो वह दूर देश में जाकर अन्याय से मारा जाता है ॥ २६ ॥

---

* पाठकों ने अब यह देखा होगा कि पहले किया हुआ राशि आदि के चिह्न-स्वरूप-ज्ञान का विषय अब कितना महत्त्वपूर्ण प्रतीत होने लगा। राशियों, ग्रहों, तथा नक्षत्रों के चिह्न, यही कारण है, बड़े मार्के की चीज़ हैं। संपादक।

३ प्रदेशिनीमूलगतं विशुद्धं चिह्नं धनाख्येन युतं यदा स्यात्।
पदोन्नतिं वै लभते मनुष्यः शिल्पे प्रवीणो व्यवसायमान्यः २७

जिसकी तर्जनी की मूल में धन नामक (+) चिह्न दिखे वह अपने अधिकार की उन्नति पाता और शिल्पकार्य में प्रवीण, तथा रोजगार द्वारा माननीय होता है ॥ २७ ॥

४मध्यापरुष्कं तृतयं विलङ्घ्य रेखा विमिश्रा यदि याति भोगाम्
कारागृहवासमुपैति प्राणी श्यामा सुरेखा यदि चैति मृत्युम् २८

जिसकी संभोगरेखा के सामने मध्यमा की तीसरी पर्व (पोर) को नाँघ कर एक क्षुद्ररेखा से मिली रेखा हो तो वह जेलखाने में वास करता है। यदि पूर्वोक्त रेखा कुछ काली-सी हो तो मृत्यु पाता है ॥ २८ ॥

५. निशाकरस्थानगतं सुचिह्नं कुम्भस्वरूपं यदि शोभते तु।
तदा जनो मज्जति तोयराशौ श्लेष्मस्वभावो बहुपीडितश्च ॥

जिसे यदि चन्द्रमा के स्थान में कुम्भ के रूप का चिह्न हो तो वह जल में डूबता है। कफप्रकृति का तथा व्याधियों से घबराकर नदी आदि में डूबता है ॥ २९ ॥

६ पितुः सुरेखा मणिबन्धमेति पीना विशाखा परिपूर्णरूपा।
मातापितृभ्यां परिवञ्चितस्सन्नाप्नोति जन्तुर्विफलं समस्तम् ३०

यदि पिता की रेखा पूरी, मोटी, विगतशाखावाली एवं मणिबन्ध पर्यन्त चली जावे तो वह माता-पिता से छला जाता और समस्त कार्यों में विफल होता है ॥ ३० ॥

७ मातुस्सुरेखा निकटे यदा चेन्नक्षत्रचिह्नं विशदं विभाति।
तदा जनो भूपतिवल्लभस्स्यात्स्वज्ञातिवृन्दे समुपैति मानम् ॥

नक्षत्र चिह्न यदि मातृरेखा के समीप साफ़ हो तो वह राजा का प्यारा और अपने वंश में प्रतिष्ठित होता है ॥ ३१ ॥

८ अङ्गुष्ठमूले समकोणचिह्नं रेखाद्वयेनापि युतं यदा स्यात्।
तदा जनो मज्जति वारिराशौ स्वल्पं धनं विन्दति सर्वकाले ॥

जिसके समकोण का निशान अँगूठा की मूल में दिखे तो वह जल में डूबता और सर्वत्र थोड़ा धन पाता है ॥ ३२ ॥

९ मातुस्सुरेखा यदि नीचदेशे समानभावेन नतोभयत्र ।
मानेन युक्तो मनुजस्तदा स्यात्पदाधिकारी जनवल्लभश्च ३३

जिसके नीचे भाग में यदि माता की रेखा समभाव से दोनों तरफ़ लचीसी हो तो लोक में उसकी बड़ी प्रतिष्ठा होती है । और वह किसी ऊँचे अधिकार में नियुक्त होता है, और उसको सब चाहते हैं ॥ ३३ ॥

१० भाग्यस्य रेखा मिलिता जनन्यां संकोणचिह्नेन युता यदा स्यात् । बुद्ध्या विहीनं मनुजं करोति वादे प्रवृत्तं बहुलामयं च ३४

माता की रेखा में मिलकर यदि भाग्यरेखा (ऊर्ध्वरेखा) कोण चिह्नयुक्त दिखे तो उसे बुद्धिहीन, बड़ा झगड़ालू एवं अनेक रोगोंवाला बनाये रखती है ॥ ३४ ॥

११ भाग्यस्य रेखा निकटे विभाति चिह्नं चतुष्कोणयुतं त्रिपर्णम् ।
निर्बोधरूपो मनुजस्तदा स्यान्नार्यां यदा चेत्कुलटा भवेत्सा ॥

तीन दलोंवाला निशान यदि भाग्यरेखा के समीप चार कोनों से युक्त हो तो वह ज्ञानहीन होता है । यदि स्त्री के करतल में पूर्वोक्त निशान दिखे तो वह व्यभिचारिणी होती है ॥ ३५ ॥

१२ अनामिकामूलगता सुरेखा स्थूलस्वरूपा कुटिला यदा स्यात
प्रसूतिकाले रमणीगणानां मृत्युं प्रदद्याद्भयदा जनानाम् ३६॥

यदि मोटी एवं टेढ़ी शोभनरेखा अनामिका के मूल में हो तो प्रसूतिकाल में नारीगणों का मृत्यु देती है। और यदि पुरुषों के करतल में पूर्वोक्त रेखा दिखे तो उन्हें भयदायक होती है ॥ ३६ ॥

१३ कनिष्ठिका मूलगता यदा स्यू रेखा विशुद्धास्सरलाश्च तिस्रः
सर्वेषु कार्येषु महाप्रवीणो भूत्वा च वित्तं लभते मनुष्यः ३७॥

जिसे कनिष्ठा की मूल में सीधी तीन रेखाएँ हों वह सब कार्य करने में समर्थ तथा धन से लाभ उठाता है ॥ ३७ ॥

१४ प्रदेशिनीं चापि विलङ्घ्य रेखा पूर्णा विशाखा यदि भाति भोगा। यावज्जनो जीवति जीवलोके हत्याप्लुतो भीतियुतश्च तावत्

जिसकी प्रदेशिनी (तर्जनी) को नाँघकर पूर्ण भोगरेखा विगतशाखावाली हो वह जब तक जीवलोक में जीता है तब तक हत्याओं से घिरकर भयभीत रहता है ॥ ३८ ॥ (देखो चित्र नं० ११)

अथ त्रयोदशलक्षणाङ्कितकरतलफल

१ पित्रा वियुक्ता यदि मातृरेखा प्रदेशिनीमूलगता विभाति। अर्थप्रणाशं लभते मनुष्यश्चानन्दहीनो भ्रमते नितान्तम् ॥

जिसके करतल में पिता की रेखा से वियुक्त मातृरेखा यदि तर्जनी की मूल में हो तो उसका धन नाश होता और वह आनन्दहीन होकर भूतल में बहुत घूमता है ॥ ३९ ॥*

२ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशाद्रेखा विभिन्ना समुपैति काव्यम्। तदा महात्मा मनुजः सुचेताः सत्ये रतः स्याद्व्यवहारहीनः ४०

यदि मणिबन्ध से उठी कटी-सी रेखा शुक्र के समीप चली जावे तो वह महात्मा एवं शोभन मनवाला होता तथा व्यवहारहीन और सत्य में परायण रहता है ॥ ४० ॥

३ भिन्नत्रिकोणेन युता सुपूर्णा भाग्यस्य रेखा यदि याति भोगाम् तदा स्वदेशे मृतिमेति जन्तुः संखण्डिता चेत्पतितो महोच्चात् ॥

कटे हुए त्रिकोणयुक्त पूर्ण भाग्यरेखा यदि भोगरेखा में मिल जावे तो वह अपने देश में मौत पाता और यदि भाग्यरेखा भलीभाँति खण्डित हो तो वह ऊँचे स्थान से गिरकर मर जाता है ॥ ४१ ॥

४ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशात्पितुः सुरेखा यदि याति तर्जनीम्। तदा जनो गच्छति दूरदेशकं नाप्नोति वित्तं भ्रमते भयार्तकः

* हम आगे यह बता चुके हैं कि चेहरे पर जिस तरह आँख-कान आदि के लिए निश्चित स्थान हैं उसी प्रकार हाथ पर प्रत्येक प्रधान रेखाओं के लिए खास स्थान निश्चित हैं। यदि आँख कान की अधिकता से फैली हों, देखनेवाले उसे असाधारण व्यक्ति कहेंगे। इसी प्रकार रेखा के स्थानान्तर होने का परिणाम होता है। संपादक।

यदि मणिबन्ध से उठ पिता की रेखा तर्जनी पर्यन्त चली जावे तो वह दूर देश को जाता है । परन्तु धन नहीं पाता, इसलिए भय से घबराता घूमता है ॥ ४२ ॥

५ अनामिकामूलगतं सुचिह्नं नक्षत्ररूपं विशदं विभाति । संपत्तिसङ्घैः सहितो नरः स्यादाप्नोति वित्तं बहुबन्धुसौख्यम् ॥

यदि अनामिका के मूल में नक्षत्ररूप (नखत के आकार) शोभन चिह्न साफ़ हो तो वह बहुत-सा धन एवं बन्धु-सौख्य पाता है ॥ ४३ ॥*

६ संभोगरेखा यदि याति तर्जनीं शाखाविहीना मिलिता च भाग्यके। दौर्भाग्यवन्तं मनुजं करोति सा तीक्ष्णास्त्रघातेन मृतिं ददाति वै ॥ ४४ ॥

यदि संभोगरेखा भाग्यरेखा से मिल शाखाहीन होकर तर्जनी पर्यन्त चली जावे तो उसको बुरे भागवाला बनाती और तीक्ष्ण अस्त्राघात से मौत देती है ॥ ४४ ॥

७ मातुः सुरेखा यदि नीचदेशे समायुता चोर्मिकया विभाति । दारिद्र्यदोषेण युतो जनः स्याद्गुह्यामयो गौरवभावशून्यः ४५

जिसके नीचे तरफ़ मातृरेखा मुँदरी के निशानयुक्त हो वह दारिद्र्य से घिरा, गौरवहीन एवं गुह्यदेश में रोगवाला रहता है ॥ ४५ ॥

८ अनामिकामध्यमिकासुमध्यं घृणाख्यचिह्नेन युतं यदा स्यात्। तदा जनो निष्ठुरतासमेतो दीर्घेण क्रोधेन परिप्लुतः स्यात् ४६

अनामिका एवं मध्यमा के बीच ऋण (–) नामक चिह्न हो तो वह बड़ा क्रोधी तथा निष्ठुर रहता है ॥ ४६ ॥

९ निशाकरस्थानगता गभीरा रेखा यदैका जननीमुपैति । तदा जनो निन्दनहासकारी धर्माधिपे वित्तधरो द्वयी चेत् ४७

जिसके चन्द्र के स्थान से एक गहरा रेखा मातृरेखा के पास जावे वह

---

* सूर्य स्थान पर नक्षत्र चिह्न आकस्मिक प्राप्ति, सौख्यादि धन जन सभी का देनेवाला है । यह चिह्न इस स्थान पर उत्तम कहाता है । संपादक ।

निन्दा करता हुआ हँसता रहता है। यदि दो रेखाएँ मातृरेखा के समीप जावें तो वह धर्माधिप धन धरता है ॥ ४७ ॥

१०पितुस्सुरेखोपरिगं यदा स्याद्वृत्तार्धचिह्नं परिपूर्णरूपम् ।
तदा जनस्तिष्ठति स्वस्य गेहे भयप्रदः स्यात्परिवारवर्गे ४८॥

जिसके पिता की रेखा के ऊपर पूर्णरूप से अर्धवृत्त का निशान दिखे वह अपने घर में ही रहता और अपने परिवारसमूह में भयदायक होता है ४८

११भाग्येन युक्ता विशदा सरक्ता प्रदेशिनीं याति सुभोगरेखा।
तदा जनो ब्रह्मविचारसारो जितेन्द्रियः स्यात्तु विरक्तचित्तः ४९

यदि भाग्यरेखा युक्त सुभोगरेखा साफ़ व लाल हो तथा तर्जनी पर्यन्त जावे तो वह "ब्रह्म" का विचार करता, जितेन्द्रिय और विरक्त चित्त रहता है ॥ ४९ ॥

१२ महीसुतस्थानगतं सुचिह्नं खड्गानुरूपं नहि याति मध्यम् ।
मिथ्याप्रलापी मनुजस्तदा स्याल्लोभी धनेप्सुर्धृतिधर्महीनः ५०

यदि मङ्गल के स्थान में तलवार के समान शोभन चिह्न हथेली के बीच को न नाँघे तो वह मिथ्याभाषी, लोभी, धनाभिलाषी और धारणा एवं धर्महीन रहता है ॥ ५० ॥

१३पितुः सुरेखोत्थितचुल्लिरूपया संकर्तिता स्याज्जननी सुरेखया
तदा जनो दुर्बलदेहधारकः प्लीहादिरोगैर्नितरां प्रपीडितः ५१॥

यदि मातृरेखा पिता की रेखा से उठी चूल्हे के आकारवाली शोभन रेखा से कटी हो तो वह दुर्बल तथा प्लीहा एवं यकृत् आदि रोगों से पीड़ित रहता है ॥ ५१ ॥ (देखो चित्र ० १२)

अथ पञ्चदशलक्षणाङ्कितकरतलफल

१संभोगरेखा यदि कर्तिता स्यात्तस्याः सुशाखा समुपैति मध्याम्
सन्तानप्रीतो मनुजस्तदा स्याद्धामी सुनामी व्यवसायपूर्णः॥

जब संभोगरेखा (आयुरेखा) कटी-सी हो, और उसकी शाखा मध्यमा पर्यन्त जावे तो वह सन्तानों पर प्रसन्न रहता, धामी, बड़ा नामी और रोज़गार से पूर्ण होता है ॥ २ ॥

२ पितुः सुरेखोत्थितभाग्यरेखिका मध्ये गभीरा समुपति मातरम्
अशीतिवर्षप्रमितं सुजीवनं लब्ध्वा जनश्चैति मृतस्य वित्तकम्

जब पिता की रेखा से उठी भाग्यरेखा (ऊर्ध्वरेखा) बीच में गहरी हो और माता की रेखा में मिल जावे तो वह अस्सी वर्ष की आयु पाता तथा मृतक पुरुष का धन-समूह पाता है ॥ ५३ ॥

३ सम्भोगरेखा यदि नीचदेशे वृत्ताख्यचिह्नेन युता विभाति।
तदा जनो बालगणप्रियः स्यादाचारहीनो व्यभिचारशीलः॥

जब नीचे की तरफ वृत्त नामक निशान युक्त संभोगरेखा हो तो वह बालकों का प्यारा, आचारहीन और व्यभिचारपरायण होता है ॥ ५४ ॥

४ कनिष्ठिकामूलगते यदास्तो रेखे सुक्षुद्रे त्रयपर्वगे चेत्।
तदा जनः स्याद्बहुभोगयुक्तो नार्या यदा चेत्सुखकारिणी सा ॥

जब कनिष्ठिका के मूल में छोटी सी दो रेखाएँ उसकी तीसरी पोर तक पहुँच जावें तो वह अनेक भोगसंयुक्त होता है। यदि पूर्वोक्त रेखाएँ स्त्री के करतल में दिखें तो वह सुखकारिणी तथा संभोगकारिणी होती है ५५ *

५ संभोगरेखा यदि मध्यमान्ता रेखाचतुष्कैः परिकर्तिता स्यात्।
तदा जनो भूपगणैर्विभीतः संव्यस्तचित्तः परितः प्रयाति ५६॥

जब मध्यमापर्यन्त पहुँचकर संभोगरेखा चार रेखाओं से कटी प्रतीत हो तो वह राजगणों से डरता, चित्त डामाडोल करता और चारों तरफ घूमता फिरता है ॥ ५६ ॥

६ मध्यापरुष्कं तृतयं विलङ्घ्य रेखा विभिन्ना यदि याति भाग्याम्
वक्षशिराघातयुतो जनः स्याद्बाधासमूहैः परिपीडिताङ्गः ५७

जिसे मध्यमा की तीसरी पर्व से एक रेखा भिन्न होकर भाग्यरेखा के समीप जावे तो वह वक्षःस्थलाघात, शिराघात संयुक्त तथा बाधा से पीड़ित रहता है ॥ ५७ ॥

७ अङ्गुष्ठमध्याद्यदि याति तर्जनीं रेखा यदैका चतुरस्रमध्यमा।

* ये दो रेखाएँ कभी कभी डाक्टर या सर्जन (चीरफाड़ करनेवाले) होने की विशेषता भी बनाती हैं। संपादक।

तदा जनः स्याद्गुरुतः पुरोहितात्संपर्कहीनो बहुवादकारकः॥

जिसे एक रेखा अँगूठा के मध्य से चल चौकोणवाली तर्जनी पर्यन्त पहुँच जावे वह बहुवादी तथा अपने गुरु एवं पुरोहित का विरोधी होता है ॥५८॥

८मातुः सुरेखा यदि नीचभागे चिह्नेन गोलाकृतिना युता स्यात्

वामे च दक्षे च विनष्टचक्षुश्चिह्नद्वयं चेत्कथितः सदान्धः५६॥

यदि माता की रेखा के नीचे बाईं तरफ़ गोलाकार निशान दिखे तो वह वाम आँखें का काना होता है। जो दाहिनी तरफ़ हो तो दाहिनी आँख से काना होता है। जो रेखा के दोनों तरफ़ निशान हों तो वह हमेशा अन्धा रहता है ॥ ५६ ॥

६संभोगरेखा निकटे यदास्ति वृत्तार्धचिह्नं विशदं विशालम्।

तदा जनो बान्धवमृत्युहेतुः कठोरवादी कठिनस्वभावः ६०॥

यदि संभोगरेखा के समीप साफ़ वृत्तार्ध चिह्न हो तो वह अपने बान्धवों की मौत का कारण होता तथा कठिन स्वभाववाला कहा जाता है ॥६०॥

१० पितुः सुरेखा मिलिता जनन्यां मातुः सुरेखा नहि खण्डिता स्यात् । तदा जनो वेदविचारशीलो ज्ञानी गुणी स्यादभिमानहीनः ॥ ६१ ॥

यदि पिता की रेखा मातृरेखा में मिल जावे और मातृरेखा खण्डित न हो तो वह वेद का विचार करता, ज्ञानी, गुणी, तथा अभिमानहीन होता है ॥ ६१ ॥

११मातुः सुरेखा निकटे यदास्ति गुणाख्यचिह्नं परिपूर्णरूपम्।

तदा जनः स्याद्रमणीगणानां वाक्योत्तरे प्राप्तमहाधिकारः ६२

यदि माता की रेखा के समीप गुणा नामक चिह्न (×) साफ़ हो तो वह नारियों के वाक्यों के उत्तर देने में बड़ा चतुर होता है ॥ ६२ ॥

१२चपाकरस्योपरिगा यदा स्यू रेखास्सुक्षुद्रा बहुलाः सुपूर्णाः।

तदा जनो घोरतरं सुरोगं प्राप्नोति काये कमलाविहीनः ६३॥

यदि बहुत-सी छोटी-छोटी रेखाएँ चन्द्र पर हों तो वह लक्ष्मीहीन होता तथा भयंकर रोगी भी होता है ॥ ६३ ॥

१३समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशात्पितुः सुरेखा बहुवक्ररूपा ।
तदा जनो वह्निविदग्धगात्रो वैकल्यचित्तो विविधामयश्च ६४

यदि पिता की रेखा मणिबन्ध से उठ अनेक स्थानों में टेढ़ी-सी हो तो वह अग्नि से जली देहवाला, विकल चित्त, और अनेक रोगोंवाला होता है ॥ ६४ ॥

१४अङ्गुष्ठमूले विशदाः सुपञ्च रेखा यदा भान्ति समान्तरालाः ।
तदा जनस्सौख्ययुतो धनी स्याद्रेखात्रयं चेत्फलताविनाशः॥

यदि साफ़ एवं समान अन्तरवाली पाँच रेखाएँ अंगूठे की मूल में हों तो वह सुखी तथा धनी होता है । यदि तीन ही रेखाएँ हों तो फल का नाश होता है ॥ ६५ ॥

१५समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशाद्रेखा गभीरा समुपैति चन्द्रम् ।
विश्वासयुक्तो मनुजस्तदा स्याद्विश्वासहीनो निजबन्धुवर्गे ६६

यदि मणिबन्ध से उठी एक गंभीर रेखा चन्द्र के समीप जावे तो वह विश्वासयुक्त होता, पर स्वबन्धुओं में विश्वासहीन रहता है ॥ ६६ ॥ (देखो चित्र नं० १३)

अथ पुनरपि पञ्चदशलक्षणाङ्कितकरतलफल

१मातुः सुरेखोपरिगं सुचिह्नं सर्पानुरूपं यदि याति पैत्रीम् ।
तदा जनः स्यात्सरलस्वभावो निर्लज्जरूपः सहसा समेतः ६७

जिसकी माता की रेखा के ऊपर से सर्पाकार चिह्न यदि पिता की रेखा के पास तक जावे, वह सीधे स्वभाववाला, बेशर्म और साहसी होता है ६७॥

२कनिष्ठिकामूलगता विभाति रेखा सुरेखाद्वयखण्डिता चेत् ।
तदा नरः स्याद्व्यभिचारयुक्तो नार्या यदा चेद्गणिका भवेत्सा ६८.

यदि कनिष्ठा की मूल की रेखा दो रेखाओं से खण्डित हो तो वह व्यभिचारी होता है । यदि पूर्वोक्त रेखा स्त्री के करतल में दिखे तो वह वेश्यावृत्ति से निर्वाह करती है ॥ ६८ ॥

३अनामिकामूलगतं विभाति वृत्तार्धचिह्नं विशदं विशालम् ।
तदा जनो बन्धुजनस्य घाती द्वेषी विषादी परनिन्दकः स्यात्

यदि अनामिका की मूल में साफ़ वृत्तार्ध चिह्न हो वह बन्धुजनों का मारनेवाला, शत्रुता रखनेवाला, विषादी और सबकी निन्दा करनेवाला होता है ६९

४कनिष्ठिका मूलगतं सुचिह्नं लूतानुरूपं विशदं विभाति ।
तदा जनः स्यात्परिहासकारी जल्पाकरूपी विजयाभिलाषी ॥

यदि कनिष्ठा की मूल में साफ़ मकड़ी के आकारवाला चिह्न हो तो वह बड़ा हँसने व बकनेवाला तथा विजय की अभिलाषावाला होता है ॥ ७० ॥

५आयुष्यरेखा यदि मध्यमान्ता अधःसुसूक्ष्मोपरितः सुपीना ।
तदा जनो वैरिगणाभिभूतो विपर्यये चेत्फलमन्यथा स्यात् ७१

यदि आयुरेखा (संभोगरेखा) मध्यमापर्यन्त पहुँच नीचे तरफ़ पतली एवं ऊपरले भाग में मोटी-सी हो तो वह दुश्मनों से हारता है । यदि ऊपरले भाग में पतली तथा निचले भाग में मोटी-सी दिखे तो वैरियों को पराजित करता है ॥ ७१ ॥

६संभोगरेखा यदि नीचभागके संकर्तिता स्यात्तु सुसूक्ष्मरेखया।
तदा नरः स्यान्नरनाशकारकः संव्यस्तचित्तो निजपितृघातकः॥

यदि संभोगरेखा (आयुरेखा) नीचे की तरफ़ छोटी रेखा से कटी हो तो वह चंचलचित्त, नरहत्याकारी, और अपने बाप का मारनेवाला होता है !! ७२ ॥

७पितुः सुरेखा यदि चोर्ध्वभागे क्षुद्रा विभिन्ना विशदा सुपूर्णा ।
तदा जनः सर्वजनप्रियः स्याद्व्युत्पन्नबुद्धिर्विमलस्वभावः७३

ऊपरले भाग में यदि पिता की रेखा छोटी-छोटी रेखाओं से कटी, स्पष्ट तथा भारी दिखे तो वह सबका प्यारा, व्युत्पन्न बुद्धिवाला और विमल स्वभाववाला होता है ॥ ७३ ॥

८भाग्यस्य रेखा मिलिता जनन्यां संकोणचिह्नं विशदं विभाति।

तदा जनो मज्जति वारिराशौ व्यायामसक्तो व्यसनातुरश्च ७४॥

यदि भाग्यरेखा मातृरेखा से मिल जावे एवं साफ़ कोण का निशान भी हो तो वह कसरती, जुआरी तथा नदी-नाले आदि में डूबनेवाला होता है ॥ ७४ ॥

६ पितुः सुरेखा यदि मध्यभागे क्षुद्रा विभिन्ना मणिबन्धमुक्ता।
रोगाभिभूतो मनुजस्तदा स्यात्पूर्वोक्तमानेन विचारणीयः ७५

मणिबन्ध से छूटी पिता की रेखा यदि बीच में छोटी छोटी रेखाओं से कटी हो तो वह रोग से पीड़ित होता है। यह पूर्वोक्त मान से विचार करना चाहिए। (एक जव भर का मान दश वर्ष का होता है। इसी संकेत से विचारना चाहिए) ॥ ७५ ॥ *

१० भाग्यादधः स्याच्छिबिकानुरूपं चिह्नं सुपूर्णं विशदस्वरूपम्
तदा नरो नादविचारशीलो मित्राभिभूतो मरणं प्रयाति ७६॥

जिसके भाग्यरेखा के नीचे तरफ़ मियाना, पीनस आदि के समान साफ़ २ चिह्न दिखें तो वह सांगीतशास्त्रपरायण तथा मित्रों से अनादृत हो मौत पाता है ॥ ७६ ॥

११ भाग्येन भिन्ना यदि पितृरेखा संपूर्णरूपा मिलिता जनन्याम्
आयुष्ययुक्तो मनुजस्तदा स्याद्युद्धाभिलाषी विजये रतश्च ७७

यदि मातृरेखा में भाग्यरेखा से कटी पूरी पितृरेखा मिल जावे तो वह आयुष्मान् होता और लड़ने की लालसा रखता तथा विजय में रत रहता है ७७

१२ निशाकरस्थानगतं सुचिह्नं चुल्लीसरूपं विशदं विभाति।
सम्पत्तिपूर्णः पुरुषः प्रकाशी पारुष्यहीनो धनतामुपैति ॥७८॥

यदि चन्द्र के स्थान में चूल्हे के रूपवाला स्पष्ट चिह्न हो तो वह संपदा-पूर्ण, प्रकाशमान, कठोरताहीन और ठेका आदि व्यापार से धन पाता है ७८

१३ समुत्थितं चेन्मणिबन्धदेशात्सर्पानुरूपं समुपैति भाग्याम्।

---

* हम पहले ही बता चुके हैं कि समय-निर्णय में अधिक सावधानी रखना चाहिए। हमने कुछ विदेशी-समय-निर्णय-मत भी चित्र नं० ४ में विशेषतः दे दिये हैं। पाठकों को ध्यानपूर्वक मनन करना चाहिए। संपादक

कारागृहं याति नरस्तदानीं नैजेन दोषेण समाकुलात्मा ७६॥

यदि क़ब्ज़े से सर्प के समान निशान भाग्यरेखा के पास चला जावे तो वह स्वदोष से व्याकुल हो जेल जाता है। यानी वह अपने अपराध से ही जेल जाता है ॥ ७६ ॥

१४काव्यान्तिके तिष्ठति शुद्धरूपं नात्त्रचिह्नं यदि भासमानम्
वेश्यासुसक्तो मनुजस्तदा स्यान्निन्दान्वितो निन्दितलोकवासी

यदि नक्षत्र का स्पष्ट चिह्न शुक्र के समीप हो तो वह वेश्यासक्त तथा निन्दित होता और निन्दित लोगों का सहवासी होता है ॥ ८० ॥

१५आयुष्यशेषे यदि भाति चिह्नं ताशनुरूपं युगलस्वरूपम्।
नारीसमूहैः सहितो नरः स्यान्निन्दान्वितः कामकलाकलापी

जिसकी आयुष्यरेखा (पितृरेखा) के शेषभाग में तारा के समान दो निशान हों वह स्त्रियों से घिरा, निन्दायुक्त तथा कामकलाओं के समुदाय-वाला कहाता है ॥ ८१ ॥ (देखो चित्र नं० १४)

अथ षोडशलक्षणाङ्कितकरतलफल

१कनिष्ठिकायास्तृतये परुष्के विभान्ति रेखाः सरलाश्च तिस्रः।
पुत्रत्रयं वै लभते मनुष्यः संवक्ररूपा बहुकन्यकाश्चेत् ॥८२॥

जिसके कनिष्ठा की तीसरी पर्व में तीन सीधी रेखाएँ हों वह निश्चय तीन पुत्र पाता है। जितनी सीधी रेखाएँ हों उतने ही पुत्र और जितनी टेढ़ी रेखाएँ हों उतनी ही कन्याओं का पिता होता है ॥ ८२ ॥

२अनामिकामूलगते यदास्तो रेखे सुक्षुद्रे कुटिले विशुद्धे।
कट्यार्तिभीतिं लभते मनुष्यः कामी कलावान्कमलासमेतः॥

जिसके अनामिका की मूल में दो छोटी, टेढ़ी व साफ़ रेखाएँ हों वह कामी, कलावान् एवं लक्ष्मीसंपन्न होता और कमर की पीड़ा पाता है ८३॥

३ यदागतं मध्यमिकासुमूले रेखात्रयं चेत्कुटिलस्वरूपम्।
वातार्तियुक्तो मनुजस्तदा स्याद्वादी विषादी विषयानुरक्तः ८४

जिसके मध्यमा की मूल में तीन टेढ़ी रेखाएँ हों वह वातरोग से पीड़ित होता, तथा वादी एवं विषादी और विषयानुरक्त होता है ॥ ८४ ॥

४ *आयुष्यशाखा यदि याति तर्जनीं वृद्धाङ्गुलिं चैति तथा द्वितीयिका। सौभाग्ययुक्तो मनुजो दयालुको दाता प्रियः स्याद्बहुजन्तुपालकः॥ ८५॥

यदि आयुरेखा (संभोगरेखा) की एक शाखा तर्जनी पर्यन्त जावे और दूसरी अँगूठे की ओर, तो वह सौभाग्यसंपन्न, दयावान्, दाता, सबका प्यारा और बहुपालक होता है॥ ८५॥

५संभोगरेखा यदि नीचभागे गुणत्रयेणाप्यवकर्तिता स्यात्।
वातामयः स्यान्मनुजस्तदानीं वाणीविलासो वनितारतश्च॥

यदि संभोगरेखा निचले भाग में तीन गुणा के × निशानों से कटी हो तो वह बादी रोग से पीड़ित, वाणी का विलास कर रमणियों में रत रहता है॥ ८६॥

६मातुः सुरेखा यदि नीचदेशे गोलाकृतिभ्यां च युता ह्यपूर्णा।
तदा नरः स्यात्प्रथमे वयस्के हत्याकरो हानिपरो विशोकी॥

यदि अपूर्ण माता का रेखा के नीचे की तरफ़ दो गोलाकार निशान हों, तो पहली उमर में हत्याकारी, हानि में परायण बनाती हैं। अर्थात् ये गोल निशान यदि निचले भाग में दिखें तो मध्य एवं वृद्धावस्था में वह प्राणी हत्याकारी होता है। और यदि आरम्भदेश में गोल निशान जितनी संख्या में हों ता पहली उमर में उतने ही आघात करता है॥ ८७॥

७ पितुः सुरेखा यदि मध्यभागे क्षुद्रा विभिन्ना परिपूर्णरूपा।
रागी विरागी मनुजस्तदा स्यात्पशुस्वभावो बहुहिंसकश्च॥

यदि पूर्ण पिता की रेखा निचले भाग में छोटी-छोटी रेखाओं से कटी हो तो वह रागी व विरागी होता, पशुओं-सा स्वभाव रखता तथा अनेक जीवों का घातक होता है॥ ८८॥

---

* हमारे देश में इसी को आयुरेखा मानते हैं, पर हमारा समस्त कार्य पितृरेखा को आयुरेखा मानकर हो रहा है। हो सकता है कि उक्तरेखा संभोगरेखा Heart line) को आयुरेखा मानकर भी समस्त जीवन की घटनाएँ ठीक-ठीक बताई जाती ैं।—संपादक

८आरम्भदेशे यदि पितृरेखा स्थूला सुपूर्णा विशदा सरक्ता।
तदा जनः स्यात्समराभिलाषी रक्ताभिपाती रिपुवंशघाती ८९

जिसकी पिता की रेखा शुरू में मोटी, बड़ी व साफ़ तथा रक्तवर्णवाली दिखे तो वह युद्धाभिलाषी होता तथा रक्तपात कर वैरियों का वंश विनाशता है ॥ ८९ ॥

९ अङ्गुष्ठकस्य प्रथमे परुष्के रेखा त्रिशाखा समुपैति पैत्रीम्।
तदा जनोऽयं प्रथमे प्रसङ्गे भूपादिवर्षे रमणीमुपैति ॥ ९० ॥

जिसके अंगूठे की पहली पोर में तीन शाखावाली रेखा पितृरेखा के समीप चली जावे तो वह सोलह आदि वर्षों के आने पर पहले प्रसंग में रमणी पाता है। यानी तीन शाखाओं में से पहली शाखा पितृरेखा के सामने जावे तो सोलह वर्ष में, दूसरी शाखा जावे तो २० वर्ष में और तीसरी शाखा जावे तो १९ वर्ष में पहले पहल रमणी के साथ रमण करता है ॥ ९० ॥

१० निशाकरस्थानगतं सुचिह्नं रेखात्रयं वेदमिताविभिन्नम्।
तदा जनो मज्जति वारिराशौ विद्याविहीनो विषयातुरश्च ९१

जिसके चन्द्रमा के स्थान में तीन रेखाओंवाला चिह्न चार रेखाओं से कटा प्रतीत हो तो वह विद्याहीन होता, विषयों में आतुर होकर नदी नाले आदि में डूब जाता है *॥ ९१ ॥

११मातापितृभ्यां सहितां सुभोगां भित्त्वा सुभाग्या यदि याति चान्द्रिम्। तदा जनो मस्तकघातमेति शेषे विभिन्ना मरणं प्रयाति ॥ ९२ ॥

जिसकी पिता, माता तथा आयुरेखा को भाग्यरेखा काटकर बुध के स्थान में चली जावे तो वह मत्थे में आघात पाता है। और यदि शेषभाग में मातृरेखा, पितृरेखा व आयुरेखा ये तीनों भाग्यरेखा से भिन्न दिखें तो मौत को ही पाता है॥ ९२ ॥

१२चन्द्रादधस्तिष्ठति शुद्धरूपं चिह्नं त्रिरेखं सरलस्वरूपम्।

---

* चंद्रस्थान पर स्थित चिह्नों के संबंध में अन्यत्र भी मिलेगा।

आद्ये नरो मन्दफलं प्रयाति मध्ये वयस्के शुभतामुपैति ९३ ॥

यदि सीधा एवं साफ़ तीन रेखाओंवाला चिह्न चन्द्र के निचले भाग में हो तो पहली अवस्था में मन्दफल (थोड़ा फल) पाना, तथा युवावस्था में शुभ फल यानी दौलत का पाना सूचित करता है ॥ ९३ ॥

१३ अधोविभिन्ना यदि पितृरेखा तदन्तिके स्यात्तु विसर्गचिह्नम् ।
तदा नरो नारिनिमित्तवादी रक्ताभिपातं कुरुते रणेप्सुः॥९४॥

जिसकी पितृरेखा निचले भाग में कटी हो और यदि उसके समीप विसर्ग का निशान दिखे तो वह स्त्री के निमित्त झगड़ा मचाता और युद्धाभिलाषी होकर सामने खून गिराता है ॥ ९४ ॥

१४ अङ्गुष्ठमूले विशदस्वरूपं वेदाङ्कव्यस्तं यदि भाति चिह्नम् ।
दौर्जन्ययुक्तो मनुजस्तदा स्याद्रक्ताभिपाती निजबन्धुघाती ९५

यदि उलटे चार के अंक का सा साफ़ निशान अंगूठे के मूल में हो तो वह दुर्जन तथा अपने ही बन्धुओं को मार सामने खून गिराता है ॥ ९५ ॥

१५ पितुःसुरेखा यदि नीचभिन्ना भाग्यस्य रेखा समुपैति चान्द्रिम्
संकोण चिह्ने मनुजस्तदा स्यान्नेत्रामयो रोगचयाभिभूतः ९६ ॥

यदि पितृरेखा निचले भाग में कटी दिखे और भाग्यरेखा (फेट लाइन) बुध पर्यन्त जावे, उस समय यदि संकोण चिह्न देखा जावे तो वह नेत्ररोगी तथा अन्य रोगों से घिर जाता है ॥ ९६ ॥

१६ समुत्थितं चेन्मणिबन्धदेशात्त्रिकोणचिह्नं परिभाति भिन्नम् ।
तदा नरः स्यात्परदेशवासी त्रासी धनाशी मरणं प्रयाति ९७ ॥

यदि कटा-सा त्रिकोणचिह्न मणिबन्ध (क़ब्ज़े) से उठा हुआ प्रतीत हो तो वह प्राणी परदेश में बसता एवं डरता तथा धनाभिलाषी हो मौत पाता है ॥ ९७ ॥ (देखो चित्र नं० १५)

अथ द्वादशलक्षणाङ्कितकरतलफलज्ञान

१ अनामिकायास्तृतये परुष्के रेखाद्वयं चिह्नतमं चकास्ति ।
कुशाग्रबुद्धिर्मनुजस्तदा स्याज्ज्ङ्गार्तिभीतिं यदि चैति भिन्नम् ॥

जिसकी अनामिका की तीसरी पोर में दो रेखाओंवाला चिह्न हो तो वह

तीव्रबुद्धिवाला होता है। यदि पूर्वोक्त चिह्न कटा प्रतीत हो तो उसे जाँघ की पीड़ा का भय होता है ॥ ९८ ॥

२कनिष्ठिकामूलगता विभान्ति रेखाश्च तिस्रः सरलस्वरूपाः।
तदा नरो दक्षिणबाहुघातं प्राप्नोति वामे यदि वामपाणौ९९॥

जिसके तीन सीधी रेखाएँ कनिष्ठिका (छोटी) अँगुली की मूल में हों तो वह दाहिनी भुजा में चोट खाता, और यदि बायें हाथ में पूर्वोक्त निशान हो तो बाईं भुजा में चोट खाता है ॥ ९९ ॥

३अनामिकामध्यमिकासुमूले रेखात्रयं चेत्सरलस्वरूपम्।
पादाभिघातं पुरुषः प्रयाति पापी प्रतापी परुषस्वभावः १००॥

जिसकी अनामिका एवं मध्यमा की मूल में सीधा तीन रेखाओंवाला निशान दिखे, वह पापी, प्रतापी तथा कठोर स्वभाववाला होता और पैरों में चोट खाता है ॥ १०० ॥

४यदागतं मध्यमिकासुमूले रेखाद्वयं क्षुद्रतरं विभाति।
परिश्रमासक्तमना मनुष्यः संखण्डितं चेच्छ्रमताविहीनः १०१

जिस समय मध्यमा की मूल में छोटा दो रेखाओंवाला निशान दिखे तो उस प्राणी को बड़ा मेहनती जानना। यदि पूर्वोक्त निशान खण्डित प्रतीत हो तो उसे मेहनत से बचना यानी आलसी तथा खुदग़र्ज़ होना बताता है ॥ १०१ ॥

५प्रदेशिनीमध्यमिकासुमध्ये रेखा यदैका यदि याति धात्रीम्।
शीर्षाभिघातान्मृतिमेति जन्तुः संभोगभिन्ना यदि नैति मृत्युम्॥

जिसकी तर्जनी एवं मध्यमा के बीच में से एक रेखा मातृरेखा के समीप पहुँचे वह सिर में चोट लगने से मौत पाता है। यदि पूर्वोक्त रेखा भोगरेखा से कटी दिखे तो वह केवल शीश में चोट पाता है पर मरता नहीं ॥१०२॥

६बृहस्पतिस्थानगतं विशुद्धं रेखात्रयं चिह्नतमं चकास्ति।
भूपादिकानां च सहायतः स्यात्सौभाग्यशाली मनुजो महात्मा

जिसके तीन रेखाओंवाला निशान बृहस्पति के स्थान में पहुँचा प्रतीत हो तो वह महात्मा होता और राजा एवं महाराजों की सहायता से सौभाग्यशाली होता है ॥ १०३ ॥

७ मातुः सुरेखा पितरं प्रयाति भिन्नं तदूर्ध्वं यतिसंख्यकाभिः।
तावन्मितांश्चौरसजातपुत्रान् प्राप्नोति प्राणी परवित्तपूर्णः १०४

यदि माता की रेखा पितृरेखा में मिल जावे और उसका ऊपरी भाग छोटी-छोटी जितनी रेखाओं से कटा दिखे तो वह पराये धन से पूर्ण होता तथा उतने ही औरसजात पुत्र पाता है ॥ १०४ ॥

८ क्षुद्रासमेता जननी सुरेखा स्वल्पा गभीरा समुपैति पैत्रीम्।
मातुः सुमानं मनुजः करोति तन्मानतस्स्याद्रुधिरप्रपाती १०५॥

यदि अल्प रूपवाली एवं गहरी माता की रेखा छोटी-छोटी रेखाओंयुक्त होकर पिता के पास पहुँच जावे (यानी मिल जावे) तो वह मनुष्य माता का बड़ा मान करता है। यानी माता पर घनिष्ठ प्रेम रखता है। उसी प्रेम से क्षयीरोगवाला होता और मुख से खून गिराता है ॥ १०५ ॥

९ पितुः सुरेखा मणिबन्धदेशात् संवक्रमध्या यदि याति धात्रीम्।
तदा जनश्चैकमना विलासी प्राप्नोति सौख्यं विपुलं विकासी ॥

यदि मणिबन्ध से उठी पितृरेखा बीच में टेढ़ी होकर मातृरेखा में मिल जावे तो एकाग्र मनवाला, विलासी, प्रकाशी और बड़े भारी सौख्य को पाने का सूचक है ॥ १०६ ॥

१० पितुःसुरेखोत्थितभाग्यरेखिकास्वल्पासुवक्रासमुपैतिमातरम्
आयुष्यमल्पं लभते स मानवः कुपथ्यभोजी द्विजदेवनिन्दकः॥

जिसके करतल में पितृरेखा से उठी भाग्यरेखा छोटी एवं टेढ़ी होकर मातृरेखा के समीप चली जावे तो वह कुपथ्य भोजन करनेवाला, देवता एवं ब्राह्मणों की निन्दा करता और अल्पायु पाता है ॥ १०७ ॥

११ समुत्थितं चेन्मणिबन्धदेशात् सर्पानुरूपं समुपैति काव्यम्।
तदा जनश्चौर्यपरः प्रतारी पापी प्रतापी परपत्त्रहारी ॥१०८॥

यदि मणिबन्ध से उठा सर्पाकार चिह्न शुक्र के समीप हो तो चौरकर्म-परायण, छली, पापी, प्रतापी और परपत्त्र हरनेवाले का सूचक जानना १०८॥*

* चोरी के विशेषरूप से चिह्न बुधालय में अथवा कनिष्ठा में रहते हैं। बुधालय से इस विषय का अधिक हाल ज्ञात होता है। —संपादक

१२ समुत्थितं चेन्मणिबन्धदेशाद्रेखाद्वयं याति यदा सुपित्रोः ।
तदा जनोऽयं जलयानयायी धनाभिधायी धनतामुपैति १०९

जिसके मणिबन्ध से उठा दो रेखाओंवाला निशान मातृरेखा तथा पितृ-रेखा के बीच में चला जावे तो वह जहाज़ या नाव द्वारा यात्रा कर धन पाता है। यानी समुद्र का सफ़र कर बहुत-सा पैसा जोड़ता है ॥ १०९ ॥

अथ सप्तदशलक्षणाङ्कितकरतलफल

१ कनिष्ठिकायास्तृतये परुष्के गुणाख्यचिह्नं विशदं विभाति।
चौर्ये रतः स्यान्मनुजस्तदानीं निर्बोधरूपो विगतप्रभावः ११०

यदि कनिष्ठा की तीसरी पर्व में गुणा का (×) निशान साफ़ हो तो वह अज्ञानी, विगतप्रभाववाला, तथा चोरी करनेवाला होता है ॥ ११० ॥

२ कनिष्ठिकायास्तृतयं परुष्कं संगम्य रेखा यदि याति सूर्यम् ।
तदा नरः स्यादपकारकारी चौर्यापहारी कृतसंशयश्च १११॥

यदि कनिष्ठा की तीसरी पोर से एक गहरी रेखा सूर्य पर्यन्त जावे तो वह सबकी बुराई करनेवाला, चोरी से धन हरनेवाला तथा शक्की मिजाज़ का होता है ॥ १११ ॥

३ अनामिकामूलगतं सुवक्रं रेखाद्वयं त्रिह्नतमं चकास्ति ।
ज्ञानेन पूर्णः पुरुषस्तदा स्यात् पदाधिकारी प्रमदाप्रसक्तः ११२॥

यदि अनामिका की मूल में टेढ़ा दो रेखाओंवाला निशान हो तो वह ज्ञानी, पदाधिकारी, तथा रमणियों में आसक्त रहता है ॥ ११२ ॥

४ प्रदेशिनीमूलगतं विभुग्नं चिह्नं द्विरेखं यदि याति मन्दम् ।
शीर्षाभिघातं लभते मनुष्यः संभ्रान्तचित्तो विभुतासमेतः ११३

तर्जनी की मूल में टेढा दो रेखाओंवाला निशान यदि शनैश्चर के पास पहुँच जावे तो वह भ्रान्तचित्त, विभुतासंपन्न होता और सिर में चोट पाता है ॥ ११३ ॥

५ बृहस्पतिस्थानगता सुभोगा अधस्सुपीनोपरितस्सुभिन्ना ।
तदा नरो दीनदशामुपैति दौर्भाग्यशाली बलताविहीनः ११४

यदि गुरु के स्थान में सुभोगरेखा (आयुरेखा) नीचे के भाग में मोटी हो तथा ऊपरले भाग में रेखामात्र से कटी दिखे तो वह दौर्भाग्यशाली, दुर्बल और दीनदशा पाता है ॥ ११४ ॥

६ भोगाधरस्थं विशदस्वरूपं रेखात्रयं लक्ष्मतरं विभाति ।
वातार्तियुक्तो मनुजस्तदा स्याद्व्यायामशीलो विषयातुरश्च ॥

जिसकी भोगरेखा के निचले भाग में तीन रेखाओंवाला स्पष्ट चिह्न हो वह बादी रोगवाला, कसरती और विषयातुर होता है ॥ ११५ ॥

७ मातुस्सुरेखा मिलितोर्ध्वदेशके स्पृष्टा यदा स्यादतिक्षुद्ररेखया ।
दोषातुरो लोककृताभिचारकैर्विषादिना वा मृतिमेति मानवः॥

जिस समय माता की रेखा ऊपरले भाग में मिली एवं छोटी रेखा से छुई दिखे तो दोषों, मनुष्य-कृत मारणादिकों अथवा विषादिकों से मौत पाता है ११६॥

८ मातुस्समीपे प्रतिभाति चिह्नं नाक्षत्ररूपं विशदस्वरूपम् ।
लोहाभिघातं लभते मनुष्यो भिन्नं यदा चेद् बहुस्वल्पघातम्॥

स्पष्ट रूपवाला नक्षत्र का चिह्न यदि मातृरेखा के समीप हो तो वह लोहे से चोट पाता और यदि पूर्वोक्त निशान कटा हुआ प्रतीत हो तो बहुत छोटा-सा घाव पाता है ॥ ११७ ॥

९ स्पृष्ट्वा सुधात्रीं यदि याति काव्यं रेखा गभीरा विशदा विक्षुद्रा
धन्वादिभिर्घातमुपैति प्राणी पारुष्यपूर्णःपिशुनस्वभावः ११८

गहरी एवं साफ़ एक छोटी-सी रेखा मातृरेखा को छूकर यदि शुक्र तक चली जावे तो वह कठोर एवं चुग़ुलखोर होता तथा धनुष, बाण या बन्दूक आदि से घायल होता है ॥ ११८ ॥

१० पितुः सुरेखोपरिगा विभाति भग्नीसुरेखा भणिता सुधीभिः
दारिद्र्ययुक्तो मनुजस्तदा स्यात्कान्ताभिलाषी कमलाविहीनः

यदि पितृरेखा के ऊपरले भाग में भग्नीरेखा हो तो वह दरिद्र होता तथा स्त्री की लालसा रखता है ॥ ११९ ॥ *

---

* विदेशी विद्वानों का मत है कि शुक्रालय पर खड़ी रेखाएँ पुरुषों के हाथ में स्त्रियों का प्रभाव तथा स्त्रियों के हाथ में पुरुषों का प्रभाव और आड़ी रेखाएँ समवर्ग के प्रभावों को (भले या बुरे जैसे दिखें) बनाती हैं। —संपादक

११ अङ्गुष्ठमध्यं यदि वेष्टयन्ती फणानुरूपा परिभाति रेखा।
व्यापारयुक्तो मनुजस्तदा स्यादाचारहीनो व्यभिचारशीलः॥

जिसके अंगूठे के मध्यभाग को लपेटती फन के समान एक रेखा हो वह आचारहीन, व्यभिचारी और व्यापारी कहाता है॥ १२०॥

१२ निशाकरस्थानगतं सुचिह्नं वृत्तार्धरूपं विशदं विभाति।
बुद्ध्या विबुद्धो मनुजस्तदा स्याद्धामाभिलाषी वनिताविलासी॥

जिसके चन्द्र स्थान में अर्धवृत्त का एक साफ निशान हो तो वह बुद्धिद्वारा विशेष बोध रखता तथा सुन्दरियों का अभिलाषी और विलासी होता है १२१॥

१३ मात्रा समेता जनकस्य रेखा क्षुद्रा विभिन्ना यदि मध्यभागे।
आघातपूर्णः पुरुषस्तदा स्यादानन्दहीनो दयिताविहीनः१२२

जिसकी मातृरेखा से मिली पितृरेखा मध्यभाग में छोटी-छोटी रेखाओं से फटी दिखे वह चोटों से घायल होता, आनन्दहीन, और प्यारी से विहीन होता है॥ १२२॥

१४अङ्गुष्ठमूले विशदा विक्षुद्रा भग्नीसुरेखा भणिता सुधीरैः।
दीनो दरिद्रो मनुजस्तदा स्याद्विद्याविहीनो विषयातुरश्च १२३

साफ़ एवं छोटी भग्नीरेखा यदि अंगूठे की मूल में हो तो वह दीन, दरिद्री, विद्याहीन और विषयातुर होता है॥ १२३॥

१५समुत्थितं चेन्मणिबन्धदेशाद्रेखात्रयं क्षुद्रतमं विभाति।
तदा जनोऽयं जलयानयायी सांयात्रिको वा मरणं प्रयाति १२४

यदि कब्ज़े से छोटा-सा तीन रेखाओंवाला निशान उठा हो तो वह समुद्र[†] की यात्रा करता है अथवा जहाजी होकर मर जाता है॥ १२४॥

---

† विदेशी विद्वान् समुद्र यात्रा के चिह्न दूसरे ही बताते हैं। कुछ कहते हैं कि पितृरेखा (आयुरेखा) से नीचे की ओर चंद्र स्थान की ओर जानेवाली रेखा बड़ी होने पर समुद्रयात्रा बताती है। कुछ लोगों का मत है कि कनिष्ठा के नीचे चंद्र के स्थान में बड़ी २ आड़ी रेखाएँ जलयात्रा की रेखाएँ कहाती हैं। हमने स्वयं अनेकोंबार इन दोनों ही कथनों को सत्य पाया है, किन्तु उपरोक्त कही बात अभी तक कहीं पायी नहीं गई।—संपादक

१६ पितुः सुरेखा यदि नीचदेशे संवक्ररूपा मिलिता जनन्याम्
दीर्घायुषं तं पुरुषं करोति विद्यान्वितं वैद्यवरं विनीतम् १२५॥

मातृरेखा में मिली पितृरेखा निचले देश में टेढ़ी दिखे तो उसे बड़ी उम्रवाला, विद्यासंपन्न, वैद्यों में प्रधान एवं विनयवाला करती है १२५ ॥

१७ भाग्यस्य रेखा मणिबन्धदेशात् पैत्रीं विभिद्य यदि याति मात्रीम् । भव्यान्वितं तं मनुजं करोति बन्धुप्रियं बोधरतं वरेण्यम् ॥ १२६ ॥

जिसकी भाग्यरेखा पितृरेखा को काटकर कब्जे से मातृरेखा के समीप चली जावे तो उसे कल्याणसंपन्न, भाइयों का प्यारा, ज्ञानी एवं प्रधान बना देती है ॥ १२६ ॥ (देखो चित्र नं० १७)

चतुर्दशलक्षणाङ्कित करतलफल

१ कनिष्ठिकायास्तृतये परुष्के ऋज्वी सुरेखा यदि याति मध्यम् ।
तदा नरो मानसिको महौजाश्चातुर्यचञ्चुश्चपलस्वभावः ॥

एक सीधी रेखा यदि कनिष्ठा की तीसरी पोर से बीच की पोर तक जावे तो वह मानसिक गुणशाली, बलशाली, चतुर तथा चपलस्वभाव-वाला कहाता है ॥ १२७ ॥

२ गुरूपरिस्थं यदि भाति चिह्नं रेखात्रयं भुग्नतरस्वरूपम् ।
पित्ताधिकोऽसौ पुरुषस्तदा स्यात् पाखण्डकारी परुषस्वभावः॥

यदि गुरु के ऊपरी भाग में (तर्जनी की तीसरी पोर में) टेढ़ा एवं तीन रेखाओंवाला चिह्न हो तो वह पित्तरोगी, पाखण्डकारी और कठोर स्वभाववाला होता है ॥ १२८ ॥

३ दिवाकरस्थानगतं सुचिह्नं तिर्यग्विभिन्नं सरलं द्विरेखम् ।
संकोणभिन्नं यदि वामदक्षे तदा नरः शिल्परतः सुबुद्धिः १२९॥

सूर्य के स्थान (अनामिका की मूल) में सीधा एवं दो रेखाओंवाला निशान तिरछी लकीर से कटा हो और बाईं एवं दहिनी तरफ़ कोणों से खण्डित दिखे तो वह शिल्पकार्य में प्रवृत्त तथा सुबुद्धि होता है ॥ १२९ ॥

४ यदा गतं मध्यमिकासुमूले रेखाद्वयं क्षुद्रतरं चकास्ति।
कष्टाधिकं वै लभते मनुष्यः पित्ताधिकः पापरतः कुवेषः १३०॥

जिसकी मध्यमा के मूल में दो रेखाओंवाला छोटा-सा चिह्न हो वह पित्तरोगी, पापी, बुरे वेषवाला होता और बहुत कष्ट पाता है ॥ १३० ॥

५ सुभोगशाखा विशदा विक्षुद्रा पैत्रीं विभिद्य यदि याति भौमम्। वृथापलापी मनुजस्तदा स्याद्विश्वासयुक्तो विभुता-समेतः॥ १३१ ॥

यदि साफ़ व छोटी सुभोगरेखा की शाखा मातृरेखा एवं पितृरेखा को काटकर मङ्गल के समीप जावे, तो वह बकवादी तथा विश्वासी और विभुता पूर्ण रहता है ॥ १३१ ॥

६ अङ्गुष्ठशाखावृतशुद्धरूपं रेखाचतुष्कं समुपैति पैत्रीम्।
वृथाभिमानी मनुजस्तदा स्यान्मोहाभिभूतो मदनातुरश्च १३२

अंगूठा की शाखा से घिरा हुआ, सीधा चार रेखाओंवाला निशान यदि पितृरेखा के समीप चला जावे तो वह वृथाभिमानी, मोह से घबरानेवाला तथा काम-पीड़ित होता है ॥ १३२ ॥

७ भोगाधरस्थं विशदस्वरूपं नवाङ्कपञ्चाङ्कयुतं गुणाख्यम्।
रक्ताभिपाते निरतो मनुष्यो मान्यो वदान्यो बलतासमेतः १३३

जिसकी भोगरेखा के नीचे साफ़ नव एवं पाँच का अंक गुणा के निशान सहित हो तो वह फ़स्त खुलाने के कार्य में निपुण, मान्यवर, बड़ा दानी और बलवान् होता है ॥ १३३ ॥

८ क्षपाकरस्योपरिगं विभाति तिर्यग्विभिन्नं यदि चैकरेखम्।
आयुष्यमल्पं लभते मनुष्यः कुपथ्यसेवी सरलस्वभावः १३४॥

चन्द्र के ऊपर यानी मातृरेखा के समीप एक रेखावाला निशान यदि तिरछी रेखा से कटा हुआ दिखे तो वह कुपथ्यों का सेवन करता, सीधे स्वभाववाला और अल्पायु होता है ॥ १३४ ॥

१—छत्तीस ३६ वर्ष पर्यन्त अल्पायु को आचार्यों ने माना है। इसमें भी तीन भेद होते हैं।

९ स्वल्पा सशाखा यदि भाग्यरेखा पैत्रीं विभिद्य समुपैति मात्रीम् । बाणादिभिर्घातमुपैति प्राणी विद्यान्वितो बन्धुविवर्जितश्च ॥ १३५ ॥

जिसकी शाखा समेत छोटी भाग्यरेखा (फेटलाइन) पितृरेखा को काट कर मातृरेखा के पास पहुँचे तो वह विद्यासंपन्न, बन्धुरहित होता और बाणादि से चोट पाता है ॥ १३५ ॥

१० स्वल्पा सुपैत्री मिलिता धरित्र्यां क्षुद्राविभिन्नश्च तदूर्ध्वदेशः तदा जनः सर्वजनप्रियस्स्याद्विश्वासयुक्तो विभुतामुपेतः १३६॥

छोटी पितृरेखा मातृरेखा में मिल जावे और उसका ऊपरला भाग छोटी रेखा से कटा दिखे तो वह विश्वासी, प्रभुतासंपन्न तथा सबका प्यारा होता है ॥ १३६ ॥

११ काव्यालये तिष्ठति वक्ररूपं रेखाचतुष्कं विशदस्वरूपम् । कान्तासमूहं लभते मनुष्यः कामी कलावान्कमलासमेतः १३७

शुक्रस्थान में टेढ़ा एवं साफ़ चार रेखाओंवाला निशान हो तो वह कामी, कलावान्, लक्ष्मीसंपन्न, और स्त्रीसमुदाय को पाता है ॥ १३७ ॥

१२ निशाकरस्थानगतं सुचिह्नं चुल्लीसरूपं यदि मध्यभिन्नम् । तदा जनोऽयं पतितो महोच्चात् संखण्डितं चेद्विपदाविमुक्तः १३८

चन्द्र के स्थान में चूल्हे के समान रूपवाला चिह्न बीच में कटा-सा प्रतीत हो तो वह बड़े ऊँचे स्थान से लुढ़क पड़ता है । यदि पूर्वोक्त निशान क्षुद्र रेखाओं से कटा दिखे तो वह विपदाओं से छूटता है ॥ १३८ ॥

१३ शुक्राधरस्थं विशदस्वरूपं वैशृङ्खलं चिह्नतमं चकास्ति । मिथ्याप्रलापी पुरुषस्तदा स्यात् सुखाभिलाषी सुषमासमेतः ॥

विशृंखलनामक साफ़ चिह्न शुक्र के नीचे हो तो वह मिथ्यावादी, सुख का अभिलाषी और परम शोभासंपन्न होता है ॥ १३९ ॥

१४ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशाद्वक्रा कुरेखा समुपैति मात्रीम् । तदा जनोऽयं जनतासमेतो घृणी गुणी स्यादभिमानहीनः ॥

यदि कब्जे से उठी टेढ़ी छोटी रेखा मातृरेखा के सामने चली जावे तो वह जनसम्पन्न, ऋणी, गुणी और अभिमानहीन होता है ॥ १४० ॥ (देखो चित्र नं० १८)

चतुर्दशलक्षणाङ्कित करतलफल

१ कनिष्ठिकायास्तृतये परुष्के कोणद्वयं चिह्नतमं चकास्ति।
चौर्यानुरक्तो मनुजस्तदा स्याद्वृथाभिमानी विषयातुरश्च १४१

कनिष्ठा की तीसरी पोर में दो कोणोंवाला निशान दिखे तो वह वृथाभिमानी, विषयातुर और पक्का चोर होता है ॥ १४१ ॥

२ अनामिकायास्तृतये परुष्के वृत्तार्धचिह्नं विशदं विभाति।
दारिद्र्ययुक्तो मनुजो मनीषी दुःखेन कालं नयते क्षुधालुः १४२

जिसका अनामिका की तीसरी पोर में अर्धवृत्त का साफ़ निशान हो वह बुद्धिमान्, दरिद्री और भूखा रहकर दुःख से अपना समय काटता है ॥ १४२ ॥

३ छायासुतस्योपरिगं चकास्ति क्षुद्रं सुचिह्नं सरलं त्रिरेखम्।
तदा नरः स्याद्विजयाभिलाषी योद्धा विबोद्धा कलहातुरश्च॥

जिसके शनि के ऊपर छोटा, सीधा एवं तीन रेखाओंवाला निशान हो वह विजयाभिलाषी, बड़ा शूरमा, विज्ञाता होता और लड़ाई लड़ने में लगा रहता है ॥ १४३ ॥

४ दिवाकरस्थानगतं सुरेखं तिर्यग्विभिन्नं युगरेखिकाभ्याम्।
तदा जनोऽयं सुखदुःखमेति भुग्नं यदा चेच्छुभतामुपैति १४४

जिसका सीधी रेखावाला निशान सूर्य के स्थान में दो रेखाओं से तिरछा कटा-सा दिखे वह समय-समय पर सुख एवं दुःख पाता है। और यदि पूर्वोक्त निशान टेढ़ा-सा दिखे तो वह शुभता को पाता है ॥ १४४ ॥

५ संभोगरेखा विशदा गभीरा पूर्णस्वरूपा यदि याति मन्दम्।
सौभाग्यशाली पुरुषो विशाली संतोषकारी स्वजनापकारी॥

साफ़ एवं गहरी पूर्णरूपवाली सुभोगरेखा (आयुरेखा) शनैश्चर पर्यन्त

१—युग्मन्तु युगलं युगमित्यमरः।

जावे तो वह सौभाग्यशाली, विशाली, संतोषकारी तथा स्वजनों का बुरा चेतनेवाला होता है ॥ १४५ ॥

६बृहस्पतिस्थानगतं त्रिशूलं चिह्नं यदा चेद्विशदं विभाति।
तदा जनोऽयं कृशतामुपैति मूर्च्छादिरोगैः परिपीडिताङ्गः १४६

जिसके साफ़ त्रिशूल का निशान बृहस्पति के स्थान में हो वह मिरगी आदि रोगों से पीड़ित अंगवाला तथा दुर्बल होता है ॥ १४६ ॥

७ मातुः सुरेखा यदि नीचदेशे वेदाङ्कवृत्तार्धयुता विभिन्ना।
पदाभिलाषी पुरुषस्तदा स्याद्गर्वेण युक्तो गुरुतामुपेतः १४७ ॥

यदि मातृरेखा निचले भाग में चार के अंक एवं वृत्तार्ध से संयुक्त तथा कटी-सी दिखे तो घमण्डी, गुरुतासंपन्न और ऊँचा पदाभिलाषी कहानेवाला सूचित करती है ॥ १४७ ॥

८मातुः सुरेखा यदि मध्यवक्रा धन्वाकृतिर्भग्नतरा विभाति।
चतुष्पदाघातमुपैति जन्तुर्जयाभिलाषी जनतासमेतः १४८ ॥

यदि मातृरेखा बीच में टेढ़ी, धनुषाकार तथा बहुत कटी-सी हो तो वह जयाभिलाषी जनसमूहयुक्त, और चौपाये की चपेट से चोट पाना सूचित करती है ॥ १४८ ॥

९काऽव्यालयस्योपरिगा विभाति भग्नीसुरेखा यदि चायुषीया।
सुखाभिलाषी मनुजस्तदा स्याल्लज्जामुपेतो ललनासमेतः १४९॥

यदि आयुरेखा की भग्नीरेखा शुक्र के ऊपरले भाग में हो तो वह लज्जा-वान्, ललनायुक्त, तथा सुखाभिलाषी होता है ॥ १४९ ॥

१०अङ्गुष्ठपृष्ठे विशदस्वरूपं रेखाविभिन्नं यदि वृत्तचिह्नम्।
तदा नरो मज्जति वारिराशौ व्यायामसक्तो व्यसनातुरश्च १५०

यदि अँगूठे की पीठ पर रेखा से कटा हुआ वृत्त का निशान (यानी मोहर का सा चिह्न) हो तो वह कसरती, जुआ आदि खेल खेलता तथा नदी आदि में डूबता है ॥ १५० ॥

११ अङ्गुष्ठमूले परितो विभाति नाक्षत्रचिह्नं विशदस्वरूपम्।

वामासमेतो मनुजो मनस्वी नानासुभोगं नितरां भुनक्ति १५१

साफ नक्षत्र (स्टार) चिह्न अंगूठे के मूल में हो तो वह मनस्वी सुन्दरियों से युक्त होता और नाना भाँति के सुभोग अधिकतर भोगता है ॥ १५१॥*

१२ जैवातृकस्थानगतं विशालं विभाति चिह्नं यदि न्यूनकोणम्
नायं नरः स्यात्परिणामदर्शी स्वकीयदोषान्मरणं प्रयाति १५२

न्यूनकोण का निशान यदि विशेषतः चन्द्र स्थान में हो तो वह अग्रशोची नहीं होता, वरन् अपने ही दोष से मौत पाता है ॥ १५२ ॥

१३ भाग्यस्य रेखोपरिगं विभाति विटङ्कतुल्यं यदि शुद्धचिह्नम्।
शूलार्तियुक्तो मनुजस्तदा स्याद्वामाकरे चेद्रुजताविशेषः १५३॥

यदि कबूतरों के दरबा के समान साफ निशान भाग्यरेखा के ऊपर हो तो वह शूलपीड़ा से पीड़ित होता है। यानी उसके पेट में प्रायः पीड़ा बनी रहती है। और यदि पूर्वोक्त निशान सुन्दरियों के करतल में भाग्यरेखा के ऊपर दिखे तो रोग की विशेषता होती है। यानी शूलरोग अधिकता से होता है ॥ १५३ ॥

१४ पितुः सुरेखा मणिबन्धमुक्ता कौटिल्यरेखाद्वयसंयुता चेत्।
आद्ये वयस्के शुभमेति प्राणी रेखात्रये सप्तति वत्सरं नो १५४

जिसके करतल में पितृरेखा कब्जे से छूटी हुई टेढ़ी दो रेखाओं से युक्त हो तो वह पहली अवस्था में शुभदायक फल पाता है। और यदि तीन रेखाओं से युक्त दिखे तो सत्तर वर्ष पर्यन्त शुभदायक फल नहीं पाता है १५४ (देखो चित्र नं० १६)

षोडशलक्षणाङ्कितकरतलफल

१ चन्द्रात्मजस्थानगतं विभाति वृत्तार्धचिह्नं विशदस्वरूपम्।
बुद्ध्या विहीनो मनुजस्तदानीं प्रासभ्यदोषान्मरणं प्रयाति॥

यदि बुध स्थान में अर्धवृत्त का निशान हो तो बुद्धिहीन तथा अपने हठदोष से मौत पाना सूचित करता है ॥ १५५ ॥

---

* यह विदेशियों का मत भी है। शुक्रालय पर नक्षत्र चिह्न प्रायः भोग का ही द्योतक है। —संपादक

२सौम्यालयान्ते दिनपालये वा रेखा यदैका सरला विभाति।
सत्कर्मकारी मनुजो महात्मा धर्माधिकारी श्रमतासमेतः १५६

बुध स्थान के समीप या सूर्य के स्थान में यदि एक साधी रेखा हो तो वह प्राणी महात्मा, भले कामों का करनेवाला तथा धर्माधिकारी और परिश्रमशाली होता है ॥ १५६ ॥

३अनामिकामध्यमिकासुमध्ये रेखा सुवक्रा यदि याति भानुम्
महाभिमानी मनुजस्तदा स्यान्मौढ्येन युक्तो महसा विहीनः ॥

अनामिका और मध्यमा के बीच के भाग में एक छोटी एवं मोटी-सी टेढ़ी रेखा यदि सूर्य के समीप जावे तो वह बड़ा अभिमानी, मूर्ख, और तेजहीन रहता है ॥ १५७ ॥

४मार्तण्डपुत्रालयगा विभान्ति रेखाः सुक्षुद्रा रससंमिताश्चेत् ।
उद्योगशाली पुरुषस्तदा स्यात् सौख्यादिहीनः श्रमताविहीनः॥

शनि स्थान में छोटी-सी छः रेखाएँ हों तो वह उद्योगशाली, परिश्रम रहित, और सौख्यहीन कहाता है ॥ १५८ ॥

५संभोगरेखा गुरुमन्दिरस्था तस्याः सुशाखा यदि चैति मन्दम्।
वित्तार्जकः स्यात्पुरुषः पवित्रो नारीविहीनो नयतामुपेतः १५९

संभोगरेखा (अस्मद्देशीय आयुरेखा) यदि तर्जनी पर्यन्त चली जावे और उसकी एक शाखा शनि की तरफ़ जावे तो वह दौलत बटोरता, एवं नीतियुक्त और स्त्रीहीन होता है ॥ १५९ ॥*

६सुरेन्द्रपूज्यालयगं विभाति तिर्यग्विभिन्नं सरलं द्विरेखम् ।
धर्मी जनोऽयं शुभतामुपैति भिन्नं यदा चेच्छिरघातमेति १६०॥

बृहस्पतिस्थान में सीधा दो रेखाओंवाला निशान तिरछा कटा हो तो वह धर्मी तथा शुभ फल पाता है। और यदि पूर्वोक्त निशान अन्य रेखाओं से कटा दिखे तो वह शीश में चोट पाता है ॥ १६० ॥

७बृहस्पतिस्थानगता सुवक्रा रेखा यदैका यदि याति मात्रीम्

---

* यह बड़े मार्के की बात यहाँ पर कही गई है। —संपादक

उग्रस्वभावो मनुजस्तदा स्यादुन्मत्तरूपी मदनातुरश्च १६१॥

बृहस्पतिस्थान में टेढ़ी एक रेखा मातृरेखा के सामने चली जावे तो वह उग्रस्वभाववाला, मतवाला, और कामपीड़ित होता है ॥ १६१ ॥

८संभोगरेखा यदि नीचदेशे भिन्ना यदा स्याद्युगरेखिकाभ्याम्
शूरार्दितोऽयं समरे मनुष्यः प्राप्नोति मृत्युं सहसा सहिष्णुः १६२

जिसके भोगरेखा (आयुरेखा) निचले भाग में दो रेखाओं से कटी प्रतीत हो तो वह लड़ाई में वीरों द्वारा सताया हुआ, सहनशील होता और एकाएकी मौत पाता है ॥ १६२ ॥

९संभोगरेखा यदि मध्यभागे खड्गेन भिन्ना विशदा विभाति।
द्रव्यावने घातमुपैति प्राणी शेषे विभिन्ना स्वधने त्वयाशिम् १६३

स्पष्ट संभोगरेखा यदि बीच में खड्गाकार (तलवार के समान) निशान से कटी हो तो वह दौलत की रखवाली करने में चोट खाता है। और यदि पूर्वोक्त निशान शेष भाग में कटा दिखे तो वह अपने ही माल की रखवाली में मारा जाता है ॥ १६३ ॥

१० मातुः सुरेखा यदि नीचभागे गुणत्रयेणाप्यवखण्डिता स्यात्
स्वमानरक्षानिरतः सुदुःखी ह्रस्वा प्रशंसी द्विगुणावतंसी १६४

यदि मातृरेखा निचले भाग में तीन गुणा के निशानों से कटी दिखे तो वह अपनी मान रक्षा करने में परायण और बड़ा दुःखी होता है। यदि पूर्वोक्त रेखा छोटी-सी हो तो वह बड़ाई पाता है। यदि पूर्वोक्त निशान दूना हो तो वह गौरवसंपन्न होता है ॥ १६४ ॥

११ अङ्गुष्ठशाखावृतमध्यभागं रेखात्रयं पर्वयुगे विभाति।
तदा नरो बन्धनभीतिमेति दीर्घं यदा चेत्फलमन्दता स्यात् १६५

अँगूठे की शाखाओं से घिरा मध्यभाग में तीन रेखाओं का निशान अँगूठे की दूसरी पोर में हो तो वह क़ैद का भय पाता है। यदि पूर्वोक्त निशान दीर्घाकार हो तो फल की अल्पता होती है ॥ १६५ ॥ *

---

* प्रसिद्ध फ्रेंच एवं अमेरिकन विद्वानों का मत है कि संसार से एक प्रकार से अलग रहना अथवा जेलखाने में रहना, आयुरेखा (अस्मद्देशीय पितृरेखा) के भीतर शुक्र के स्थान में अथवा आयुरेखा के इधर-उधर चतुष्कोण चिह्न का परिणाम है। —संपादक

१२अङ्गुष्ठपृष्ठे प्रथमे परुष्के रेखात्रयं क्षुद्रतरं चकास्ति।
तदा मनुष्यो वधतामुपैति पाशेन विद्धो निजबन्धुहीनः १६६

जिसके अगूठे की पीठ पर पहली पोर में छोटा-सा तीन रेखाओं का निशान हो वह बन्धुहीन होकर फाँसी (मौत) पाता है ॥ १६६ ॥

१३क्षपाकरस्योपरिगं विभाति नाक्षत्ररूपं विशदस्वरूपम्।
विश्वासदानैः प्रथितो मनुष्यो दीनो दरिद्रो धनतामुपैति १६७

चन्द्र के ऊपरले स्थान में साफ़ नक्षत्र का निशान हो तो वह विश्वास और दान से विख्यात होता है। यदि पूर्वोक्त निशान दरिद्री के हाथ में दिखे तो वह दौलत पाता है ॥ १६७ ॥

१४पितुः सुरेखा मिलिता जनन्या मध्ये सुकोणं यदि भाति चिह्नम्। अल्पायुषं तं मनुजं करोति नीचाश्रयं निन्दितकर्मकारम् ॥ १६८ ॥

पितृरेखा मातृरेखा के बीच में मिली हुई दिखे और वहाँ पर कोण का निशान हो तो अल्पायु एवं नीचों का साथी तथा बुरे कामों का करनेवाला सूचित करता है ॥ १६८ ॥

१५ पित्रा वियुक्ता मणिबन्धदेशे वक्रा सुभाग्या यदि याति भोगाम्। बुद्ध्या विहीनो मनुजो विवादी हासी विलासी कलहातुरश्च ॥ १६९ ॥

जिसके कब्जे में पितृरेखा से छुटी व टेढी भाग्यरेखा भोगरेखा के सामने चली जावे तो वह बुद्धिहीन, विवादी, हासी एवं विलासी और लड़ाई लड़ने में लगा रहता है ॥ १६९ ॥

१६पितुस्सुरेखोपरिगा विभाति रेखा गभीरा विशदा विक्षुद्रा।
भयंकरः स्यान्मनुजस्तदानीं दर्शी विमर्शी विषयारतश्च १७०

पितृरेखा के ऊपर प्राप्त हुई रेखा गहरी, साफ़ एवं छोटी हो तो वह भयंकर होता है और अशुभ देखने एवं विचारनेवाला तथा विषयों में फँसा रहता है ॥ १७० ॥ (देखो चित्र नं० २०)

द्वादशलक्षणाङ्कितकरतलफल

१ कनिष्ठिकायास्सकले परुष्के मध्ये त्रिरेखं सरलं विभाति ।
तदा नरो दर्शनशास्त्रवेत्ता विचारशीलो बुधवृन्दवन्द्यः १७१॥

जिसकी कनिष्ठा की तीनों पोरों के बीच में तीन रेखाओंवाला सीधा निशान हो तो वह दर्शनशास्त्रवेत्ता, विचारशील तथा पण्डितों से वन्दनीय होता है ॥ १७१ ॥

२ पैत्रीं सुमात्रीं च तथा सुभोगां भित्त्वा पताका यदि याति चान्द्रीम् । बाल्ये सुमध्ये च शुभाभिलाषी वार्द्धे प्रवृद्धिं पुरुषः प्रयाति ॥ १७२ ॥

यदि पितृरेखा, मातृरेखा तथा सुभोगरेखा को काटकर पताका नामक रेखा बुध पर्यन्त चली जावे तो वह बाल्यावस्था एवं युवावस्था में शुभाभिलाषी तथा वृद्धावस्था में बड़ी बढ़ती पाता है ॥ १७२ ॥

३ शनैश्चरस्थानगतं विक्षुद्रं चिह्नं त्रिरेखं सरलं विभाति ।
वक्षस्स्थलाघातमुपैति प्राणी सम्पत्तिशाली विपदाविहीनः ॥

यदि शनि स्थान में तीन रेखाओंवाला छोटा एवं सीधा निशान हो तो वह संपत्तिशाली, विपद्हीन होता और वक्षस्थल में चोट पाता है १७३॥

४ संभोगरेखाधिषणालयस्था कोणेन युक्ता यदि चोर्ध्वभागे ।
स्वार्थी सुमानी मनुजस्तदानीं प्रासभ्यदोषान्निधनंप्रयाति १७४

यदि बुध से चली बृहस्पति के स्थान में स्थित संभोगरेखा ऊपरले भाग में कोण चिह्न युक्त प्रतीत हो तो वह स्वार्थी (मतलबी), बड़ा मानी और हठदोष से मौत पाता है ॥ १७४ ॥

५ सुभोगरेखा गुरुगा विभाति त्रिकोणयुक्तश्च तदूर्ध्वदेशः ।
तदा जनोयं जनतामुपैति विनष्टवित्तो विविधामयश्च॥ १७५॥

सुभोगरेखा (आयुरेखा) यदि बृहस्पति के स्थान में हो और उसका ऊपरला भाग त्रिकोणाकार निशानयुक्त हो तो वह द्रव्यहीन, अनेक रोगोंवाला और जनसमूह से युक्त होता है ॥ १७५ ॥

६ भोगाधरस्थं विशदं विभाति चिह्नं यदा चार्द्धविसर्गतुल्यम् ।
संपूर्णकार्ये श्रमतामुपैति नार्या यदा चेत्प्रसवेऽतिकष्टम् १७६॥

यदि साफ़ व आधे विसर्ग के समान निशान भोगरेखा के निचले भाग में हो तो वह परिश्रमी होता है । यदि पूर्वोक्त निशान स्त्रियों के करतल में हो तो वे प्रसवकाल में (बच्चा जनने में) बड़ा कष्ट पाती हैं ॥ १७६ ॥

७ काव्यालयादुत्थितवक्ररेखा भोगां विभित्त्वा यदि याति चान्द्रिम् । तदा नरोऽयं शिरसा विभिन्नः पाशाग्रविद्धो मरणं प्रयाति ॥ १७७ ॥

जिसके शुक्र स्थान से चली हुई टेढ़ी रेखा भोगरेखा को काटकर बुध के पास चली जावे तो उसका शिरच्छेद होता अथवा फाँसी द्वारा मौत पाता है १७७*

८ मातुस्सुरेखोपरिगं विभाति चिह्नं विक्षुद्रं यदि पञ्चरेखम् ।
सौशील्ययुक्तो मनुजो महात्मा कार्ये स्वकीये निरतो विवेकी॥

विशेषकर छोटा सा पाँच सीधी रेखाओंवाला निशान मातृरेखा के ऊपर यदि हो तो वह बड़ा शीलवान्, महात्मा और अपने कार्य में लगा हुआ विचारवान् होता है ॥ १७८ ॥

९ पितुस्सुरेखोपरिगा सुवक्रा रेखा विक्षुद्रा यदि याति मात्रीम् ।
तदा नरः सन्नपमृत्युभीतो विषप्रयोगान्मरणं प्रयाति १७९ ॥

जिसे पितृरेखा के ऊपर छोटी सी टेढ़ी रेखा मातृरेखा के पास चली जावे तो वह अकालमौत से डरता और विष-प्रयोग से मौत पाता है । अर्थात् उसे विष खिला देने से मौत होती है ॥ १७९ ॥

१० जैवातृकस्थानगतं विभाति वृत्तार्धचिह्नं विशदं विशालम् ।
तदा जनोऽयं जनयूथभिन्नो विभीतचित्तो निधनं प्रयाति १८०

चन्द्र स्थान में साफ़ अर्धवृत्त का विशाल निशान हो तो वह जनसमूह द्वारा पिटता तथा डरपोक चित्तवाला होता है ॥ १८० ॥

---

* कुछ आचार्यों का मत है कि ऐसी रेखा व्यक्ति के उस समय किसी प्रकार का डाक्टरी इलाज अथवा आपरेशन आदि भी सूचित करती है। यह अन्य सहायक रेखाओं द्वारा देख लेना चाहिए। इसका कोई न कोई चिह्न ठीक उसी उम्र में स्वास्थ्य रेखा पर भी मिलेगा।—संपादक

११बुधालयस्था विशदा विक्षुद्रा रेखा सुवक्रा यदि याति भोगाम्
तदा नरो यौवनस्वस्थचित्तः क्रूरः सुलोभी परकार्यकारी १८१॥

बुध स्थान में साफ़, छोटी व टेढ़ी सी रेखा भोगरेखा पर्यन्त जावे तो वह यौवनकाल में स्वस्थचित्त, निर्दयी, बड़ा लोभी तथा पराये काम का करनेवाला होता है ॥ १८१ ॥

१२भाग्योत्थिता या मणिबन्धमेति रेखा गभीरा विशदा सुवक्रा
पापानुसारी मनुजो मनस्वी प्राप्नोति मृत्युं निजकर्मदोषात् १८२

भाग्यरेखा से उठी रेखा गहरी, साफ़ व टेढ़ी होकर मणिबन्ध के पास चली जावे तो वह मनमौजी (यथेच्छाचारी) पापी, अपने कर्मों के दोष से मौत पाता है ॥ १८२ ॥ (देखो चित्र नं० २१)

चतुर्दशलक्षणाङ्कितकरतलफल

१ कनिष्ठिकायास्त्रितये परुष्के वृत्तार्धचिह्नं विशदं विभाति ।
स्वीयापराधान्मृतिमेति प्राणी पाशेन विद्धशिरसा विभिन्नः॥

कनिष्ठा की तीसरी पोर में साफ़ अर्धवृत्त का निशान हो तो वह फाँसी पाता अथवा अपने ही अपराध से मौत पाता है ॥ १८३ ॥

२भोगाधरस्था विशदा विक्षुद्राश्चुल्लीसरूपा यदि भान्ति रेखाः।
शैथिल्यकायो मनुजो मलाक्तो मन्दस्वभावो ममतामुपैति १८४

भोगरेखा के नीचे साफ़ व छोटी सी होकर चूल्हे समान स्थित रेखाएँ यदि हों तो वह ढीले अंगवाला, मल से भरा हुआ, नीच स्वभाववाला और मोही होता है ॥ १८४ ॥

३ ऋज्वी सुभोगा धिषणालयान्ता तस्याः सुशाखा समुपैति
शौरिम्। परिश्रमासक्तमना मनुष्यः कष्टेन कालं नयते करालम्॥

सीधी सुभोगरेखा (आयुरेखा) बृहस्पति स्थानपर्यन्त जावे और उसकी शाखा शनि के पास पहुँचे तो वह मेहनत में मन लगाता हुआ अपना काल बिताता है ॥ १८५ ॥

४ भोगाधरस्थं विशदं विभाति जिह्वासुमूलीयसमानरूपम् ।
वित्तं मनुष्यो लभते ह्यचिन्त्यं पूर्वोक्तमानेन विचारणीयम् १८६

जिह्वामूली रूपवाला साफ़ निशान भोगरेखा के नीचे हो तो वह अचिन्तनीय धन पाता है। यह विचार पूर्वोक्त प्रमाण से करना चाहिए ? ८६

५ मातुः सुरेखा यदि चोर्ध्वभागे शाखाद्वयाभ्यामुपसंगता स्यात्
विश्वासयुक्तो मनुजस्तदानीं दानी सुमानी धनतासमेतः १८७

यदि माता की रेखा ऊपरले भाग में दो शाखायुक्त हो तो वह विश्वासी, दानी, सुमानी तथा धनसम्पन्न होता है ॥ १८७ ॥

६ मातुः सुरेखा यदि शेषभागे क्षुद्रा विमिश्रा विशदा विभाति।
व्याजापदेशो मनुजो विकाशी हासी विलासी विषयारतश्च॥

यदि मातृरेखा निचले भाग में छोटी रेखा से साफ़ मिली हो तो वह छल से बहाना करता, प्रकाशी, हासी तथा विलासी और विषयों में आसक्त रहता है ॥ १८८ ॥

७ पित्रा वियुक्ता यदि मातृरेखा क्षुद्रा समेता नितरां चकास्ति।
भविष्यवक्ता मनुजस्तदा स्यात् प्रज्ञासमेतो बहुशास्त्रविज्ञः १८९

पितृरेखा से अलग हुई मातृरेखा क्षुद्ररेखायुक्त हो तो वह होनहार का कहनेवाला होता तथा प्रतिभाशाली, बुद्धि-संपन्न और अनेक शास्त्रों का विज्ञाता होता है ॥ १८९ ॥ *

८ मात्रा वियुक्ता यदि पितृरेखा क्षुद्रा विमिश्रं च तयोस्सुमध्यम्।
विरोधकारी कलही मनुष्यो विवादशाली जनयूथभिन्नः १९०

यदि मातृरेखा से पितृरेखा छुटी हो और उन दोनों का मध्यभाग छोटी-छोटी रेखाओं से मिला हुआ देखा जावे तो वह विरोधकारी, लड़ाका, विवादशाली और जनता द्वारा पीड़ित होता है ॥ १९० ॥

९ पितुःसुरेखोत्थितरेखिकाभ्यां मातुः सुरेखा यदि संयुता स्यात्।
चाञ्चल्यबुद्धिर्मनुजो मनस्वी वृथाभिमानी भ्रमते नितान्तम्॥

यदि मातृरेखा पितृरेखा से उठी हुई दो रेखाओं से युक्त हो तो वह चञ्चल बुद्धिवाला, मनमौजी, वृथाभिमानी और हमेशा घूमा करता है ॥ १९१ ॥

---

* यहाँ पर पितृरेखा तथा मातृरेखा आदि स्थान में अलग २ होने से गुण बताये गये हैं। इस पर अधिक जानने के लिये कृपाकर पुस्तक का प्रथमखण्ड देखिये।—सम्पादक

१० पित्रोस्सुमध्ये यदि याति चिह्नं रेखाद्वयं रेखयुगेन भिन्नम्।
गर्भस्य पातं लभते मनुष्यो नार्या यदा चेत्प्रसवेतिसौख्यम् ॥

मातृरेखा व पितृरेखा के बीच में दो रेखाओंवाला निशान दो रेखाओं से खण्डित दिखे तो उसकी भार्य्या गर्भस्राव करती है। यदि पूर्वोक्त निशान स्त्री के करतल में हो तो वह प्रसवकाल में बड़ा सुख पाती है ॥ १६२ ॥

११ पितुः सुरेखा यदि कुञ्चिताग्रा मध्ये सुपीना मणिबन्धहीना।
असत्यवादी पुरुषः प्रमादी कुवेषधारी मलिनस्वभावः॥१६३॥

पितृरेखा यदि अग्रभाग में टेढ़ी हो और बीच में मोटी तथा कब्जे से छुटी हुई दिखे तो वह झूठा, ज़िद्दी, कुवेषी और मैले स्वभाव से रहता है॥१६३॥

१२ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशात् भाग्यासुरेखा समुपैतिसौम्यम्
क्षणे प्रवृद्धिं लभते मनुष्यः क्षणे क्षयार्सिं परदेशवासी १६४॥

भाग्यरेखा यदि मणिबन्ध से उठ बुधके पास चली जावे तो वह परदेश-निवासी होता तथा क्षण में बड़ी बढ़ती एवं क्षण में क्षय को पाता है १६४

१३ चन्द्रालयस्थं कुटिलं द्विरेखं विभाति रेखान्वितवामभागम्।
निजव्ययेनापि युतो मनुष्यो देशे सुदूरे निकटे भ्रमेच्च १६५॥

चन्द्र के स्थान में टेढ़ा एवं दो रेखाओंवाला निशान वामभाग में रेखा से जुड़ा हुआ दिखे तो वह अपने खर्चे से ही दूरदेश एवं निकट देश में घूमता है ॥ १६५ ॥ *

१४ भित्त्वा यदेयं मणिबन्धदेशं रेखा गभीरा यदि याति काव्यम्।
चञ्चत्प्रभावो मनुजो विलासी चातुर्ययुक्तश्चपलस्वभावः १६६

जिस समय मणिबन्ध को भेदनकर गहरी रेखा शुक्र के पास जावे तो वह बड़े प्रभाववाला, विलासी, चतुर और चपलस्वभाववाला होता है १६६ (देखो चित्र नं० २२)

---

* यही यात्रा संबंधी रेखाएँ हैं। इनमें जो शुद्ध तथा साफ़ हों वे यात्राएँ निर्विघ्न समाप्त होती हैं। अन्यथा फल में न्यूनता अथवा यात्राओं में दुःख होता है।—सम्पादक।

पञ्चदशलक्षणाङ्कितकरतलफल

१ चन्द्रात्मजस्थानगतं सुचिह्नं क्षुद्रं त्रिरेखं सरलं चकास्ति ।
चौर्य्ये प्रवृत्तो मनुजस्तदा स्यान्मिथ्यापवादी मदनातुरश्च १९७

बुध के स्थान में छोटा सा तीन रेखाओंवाला व सीधा निशान हो तो वह चोरी करने में दत्तचित्त तथा झूठा और कामातुर होता है ॥ १९७ ॥*

२ संभोगरेखोपरिगं विशुद्धं रेखात्रयं क्षुद्रतरं चकास्ति ।
बाह्वोः सुघातं लभते मनुष्यो मन्दस्वभावो ममतामुपेतः १९८

सुभोगरेखा के ऊपरले भाग में तीन रेखाओंवाला साफ़ व छोटा निशान हो तो वह नीच स्वभाववाला, ममता से संपन्न तथा भुजाओं में आघात पाता है ॥ १९८ ॥

३ बुधालयान्ते दिनपालये वा रेखाद्वयं वै कुटिलं विभाति ।
गाम्भीर्यशाली पुरुषः सुबोधः स्थूलं यदा चेत्कटिघातमेति १९९

यदि बुध की आखिरी जगह में या सूर्य के स्थान में दो रेखाओंवाला टेढ़ासा निशान हो तो वह महाज्ञानी तथा गाम्भीर्यशाली होता है । यदि पूर्वोक्त निशान मोटासा हो तो वह कमर में आघात पाता है ॥ १९९ ॥

४ अनामिकामध्यमिकासुमूले रेखाद्वयं वै सरलं विभाति ।
मनस्सुशक्तिर्मनुजस्सुबुद्धिः संकर्तितं चेत्फलमन्यथा स्यात् २००

अनामिका व मध्यमा के मूल में दो रेखाओंवाला सीधा निशान हो तो वह मानसी शक्ति रखनेवाला तथा बड़ा बुद्धिवाला होता है । और यदि पूर्वोक्त निशान तिरछी रेखाओं से कटा दिखे तो कहे हुए फल की अल्पता होती है ॥ २०० ॥

५ देवेन्द्रवन्द्यालयगा विभान्ति रेखा विक्षुद्राः सरलाश्च पञ्च ।
प्राप्नोति मृत्युं हठतो मनुष्यो मत्या विहीनो ममतासमेतः २०१

बृहस्पति की जगह में पहुँची हुई छोटी होकर सीधी पाँच रेखायें यदि हों तो वह बुद्धिहीन ममतासम्पन्न होता तथा अपने हठ से मौत पाता है ॥

* चोरी की क्रिया में प्रवीणता प्राप्त किये हुए व्यक्ति के बुधालय पर इसी प्रकार के चिह्न होते हैं। इनका वर्णन अन्यत्र भी किया जा चुका है।—सम्पादक

६ मात्रीं सशाखां च सुभोगरेखां भाग्या विभिरवा यदि याति मन्दम् । वक्त्राभिघातं लभते मनुष्यो नार्या यदा चेत्प्रसवेऽतिकष्टम् ॥२०२ ॥

मातृरेखा और शाखासमेत भोगरेखा (अस्मद्देशीय आयुरेखा) को काट-कर भाग्यरेखा (फेटलाइन) यदि शनैश्चर पर्यन्त जावे तो वह मुख में आघात पाता है । और यदि पूर्वोक्त निशान स्त्री के करतल में हो तो वह बच्चा जनने के समय बड़ा कष्ट पाती है ॥ २०२ ॥

७ पितुस्समुत्था कुटिला सुरेखा साबिन्दुकोणद्वयसंयुता चेत् । तदा नरो दर्शनशास्त्रवेत्ता विपर्यये चेत्फलमन्यथा स्यात् २०३

पितृरेखा से उठी हुई टेढ़ी रेखा बिन्दु समेत दो त्रिकोण निशानों से संयुक्त दिखे तो वह दर्शनशास्त्र का ज्ञाता होता है । और यदि पूर्वोक्त निशान उलटा प्रतीत होवे तो उक्त फल का ह्रास होता है ॥ २०३ ॥

८ भोगाधरस्था विशदा विक्षुद्रा विभान्ति रेखाः सरलाश्च षट्काः । भोगक्षयं वै लभते मनुष्यः पूर्वोक्तमानेन विचार-णीयम् ॥२०४॥

भोगरेखा के निचले भाग में साफ़ एवं सीधी छोटी छः रेखाएँ हों तो वह भोगहीन होता है । यह विचार पूर्वोक्त मान से करना चाहिए २०४ ॥

९ मातुस्सुरेखाधरगं विभाति गुणेन युक्तं यदि कोणयुग्मम् । तदा नरो दर्शनपारगामी नामी सुधामी धनतामुपेतः २०५

मातृरेखा के निचलेभाग में गुणा के निशान युक्त दो त्रिकोण चिह्न हों तो वह नामी, सुधामी, धनसंपन्न और दर्शनशास्त्र का पारगामी होता है २०५ ॥

१० पितुः सुरेखा मिलिता जनन्यां रेखात्रयेणापि युतं तदूर्ध्वम् । परस्त्रियं वै भजते मनुष्यो विहाय नारीं सुभगां स्वकीयाम् ॥

पितृरेखा मातृरेखा से मिल गई हो और उनका ऊपरला भाग टेढ़ी तीन रेखाओं से जुड़ा दिखे तो वह अपनी बड़भागिनी भार्या को छोड़कर परभार्या को भजता है ॥ २०६ ॥ *

* विदेशी विद्वानों के मत के संबंध में जो उन्होंने समवर्ग अथवा विरुद्ध-वर्ग के प्रभाव के संबंध में दिये हैं हम अन्यत्र लिख चुके हैं ।—सम्पादक ।

११ पितुस्सुरेखा यदि दीर्घरूपा मातुस्सुरेखा बहुस्वल्पगा स्यात्।
तदा नरो जीवति दीर्घकालं विश्वासघाती म्रियते प्रवासे २०७

यदि पितृरेखा दीर्घाकार हो और मातृरेखा बहुत छोटी हो तो वह बहुत काल पर्यन्त जीवित रहता तथा विश्वासघाती होता और परदेश में मर जाता है ॥ २०७ ॥

१२ भाग्याधरस्थं विशदं विभाति नन्दाङ्कचिह्नं यदि भासमानम्।
सन्तुष्टचित्तो मनुजस्तदा स्याद्दाता दयालुर्निजवंशधाता २०८

भाग्यरेखा के निचले भाग में स्थित साफ़ नव के अङ्क के समान निशान दिखे तो वह सन्तुष्टचित्त, दाता, दयालु तथा अपने वंश का धाता होता है २०८

१३ काव्यालयोत्था यदि याति रेखा पैत्रीं सुमात्रीं च विभिद्य भोगाम्। शूरो मनुष्यो द्विषतो विजित्य सौभाग्यशाली लभते सुवित्तम् ॥ २०९ ॥

शुक्र के घर से उठी रेखा यदि पितृरेखा व मातृरेखा को काटकर भोगरेखा पर्यन्त चली जावे तो वह शत्रुओं को विजयकर शूरमा एवं सौभाग्यशाली होता और बड़ा धन पाता है ॥ २०९ ॥ *

१४ अंगुष्ठसीमाच्चलिते गभीरे रेखे विभुग्ने पितरं विभिन्तः।
स्वेच्छानुसारी पुरुषो विहारी देशे सुदूरे भ्रमते नितान्तम् २१०

जिसके अँगूठे की सीमा से चली हुई दो गहरी एवं टेढ़ी रेखायें पितृरेखा को काटती हों तो वह अपनी इच्छानुसार विहार करता तथा बड़े दूर देश में जाकर हमेशा घूमा करता है ॥ २१० ॥

* इसी प्रकार पितृरेखा (आयुरेखा) से उठी रेखा जिस ग्रह की ओर जावे तो उसी ग्रह के स्वभावानुसार फल जानना चाहिए। यदि शुक्रालय से उठी रेखा पितृरेखा तक आवे और फिर उसी स्थान से कोई बारीक रेखा उठकर किसी ग्रह की ओर जावे (ऊपर की ओर) तो फिर वह ऊपरवाली रेखा रंगरूप-रेखा हो जायगी। अर्थात् ग्रह के रंग-रूप के व्यक्ति का प्रभाव उस व्यक्ति पर पड़ेगा। ये सब बातें ज़रा बारीकी से इस पुस्तक के अध्ययन करने पर समझ में आजायँगी।—सम्पादक।

१५ अंगुष्ठमूलाच्चलिते विशुद्धे रेखे गभीरे मणिबन्धमेतः।
लावण्ययुक्तो मनुजो मनस्वी लोभाभिभूतो ललनासमेतः२११

जिसे अँगूठे के मूल से चली दो साफ एवं गहरी रेखाएँ मणिबन्ध के सामने आजावें तो वह सुन्दर, मनमौजी, ललनागण संपन्न तथा लोभी होने से आदर नहीं पाता है ॥ ११ ॥ (देखो चित्र नं० २३)

षोडशलक्षणाङ्कितकरतलफल

१ सर्वाङ्गुलीनां युगरामपर्वके संभाति रेखा सरला गभीरिका।
आत्मापघातान्मृतिमेति मानवो दुष्टस्वभावो निजदोषदर्पितः॥

समस्त अंगुलियों की दूसरी व तीसरी पोर में सीधी एवं गहरी रेखा हो तो वह बुरे स्वभाववाला, घमण्डी और आत्मघात से ही मौत पाता है२१२

२ कनिष्ठिकामूलगतं विभुग्नं रेखाचतुष्कं विशदं विभाति।
संभोगशाली मनुजस्तदानीं भोगाभिलाषां रमणीमुपैति२१३

चार रेखाओंवाला, टेढा व साफ निशान कनिष्ठिका की मूल में हो तो वह बड़ा भोगशाली तथा भोग की चाहनावाली रमणी पाता है ॥२१३॥

३ मध्यासुमूले यदि भाति रेखा आचारहीनः शुचमेति प्राणी।
बह्वीषु रेखासु च बन्धमेति म्लानासु पीडामधिकां भुनक्ति२१४

यदि छोटी सी एक रेखा मध्यमा के मूल में हो तो वह आचारहीन तथा शोक को पाता है। यदि बहुतसी रेखायें हों तो वह जेलखाने में जाता है। यदि पूर्वोक्त रेखाएँ मैली सी हों तो वह अधिक पीड़ा भोगता है २१४॥

४संभोगशाखा विशदा गभीरा प्रदेशिनीमूलगता विभाति।
सत्यस्वभावो मनुजस्तदानीं लोकाभिमान्यो ललनामुपैति॥

सुभोगरेखा की शाखा साफ एवं गहरी होकर तर्जनी के मूल तक हो तो वह सच्चे स्वभाववाला, माननीय होता तथा ललना (दुलारी प्यारी) को पाता है ॥ २१५ ॥

५ संभोगरेखा विशदा सुपीना संरक्तवर्णा सरला विभाति।
संक्रामरोगी पुरुषः सुभोगी शोथेन युक्तो भ्रमते भयार्तः२१६

सुभोगरेखा (अस्मद्देशीय आयुरेखा) साफ़, मोटी, लाल तथा सीधी हो तो वह संक्रामक रोगवाला, बड़ा भोगवाला, सूजन से संयुक्त और भय से घबराता हुआ घूमता है ॥ २१६ ॥

६ संभोगरेखोभयतो विभान्ति सूक्ष्मस्वरूपा बहुबिन्दवश्च।
क्लीबस्वभावो मनुजो मनीषी धातुक्षयं वै लभते नितान्तम् २१७

जिसकी सुभोगरेखा के दोनों तरफ़ छोटे-छोटे बहुत से बिन्दु (नुक़्ते) हों वह नपुंसक का सा स्वभाववाला, बुद्धिमान् और हमेशा धातुक्षीण होता है २१७

७ बृहस्पतिस्थानगतं विभाति तिर्यग्विभिन्नं सरलं कुरेखम्।
प्रज्ञाविहीनः पुरुषस्तदा स्यान्नार्यां यदा चेत्कुलटा भवेत्सा २१८

बृहस्पति के स्थान में प्राप्त हुआ एक रेखावाला सीधा निशान तिरछा कटा हुआ यदि हो तो वह बुद्धिहीन होता है। यदि पूर्वोक्त निशान जिस स्त्री के करतल में हो तो वह व्यभिचारिणी होती है ॥ २१८ ॥

८ मातुस्सुरेखा यदि चोर्ध्वभागे नतस्वरूपा नितरां विभाति।
अनिष्टकारी पुरुषो नराणां निर्बोधरूपो नयताविहीनः २१९॥

यदि ऊपरले भाग में मातृरेखा लचेरूपवाली हो तो वह अज्ञानी तथा नीतिविहीन रहता है ॥ २१९ ॥

९ मातुस्समुत्थं सरलं त्रिरेखं चिह्नं सुभोगाभिमुखं प्रयाति।
विश्वासयुक्तः पुरुषः सुशीलः सत्ये रतः शान्तिपरो दयालुः २२०

तीन रेखाओंवाला निशान मातृरेखा से उठ सीधा सुभोगरेखा के सामने जावे तो वह विश्वासी, सुशील, सत्य में रत, शान्ति में परायण और दयालु बना रहता है ॥ २२० ॥

१० पित्रा वियुक्ता यदि मातृरेखा स्थूलस्वरूपा गुरुगा विभाति।
जारोद्भवो वै मनुजस्तदा स्याच्चातुर्यशाली चपलस्वभावः २२१

पितृरेखा से छुटी हुई माता की रेखा मोटी होकर बृहस्पति के स्थान में यदि सोहती हो तो वह जारजात*, चातुर्यशाली, और चपलस्वभाववाला होता है ॥ २२१ ॥

* इस पर हम प्रथमखण्ड में भलीभाँति लिख चुके हैं। यदि आप अधिक जानना चाहते हैं, तो कृपाकर प्रथमखण्ड देखिए।—सम्पादक।

११ पित्रोस्सुमध्ये विशदं विभाति गुणाख्यचिह्नं यदि रक्तवर्णम्।
उत्पातवृन्दं लभते मनुष्यो मायाविहीनो ममतासमेतः २२२॥

मातृरेखा व पितृरेखा के बीच में साफ़ गुणा का लालवर्णवाला निशान × हो तो वह मायाहीन, ममतासंपन्न और सदैव झगड़ा का सामना करता है ॥ २२२ ॥

१२ अङ्गुष्ठशाखावृतरेखयुग्मं सकोणचिह्नं प्रयुतं चकास्ति ।
तदा मनुष्यः शिरसा विभिन्नः पाशाग्रविद्धो मरणं प्रयाति २२३

दो रेखावाला निशान अँगूठे की शाखाओं से घिरा यदि कोणचिह्न समेत हो तो वह फाँसी की सजा भोगता है ॥ २२३ ॥

१३ संभोगरेखा यदि नीचभागे क्षुद्राविमिश्रा विशदा विभाति ।
उत्पातयुक्तो मनुजस्तदानीं क्लेशाभिभूतो भयतामुपैति २२४॥

सुभोगरेखा निचले भाग में छोटी रेखायुक्त हो तो वह उत्पाती, कष्टों से दुःख और भय पाता है ॥ २२४ ॥

१४ मातुस्सुरेखोभयतो विभाति बिन्दुत्रयं वै विरलं विक्षुद्रम् ।
तदा जनो दुर्बलगात्रव्यष्टिर्व्ययाधिकं वै लभते नितान्तम् २२५

जिसे मातृरेखा के दोनों तरफ़ छोटे एवं विरले तीन बिन्दु (नुक्ते) हों वह दुर्बल शरीरवाला और खर्चीला होता है ॥ २२५ ॥

१५ पितुस्सुभग्नी विशदा सुरेखा सवक्ररूपा समुपैति शौरिम् ।
संक्षीणकायो मनुजो मलाक्तो मन्दस्वभावो ममतामुपैति २२६

साफ़ एवं टेढ़ी पितृरेखा की भग्नीरेखा शनैश्चर पर्यन्त जावे तो वह मल से भरा, दुबले शरीरवाला, नीच स्वभाववाला और ममतायुक्त होता है ॥ २२६ ॥

१६ मातुस्समुत्था मणिबन्धमेति सर्पानुरूपा विशदा सुरेखा ।
कारागृहं याति नरस्तदानीं स्वीयेन दोषेण समाकुलात्मा २२७

मातृरेखा से उठी साफ़ एवं सर्प के आकारवाली रेखा मणिबन्ध के सामने चली जावे तो वह अपने दोष से ही व्याकुल होता तथा जेलखाने को जाता है ॥ २२७ ॥ (देखो चित्र नं० २४)

षोडशलक्षणाङ्कितकरतलफल

१ कनिष्ठिकामूलतलाच्चलन्ती सार्धा सुरेखा पर्वरेति चाद्यम् ।
चातुर्ययुक्तो मनुजस्तदा स्यात् सर्वेषु शास्त्रेषु महाप्रवीणः २८

कनिष्ठा के मूल से चलती हुई डेढ़ रेखाएँ पहली पोर को पहुँच जावें तो वह चातुरीकलासंपन्न सब शास्त्रों में बड़ा प्रवीण होता है ॥ २८ ॥

२ चन्द्रात्मजस्थानगतं विशुद्धं रेखाचतुष्कं सरलं चकास्ति ।
तदा जनो विन्दति जारजातान् पुत्रान्गुणाढ्यान्गुरुतागतांश्च

बुध स्थान में * चार रेखाओंवाला छोटा एवं सीधा निशान हो तो वह गुणों से संपन्न गुरुतायुक्त होता और जारजात पुत्रों को पाता है ॥ २९ ॥

३ मार्तण्डपुत्रालयगं विभाति चिह्नं विशुद्धं सरलं त्रिरेखम् ।
वक्षस्थलाघातमुपैति प्राणी मान्यो वदान्यो विभुतासमेतः ३०

यदि शनि स्थान में तीन रेखाओंवाला छोटा व सीधा निशान हो तो वह मान्य एवं वदान्य (दाता) होता, विभुतायुक्त होता तथा छाती में चोट पाता है ॥ ३० ॥

४ मातुस्समुत्था विशदा सुरेखा भोगांविभित्त्वा यदियातिचान्द्रिम्
धर्मेण युक्तो मनुजो धनाढ्यो धन्यो धरित्र्यां क्षमतामुपैति ३१

मातृरेखा से उठी साफ़ रेखा भोगरेखा को काटकर यदि बुध के समीप जावे तो वह धनाढ्य, धर्मयुक्त, धरामण्डल में धन्यवाद देने के योग्य और सहनशील होता है ॥ ३१ ॥

५ भोगासमुत्था विशदा विशुद्धा मध्यासुमूलं समुपैति रेखा ।
सम्पत्तिवृन्दं लभते मनुष्यः सौभाग्यशाली सुषमासमेतः ३२ ॥

भोगरेखा से उठी हुई साफ़ व छोटी-सी रेखा मध्यमा के मूल के पास पहुँचे तो वह सौभाग्यशाली, शोभासंपन्न, तथा संपत्तिशाली होता है ॥ ३२ ॥

---

* बहुत से पाश्चात्य विद्वानों ने बुध स्थान पर स्त्री-योग रेखा से सम्बद्ध खड़ी रेखाओं को पुत्र-रेखाएँ कहा है। (देखिये, "अ" चित्र नं० २५) उपरोक्त रूप से बुधस्थान में खड़ी रेखाओं के संबंध में विद्वानों के विभिन्न मत हैं, जो यत्रतत्र इस पुस्तक में टिप्पणी के रूप में दिये गये हैं।—सम्पादक

६ भोगासुभग्नी विशदाविभिन्ना रेखा गभीरा यदि याति मन्दम्
मन्दस्वभावो मनुजो मलाक्तो दीर्घा यदा चेन्मलिनस्वभावः ३३

भोगरेखा की भग्नीरेखा गहिरी साफ़ व भिन्न होकर यदि शनि पर्यन्त जावे तो वह मल से भरा हुआ और नीच स्वभाववाला होता है। और पूर्वोक्त रेखा दीर्घाकार प्रतीत हो तो वह मैले कुचैले स्वभाववाला होता है ३३

७ मातुस्सुरेखा यदि चोर्ध्वभागे रेखात्रयेणाप्यवकर्तिता स्यात्।
मिथ्याप्रलापी मनुजस्तदानीं कार्ये प्रतारे निरतो नितान्तम्॥

मातृरेखा ऊपरले भाग में तीन रेखाओं से यदि कटी दिखे तो वह मिथ्याभाषी और छल कार्य में हमेशा लगा रहता है ॥ ३४ ॥

८ शीर्षे सुपैत्री यदि मातृकण्ठा क्षुद्राविभिन्ने च तयोः सुरेखे।
विषप्रयोगे निरतो मनुष्यो मन्दे च कार्ये ममतामुपैति॥३५॥

पितृरेखा ऊपरले भाग में मातृरेखा से कटी हो और उन दोनों (पिता माता) की रेखाएँ छोटी रेखा से भिन्न हों तो वह विषप्रयोग में यानी विष खिला देने में प्रवीण होता तथा नीचकार्य में मन लगाता है ॥३५॥

९ मध्ये विभिन्ना सरला गभीरा मातुः सुरेखा शशिगा नता चेत
आयुष्यमल्पं लभते मनुष्यो वृद्धे वयस्के श्रमतामुपैति ॥३६॥

मातृरेखा बीच में कटी, सीधी, गहरी एवं लची हो तथा चन्द्रमा के स्थान में पहुँचे तो वह अल्पायु होता है। और उसे वृद्धावस्था में परिश्रम करना पड़ता है ॥ ३६ ॥

१० पितुस्सुशेषाच्चलिता सुरेखाभाग्यां विभित्त्वायदियातिमात्रीम्
दीर्घायुषं तं पुरुषं करोति सुतीव्रबुद्धिं सरलस्वभावम् ॥ ३७ ॥

जिसकी पितृरेखा के शेषभाग से चली हुई रेखा भाग्यरेखा को भेदकर यदि मातृरेखा पर्यन्त चली जावे तो वह दीर्घायु, तीक्ष्णबुद्धि एवं सीधे स्वभाववाला होता है ॥ ३७ ॥

११ पितुस्सुरेखा विशदा सुवक्रा भागद्वये चास्ति विभक्तरूपा।
तदा नरोऽयं निधनं प्रयाति पूर्वोक्तमानेन विचारणीयम्॥३८॥

पितृरेखा साफ़ एवं टेढ़ी हो और दो भागों में बटी दिखे तो वह मृत्यु पाता है। इसका विचार पूर्व कथित हिसाब से करना चाहिये ॥ ३८ ॥*

१२ वज्राधरस्थं विशदं विभाति वज्रानुरूपं यदि भासमानम्।
वार्द्धे मनुष्यः शुभतामुपैति पूर्णं यदा चेच्छुभताधिकं च ३९॥

पितृरेखा के नीचे स्थित वज्राकार साफ़ निशान हो तो वह वृद्धावस्था में सुख पाता है। यदि पूर्वोक्त निशान पूर्णरूप से प्रतीत हो तो वह अधिक सुख पाता है ॥ ३९ ॥

१३ भाग्यासमुत्था मणिबन्धदेशात् कोणं सरन्ती समुपैति मात्रीम्। सुगुप्तविद्यो मनुजस्सुवैद्यो रसायनज्ञो रमणीरतश्च ४०

मणिबन्ध से उठी भाग्यरेखा (ऊर्ध्वरेखा) कोण बनाती हुई मातृरेखा के समीप पहुँच जावे तो वह गुप्त विद्यावाला, अच्छा वैद्य होकर रसायन का ज्ञाता, और रमणियों में रत रहता है ॥ ४० ॥

१४ सुभोगरेखोपरिगं विशुद्धं गर्तानुरूपं यदि भाति चिह्नम्।
तदा नरोऽयं कटिघातमेति कलासु पूर्णः कमलालयश्च ॥४१॥

सुभोगरेखा (अस्मद्देशीय आयुरेखा) के ऊपरले भाग में साफ़ गड्ढे के समान निशान हो तो वह चौंसठ कलापूर्ण लक्ष्मीवान् होता तथा कमर में आघात पाता है ॥ ४१ ॥

१५ सर्वाङ्गुलीनां त्रितये परुष्के यवानुरूपं यदि भाति चिह्नम्।
तदा जनो मज्जति वारिराशौ विद्याविहीनो विषयारतश्च ४२

जिसकी समस्त अँगुलियों की तीसरी पोर (मूल) में यदि यवाकार निशान हो तो वह विद्या से हीन, व विषयासक्त होता तथा जल में डूबता है ॥ ४२ ॥

१६ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशात् स्वल्पा सुरेखा समुपैति पैत्रीम्
कान्ताभिलाषी पुरुषस्तदानीं मातापितृभ्यां शुभतामुपैति ४३

मणिबन्ध से उठी छोटी सी रेखा पितृरेखा के पास पहुँच जावे तो वह

---

* आयुक्रम हम पहिले ही बता आये हैं।—सम्पादक

रमणी की चाहना करता तथा माता-पिता के द्वारा सुख पाता है ॥४३॥ (देखो चित्र नं० २५)

चतुर्दशलक्षणाङ्कित करतलफल

१ सर्वाङ्गुलीनां त्रितये परुष्के तिर्यग्विभिन्नं सरलं कुरेखम् ।
रोगेण युक्तो मनुजस्तदानीं नारोग्यभोगं लभते कदापि ४४॥

जिसे सब अँगुलियों की तीसरी पोर में एक सीधी रेखा आड़ी रेखाओं से कटी हो तो वह रोगयुक्त होता और कभी आरोग्य भोग नहीं पाता ॥४४॥

२ संगर्तमध्यं गुरुगं विभाति तिर्यग्विभिन्नं सरलं द्विरेखम् ।
पुत्राञ्जनो विन्दति जारजातानूर्ध्वं यदा चेद्बहुकन्यकाश्च ४५

जिसे बृहस्पति के स्थान में बीच में गड़हे का निशान एवं सीधी दो रेखाएँ तिरछी रेखाओं से कटी दिखें तो वह जारजात पुत्र पाता है। यदि पूर्वोक्त निशान तर्ज्जनीमूल के ऊपरले भाग में दिखे तो बहुत सी जारजात कन्याएँ पाता है ॥ ४५ ॥ *

३ शूरात्मजस्थानगता विभान्ति क्षुद्रस्वरूपाः कुटिलास्सुरेखाः ।
आलस्ययुक्तो मनुजस्तदा स्यान्निष्कामकार्येनिरतोनितान्तम् ॥

जिसके शनि स्थान में साफ़ छोटी छोटी टेढ़ी रेखायें हों वह आलसी होता तथा हमेशा विना चाहनेवाले कार्य में लगा रहता है ४६ †

---

* एक अमेरिकन विद्वान् का कथन है कि यदि गुरु के स्थान में आड़ी टेढ़ी अनेक छोटी कटी सी रेखाएँ दिखें तो ऐसे व्यक्ति को आचरणहीन तथा गप्पी समझना चाहिये ।

† प्रसिद्ध अमेरिकन विद्वान् W. G. Benham इस प्रकार की छोटी २ आड़ी रेखाओं के संबंध में कहता है कि "इसे बहुत खराब चिह्न समझना चाहिये ।" कारण कि ये रेखायें रक्तप्रवाह में बाधक होती हैं। और इस तरह रक्त केवल उपस्थित बाधक चिह्नों पर से वह जाने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं रखता । और ऐसे प्रवाह के लिये यह आवश्यक है कि वह रक्त आस पास के हिस्सों पर से भी वह जाये । इन चिह्नों का मानवजीवन पर बहुत बुरा असर पड़ता है । अतएव ये अशुभ चिह्न हैं और स्वास्थ्यकर नहीं हैं। जब इस प्रकार के चिह्न कहीं पर दिखें तो उन्हें ध्यानपूर्वक देखना चाहिये । अन्य रेखाओं की अपेक्षा वे कितने गहरे या कम गहरे प्रतीत होते हैं, उसी मात्रा में उनका प्रभाव न्यूनाधिक जानना चाहिये ।—संपादक

४ संभोगरेखा यदि मध्यमान्ता भाग्येन-भिन्ना प्रतिभाति कोणम्
दौर्जन्ययुक्तो मनुजस्तदानीं संक्षीणकायो ममतामुपैति ४७ ॥

भाग्यरेखा से कटी हुई सुभोगरेखा (हार्टलाइन) यदि मध्यमा पर्यन्त पहुँचकर कोणचिह्न बनावे तो वह दुर्जन, क्षीणकायावाला, तथा ममता-सम्पन्न होता है ॥ ४७ ॥

५ संभोगरेखोपरिगं त्रिरेखं गर्तेन युक्तं यदि भाति चिह्नम् ।
गुदामयं वै लभते मनुष्यो गर्भस्य घातं निजधर्मपत्न्याम् ४८ ॥

जिसकी सुभोगरेखा के ऊपरले भाग में गढ़हेयुक्त तीन रेखावाला निशान हो वह गुदा रोगी होता तथा उसकी धर्मभार्या को गर्भपात होता है ॥ ४८ ॥

६ मातुस्सुरेखा यदि नीचभागे रेखाद्वयेनाप्यवखण्डिता स्यात्
मातुस्सुमानं कुरुते मनुष्यो द्वेषी जनानां जनताविहीनः ४९

निचले भाग में मातृरेखा दो रेखाओं से कटी दिखे तो वह सबका द्वेषी हो अकेला रहता तथा अपनी माता का बड़ा मान सम्मान करता है ४९

७ भोगाधरस्थं चतुरस्रयुक्तं त्रिकोणरूपं यदि भाति चिह्नम् ।
आत्मम्भरिस्स्यान्मनुजस्तदानीं लोभेन युक्तो ललनासमेतः ॥

आयुरेखा (भोगरेखा) के निचले भाग में चतुष्कोण से संयुक्त त्रिकोण का निशान हो तो वह लोभी एवं ललनायुक्त होता और पेटू कहलाता है ५०

८ मातुस्सुरेखोपरिगं द्विरेखं चिह्नं गभीरं यदि याति भोगाम् ।
तदा नरोयं द्विषतां विजेता जायासमेतो जनतामुपैति ५१ ॥

मातृरेखा के ऊपर गहिरा दो रेखाओंवाला निशान यदि भोगरेखा के समीप चला जावे तो वह शत्रु विजेता, जायायुक्त होता तथा जनता को पाता है ॥ ५१ ॥

९ पित्रोः सुमध्ये विशदं विभाति गुणत्रयेणापि युतं सुचिह्नम् ।
उत्पातकारी मनुजो विकारी वेश्याविहारी परवित्तहारी ५२ ॥

मातृरेखा व पितृरेखा के बीच में तीन गुणों के निशान हों तो वह विकारी, वेश्याविहारी, परवित्तहारी, तथा उत्पातकारी होता है ॥ ५२ ॥

---

१ गर्तावटौ भुवि श्वभ्र इत्यमरः ।

१० मात्रा वियुक्ता यदि पितृरेखा कौटिल्यरूपा मणिबन्धमेति
चतुष्पदाघातमुपैति प्राणी द्वन्द्वाख्ययुद्धे विपदां विवेति ५३॥

मातृरेखा से विलग हुई पितृरेखा यदि टेढ़ी होकर मणिबन्ध के पास पहुँच जावे तो वह चौपाये के द्वारा आघात पाता, तथा द्वन्द्वयुद्ध में विशेष विपत्ति पाता है ॥ ५३ ॥

११ काव्यालयोत्था समुपैति रेखा पैत्रीं सुमात्रीं च विभिद्य भोगाम्
तदा नरः सप्ततिवत्सरान्ते सौभाग्यशाली सुखतां समेति ५४ ॥

शुक्र के स्थान से उठी रेखा पितृरेखा व मातृरेखा को काटकर भोगरेखा के समीप चली जावे तो वह सत्तर वर्ष के बाद सौभाग्यशाली होता और सुख भोगता है ॥ ५४ ॥

१२ भिन्ना सुभाग्या यदि याति रेखा मात्रीं सुभोगां च विभिद्य मन्दम्
मृत्योर्विशङ्की मनुजो वितङ्की दौर्बल्यगात्रो गुणतामुपैति ५५

छोटी रेखा से कटी भाग्यरेखा (कटलाइन) मातृरेखा व भोगरेखा को भेदकर शनि स्थान में जावे तो वह मौत से डरता, वितङ्की, दुबला और गुणी होता है ॥ ५५ ॥

१३ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशात् सञ्छिन्नमस्ता समुपैति सौम्यम्
तदा नरोऽयं रमणीसमूहाद्धानिं भयं वै लभते नितान्तम् ५६ ॥

जिसे मणिबन्ध से उठी कटे मस्तकवाली रेखा बुध के समीप जावे तो वह रमणियों द्वारा हमेशा हानि एवं भय पाता है ॥ ५६ ॥

१४ अङ्गुष्ठमूले विशदं विभाति रेखाचतुष्कं यदि तुर्यभिन्नम् ।
तदा भविष्ये समये मनुष्यो महाधिकारी विषये रतश्च ॥५७॥

यदि अँगूठे के मूल में साफ़ चार रेखाओं से कटा चार रेखाओंवाला निशान हो तो वह भविष्यकाल में महाधिकारी होता तथा विषय में रत रहता है ॥ ५७ ॥ (देखो चित्र नं० २६)

चतुर्दशलक्षणाङ्कितकरतलफल १

१ सर्वाङ्गुलीनां युगरामपर्वके भूपक्षरेखं यदि भाति लक्ष्मकम्

---

१ भागुरिमते टाप् द्वितीयान्तं पदमिति बोध्यम् ।

चातुर्ययुक्तश्चपलस्वभावको ह्येकाक्षरूपो मनुजो विभण्यते ५८

सब अँगुलियों की दूसरी व तीसरी पोर में यथासंख्य एक एक व दो दो रेखायें हों तो वह चातुरीकला संपन्न, चपलस्वभाववाला, तथा काना कहाता है ॥ ५८ ॥

२ ब्रध्नालयस्थं विशदं विभाति चिह्नं द्विरेखं विततस्वरूपम्।
तदा मनुष्यः कटिघातमेति कामी कलावान्कलहातुरश्च ५९

सूर्य के स्थान में लचेरूपवाला दो रेखाओंवाला साफ़ निशान हो तो वह कामी, कलावान्, लड़ाई करने में आतुर, और कमर में आघात पाताहै ५९

३सुभोगरेखा गुरुगा विभाति तस्याःसुशाखा यदि याति शौरिम्
तदा नरः शत्रुगणाद्विमुक्तः सम्पत्तिशाली सुखतामुपैति ६०॥

सुभोगरेखा (अस्मद्देशीय आयुरेखा) गुरु के स्थान तक पहुँचे और उसकी एक शाखा शनि के स्थान तक जावे तो वह शत्रुद्वारा मुक्त, संपत्तिशाली, और सुखसमूह पाता है ॥ ६० ॥*

४ शुक्रालयाच्चेच्चलिता सुरेखा सञ्छिन्नमस्ता गुरुगा विभाति
महाधिकारी मनुजस्तदानीं मान्यो वदान्योऽभयतामुपैति ६१

जिसे शुक्र स्थान से चली कटे मस्तकवाली रेखा बृहस्पति के स्थान में पहुँचे तो वह बड़े ओहदेवाला, मान्य एवं वदान्य (दाता) होता और अभय रहता है ॥ ६१ ॥

५ मातुस्सुरेखोपरिगं विशुद्धं भिन्नं त्रिकोणं यदि भाति चिह्नम्।
प्राप्नोति प्राणी जननीविरागं तदास्य माता मृतिमेति जन्तोः॥

यदि मातृरेखा के ऊपर साफ़ तीन कोणोंवाला कटा फटा निशान हो तो वह माता के विराग को पाता है। उसी से इसकी माता पहले मृत्यु पाती है ॥ ६२ ॥

---

* एक अमेरिकन विद्वान् इसे ठीक ऐसा ही मानता है जैसा यहाँ कहा गया है। किन्तु उसका कहना है कि यह चिह्न गहरा है। तथा बहुत कुछ ऊपर जाय तब वह प्रेम संबंध में असफल रहता है। एक फ्रेंच विद्वान् भी इसे गुणसूचक चिह्न तभी तक मानता है जब तक वह शाखा शनि का पूरा स्थान न पार करे। ऐसा रहने पर वह सदैव धोखा खाना, हानि उठाना तथा ग़लतियाँ करता है।—संपादक

६ मातुस्सुरेखा यदि नीचभागे स्वल्पस्वरूपा वितता तथोर्ध्वे ।
दौर्भाग्ययुक्तो वयसि प्रवृद्धे संवक्रगा चेदतिलोभशाली ६३ ॥

यदि मातृरेखा निचले भाग में पतली हो तथा ऊपरले भाग में फैली हो तो वृद्धावस्था में दौर्भाग्ययुक्त और यदि पूर्वोक्त रेखा टेढ़ी सी हो तो बड़े लोभ-सूचक है ॥ ६३ ॥

७ पितुस्सुरेखोपरिगं विभाति तिर्यग्विभिन्नं समकोणयुक्तम् ।
मानस्य हानिं लभते मनुष्यस्तथा विनाशं विषयस्य नूनम् ६४

यदि पितृरेखा के ऊपरले भाग में तिरछा कटा हुआ समकोण युक्त चिह्न हो तो वह महाहानि को तथा विषयविनाश को निश्चय कर पाता है ॥६४॥

८ भाग्याधरस्थं विशदं विभाति चिह्नं विशालं सरलं द्विरेखम् ।
दौर्जन्ययुक्तो मनुजस्तदानीं विश्वासघाती विषयानुपैति ६५॥

यदि भाग्यरेखा के निचले भाग में साफ़, एवं सीधा दो रेखाओंवाला निशान हो तो वह दुर्जन, विश्वासघाती और विषयी होता है ॥ ६५ ॥

९ पितुस्समुत्था यदि याति भाग्या मात्रीं सुभोगांचविभिद्य सूर्यम्
क्षयार्तियुक्तो मनुजस्तदा स्यात् क्षीणो दरिद्रो दयिताविहीनः

जिसकी पिता की रेखा से उठी हुई भाग्यरेखा (धनरेखा) मातृरेखा व भोगरेखा को विशेषता से भेदकर यदि सूर्य के समीप चली जावे तो वह क्षय (कंजम्पशन्) रोगी, दुबला, दरिद्री, तथा प्यारी विहीन रहता है ॥६६॥

१० अङ्गुष्ठशाखावृतमध्यभागा रेखा सुवक्रा यदि याति चोर्ध्वम्
तदा जनो मज्जति वारिराशौ रामाभिभूतो रसिको रसायाम् ६७

अँगूठे की शाखाओं से घिरी मध्यभागवाली रेखा टेढ़ी होकर यदि ऊपर को चली जावे तो वह प्राणी सुन्दरियों से अनादृत होता हुआ पृथ्वीमण्डल में रसज्ञाता होकर नदी व नाले आदिकों में डूब जाता है ॥ ६७ ॥

११ निशाकरस्थानगतं विशुद्धं तारानुरूपं यदि भाति चिह्नम्
कुशाग्रबुद्धिर्मनुजस्तदानीं महाधिकारी विषयान्भुनक्ति ६८॥

जिसके चन्द्रस्थान में साफ़ तारा का चिह्न हो वह बुद्धिमान् (तीक्ष्णबुद्धिवाला)

१ सुन्दरी रमणी रामेत्यमरः ।

बड़ा अधिकारी (बड़े ओहदेवाला) और भोगों को भोगनेवाला होता है ॥ ६८ ॥ *

१२ क्षपाकरस्थानसमीपवर्ति त्रिकोणचिह्नं विशदं चकास्ति ।
महाधिकारी मनुजो मनस्वी मायामयोयं ममतामुपैति ६९ ॥

जिसे चन्द्रस्थान के समीपवर्ती साफ़ त्रिकोण चिह्न हो वह महाधिकारी, मनमौजी, मायावी (रहस्यवादी) और मोही होता है ॥ ६९ ॥ †

१३ समुत्थितं चेन्मणिबन्धदेशात्सर्पानुरूपं समुपैति भाग्याम् ।
तदा नरः क्षीणकलेवरोऽसौ दुःखाभिभूतो नितरां दुनोति ७० ॥

मणिबन्ध से उठा सर्पाकार निशान भाग्यरेखा के पास पहुँचे तो दुबले शरीरवाला, दुःख से पीड़ित तथा अधिक शोक युक्त होना बताता है ॥ ७० ॥

१४ पैत्री सुवक्रा मणिबन्धगा चेत्तदन्तिके स्यात्सरलं द्विरेखम् ।
तदा मनुष्यो मृतिमेति पूर्वं पश्चात्स्वमाता मरणं प्रयाति ७१ ॥

पितृरेखा टेढी सी होकर यदि मणिबन्ध के पास पहुँचे और उसी के समीप सीधा दो रेखाओंवाला निशान हो तो प्रथम उसकी और पीछे से उसकी माता की मृत्यु होती है ॥ ७१ ॥ (देखो चित्र नं० २७)

षोडशलक्षणाङ्कितकरतलफल

१ सौम्यालयाच्चेच्चलिता सुरेखा सर्पानुरूपा समुपैति चोर्ध्वम् ।
भार्याविहीनो मनुजस्तदानीं यज्वा परस्त्रीं भजते नितान्तम् ॥

बुध स्थान से चली रेखा सर्प के समान होकर कनिष्ठा की तीसरी पोर में पहुँच जावे तो वह भार्या रहित, विधान से यज्ञ करता, और सदैव परनारी (उपपत्नी) सेवन करता है ॥ ७२ ॥

२ अनामिकामूलगतं विभाति च्छिद्रस्वरूपं विशदं सुचिह्नम् ।
प्रणष्टदृष्टिर्मनुजो विशोकी विनष्टवित्तो विषयाद् बिभेति ७३ ॥

---

* प्रसिद्ध फ्रेंच विद्वान् इसके अतिरिक्त उसे कफ या जल की शीत के कारण उपजा हुआ, रोगी तथा जहाज या और किसी प्रकार जल में मृत्यु होना बताता है ।--संपादक

† एक फ्रेंच विद्वान् भी ठीक यही बातें बताता है । तथा और भी कहता है कि ऐसे व्यक्ति को बुद्धिमान् तथा अंतर्ज्ञानी होना चाहिए ।—संपादक

जिसकी अनामिका के मूल में साफ चंद्राकार निशान हो तो उसकी दृष्टि जाती रहती है। इसी से वह विशोकी, गँवाये धनवाला और विषयों से विमीत होता है ॥ ७३ ॥ †

३ अनामिकामध्यमिकासुमध्यं मातुस्समुत्था यदि याति रेखा।
तदा नरो दीनदशामुपेतः प्राप्नोति मृत्युं निजकर्मदोषात् ७४

जिसकी मातृरेखा से उठी रेखा यदि अनामा व मध्यमा के बीच में पहुँचे तो वह बुरी हालत को पहुँचता और अपने कर्मदोष से ही मौत पाता है ७४

४ भोगासमुत्थं विशदस्वरूपं चन्द्रार्धचिह्नं यदि याति मन्दम्।
कारागृहं याति नरस्तदानीं कारुण्यहीनः कलहे रतश्च॥७५॥

जिसकी भोगरेखा (अस्मद्देशीय आयुरेखा) से उठा हुआ स्पष्ट रूपवाला अर्धचन्द्राकार निशान शनि स्थान में दिखे तो वह दयाहीन, लड़ाई में रत और जेल जाता है ॥ ७५ ॥

५ संभोगरेखा यदि नीचदेशे पीना सुहीना गुरुगा विभाति।
चण्डाभिघातान्मृतिमेति प्राणी स्थूला यदा चेच्छिरघातपातात्॥

जिसकी संभोगरेखा (अस्मद्देशीय आयुरेखा) निचले भाग में मोटी व ऊपरले भाग में पतली होकर बृहस्पति के स्थान में पहुँचे तो उसकी मौत बड़ी भारी चोट लगने से होती है। यदि पूर्वोक्त रेखा मोटी-सी दिखे तो सिर में चोट लगने से उसकी मृत्यु होती है ॥ ७६ ॥

६ भोगाधरस्थं विशदं विभाति रेखासमेतं यदि सप्तमाङ्कम्।
तदा जनः स्वीयजनाभिभूतो नीचोर्ध्वगा चेद्रिपुवृन्दपूर्णः७७॥

भोगरेखा के निचले भाग में साफ़ व रेखायुक्त सात के अंक के समान निशान हो तो वह अपने कुटुम्बी वर्गों से आदर नहीं पाता है। यदि पूर्वोक्त निशान निचले या ऊपरले भाग में दिखे तो उसके शत्रु अधिक रहते हैं ॥ ७७ ॥

७ मातुस्सुरेखोपरिगं सुचिह्नं गुणाख्यचिह्नेन युतं त्रिरेखम्।

† अनेकों पाश्चात्य विद्वानों ने चन्द्राकार चिह्न नेत्ररोगसूचक कहा है। यहाँ भी ठीक यही बात बताई गई है।—संपादक

द्वीपान्तरं याति नरस्तदानीं दाता दयालुर्दयिताविलासी ७८

मातृरेखा के ऊपरले भाग में गुणा × के चिह्नयुक्त तीन रेखाओंवाला निशान दिखे तो वह प्राणी दाता, दयालु, विलासी और द्वीपान्तर (दूसरे द्वीप) में चला जाता है ॥ ७८ ॥

८ भोगाधरस्थं विशदं विभाति गुणानुरूपं यदि भाति चिह्नम्।
तदा नरो धर्मपदावलम्बी धन्यो धरित्र्यां धनतामुपैति ॥७९॥

जिसकी भोगरेखा (अस्मद्देशीय आयुरेखा) के निचले भाग में साफ़ गुणा के समान निशान हो वह धर्मपद का अवलम्बन करनेवाला, धरामण्डल में धन्यवाद देने के योग्य होता और धनसमूह पाता है ॥ ७९ ॥*

९ पितुस्सुरेखोपरिगा विभाति ह्यङ्गुष्ठशाखासहिता सुरेखा ।
तदा नरो नीचनराभिलाषी व्रीडाविहीनो वनिताविलासी ८०

यदि एक रेखा पितृरेखा के ऊपरले भाग में अँगूठे की शाखाओं से युक्त हो तो वह निर्लज्ज रमणियों में रमण करता तथा नीचों की चाहना रखने वाला सूचित करती है ॥ ८० ॥

१० मातुस्सुरेखाधरगं विशुद्धं त्र्यङ्कानुरूपं यदि भाति चिह्नम् ।
विश्वासहीनो मनुजो विलासी संधारणाशक्तियुतोऽमिषाशी ॥

यदि तीन अंक के समान निशान मातृरेखा के निचले भाग में हो तो वह विलासी, भली भाँति धारणाशक्ति युक्त, मांसभक्षी और विश्वासहीन होता है ॥ ८१ ॥

११ मातुस्सुरेखाधरगं विभाति गुणत्रयेणापि युतं सुचिह्नम् ।
तदा परस्त्रीं हरते मनुष्यो नार्या यदा चेत्कुलटा भवेत्सा ८२॥

जिसकी मातृरेखा निचले भाग में तीन गुणा के निशानयुक्त हो वह पराई भार्या भगाता है । यदि पूर्वोक्त निशान स्त्री के करतल में हो तो वह व्यभिचारिणी होती है ॥ ८२ ॥

---

* इस प्रकार के चिह्न को अनेकों विदेशी विद्वानों ने Mystic Cross कहा है । यह भी एक छायावादी अथवा रहस्यवादी कवियों की एकनिशानी है । साथ ही यदि मातृरेखा (मस्तकरेखा) चंद्रग्रह की ओर जावे तब तो उसके कवि होने में संदेह करना व्यर्थ है ।—संपादक

१२ पितुस्सुरेखा यदि नीचभागे चिह्नेन गोलाकृतिना युता स्यात्
नेत्राभिघातं लभते मनुष्यो मन्त्रे सुतन्त्रे निरतो नितान्तम् ८३

जिसकी पितृरेखा के निचले भाग में गोलाकार चिह्न हो वह मन्त्र एवं तन्त्रशास्त्र में हमेशा रत रहता है। तथा नेत्ररोगी होता है ॥ ८३ ॥

१३ मातुस्सुरेखा यदि चोर्ध्वभागे स्थूलस्वरूपा मिलिता च वप्रे।
निर्बोधरूपो मनुजस्तदानीं व्याजेन युक्तो व्यवसायपूर्णः ८४

जिसकी मातृरेखा ऊपरले भाग में मोटी होकर पितृरेखा में मिल जावे वह अज्ञानी, छली तथा रोजगारी बना रहता है ॥ ८४ ॥

१४ अङ्गुष्ठमूले विशदं विशालं वृत्तार्धचिह्नं नियतं चकास्ति।
लौहाग्निघातं लभते स्वनेत्रे मानी मनुष्यो ममताविहीनः ८५

यदि अँगूठे के मूल में अर्धवृत्त का साफ़ निशान हो तो वह मानी, ममताहीन होता है और उसे नेत्रों में लोह या अग्नि द्वारा आघात होता है ८५

१५ पितुस्सुरेखा मणिबन्धहीना कौटिल्यरूपा मिलिता जनन्याम्
जल्पाकरूपो मनुजस्तदानीं स्वल्पेन कालेन मृतिं प्रयाति ८६

टेढ़ेरूपवाली पितृरेखा कब्ज़े से ऊपर और मातृरेखा मिली दिखे तो ऐसा प्राणी बकवादी (बड़बड़िया) होता है और थोड़ी उम्र में ही मर जाता है ॥ ८६ ॥

१६ पितुस्समुत्था यदि भाग्यरेखा वृत्तार्धयुक्ता जननीमुपैति।
आयुष्यहानिं लभते मनुष्यो ह्यानन्दहीनो निधनं प्रयाति ८७

जिसकी पितृरेखा से उठी हुई भाग्यरेखा (दौलत की रेखा) अर्धवृत्त चिह्न युक्त होकर मातृरेखा के समीप चली जावे तो वह आयुर्दायहीन होता तथा आनन्दहीन होकर मरता है ॥८७॥ (देखो चित्र नं० २८)

पञ्चदशलक्षणाङ्कितकरतलफल

१ अनामिकायास्त्रितये परुष्के नन्दाङ्करूपं यदि भाति चिह्नम्।
चतुष्पदादष्टतनुर्मनुष्यश्चाञ्चल्ययुक्तश्चरणामयश्च ॥ ८८ ॥

यदि अनामिका की तीसरी पोर में नौ के अङ्क का सा निशान हो तो वह

चौपायों से काटे अंगवाला होता है। चञ्चल तथा पैरों का रोगी भी होता है ॥ ८८ ॥

२ भोगासमुत्था सरला सुरेखा सौम्यालयं याति गभीररूपा।
सत्पात्रशीलो मनुजस्तदा स्यान्नार्या यदा चेत्तु भवेत्सती सा ८६

जिसकी भोगरेखा से उठी हुई सीधी व गहरी रेखा बुध स्थान में चली जावे तो वह प्राणी सत्पात्रशाला होता है। पूर्वोक्त रेखा स्त्री के करतल में दिखे तो वह पतिव्रता होती है ॥ ८६ ॥

३ चण्डालयस्थं विशदं चकास्ति चिह्नं यदेकं यदि न्यूनकोणम्।
तदा जनोयं जनयूथभिन्नः प्राप्नोति मृत्युं सहसा सुभीतः ६० ॥

यदि सूर्य स्थान में एक न्यूनकोणवाला (acute angle) निशान हो तो वह जनता द्वारा पिटना और बहुत डरकर एकाएक मर जाना बताती है ॥६०॥

४ अनामिकामध्यमिकासुमध्यं भोगासमुत्था यदि याति रेखा।
तापीसुशोकी मनुजोविदुःखी स्वल्पा यदा चेत्फलताल्पतास्यात्

भोगरेखा से उठी रेखा अनामिका व मध्यमिका के बीच में चली जावे तो वह संतापी, शोकी और विशेष दुःखी होता है। और यदि पूर्वोक्त रेखा छोटी सी हो तो अल्प फल होता है ॥ ६१ ॥

५ वृद्धाङ्गुलीतश्चलिते सुरेखे बृहस्पतिस्थानगते यदास्तः।
तदाग्निदग्धो मनुजो विभीतः संमुग्धचित्तो भ्रमते नितान्तम्॥

जिसके अँगूठे से चली दो रेखायें यदि बृहस्पति स्थान में पहुँचें तो वह आग से जलता, डरनेवाला और मुग्ध हुआ भ्रमण करता है ॥ ६२ ॥

६ भोगाधरस्थं विशदं विभाति वृत्तार्धचिह्नं यदि चोर्ध्ववक्त्रम्।
तदा नरो वह्निविदग्धगात्रो विभ्रान्तचित्तो भयतामुपैति ॥६३॥

भोगरेखा के निचले भाग में साफ ऊर्ध्वमुखवाला अर्धवृत्त का निशान हो तो वह अग्नि से जलता तथा भ्रान्तचित्त हो भयभीत रहता है ॥ ६३ ॥

७ भोगाधरस्थं विशदं विभाति चिह्नं त्रिकोणं यदि क्षुल्लरूपम्।
चतुष्पदाघातमुपैति प्राणी चञ्चत्प्रभावश्चपलस्वभावः ॥ ६४॥

छोटा त्रिकोण चिह्न भोगरेखा के निचले भाग में हो तो वह बड़े प्रभाव वाला, चपलस्वभाववाला, तथा चौपाये द्वारा चोट खाता है ॥ ९४ ॥

८संभोगरेखा मिलिता जनन्यां क्षुद्राविभिन्ना यदि चोर्ध्वभागे।
मिथ्याप्रलापी मनुजः प्रमादी संयोगहीना यदि वा सशाखा॥

सुभोगरेखा मातृरेखा में मिल जावे और ऊपरले भाग में छोटी रेखा से कटी दिखे तो वह मिथ्याभाषी तथा प्रमादी होता है। यदि पूर्वोक्त रेखा संयोगहीन तथा शाखा समेत हो तो भी उक्त फल होता है ॥ ९५ ॥ *

९ पितुस्सुरेखा मणिबन्धहीना संछिन्नमस्ता कुटिला विभाति।
तदा नरो मस्तकघातमेति मूर्च्छादिरोगैः परिपीडिताङ्गः॥९६॥

पितृरेखा मणिबन्ध से दूर तथा मस्तक पर कटी व टेढ़ी हो तो वह मूर्च्छा रोग से पीड़ित होता तथा मस्तक में चोट खाता है ॥ ९६ ॥

१० निशाकरस्थानगतं सुचिह्नं संलग्नमस्तं सरलं द्विरेखम्।
चतुष्पदाघातमुपैति प्राणी वामाभिलाषी वनिताविलासी ९७

जिसके चन्द्र स्थान में सीधी दो रेखायें मिली दिखें तो वह सुन्दरियों की चाहनावाला, वनिताविलासी और चौपायों द्वारा चोट खाता है॥९७॥

११मातुस्सुरेखोपरिगा विभान्ति रेखाविक्षुद्राः सरलाश्च षट्काः
जङ्घाभिघातं प्रतिपद्य सद्यः पादाभिघातं लभते मनुष्यः ॥९८॥

जिसे सीधी व छोटी छः रेखायें यदि मातृरेखा के ऊपर हों वह जंघाओं में चोट खाता तथा शीघ्र ही पावों में भी आघात पाता है ॥ ९८ ॥

१२पितुस्खुरेखा निकटे विभाति ह्यङ्गुष्ठशाखा सहितं त्रिकोणम्।
संभ्रान्तचित्तो निजमानहीनो नरो भवेद्ध्वस्तपदाधिकारः ९९

अँगूठे की शाखाओं समेत त्रिकोण चिह्न पितृरेखा के समीप यदि हो तो संभ्रान्तचित्तवाला, मानहीन, तथा ओहदे से पतित होना सूचित करती है ॥ ९९ ॥

---

* यदि पूर्वोक्त कथनानुसार संभोगरेखा मातृरेखा में मिल जावे, साथ ही कहीं यदि पितृरेखा भी मिले तो उसे बड़ा भयंकर व्यक्ति समझना चाहिये। उसकी मृत्यु भी आकस्मिक होती है।—संपादक

१३ मातुस्सुरेखा यदि सर्वदेशे चुद्राविभिन्ना विशदस्वरूपा ।
वातार्तियुक्तो मनुजो महौजाः पीडां कठोरां लभतेदिनान्ते १००

जिसकी मातृरेखा सर्वत्र छोटी छोटी रेखाओं से कटी दिखे वह महाबली, वातरोग पीड़ित, तथा सन्ध्या समय में कठोर पीड़ा पाता है ॥ १०० ॥

१४ पितुः सुरेखाधरगं विभाति रेखाद्वयं रेखयुगेन भिन्नम् ।
शोकाकुलोयं पुरुषस्तदानीं पाशाग्रविद्धो मरणं प्रयाति ॥१॥

जिसे दो रेखाओंवाला निशान पितृरेखा के निचले भाग में अन्य दो रेखाओं से कटा प्रतीत हो वह शूली द्वारा मौत पाता है ॥ १ ॥

१५ काव्यालयान्ते यदि भाति चिह्नं वृत्तार्धरूपं विशदं गभीरम् ।
वेश्याविहारी मनुजो विकारी मित्रापकारी परवित्तहारी ॥२॥

जिसे शुक्र स्थान में (अँगूठे की मूल में) अर्धवृत्त का साफ़ व गहरा निशान हो वह वेश्याविहारी, विकारी, मित्रों का अपकारी, तथा परद्रव्यहारी होता है ॥ २ ॥ (देखो चित्र नं० २६)

चतुर्दशलक्षणाङ्कितकरतलफल

१ सर्वाङ्गुलीनां युगरामपर्वके एका विक्षुद्रा सरला च रेखिका ।
असाध्यरोगी मनुजः प्रकीर्तितो दौर्बल्यगात्रो बहुकोपकोपितः

समस्त अँगुलियों की दूसरी एवं तीसरी पोर में एक छोटी व सीधी रेखा हो तो वह असाध्य रोगी, दुर्बल तथा महाक्रोधी होता है ॥ ३ ॥

२ कनिष्ठिकामूलगता विभान्ति रेखा विक्षुद्राः कुटिलाश्च तिस्रः ।
तदा कुकाले जननं प्रयातो मानी मनुष्यो ममतामुपैति ॥४॥

जिसकी कनिष्ठा के मूल में छोटी व टेढ़ी सी तीन रेखायें हों तो वह कुसमय में जन्म पाता तथा मानी और ममतावाला होता है ॥ ४ ॥

३ सोमात्मजस्य सदने यति भान्ति रेखा-
स्तावन्मिता विकथिताः शुभदा विवाहाः ।
पाणिग्रहैर्विरहिता यदि गर्तयुक्ता
भिन्ना यदा मृतिगतः प्रथमं नृनार्यः ॥ ५ ॥

बुध स्थान (कनिष्ठा के मूलतल) में जितनी टेढ़ी व गंभीर रेखायें हों उतने ही नरनारीगणों के विवाह कहाते हैं । यदि पूर्वोक्त रेखायें छिद्र-युक्त हों तो उनका ब्याह ही नहीं होता। यदि पूर्वोक्त रेखायें भिन्न हों अर्थात् स्त्री पुरुष के करतल में उक्त रेखायें मध्य में भिन्न हों तो पहले पुरुष मर जाते हैं और यदि पार्श्व में कटी सी प्रतीत हों तो पहले स्त्रियाँ मर जाती हैं ॥ ५ ॥ *

४ संभोगरेखोपरिगं विभाति वृत्तार्धचिह्नं विशदस्वरूपम् ।
मातापितृभ्यां रहितो मनस्वी प्राप्नोति प्राणी बहुदूरदेशम् ॥६॥

जिसके संभोगरेखा (अस्मद्देशीय आयुरेखा) के ऊपरले भाग में साफ़ अर्धवृत्त का निशान हो तो वह मनमौजी, तथा दूरदेश को जाता है ॥६॥

५ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशाद् भाग्या सुरेखा समुपैति शौरिम्।
तदा नरो दुःखशतानि भुङ्क्ते संस्पृष्टमूला यदि याति काराम् ॥७॥

---

* प्रायः सभी विदेशी पण्डित यही बात बताते हैं। कनिष्ठा के मूल की आड़ी रेखा यदि शुद्ध स्पष्ट तथा लम्बी सी दिखे तो विवाह सूचित करती है। यदि कुछ पतली या छोटी हो तो वह पुरुष अथवा स्त्री का प्रभाव या संबंध बताती है। एक अमेरिकन विद्वान् कहता है कि यदि इस आड़ी रेखा पर कोई छिद्र या गोल गड्ढा दिखे तो वह प्रेम संबंध में बाधा समझना चाहिये। फ्रेंच विद्वान् कहता है कि यदि यह रेखा संभोगरेखा (आयुरेखा) की ओर झुके तो स्त्री के हाथ में रंडापा (वैधव्य) तथा पुरुष के हाथ में विधुरता की सूचक है। इस रेखा पर आड़े टेढ़े किसी प्रकार के निशान प्रेम में बखेड़े या झगड़े अथवा अंतर सूचित करते हैं । यदि यह रेखा प्रारंभ में एक छोटी रेखा से मिली है तो अमेरिकन विद्वान् के कथनानुसार उसमें रक्तप्रवाह द्विगुण होने से उसका फल अधिक अच्छा समझना चाहिये ; और यदि अंत में इसमें से शाखा निकले तो प्रेम संबंध में परस्पर विरोध जानना। यहाँ एक बात और भी विशेष ध्यान में रखना आवश्यक है। बुधस्थान की सभी आड़ी रेखाएँ विवाह नहीं बतातीं। पर वे पुरुष अथवा स्त्री का संबंध अवश्य ही प्रकट करती हैं । इनमें सबसे स्पष्ट और अच्छी रेखा ही विवाह कहाता है।

एक और अंग्रेज लेखक कहता है कि बुध स्थान की इस आड़ी रेखा से यदि एक योग-रेखा शुक्रालय की एक छोटी पितृरेखा (आयुरेखा) की समानान्तर रेखा से मिले तब उसे विवाह सम्बंध जानना चाहिये । अन्यथा जितनी छोटी २ रेखायें दिखें उतने सम्बंध जानना चाहिये। जो हो, उपरोक्त कथन सत्य है।—संपादक

जिसके मणिबन्ध (कब्जे) से उठी भाग्यरेखा शनि पर्यन्त जावे तो वह अनेक दुःख भोगता है । यदि पूर्वोक्त रेखा मध्यमा का मूल स्पर्श करे तो वह जेलखाने जाता है ॥ ७ ॥

६ संभोगरेखा यदि मध्यमान्तं गम्भीररूपा कुटिला प्रयाति ।
कष्टेन कालं नयते मनुष्यः साहाय्यतो वित्तमुपैति नूनम् ॥८॥

गहरी व टेढ़ी संभोगरेखा यदि मध्यमा के समीप चली जावे तो कष्ट से समय बिताना, और सहायता से निश्चय धन पाना बताती है ॥ ८ ॥

७ सुभोगरेखाधरगं त्रिरेखं वामेन मध्येन च भिन्नरूपम् ।
तदा नरो वह्निभयाद्विभीतो वित्तक्षयं वै लभते नितान्तम् ९

सुभोगरेखा के नीचे वामभाग और मध्य भाग में कटा तीन रेखाओंवाला निशान हो तो वह अग्निभय तथा धनक्षय सूचित करती है ॥ ९ ॥

८ भोगासमुत्था यदि वक्ररेखा मात्रीं विभित्त्वा समुपैति पैत्रीम् ।
तदा जनो वैरिगणाभिभूतः क्षयार्तियुक्तो भयतामुपैति ॥१०॥

जब एक टेढ़ा रेखा भोगरेखा से उठ मातृरेखा को काट पितृरेखा के पास पहुँचे तो शत्रु से सताया जाना, क्षयीरोग, तथा भय बताती है १०॥

९ पितुस्सुशीर्षोपरिगं विभाति रेखाद्वयं रेखयुगेन भिन्नम् ।
तदाश्वपृष्ठात्पतितो मनुष्यः क्षुद्रं यदा चेत्फलमन्दता स्यात् ११

जिसकी पितृरेखा के सिर पर दो रेखाओंवाला निशान अन्य दो रेखाओं से कटा हो तो वह घोड़े पर से गिर कर मर जाता है । यदि पूर्वोक्त निशान छोटा हो तो फल अल्प होता है ॥ ११ ॥

१०क्षपाकरस्योपरिगा विभान्ति रेखा विक्षुद्रा यदि यान्तिमात्रीम्
तदा नरो दुर्बलगात्रयष्टिः संक्रुद्धचित्तो धननाशमेति ॥ १२ ॥

छोटी छोटी बहुत सी रेखायें यदि चन्द्रस्थान के ऊपरले भाग से मातृ-रेखा के पास पहुँचें तो वे दुर्बलता, क्रोध और धनक्षय की सूचक हैं १२॥*

* प्रसिद्ध फ्रेंच विद्वान् भी चंद्र स्थान पर ऐसी रेखाओं को बड़ी भारी कमज़ोरी, सदा उदासी और पेट के विकार सूचक मानता है। ऐसा पुरुष कमज़ोर तबियत का हुआ करता है।—संपादक

११ बृहस्पतिस्थानगता कुरेखा गम्भीररूपा यदि याति मन्दम्।
शीतज्वरान्मृत्युमुपैति मर्त्यः सूक्ष्मा यदा चेत्फलताल्पता स्यात्॥

जिसके गुरु स्थान से गहिरा छोटी-सी रेखा शनि स्थान में पहुँचे तो वह शीतज्वर (जूड़ी व बुखार) से मृत्यु पाता है। यदि पूर्वोक्त रेखा पतली-सी हो तो अल्प फल होता है ॥ १३ ॥

१२काव्यालयोत्थासमुपैतिरेखापैत्रींसुभाग्यांचविभिद्यमात्रीम्
आघातवृन्दं लभते मनुष्यश्चानन्दहीनो दयिताविहीनः १४

जिसके शुक्र स्थान से उठी रेखा पितृरेखा व भाग्यरेखा को काट कर मातृरेखा से मिल जावे तो वह आनन्द हीन, प्राणप्यारी से विहीन, तथा बहुत-सी चोटें खाता है ॥ १४ ॥

१३ भाग्यान्तिकस्थं घटदण्डतुल्यं सप्ताङ्कभिन्नं यदि भाति चिह्नम्
स्त्रैणो मनुष्यो निरपत्रपः स्यान्नार्यां यदा चेद्गणिका भवेत्सा १५

जिसकी भाग्यरेखा के समीप तराज़ू की डण्डी के समान तथा सात के अङ्क से भिन्न हुआ निशान यदि हो तो वह स्त्रीलम्पट, तथा निर्लज्ज होता है। यदि पूर्वोक्त निशान स्त्री के करतल में हो तो वह वेश्या होती है ॥ १५ ॥

१४ निशाकरस्थानगता सुरेखा क्षुद्राविभिन्ना कुटिलस्वरूपा।
लज्जाकरस्स्यान्मनुजस्सुखेप्सुर्नार्यांयदाचेदुपपत्निकास्यात् १६

जिसके चन्द्र स्थान में एक टेढ़ी रेखा छोटी छोटी रेखाओं से कटी हो तो वह सुख की चाहवाला होता तथा लज्जाकारी होता है। यदि पूर्वोक्त रेखा स्त्री के हो तो याजक की उपपत्नी होती है ॥ १६ ॥
(देखो चित्र नं ३०) †

सप्तदशलक्षणाङ्कितकरतलफल

१ कनिष्ठिकायास्त्रितये परुष्के रेखा विक्षुद्राः सरला यदि स्युः।
तावन्मिता बोधयुताःसुपुत्राःसंवक्रगाश्चेत्ततिकन्यकाश्च १७॥

कनिष्ठा की तीसरी पोर में जितनी छोटी एवं सीधी रेखायें हों उतने ही

† चंद्र का राज्य सदा विचारधारा, कल्पनाओं आदि पर रहा करता है।
—संपादक

पुत्र होते हैं। और यदि पूर्वोक्त रेखायें टेढ़ी-सी दीखें तो उतनी ही कन्या पैदा होती हैं ॥ १७ ॥ †

२ कनिष्ठिकाया द्वितये पर्वके रेखाद्वयं चेद्गुरुणा समेतम्।
पुत्रादिहीनं मनुजं करोति विद्याविहीनं वचसा विहीनम् १८॥

जिसकी कनिष्ठा की दूसरी पोर में ऽ गुरुसमेत खड़ी दो रेखाओंवाला (यानी भगण का) निशान हो तो उसको विद्याविहीन, वचनविहीन, तथा पुत्रहीन जानना ॥ १८ ॥

३ शनैश्चरस्थानगता कुरेखा कौटिल्यरूपा विशदा विभाति।
श्लेष्मप्रधानो मनुजस्तदा स्यात् कासादिरोगैः परिपीडिताङ्गः॥

जिसे शनि स्थान में छोटी, टेढ़ी व साफ़ रेखा हो तो श्वास रोग से पीड़ित तथा कफरोगवाला होता है ॥ १९ ॥

४ चन्द्रात्मजस्थानगतं गभीरं चिह्नं त्रिरेखं सरलं चकास्ति।
सोऽयं जनः सज्जनसंगकारी संवक्रगं चेदधमानुगः स्यात् २०॥

जिसके बुध स्थान में गहरी तीन रेखाओंवाला सीधा निशान हो तो वह सज्जनों का साथ करता है। यदि पूर्वोक्त निशान टेढ़ा सा हो तो वह अधमों का अनुगामी होता है ॥ २० ॥

५ संभोगरेखा यदि मध्यमान्ता संभिन्नरूपा कुटिला विभाति।
साधुस्वभावो मनुजस्तदानींसत्कर्मशालीसततं सुखीस्यात् २१

जिसकी संभोगरेखा (अस्मद्देशीय आयुरेखा) मध्यमा तक पहुँच शाखा युक्त हो जावे तो वह साधुस्वभाववाला, सत्कर्मशाली तथा निरन्तर सुखी रहता है ॥ २१ ॥ *

---

† यह कनिष्ठा की तीसरी पोर में संतान-रेखायें बताई हैं। किन्तु पाश्चात्य विद्वान् बुध-स्थान में खड़ी तथा स्पष्ट रेखाओं को पुत्र की और पतली छोटी रेखाओं को कन्या की रेखा बताते हैं। इन दोनों कथनों में अधिक अंतर नहीं है।

* एक विदेशी विद्वान् का कथन है कि यदि संभोग रेखा की एक शाखा गुरु की ओर तथा दूसरी तर्जनी और मध्यमा के बीच में जावे तो ऐसा मनुष्य अधिक सुखी तथा घरेलू जीवन व्यतीत करता है। साथ ही वह ऐसा वातावरण भी पाता है। संभोग रेखा का सबसे अच्छा और संतोषजनक रूप यही कहाता है।—संपादक

६ प्रदेशिनीमध्यमिकासुमध्ये रेखा यदैका सरला विभाति।
आघातपातान्मृतिमेति प्राणी संकर्तिता चेत्फलमन्यथा स्यात् ॥

जिसकी तर्जनी व मध्यमा के बीच में एक सीधी रेखा हो तो वह चोट लगने से अचानक मौत पाता है। यदि पूर्वोक्त रेखा भोगरेखा से कटी दीखे तो फल अन्यथा होता है ॥ २२ ॥

७ भोगाधरस्थं सरलं त्रिरेखं चिह्नं गभीरं विशदं विभाति।
तदा जनश्शत्रुगणाभिभूतो शान्त्या विहीनो भयतामुपैति २३

जिसकी भोगरेखा के निचले भाग में (मंगलस्थान में) सीधा तीन रेखाओंवाला गहरा निशान हो वह वैरियों से अनादृत होता तथा शान्ति रहित हो भय पाता है ॥ २३ ॥

८ मातुः सुरेखोपरिगं गभीरं वृत्तार्धचिह्नं विशदं विभाति।
गुदामयं वै लभते मनुष्यश्चोर्ध्वं यदा चेत्पशुघातमेति ॥२४॥

जिसकी मातृरेखा के ऊपरले भाग में साफ़ गहरा अर्धवृत्त का निशान हो वह गुदारोगी (भगन्दर, बवासीर आदि) होता है। यदि पूर्वोक्त निशान ऊर्ध्वमुख हो तो पशुघात पाता है ॥ २४ ॥

९ मातुस्सुशीर्षोपरिगं विभाति गर्ताख्यचिह्नं विशदं गभीरम्।
नक्तान्ध्यरोगी मनुजः सुभोगी विद्यांविशेषो विभुतामुपैति २५

जिसकी मातृरेखा पर गहिरा व साफ़ गढ़हे का निशान हो वह रतौंधीवाला, बड़े भोगवाला, विद्याओं में विशेष, तथा विभुता पाता है ।।२५॥*

१० मातुस्सुशीर्षोपरिगा सुरेखा गम्भीररूपा यदि याति मन्दम्।
उद्बन्धयुक्तो मृतिमेति जन्तुर्जायासमेतो जयतामुपेतः॥ २६ ॥

जिसकी मातृरेखा के शीश पर गहरी रेखा शनि पर्यन्त जावे तो वह जाया समेत जयता को प्राप्त हो उद्बन्धन (फाँसी आदि) से मौत पाता है ॥२६॥

---

१ अङ्गानि वेदाश्चत्वारो मीमांसा न्यायविस्तरः। धर्मशास्त्रं पुराणं च विद्या ह्येताश्चतुर्दश ॥

* पाश्चात्य विद्वान् भी वृत्ताकार अथवा अर्धवृत्ताकार चिह्न नेत्ररोगसूचक कहते हैं।—संपादक

११ स्वल्पा सुमात्री विशदा सुरेखा संवक्ररूपा यदि याति वक्रम्।
चतुष्पदाघातमुपैति प्राणी चञ्चत्प्रभावश्चपलस्वभावः ॥ २७॥

टेढ़ी, छोटी व साफ़ मातृरेखा यदि मङ्गल के समीप चली जावे तो बड़े प्रभाववाला, चपल स्वभाववाला, और चौपायों से चोट खानेवाला सूचित करती है ॥ २७ ॥

१२वक्रा सुपैत्री मिलिता जनन्यां कोणेन युक्ता मणिबन्धगाचेत्
सोयं जनः शत्रुगणादिभिन्नः कारागृहं प्राप्य मृतिं प्रयाति २८॥

पितृ रेखा टेढ़ी तथा मातृरेखा में मिली हुई कोण चिह्न युक्त होकर कब्जे पर्यन्त जावे तो वैरिगणों द्वारा ताड़ित, जेल में मृत्यु पाना बताती है ॥ २८ ॥

१३ अङ्गुष्ठशाखासहितं गभीरं कोणद्वयं चिह्नमं चकास्ति।
श्लेष्माधिकोऽयं मनुजस्तदानीं दौर्बल्यगात्रो दयितामुपैति २९

यदि अँगूठे की शाखाओं समेत गहरा दो कोणों का निशान हो तो कफीला, दुर्बल होता तथा सुन्दरी पाता है ॥ २९ ॥

१४ वृद्धाङ्गुलेर्वै निकटे नखस्य मध्ये विभिन्नं यदि भाति वृत्तम्।
चौर्ये प्रवृत्तो मनुजस्तदानीं स्त्रैणो महाव्याधियुतो बिभेति ३०

अँगूठे के नख के समीप या बीच में, गोल निशान एक छोटी रेखा से कटा हो तो चौरकर्म में परायण, स्त्रीलम्पट, महाव्याधि युक्त तथा भयसूचक है ३०

१५समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशात्स्वल्पा सुभाग्या समुपैति मात्रीम्।
तदा जनो जीवति दीर्घकालं दाता दयालुर्दयिताविहीनः ३१

जिसकी मणिबन्ध से उठी छोटी सी भाग्यरेखा यदि मातृरेखा तक जावे तो वह दाता, दयालु, प्राणप्यारी हीन तथा दीर्घायु होता है ॥ ३१ ॥

१६ अङ्गुष्ठमूले विशदं विशालं कीटानुरूपं यदि भाति चिह्नम्।
कफार्तियुक्तो मनुजस्तदा स्यात्कान्ताविहीनः कलहे रतश्च ३२

जिसके अँगूठे के मूल में साफ़ बिच्छू के समान निशान हो वह स्त्रीहीन, लड़नेवाला तथा कफरोगी होता है ॥ ३२ ॥

१७ पित्रोः सुमध्ये परिदृश्यमानं सर्पानुरूपं यदि भाति चिह्नम् ।
तदा कलङ्की मनुजो विशङ्की नार्या यदा चेत्कुलटा भवेत्सा ३३

जिसकी मातृरेखा व पितृरेखा के बीच में साँप के समान निशान हो तो वह कलङ्की तथा विशङ्की होता है। यदि पूर्वोक्त निशान स्त्री के करतल में हो तो वह व्यभिचारिणी होती है ॥ ३३ ॥ (देखो चित्र नं० ३१)

सप्तदशलक्षणाङ्कितकरतलफल

१ कनिष्ठिकायास्तृतये परुष्के रेखाद्वयं चेत्सरलं विभाति ।
जङ्घार्तिभीतिं लभते मनुष्यो जायाभिलाषी जनतासमेतः ३४

जिसकी कनिष्ठा की तीसरी पोर में सीधा दो रेखाओंवाला निशान हो वह स्त्री की अभिलाषा करता तथा जंघापीड़ा के भय को पाता है ॥ ३४ ॥*

२ अनामिकायास्त्रितये परुष्के रेखाद्वयं चेत्कुटिलं चकास्ति ।
चतुष्पदादष्टतनुर्मनुष्यो दीनो दरिद्रो दमतामुपैति ॥ ३५ ॥

जिसकी अनामिका की तीसरी पोर में दो रेखाओं का टेढ़ा निशान हो वह दीन, दरिद्री और चौपाये द्वारा डसा जाता है ॥ ३५ ॥

३ चन्द्रात्मजस्थानगता विक्षुद्रा स्थूलस्वरूपा यदि भाति रेखा ।
चौर्ये प्रवृत्तो मनुजस्तदा स्याच्चञ्चत्प्रभावश्चपलस्वभावः॥ ३६ ॥

बुध स्थान में छोटी एवं मोटी रेखा हो तो वह प्रभावशाली, चपलस्वभाववाला, और चोर होता है ॥ ३६ ॥ †

४ ब्रध्नालये चेद्विशदे विक्षुद्रे स्यातां सुरेखे विरलस्वरूपे ।
कट्यार्तिभीतिं भजते मनुष्यो भाग्येन हीनो भ्रमतासमेतः३७॥

सूर्य स्थान में साफ़, छोटी और सीधी विरली दो रेखायें हों तो भाग्यहीन, भ्रम से घिरा तथा कमरपीड़ा बताती है ॥ ३७ ॥

---

* कनिष्ठा की तीसरी पोर में पहिले संतान-रेखायें भी बता आये हैं। उपरोक्त रेखाओं को तथा संतान रेखाओं को ज़रा ध्यानपूर्वक देख कर विचार करना चाहिये अन्यथा गड़बड़ हो जाने का भय हो सकता है। —संपादक

† कई विदेशी विद्वान् भी यही बात कहते हैं। उनका कथन है कि बुध स्थान पर मोटी, साफ़ एवं खड़ी रेखा अथवा कनिष्ठा की पहिली या तीसरी पोर में यदि एक धन का चिह्न + या खड़ी रेखा ऐसे ही मनुष्य की सूचक है।—संपादक

५ प्रदेशिनीमूलतलाच्चलन्ती रेखा यदैका यदि याति चान्द्रम् ।
व्युत्पन्नबुद्धिर्मनुजस्तदा स्याद्वेदान्तभाषी व्यवसायपूर्णः॥३८॥

जिसकी तर्जनी के मूल से चली एक रेखा बुध स्थान में पहुँचे तो वह वेदान्तभाषी, उद्यम पूर्ण, तथा व्युत्पन्न बुद्धिवाला होता है। यह रेखा प्रायः अखबार संपादकों के हाथों में पाई जाती है॥ ३८ ॥

६ संभोगरेखा यदि नीचभागे रेखाद्वयेनाप्यवखण्डिता स्यात् ।
तदा नरो बन्धुजनोपकारी प्राप्नोति वित्तं वनिताविहारी॥३९॥

जिसकी संभोग रेखा (अस्मद्देशीय आयुरेखा) निचले भाग में दो रेखाओं से खण्डित दिखे वह बन्धु उपकारी, वनिताविहारी तथा धनी होता है॥ ३९ ॥

७ अम्बोत्थरेखा युतशीर्षदेशा संभोगरेखा गुरुगा विभाति ।
तदा नरो मृत्युभयाद्विभीतो व्यासक्तचित्तः परितः प्रयाति ४०॥

जिसके मातृरेखा से उठी रेखा संयुक्त शीशवाली भोगरेखा बृहस्पति स्थान में पहुँचे वह मृत्यु से डरता, तथा विशेषता से आसक्तचित्त और चारों तरफ़ घूमता है॥ ४० ॥

८ गुर्वालयोत्था विशदास्सुरेखा यावन्मिता मातृपदं प्रयान्ति ।
तावद्विवाहान्कुरुते मनुष्यो मान्यो वदान्यो धनतासमेतः॥४१॥

जिसके गुरु स्थान से उठी जितनी साफ़ रेखायें मातृरेखा के पास पहुँचें वह मानी, दानी, धन सम्पन्न, तथा उतने ही विवाह करता है॥४१ ॥

९ मातुस्सुरेखा यदि नीचभागे शाखासमेता गुरुगा विभाति ।
दाता दयालुर्मनुजस्तदानीं सुखाभिलाषी ललनामुपैति ॥४२॥

जिसकी मातृरेखा निचले भाग में शाखायुक्त हो यदि बृहस्पति स्थान में पहुँचे तो वह दाता, दयावान, सुखाभिलाषी, तथा प्यारी ललना पाता है ४२

१० मातुस्सुरेखा यदि मध्यभिन्ना गम्भीररूपा गुरुगा विभाति ।
कष्टयार्ति भीतिं लभते मनुष्यः पूर्वोक्तमानेन विचारणीयम् ४३

यदि मातृरेखा बीच में भिन्न एवं गहरी हो और बृहस्पति स्थान में पहुँचे तो

कमरपीड़ा का भय बताती है। यह पूर्वोक्तमान से विचारना चाहिए ॥ ४३ ॥

११ मात्रा वियुक्ता यदि पितृरेखा सञ्छिन्नमस्ता कुजगा विभाति।
तदा नरः स्याद्बहुजग्धिकारी प्रमत्तचित्तः प्रमदाविहारी ॥४४॥

यदि मातृरेखा से विलग होकर पितृरेखा कटे मस्तकवाली तथा मंगल के घर पहुँचे तो मतवाला, प्रमदाविहारी और बहु भोजी होता है ॥ ४४ ॥

१२ वृद्धाङ्गुलेर्वै निकटे नखस्य चापानुरूपं यदि भाति चिह्नम्।
शस्त्रास्त्रविद्धो मनुजो मनस्वी मानी धनी स्याज्जनतासमेतः ४५

जिसके अंगूठे के नाखून के पास धन्वाकार निशान हो वह मनमौजी, मानी व धनी, जनसंपन्न होता और शस्त्रास्त्रों से वेधा जाता है ॥ ४५ ॥

१३ मातुस्सुरेखाधरगं गभीरं त्र्यङ्कानुरूपं यदि भाति चिह्नम्।
तदा नरस्स्याच्छरजालबद्धो वामी सुकामी खलधामगामी ४६

जिसे मातृरेखा के निचले भाग में गहिरा तीन के आंक का सा निशान हो वह वामी, बड़ा कामी, खलधामगामी, और बाणसमूहों से बाँधा जाता है ॥ ४६ ॥

१४ समुत्थितं चेन्मणिबन्धदेशात्सर्पानुरूपं समुपैति मात्रीम्।
तदा नरः स्याद्व्यभिचारशीलो नार्या यदा चेत्कुलटा भवेत्सा ४७

मणिबन्ध से उठा हुआ सर्प के समान निशान मातृरेखा के समीप जावे तो वह व्यभिचारी होता है। यदि पूर्वोक्त निशान स्त्री के करतल में हो तो वह व्यभिचारिणी होती है ॥ ४७ ॥

१५ पैत्री सुरेखा यदि मध्यदेशे वृत्तार्धयुक्ता कुटिला विभाति।
प्राप्नोति प्राणी हृदयाभिघातं पूर्वोक्तमानेन विदोहनीयम् ॥४८॥

जिसकी पितृरेखा मध्यभाग में गोल या अर्ध गोलाकार निशान तथा टेढ़ी हो वह हृदय में चोट पाता है। यह विद्वान् को पूर्वोक्त मान से विचारना चाहिए (अर्थात् समय-निर्णय पूर्वोक्त मान से करना चाहिए) ॥ ४८ ॥

१६ निशाकरस्थानगतं सुचिह्नं चुल्लीसरूपं विशदं विभाति।
तदा नरो मज्जति वारिराशौ व्यायामसक्तो विषयातुरश्च ॥४९॥

चन्द्र स्थान में चुल्ही के समान साफ़ निशान हो, तो कसरती, विषय-आतुर होता तथा नदी, नाले आदि में डूबता है ॥ ४६ ॥ *

१७ पैत्री सुरेखा यदि नीचभागे संखण्डिता भुग्नतरा विभाति।
तदा महोच्चात्पतितो मनुष्यो मानी महौजा ममतामुपैति॥५०॥

पितृरेखा निचले तरफ़ भलीभाँति खण्डित होकर टेढ़ी हो तो वह मानी व महाबली तथा ऊँचे से गिरता है ॥५०॥ (देखो चित्र नं० ३२)

द्वादशलक्षणाङ्कितकरतलफल २५

१ सर्वाङ्गुलीनां युगरामपर्वके रेखाद्वयं वै सरलं विभाति चेत्।
तदाजनोसौ निजवाक्यपालकः पारुष्यपूर्णः परमार्थशालकः ५१

यदि सब अँगुलियों की दूसरी व तीसरी पोर में सीधी दो रेखाएँ हों तो अपने वाक्य का पालनेवाला, कठोर, परमार्थशालक सूचित करती हैं ॥५१॥

२ सौम्यालयाच्चेच्चलिता सुरेखा चापानुरूपा यदि याति सूर्यम्।
तदा नरोऽसौ वयसः क्रमेण प्राप्नोति वृद्धिं बलवीर्ययुक्ताम् ॥५२॥

बुध स्थान से चली धनुषाकार रेखा यदि सूर्य के पास पहुँचे तो वह अवस्था के क्रम से बल वीर्य-युक्त वृद्धि पाता है यानी बाल्यावस्था से युवावस्था में एवं युवावस्था से वृद्धावस्था में उन्नति को पाता है ॥ ५२ ॥

३ वक्रालयाच्चेच्चलितासुरेखापित्रोर्विभित्त्वा यदि याति भोगाम्।
रक्तार्तियुक्तो मनुजो मनीषी सौजन्यपूर्णो मृतिमेति सद्यः ॥५३॥

जिसे मंगल स्थान से चली रेखा मातृरेखा व पितृरेखा को काटकर भोगरेखा पर्यन्त चली जावे वह बुद्धिमान्, सज्जन, रक्तपीड़ा से युक्त होता और वेग ही मौत पाता है ॥ ५३ ॥

४ संभोगरेखोपरिगं विभाति वृत्तार्धयुग्मेन युतं सुचिह्नम्।
तदा नरोसौ गुणगौरवाढ्यो गुदार्तियुक्तो गुरुतामुपैति ॥५४॥

भोगरेखा के ऊपर दो अर्ध गोलाकार निशान हों तो वह गुण गौरव सम्पन्न तथा गुदारोगी और गुरुता को पाता है ॥ ५४ ॥

---

* यही बात विदेशी विद्वान् भी कहते हैं। वे जल में डूबने के लिये चौकोर निशान बताते हैं। पर चंद्र स्थान पर होना ही चाहिये।—संपादक

५ मातुस्सुरेखा यदि मध्यभागे धन्वाकृतिभ्यामवखण्डिता स्यात् ।
दौर्बल्यगात्रो विकलस्वभावो मानेन हीनो मनुजो बिभेति ५५

यदि मातृरेखा मध्यदेश में दो धन्वाकार निशानों से खण्डित दिखे, तो दुर्बल शरीरवाला, विकल स्वभाववाला, मानहीन तथा डरता रहनेवाला सूचित करती है ॥ ५५ ॥

६ पित्रा समेता यदि मातृरेखा कोणेन युक्ता कुटिला विभाति ।
विश्वासयुक्तो मनुजोमनस्वीस्यात्तीक्ष्णबुद्धिर्विषयस्यगोप्ता ५६

पितृरेखा से मिली मातृरेखा यदि टेढ़ी एवं कोणचिह्न युक्त हो तो मनमौजी, तीखी बुद्धिवाला, विषय का छिपानेवाला तथा विश्वासयुक्त रहता है ॥ ५६ ॥

७ पितुः सुरेखोपरिगं सुचिह्नं भिन्नत्रिकोणं यदि वज्रभिन्नम् ।
तदा नरो वह्निविदग्धगात्रो व्यासक्तचित्तः परितः प्रयाति॥५७॥

पितृरेखा के ऊपरले भाग में वज्र से कटे हुए भिन्न त्रिकोण का निशान यदि दिखे तो उसकी देह अग्नि से जलती और वह विशेषता से या तो आसक्तचित्त होता या सबसे अलग चित्त रखता और चारों तरफ़ घूमता है५७*

८ काव्यालयाच्चेच्चलिता सुरेखा नतस्वरूपा यदि याति चोर्ध्वम् ।
तदा नरो भिक्षुकवृत्तियुक्तो नीचप्रवृत्तिर्नितरां विभाति ॥५८॥

शुक्र स्थान से चली लचेरूपवाली रेखा ऊपर को जावे तो वह नीचों में प्रवृत्ति रखता एवं भिक्षुकों की जीविकावाला होता है ॥ ५८ ॥

९ आरालयोत्थं कुटिलं गभीरं रेखाद्वयं भ्रातृपदं प्रयाति ।
शीर्षच्छिदाभीतियुतो मनुष्यो मायामयोऽयं ममतामुपैति५९

मंगल स्थान से उठा टेढा एवं गहिरा दो रेखाओं का निशान भ्रातृस्थान को चला जावे तो वह मायावी शीश काटने के भय से युक्त होता तथा ममता पाता है ॥ ५९ ॥

---

* स्मरण रहे कि उक्त चिह्न मङ्गल स्थान पर होगा, और मंगल का राज्य अग्नि पर है। रक्तवर्ण है। इस विषय पर पहले लिखा जा चुका है।—संपादक

१० चन्द्रालयस्थं सधनं गभीरं रेखात्रयं चिह्नतरं चकास्ति।
तदा नरोऽसौ शठतामुपैति सम्पत्तिपूर्णो नितरामसभ्यः ॥६०॥

यदि चन्द्र स्थान में धनचिह्न समेत गहिरा तीन रेखाओंवाला निशान हो तो वह सम्पत्तिपूर्ण रहता तथा बहुत असभ्य और शठ होता है ‡ ॥६०॥

११ भाग्या सुरेखा खलु स्वल्परूपा शाखासमेता शशिनं प्रयाति।
तदा जनोयं जठरामयार्त्तो जाज्वल्यमानो ज्वरतामुपैति॥६१॥

शाखा समेत छोटी भाग्यरेखा यदि चन्द्र के सामने पहुँचे तो वह उदररोग से पीड़ित रहता तथा ज्वर आदि से घिरा रहता है ॥ ६१ ॥

१२ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशाद्वक्रा सुरेखा यदि यातिमात्रीम्।
तदा नरो घूर्णितशीर्षदेशो दौर्बल्यगात्रो भयतामुपैति ॥६२।

मणिबन्ध से उठी टेढ़ी रेखा मातृरेखा के पास चली जावे तो उसका सिर हमेशा चक्कर खाया करता है। इसी से दुबला और डरा करता है ॥ ६२ ॥ (देखो चित्र नं० ३२)

पञ्चदशलक्षणाङ्कितकरतलफल

१ मध्याङ्गुलेर्वै द्वितये परुष्के वक्रा सुरेखा विशदा विभाति।
तदा नरोऽनिष्टतरं प्रयाति विषाद्युपायैर्विषयाभिभूतः ॥ ६३ ॥

जिसकी मध्यमा की दूसरी पोर में साफ एवं टेढ़ी रेखा हो वह विषयों से टूटे अहंकारवाला होता और विषादि द्वारा अनिष्टता पाता है ॥ ६३ ॥

२ सौम्यार्कमध्ये विशदं विभाति तिर्यक्स्वरूपं यदि युग्मरेखम्।
नेत्राभिघातं लभते मनुष्यो नारीविहीनो नयतासमेतः ॥६४॥

बुध व सूर्य के मध्य में (कनिष्ठा व अनामा के नीचे) साफ़ दो रेखाओंवाला तिरछा निशान हो तो वह प्राणप्यारी से विहीन होता एवं नीतिसंपन्न और लोचनों में चोट पाता है ॥ ६४ ॥

३ मन्दालयस्थं विशदं विभाति तिर्यक्त्रिभिन्नं यदि युग्मरेखम्।
कारागृहं याति नरः कदापि ज्वरेण भग्नश्चतुराहिकेण ॥६५॥

---

‡ ऐसा व्यक्ति जल से डरता भी है —संपादक

१ आत्तगर्वोऽभिभूतस्स्यादित्यमरः।

जिसके शनि स्थान में साफ तिरछी तीन रेखाओं से कटा दो रेखाओंवाला निशान हो वह चतुराहिक (चौथिया) ज्वर से पीड़ित होता है और कभी जेलखाने भी जाता है ॥ ६५ ॥†

४गुर्वालयस्थाकुटिलाकुरेखातिर्यग्विभिन्नायदियाति भोगाम्।
पदाधिकारं लभते मनुष्यो ऋज्वी यदा चेद्धठतः पदाप्तिम्६६

बृहस्पति स्थान म टेढ़ी एवं छोटी सी रेखा तिरछी रेखा से भिन्न होकर यदि भोग रेखा पर्यन्त जली जावे तो वह पदाधिकार पाता है, यदि पूर्वोक्त रेखा सीधी-सी प्रतीत हो तो वह हठ से पद को पाता है ॥ ६६ ॥

५गुर्वालयान्ताच्चलितासुरेखा पित्रोर्विभित्त्वायदियाति भौमम्।
रक्तार्तियुक्तो मनुजो मनीषी मान्यो वदान्यो ज्वरतामुपैति६७

बृहस्पति स्थान के समीप से चली हुई रेखा मातृरेखा व पितृरेखा को काटकर यदि मङ्गलपर्यन्त चली जावे तो वह बुद्धिमान्, मान्य व वदान्य (अतिदानी) तथा रक्तपीड़ा युक्त होता और ज्वरपीड़ित रहता है ॥ ६७ ॥

६ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशाद्भुग्ना सुरेखा समुपैति सौम्यम्।
दीर्घायुषं तं मनुजं करोति विद्याधरं बोधवरं वरेण्यम्॥६८॥

जिसके करतल में मणिबन्ध से उठी रेखा टेढी होकर यदि बुध पर्यन्त चली जावे तो उसको बड़ी उम्रवाला, विद्याधर, बड़े बोधवाला तथा सब में प्रधान बना देती है ॥६८ ॥*

---

† सुप्रसिद्ध फ्रेंच विद्वान् का मत है कि यदि शनि स्थान में इस प्रकार का कोई चिह्न हो तो उसे दुर्भाग्ययुक्त जीवन जानना चाहिए, खासकर बुढ़ापे में। अक्सर ऐसा चिह्न (grille) जेलखाने जाने की निशानी है।

दूसरा फ्रेंच विद्वान कहता है कि शनि स्थान पर ऐसे चिह्न अथवा कोई भी छोटी छोटी आड़ी टेढ़ी इस प्रकार की रेखाएँ सदा भाग्यहीन व्यक्ति के हाथ में होती हैं।

हस्तरेखा विशारद को उपरोक्त चिह्नों के साथ यह भी देख लेना चाहिए कि कोई अन्य जबरदस्त शुभ चिह्न इसका परिहार तो नहीं करता। यदि ऐसा होगा तब तो पूर्ण रूपेण उपरोक्त फल नहीं होगा, पर संभव है, बंदी जीवन काटना पड़े।

* मणिबंध से बुध तक जानेवाली सीधी रेखा स्वास्थ्य रेखा भी कहाती है। अतएव उसे और इसे भिन्न-भिन्न समझना चाहिये। जरा ध्यानपूर्वक देखने से ही अंतर जाना जा सकेगा। —संपादक

७ संभोगरेखा गुरुगा गभीरा शाखासमेता यदि नीचभागे।
बाह्ये गुदे रोगयुतो मनुष्यः संखण्डिता चेद् गुदमध्यरोगी ६९

भोगरेखा (हार्टलाइन) बृहस्पति स्थान में पहुँच गहरी होकर निचले स्थान में शाखा समेत दिखे तो वह गुदा स्थान में बाहिरी तरफ़ रोगों से संयुक्त रहता है। यदि पूर्वोक्त रेखा निचले भाग में खण्डित पाई जावे तो वह गुदा रोगवाला होता है ॥ ६९ ॥

८ संभोगमात्रोर्यदि नीचदेशे चिह्नं चतुष्कोणयुतं चकास्ति।
तदा विवादी मनुजो विषादी महाप्रतापी खलु विप्रलापी[1] ७०

आयुरेखा (संभोगरेखा) व मातृरेखा के निचले भाग में चौकोण निशान हो तो वह विषाद करनेवाला, बड़े प्रतापवाला, छल से भाषणकर आशा भंग करनेवाला और झगड़ालू होता है ॥ ७० ॥

९ मातुस्सुरेखा गुरुगा गभीरा क्षुद्रा विभिन्ना यदि मध्यदेशे।
तदा मनुष्यः सुविचारशाली काले भविष्ये कुविचारपाली ७१

मातृरेखा बृहस्पति स्थान में पहुँच गहरी हो और यदि बिचले भाग में क्षुद्र रेखाओं से कटी दिखे तो वह वर्तमानकाल में बड़ा विचारशाली होता है। तथा भविष्यकाल में बुरा विचार किया करता है ॥ ७१ ॥

१० मातुस्सुरेखा यदि नीचदेशे क्षुद्राविभिन्ना गुरुगा विभाति।
अल्पायुषं तं पुरुषं करोति ह्यानन्दहीनं मतिमन्दपीनम् ॥७२॥

बृहस्पतिस्थान में पहुँची मातृरेखा यदि निचले भाग में छोटी रेखासे कटीहो तो उसको आनन्दहीन, मोटी बुद्धिवाला तथा थोड़ी उमरवाला करती है ७२

११ आशालयान्ताच्चलिते सुरेखे अङ्गुष्ठपृष्ठाभिमुखं प्रयातः।
तदा जनो मज्जति वारिराशौ कर्तव्यकार्ये बहुतर्ककारी ॥७३॥

मङ्गलस्थान के निकटदेश से चली दो रेखायें अँगूठे की पीठ के सामने यदि पहुँचें तो वह योग्य कार्य में बहुत तर्क करनेवाला होता है। और नदी नाले आदि में डूबता है ॥ ७३ ॥*

---

१ विप्रलापो विसंवाद इत्यमरः ॥

* विदेशी विद्वानों ने जल से भय केवल चंद्र स्थान पर ही माना है। उनका कहना है कि चूँकि चंद्र का राज्य जल पर है, अतएव उस ग्रह पर अंकित विशेष चिह्नों द्वारा जल भय जानना चाहिए। —संपादक

१२वृद्धाङ्गुलेर्वै निकटे नखस्य रेखाद्वयं चेद्ग्रथितं मिथः स्यात्।
तदा नरो नास्तिकतामुपैति पाखण्डकारी परवित्तहारी ॥७४॥

जिसके अँगूठे के नख के पास टेढ़ी फनाकार दो रेखाओंवाला परस्पर (☊) गुँथा हुआ निशान हो वह पाखण्डी, परधनहारी और नास्तिक होता है ॥ ७४ ॥

१३ मन्दालयाच्चेच्चलिता सुरेखा स्वल्पस्वरूपा समुपैति पैत्रीम्।
तदा नरस्तूच्चपदं प्रयाति राज्यात्प्रतिष्ठां प्रतिपद्य सम्यक् ॥७५॥

जिसकी शनिस्थान से चली छोटी रेखा पितृरेखा के पास पहुँचे वह किसी राज्य से भली भाँति प्रतिष्ठा पाकर ऊँचे पद का अधिकारी होता है। यानी बड़ी प्रतिष्ठा के साथ ऊँचा पद पाता है ॥ ७५ ॥

१४समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशाद् वक्रा सुरेखा पितरं प्रयाति।
ज्वरार्दितः क्षीणतनुर्मनुष्यो दीनो दरिद्रो दयितासमेतः ॥७६॥

जिसके मणिबन्ध से उठी टेढ़ी रेखा पितृरेखा के पास पहुँचे वह क्षीणकायावाला, दयितासमेत, दीन एवं दरिद्री होता तथा बुखार से व्याकुल रहता है ७६॥

१५ काव्यालयस्थं परिभाति चिह्नं बाणैर्विभिन्नं यदि षट्करेखम्।
हासी विलासी रतिरङ्गलासी ह्यानन्दराशी पुरुषः प्रकाशी ७७

यदि शुक्र स्थान में पाँच तिरछी रेखाओं से कटा हुआ छः रेखाओंवाला निशान हो तो वह हँसनेवाला, ऐयाश, रतिरंग में लसा हुआ, आनन्द राशिवाला और प्रकाश का करनेवाला कहाता है ॥७७॥ * (देखो चित्र नं० ३४)

१—रतिरङ्गे लसितुं शीलमस्येति।

* पाश्चात्य विद्वानों का मत है कि भृगुस्थान में इस प्रकार के चिह्न होने का अर्थ है कि ऐसा मनुष्य ऐयाश तबियत तो होता ही है, साथ ही साथ निर्लज्ज भी होता है। विषय वासना ही उसका एक मात्र लक्ष्य रहा करता है। चूँकि यह स्थान शुक्र (वीर्य) का है इस पर ऐसे चिह्न होने से उक्त ग्रह (वीर्य) में कमी हो जाना एक अमेरिकन विद्वान् का कथन है। वह कहता है, कि ऐसी रेखाओं द्वारा रक्तप्रवाह में बाधा उपस्थित होने के कारण वह तत्त्व शरीर में क्षीण हो जाता है। और फिर वैसा पुरुष प्रबल इच्छाओं का शिकार होने के कारण दीर्घायु नहीं हो सकेगा। वह विद्वान् विद्युत संचार (विचार प्रवाह अथवा रक्तप्रवाह) पर भी अधिक ज़ोर देता है। क्षीण इन्द्रिय हो उठने से मनुष्य की इच्छायें उसे विषय में प्रबल हो जाती हैं। —संपादक

चतुर्दशलक्षणाङ्कितकरतलफल

१ प्रदेशिनी चन्द्रमिते परुष्के रेखाद्वयं चेत्कुटिलं चकास्ति ।
उग्रस्वभावो मनुजस्तदा स्यात्क्रोधातुरः क्षीणकलेवरश्च॥ ७८॥

जिसकी तर्जनी की पहली पोर में दो रेखाओं वाला टेढ़ा निशान हो वह कठोर चित्तवाला, क्रोधी और क्षीणकाय होता है ॥ ७८ ॥

२ मन्दालयाच्चेच्चलिते कुरेखे सन्तर्ज्जनीमूलगते यदा स्तः ।
सम्पत्तिहीनो मनुजो विशोकी प्रासभ्यदोषान्मरणं प्रयाति ७९

जिसकी शनिस्थान से चली छोटी सी टेढ़ी दो रेखायें तर्ज्जनी पर्यन्त चली जावें वह बड़ा शोच करनेवाला, संपत्तिहीन, तथा अपने हठदोष से मौत पाता है ॥ ७९ ॥

३ संभोगशाखा गुरुगा गभीरा स्वल्पस्वरूपा कुटिला विभाति ।
तदा ह्यपस्मारयुतो मनुष्यो जलाग्निभीतो जडतामुपैति॥ ८०॥

संभोगरेखा की आयुरेखा (शाखारेखा) बृहस्पति स्थान में पहुँच गहरी, टेढ़ी तथा छोटी हो तो वह मिरगीरोग वाला, पानी व आगी से डरनेवाला और जड़ होता है ॥ ८० ॥

४ संभोगरेखा निजमध्यदेशे क्षुद्राविभिन्ना सरला विभाति ।
मानी मनुष्यो ममतासमेतो मन्दाग्निरोगं लभते नितान्तम् ८१

सीधी संभोग रेखा (असमदेशीय आयुरेखा) अपने बिचले भाग में छोटी छोटी रेखाओं से कटी हो तो वह मानी, ममता संपन्न तथा हमेशा मन्दाग्निरोगी होता है ॥ ८१ ॥

५ संभोगरेखा यदि चोर्ध्वभागे शाखाविहीना शनिगा विभाति
द्वीपान्तरं याति नरस्तदानीं सम्भ्रान्तचित्तः परितो भ्रमेच्च ८२

जिसकी सुभोगरेखा (आयुरेखा, हार्टलाइन) ऊपरी भाग में शाखाहीन हो तथा शनि पर्यन्त पहुँचे वह संभ्रान्तचित्त होता तथा दूसरे द्वीप को चला जाता है और चारों तरफ़ घूमना रहता है ॥ ८२ ॥

६ काठ्यालयाच्चेच्चलिता सुरेखा पित्रोर्विभित्त्वा भजते सुभोगाम्
सोयं नरो वह्निविदग्धगात्रो ह्याप्नोति मृत्युं सहसा समेतः ॥ ८३॥

शुक्र के स्थान से चली रेखा मातृरेखा एवं पितृरेखा को काटकर भोग रेखा तक पहुँचे तो वह बली होता है। वह अग्नि में जलकर मृत्यु पाता है ॥ ८३ ॥

७ मातुः सुरेखा सरला गभीरा शाखासमेता यदि चोर्ध्वदेशे।
तदा नरो वैरिगणान्विजित्य विश्वासपात्रो विभुतामुपैति ८४

सीधा एवं गहरी मातृरेखा ऊपरी भाग में शाखाओं समेत दिखे तो वह विश्वासी तथा वैरियों को विजयकर विभुता पाता है ॥ ८४ ॥

८ वृद्धाङ्गुलेर्वै निकटे नखस्य रेखात्रयं चेत्सरलं विभाति।
विश्वासशाली मनुजस्तदा स्याद्रेखाद्वयं चेत्तु फलं तदेव ८५

जिसके अँगूठे के नख के निकट-देश में तीन रेखाओंवाला सीधा निशान हो वह विश्वासपात्र होता है। यदि पूर्वोक्त निशान दो रेखाओं वाला हो तो भी वही फल होता है ॥ ८५ ॥

९ संभोगरेखाधरगं विभाति तिर्यक्स्वरूपं यदि युग्मरेखम्।
तदा नरो रोगगणाभिभूतो रक्तातिसारं लभते रसज्ञः ॥ ८६ ॥

जिसकी संभोगरेखा (आयुरेखा) के निचले भाग में टेढ़ा दो रेखाओं वाला निशान हो वह अनेक रोगों से व्याकुल होता है। और रसज्ञाता होता तथा रक्तातिसार (पित्तातिसार में गर्मवस्तु के खाने से होता है) से पीड़ित होता है ॥ ८६ ॥

१० मातुःसुरेखा यदिनीचभागे शाखासमेता सरला विभाति।
निर्बोधरूपो मनुजस्तदा स्यात्सत्येन हीनो ह्यनभिज्ञमुख्यः८७

जिसकी सीधी मातृरेखा यदि निचले भाग में शाखा समेत हो तो वह सत्यहीन, मूर्खों का मुखिया होता और अबोध रहता है ॥ ८७ ॥

११ पैत्रीसुरेखामणिबन्धहीनावक्रासकोणा मिलिता जनन्याम्
दीर्घायुषं तं पुरुषं करोति पारुष्यहीनं परमार्थलीनम् ॥ ८८ ॥

पितृरेखा मणिबन्ध से हीन, टेढ़ी एवं कोण समेत होकर मातृरेखा में मिली दिखे तो उसको दयालु एवं परमार्थ में लीन तथा बड़ी उमरवाला बना दती है ॥ ८८ ॥

१ [२]स्वल्पासुभाग्याकुटिलाचकास्ति क्षुद्राविभिन्नायदि मध्यदेशे
अल्पायुषं तं पुरुषं करोति ह्यानन्दहीनं वसुधाविहीनम् ॥८९॥

छोटी एवं टेढ़ी भाग्यरेखा यदि मध्य भाग में छोटी छोटी रेखाओं से कटी दिखे तो उसको आनन्दहीन तथा अल्पायु करती है ॥ ८९ ॥

१ ३भाग्या सुरेखा यदि चोर्ध्वभागे शाखासमेता जननीं प्रयाति।
तदा नरो रोगचयाभिभूतो भोगाभिभूतो भयतामुपैति ९०

यदि ऊपरी भाग में शाखा समेत भाग्यरेखा मातृरेखा के पास जावे या सामने ही रहे तो वह रोगपीड़ित व भोगों से व्याकुल रहता तथा डरता है ॥ ९० ॥

काव्यालये चेद्विशदं विभाति भिन्नोर्ध्वभागं गुणितस्य चिह्नम्।
सोयं जनः स्याद्वनिताविलासी हासी विघासी च सदा सुखाशी

जिसके शुक्र स्थान में गुणित × का साफ़ निशान ऊपरले भाग में कटा हुआ हो वह वनिताविलासी, हँसनेवाला, बहुत खानेवाला, तथा हमेशा सुख की आशावाला होता है ॥ ९१ ॥ (देखो चित्र नं० ३५)

पञ्चदशलक्षणाङ्कितकरतलफल

१ प्रदेशिनीभूमियुगे परुष्के धनाख्यचिह्नं विशदं विभाति !
तदा नरः स्वं लभतेऽबलाया नार्यां यदा चेत्कुलटा भवेत्सा ९२॥

तर्जनी अँगुली की पहली एवं दूसरी पोर में यदि धन का + साफ़ निशान हो तो वह किसी स्त्री से धन पाता है । यदि पूर्वोक्त निशान स्त्री के करतल में हो तो वह व्यभिचारिणी होती है ॥ ९२ ॥ *

२ अनामिकामध्यमिकासुमूले रेखाचतुष्कं यदि भाति स्वल्पम्।
दाता दयालुर्मनुजस्तदा स्याद्विश्वासशाली विषयैर्विरक्तः९३॥

---

१ भाग्यरेखा यदि छोटी है तो सुख भी कम समझना चाहिये। यदि लम्बी और साफ़ है तो सुखी जीवन जानना। यदि उक्त रेखा छोटी छोटी रेखाओं से कटी दिखे तब तो समय निकाल कर जानना कि अमुक २ समय में उसे धन संबंधी महाकष्ट होगा अथवा भयंकर बाधाएं उपस्थित होंगी जिससे उसके विकास में अंतर पड़े।—संपादक

* किन्तु फ्रेंच विद्वान् ऐसे चिह्न को अच्छा नहीं कहता।—संपादक

अनामिका व मध्यमा के मूल में छोटासा चार रेखाओंवाला निशान हो तो वह दाता, दयावान्, विश्वासपात्र, तथा भोगों से विरक्त रहता है ॥६३॥

३ मन्दालयाच्चेच्चलिता सुरेखा गम्भीररूपा समुपैति सूर्यम्।
पापाधिकारी पुरुषस्तदा स्यात्पारुष्ययुक्तः पशुतुल्यबुद्धिः॥६४॥

शनि स्थान से चली गहरी रेखा यदि सूर्यपर्यन्त जावे तो वह पापाधिकारी, कठोर और पशु बुद्धिवाला होता है ॥ ६४ ॥ †

सौम्यालयान्ताच्चलिता सुरेखा कौटिल्यरूपा यदि याति मन्दम्।
मन्दस्वभावो घृणया समेतः पापे प्रवृत्तः पुरुषोऽधमःस्यात् ६५

जिसके बुध स्थान से चली टेढ़ी रेखा यदि शनिपर्यन्त जावे वह मन्द स्वभाववाला, घृणायुक्त, पापपरायण तथा निन्दित होता है ॥ ६५ ॥ ‡

५ गुर्वालयस्थं विशदं विभाति रेखात्रयं चेत्सरलस्वरूपम्।
सोऽयं जनो मस्तकघातमेति राज्याधिकारी रमणीविहारी ६६

जिसके बृहस्पति स्थान में तीन रेखाओंवाला साफ़ एवं सीधा निशान हो वह किसी महाराजा के राज्य में अधिकारी होता तथा रमणियों में विहार करता और मस्तक में चोट खाता है ॥ ६६ ॥

६ सौम्यालये चेत्सरला सुरेखा गम्भीररूपा विशदा विभाति।
मान्यो वदान्यो मनुजस्तदा स्यान्नार्या यदा चेत्सुरता भवेत्सा॥

जिसके बुध स्थान में सीधी, गहरी एवं साफ़ रेखा हो वह मान्य, बड़ा दानी या बोलनेवाला होता है । यदि पूर्वोक्त रेखा स्त्री के करतल में हो तो वह बड़ी रमनेवाली होती है ॥ ६७ ॥ *

७ भोगा सुरेखा यदि नीचदेशे गम्भीररूपा भगिनीसमेता।
तदा नरःस्याद्दृढगात्रयष्टिःसंभोगशाली सुषमासमेतः॥६८॥

गहरी संभोगरेखा (आयुरेखा) यदि निचले भाग में भगिनीरेखा समेत

† यह रेखा भयंकर तथा बड़ी अशुभ कहाती है । सं०

‡ यह रेखा भी अशुभ है । सं०

* इस पर हम अन्यत्र टिप्पणी दे चुके हैं । सं०

प्रतीत होवे, तो वह मजबूत कायावाला, बड़ा भोगी और परमशोभा वाला होता है ॥ ९८ ॥

८ संभोगरेखा यदि मध्यदेशे क्षुद्राविभिन्ना कुजगा विभाति।
कामातुरः कार्यरतो मनुष्यो व्रीडाविहीनो वनितामुपैति॥९९॥

मङ्गल स्थान में पहुँची संभोगरेखा यदि बिचले भाग में छोटी-छोटी रेखाओं से कटी हो तो वह कामातुर, कार्य में परायण, निर्लज्ज होता और वनिता पाता है ॥ ९९ ॥

९ संभोगरेखा यदि चोर्ध्वदेशे मातापितृभ्यां सहिता सकोणा।
सत्येन हीनो विपदा समेतः संकष्टशाली मरणं प्रयाति॥१००॥

संभोगरेखा यदि ऊपरले भाग में कोणसमेत हो तथा मातृ व पितृरेखा से मिली दिखे तो वह झूठा, विपदाग्रस्त और महाकष्ट भोगनेवाला होता है ॥ १०० ॥

१० अङ्गुष्ठशाखानिकटे विभाति रेखात्रयं रेखयुगेन भिन्नम्।
धूर्त्तः कुशीदी मनुजो मिथश्चेद्भिन्नं मृतिं चैत्यधनी सचक्रम् १॥

जिसके अँगूठे की शाखाओं के समीप ऊपरले भाग में तिरछी दो रेखाओं से कटा तीन रेखाओंवाला निशान हो वह जुआरी तथा ब्याजखोर होता है। यदि पूर्वोक्त निशान परस्पर रेखाओं से कटा दिखे तो वह मृत्यु पाता है। यदि पूर्वोक्त निशान चक्राकार दिखे तो वह धनरहित होता है ॥ १ ॥

११ शुक्रालये चेद्विशदस्वरूपं चिह्नं त्रिशूलानुमितं विभाति।
सोयं नरो वह्निविदग्धगात्रो यज्ञादिकार्यं कुरुते नितान्तम्॥२॥

शुक्र स्थान में त्रिशूल का साफ़ निशान हो तो वह आगी से जले हुए गात्रवाला होता तथा हमेशा यज्ञादि कार्यों को करता है ॥ २ ॥

१२ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशाद्रेखा गभीरा समुपैति सौम्यम्।
सोऽयं नरः स्याद्विनयी जयी च संक्षीणचेता यदि कर्तिता स्यात्

मणिबन्ध से उठी हुई गहरी रेखा यदि बुध पर्यन्त जावे तो वह विनयी

तथा वैरियों का जीतनेवाला होता है। यदि पूर्वोक्त रेखा कटी प्रतीत हो तो क्षीणचित्तवाला होता है ॥ ३ ॥

समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशाद्भाग्या सुरेखा यदि याति शौरिम्
औत्कण्ठ्ययुक्तो मनुजस्तदा स्याद्रेखा नता चेत्फलताविशेषः

मणिबन्ध से उठी भाग्यरेखा शनैश्चर पर्यन्त जावे तो उत्कण्ठायुक्त होता है। यदि पूर्वोक्त रेखा लची हुई प्रतीत हो तो विशेष उत्कण्ठावाला होता है ॥ ४ ॥

१४ अङ्गुष्ठमूले विशदस्वरूपं वज्रानुरूपं यदि भाति चिह्नम्।
सोऽयं नरः स्यात्कुविचारशाली ह्याचारहारी व्यभिचारकारी ५

अँगूठे के मूल में साफ वज्र के समान निशान हो तो बुरे विचारवाला, आचारहीन तथा व्यभिचारी होता है ॥ ५ ॥*

पित्रोः सुमध्ये परिदृश्यमानं वस्वङ्कतुल्यं यदि भाति चिह्नम्।
दुःखाकरः स्यान्मनुजो जनानामुद्बन्धतो मृत्युमुखं प्रयाति॥

यदि मातृ एवं पितृरेखा के बीच में आठअङ्क के समान निशान हो तो मनुष्यों के लिए दुःखकारी होता है। ऐसा मनुष्य फाँसी से मौत पाता है ॥ ६ ॥ (देखो चित्र नं० ३६)

पञ्चदशलक्षणाङ्कितकरतलफल

१ मध्याङ्गुलेर्वै प्रथमे परुष्के चिह्नं त्रिरेखं यदि वेदभिन्नम्।
औत्कण्ठ्ययुक्तो मनुजस्तदा स्यादौदास्यपूर्णो नितरामुदारः ७

जिसकी मध्यमा की पहली पोर में तिरछी चार रेखाओं से कटा

---

* आचाराल्लभते ह्यायुराचारादीप्सितप्रजाः। आचाराद्धनमक्षय्यमाचारो हन्त्यलक्षणमिति मनुः॥ भारतीयशास्त्रवेत्ताओं ने आचार को खासी प्रधानता दी है अन्यदेशों में विचार-धर्म है। किंतु यहां आचार तथा विचार दोनों हैं। कर्म सिद्धान्त पर आचार का पूर्ण प्रभाव है। यदि अच्छे आचार हैं तब तो विचार भी अच्छे होंगे, यदि बुरे विचार हैं तब कहना ही क्या। अच्छे विचारों से अच्छा परिणाम होगा। कारण, तुम्हें अच्छे कर्म करने पड़ेंगे जिनका परिणाम भला होगा।—संपादक

सीधी तीन रेखाओंवाला निशान हो वह उत्कण्ठायुक्त, उदासीनता पूर्ण तथा बहुतही उदार होता है ॥ ७ ॥

२ प्रदेशिनीचन्द्रमिते पर्वके वक्रं त्रिरेखं यदि भाति चिह्नम्।
सोऽयं नरो धर्मपरो नितान्तं धन्यो धरित्र्यां धनतामुपैति ॥८॥

जिसकी तर्जनी की पहली पोर में टेढ़ा तीन रेखाओंवाला निशान हो वह धर्मपरायण, पृथ्वी पर धन्य कहाता और धनी होता है ॥ ८ ॥

३ मातुः सुरेखाधरतश्चलन्ती भिन्ना सुरेखा दिनपं प्रयाति।
द्रव्यादिहेतोः पुरुषान्निहन्ति ह्रस्वा यदा चेत्तनुघातमेति ॥९॥

जिसकी मातृरेखा के निचले भाग से चली हुई रेखा छोटी रेखा से कटकर सूर्यपर्यन्त जावे वह द्रव्यादिकों के लिए पुरुषों का वध करता है। यानी डाकेजनी करता है। यदि पूर्वोक्त रेखा छोटीसी तथा क्षुद्ररेखाओं से कटी दिखे तो वह अपने शरीर में चोट पाता है ॥ ९ ॥

४ संभोगरेखानिकटे विभाति भग्नीसुरेखा वितता गभीरा।
सोऽयं जनः स्याद्वनिताविलासी संमोदराशी बहुधा प्रहासी १०

जिसकी सुभोगरेखा के समीप फैली एवं गहरी भग्नीरेखा हो वह प्रमदाविलासी, बड़ा आनन्दी और प्रायः बड़ा हँसनेवाला होता है ॥ १० ॥

५ संभोगरेखा यदि नीचभागे क्षुद्राविभिन्ना कृशतासमेता।
वक्षस्थलाघातमुपैति जन्तुर्जायाविरोधी जनतासमेतः ॥११॥

यदि संभोगरेखा (आयुरेखा) निचले भाग में पतली तथा छोटी-छोटी रेखाओं से कटी हो तो प्यारी स्त्री का विरोधी, जनसंपन्न तथा छाती में चोट लगना सूचित करती है ॥ ११ ॥

६ भोगा गभीरा मिलिता सुवप्रे तन्मध्यगा स्वल्पतरा च माता।
रोगाभिभूतो मनुजस्तदानीं भूतादिदोषैरपमृत्युमेति ॥ १२ ॥

जिसकी भोगरेखा ऊपरी भाग में गहरी हो और पितृरेखा में मिली दिखे तथा छोटी सी मातृरेखा उन दोनों रेखाओं के बीच में हो तो वह रोगपीड़ित और भूतादि दोषों से अकाल मौत पाता है ॥ १२ ॥

---

१ दिनपं दिनपतिं सूर्यमितियावत्।

७ पितुः सुशीर्षोपरिगं विभाति ताराानुरूपं युगलस्वरूपम् ।
तदा नरोऽसौ यशसा समेतो मान्यो वदान्यो बलतासमेतः १३

पितृरेखा के ऊपरले भाग में नक्षत्र (स्टार) के दो निशान हों तो वह बली, यशस्वी, माननीय और दानी होता है ॥ १३ ॥ †

८ अङ्गुष्ठशाखोपरिगं विभाति रेखाचतुष्कं यदि स्वल्परूपम् ।
श्लेष्मार्दितोऽसौ मनुजः कृशाङ्गो भामाभिभूतोभ्रमतामुपैति १४

यदि अँगूठे की शाखा रेखा के ऊपरले भाग में छोटा सा चार रेखाओं-वाला निशान हो तो कफरोग, दुर्बलदेह, नारियों से अनादृत तथा भ्रम-युक्त होना बताती है ॥ १४ ॥

९ भोगाधरस्थं विशदं विभाति चिह्नं त्रिकोणं यदि दृश्यमानम् ।
कान्ताभिलाषी कलही मनुष्यः प्राप्नोति मृत्युं द्विषतः करेण १५

जिसकी भोगरेखा के निचले भाग में साफ़ त्रिकोण चिह्न हो वह कामिनी की अभिलाषा करता तथा लड़ाई लड़कर दुश्मन के हाथ से मृत्यु पाता है ॥ १५ ॥

१० पितुःसुरेखोपरिगं चकास्ति चिह्नं त्रिशूलानुमितं यदा चेत् ।
तदा नरो वह्निविदग्धगात्रो व्यासक्तचित्तो व्ययतामुपैति १६

पितृरेखा के ऊपरले भाग में त्रिशूल के समान निशान हो तो आग से जले अङ्गवाला, घबड़ाये मनवाला और बड़ा खर्चीला होना बताती है १६ *

११ पैत्री समुत्था विशदा गभीरा रेखा यदा भ्रातृपदं प्रयाति ।
सोऽयं जनः शत्रुपराजितः स्यात्संकर्तिता चेदरिवृन्दमुक्तः १७॥

जिसे पितृरेखा से उठी साफ़ एवं गहरी रेखा यदि भ्रातृस्थान पर्यन्त पहुँचे वह शत्रुओं मे पराजित होता है । यदि पूर्वोक्त रेखा कटी दिखे तो वह वैरियों मे छूट जाता है ॥ १७ ॥

---

† यह नक्षत्र चिह्न गुरु स्थान पर होना चाहिए । पाश्चात्य विद्वानों ने इस चिह्न को गुरु स्थान पर होने से बड़ा शुभ तथा उपरोक्त गुणशाली माना है। सं०

* वह मङ्गल स्थान है और मङ्गल अग्नि आदि पर राज्य करता है । सं०

१२ चन्द्रालयस्थं विशदस्वरूपं तिर्यक्त्रिरेखं यदि भाति चिह्नम्।
सोऽयं जनःस्याज्जलयानयायी मायाविधायी ममतापहायी १८

जिसे चन्द्र स्थान में तिरछा तीन रेखाओंवाला साफ़ निशान हो तो वह मायाविधान करनेवाला, ममता त्यागी और जहाज़ की सवारी यानी जलपथ में परिभ्रमण करता है ॥ १८ ॥ *

१३ भाग्यासमुत्थाविशदासुरेखावक्रागभीरामिलिताजनन्याम्
जङ्घास्थिभङ्गं लभते जनो वै जाज्वल्यमानो ज्वरजार्तियुक्तः १९

भाग्यरेखा से उठी साफ़ व टेढ़ी रेखा मातृरेखा में मिले तो वह ज्वर-पीड़ायुक्त होता तथा उसकी जाँघ की हड्डी टूट जाती है ॥ १९ ॥

१४ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशाद्भाग्या सुरेखा समुपैति शौरिम्।
चौर्ये प्रवृत्तो मनुजस्तदा स्याद्दुष्टस्वभावो विगतप्रभावः ॥२०॥

जिसके मणिबन्ध से उठी भाग्यरेखा यदि शनि पर्यन्त जावे वह दुष्ट स्वभाववाला, गतप्रभाववाला तथा चौरकर्म-परायण होता है ॥ २० ॥

१५. समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशाद्वक्रा सुरेखावरजं प्रयाति।
तदा जनो बन्धुगणाभिभूतःप्राप्नोति दुःखं दयितासमेतः ॥२१॥

मणिबन्ध से उठी टेढ़ी रेखा यदि भ्रातृस्थान तक जावे वह बन्धु-गणों से अनादृत होता यानी क्षति को पाता तथा भार्यासमेत दुःख पाता है ॥ २१ ॥ (देखो चित्र नं० ३७)

पञ्चदशलक्षणाङ्कितकरतलफल

१ कनिष्ठिकायाः प्रथमे परुष्के वृत्तार्धचिह्नं विशदं विभाति।
राज्याभियोगे नियतो नरः स्याद्विवादशाली विषये रतश्च २२

जिसकी कनिष्ठा की पहली पोर में अर्धवृत्त का साफ़ निशान हो तो वह झगड़ालू, विषयी तथा बैरिस्टर या वकील होता है ॥ २२ ॥

---

* प्रायः सभी हस्तरेखा विशारदों ने इस स्थान पर आड़ी लंबी रेखाओं को जलयात्रा माना है। हमें भी इसका खासा अनुभव हुआ है। छोटी छोटी रेखा थलयात्रा तथा बड़ी बड़ी जलयात्रा बताती हैं।—संपादक

२ सौम्यालये चेद्विशदस्वरूपं चिह्नं द्विरेखं सरलं चकास्ति ।
बाहौ विघातं लभते मनुष्यो विद्याविवेकी प्रथितः पृथिव्याम् २३

जिसके बुध स्थान में दो रेखाओंवाला साफ़ व सीधा निशान हो तो वह विद्वान्, विवेकी, विख्यात तथा भुजाओं में चोट पाता है ॥ २३ ॥ †

३ अनामिका मध्यमिकासुमध्ये वक्रा कुरेखा समुपैति सूर्यम् ।
जङ्घाभिघातं लभते जनो वै जञ्जप्यमानो जनतासमेतः ॥२४॥

अनामिका व मध्यमा के बीच में छोटी-सी टेढ़ी रेखा सूर्य स्थान को जावे तो वह निन्दित मनुष्य का प्रेमी तथा जनसम्पन्न होता और जंघा में आघात पाता है ॥ २४ ॥

४ मन्दालये चेद्विशदं विभाति गुणाख्यचिह्नं युगलस्वरूपम् ।
संपत्तियुक्तो मनुजस्तदा स्यात्सौभाग्यशाली सुषमासमेतः २५

शनैश्चर स्थान में दो साफ़ गुणा के × × निशान हों तो सम्पदा युक्त, सौभाग्यशाली और शोभावाला इंगित करती है ॥ २५ ॥ *

५ संभोगशाखा विशदा गभीरा संतर्जनीमूलगता विभाति ।
सोऽयं जनो मध्यमवित्तशाली संरक्तमध्या यदि वित्तपाली २६

संभोगरेखा (आयुरेखा) की साफ़ एवं गहरी शाखारेखा तर्जनी अँगुली के मूल में भली-भाँति पहुँचे तो वह धनी होता है। यदि पूर्वोक्त रेखा बीच में लाल हो तो बड़ा धनी तथा कृपण होता है ॥ २६ ॥

६ वक्रा सुभोगा शनिगा विभाति चुद्रा विभिन्ना यदि गर्तयुक्ता ।
लाभं विना भ्राम्यति दूरदेशे दारिद्र्ययुक्तो मनुजो भयार्तः ॥२७॥

जिसकी सुभोगरेखा (आयुरेखा) यदि टेढ़ी एवं शनि स्थान में पहुँचे तथा छोटी-छोटी रेखाओं से कटी और गड्ढेयुक्त हो वह दरिद्रता-सम्पन्न, भय से घबड़ानेवाला और बिना लाभ ही के दूरदेश में घूमता है ॥ २७ ॥

---

† ऐसी रेखाएँ डाक्टर-की-रेखाएँ भी कहाती हैं। अथवा ऐसा व्यक्ति चीर फाड़ करने में प्रवीण होता है। —सम्पादक

* एक फ्रेंच विद्वान् का कथन है कि ऐसे चिह्न, लकवा, असाध्य रोग, आकस्मिक मृत्यु भी बताते हैं। उसका कथन है कि प्रायः ऐसे चिह्न फाँसी पर चढ़नेवाले खनियों के भी होते हैं।—संपादक

७ संभोगरेखाधरगं चकास्ति चन्द्राङ्कनन्दाङ्कयुतं सुचिह्नम् ।
सोऽयं नरस्स्यान्नरघातकारी पापाधिकारी परवित्तहारी ॥ २८ ॥

यदि संभोगरेखा (आयुरेखा) के निचले भाग में एकाङ्क एवं नवाङ्क युक्त निशान हो वह पापाधिकारी, परद्रव्यहारी और मनुष्य घात करनेवाला होता है ॥ २८ ॥

८ मातुस्सुरेखा यदि नीचभागे भग्नीसमेता कुटिला चकास्ति ।
गर्वी गुणज्ञो मनुजस्तदा स्याद्दुष्टाशयश्चौर्यरतो नितान्तम् २९

जिसकी मातृरेखा निचले भाग में टेढ़ी और भग्नीरेखा समेत हो वह बुरे मतलबवाला, हमेशा चोरी करने में लगता तथा गुणज्ञाता और घमण्डी बना रहता है ॥ २९ ॥

९ संभोगशाखा सरला गभीरा भग्नीसमेता गुरुगा विभाति ।
सोऽयं नरो धर्मपरो मनस्वी दानी सुमानी धनतासमेतः ॥ ३० ॥

जिसकी संभोगरेखा (आयुरेखा) की शाखारेखा सीधी, गहरी एवं भग्नीरेखायुक्त बृहस्पति स्थान में पहुँचे वह धर्मपरायण, मनमौजी, दानी, मानी और धनसंपन्न होता है ॥ ३० ॥

१० पितुः सुरेखोपरिगं विशुद्धं चिह्नं द्विरेखं सरलं चकास्ति ।
तदा जनो बन्धुविरोधकारी व्यासक्तचित्तः प्रमदाविहारी ॥ ३१ ॥

पितृरेखा के ऊपरले भाग में साफ़ एवं सीधा दो रेखाओंवाला निशान हो तो बन्धुवर्ग से विरोध रखनेवाला, घबड़ाये मनवाला और प्रमदाविहारी होता है ॥ ३१ ॥

११ पैत्रीसुवक्रा मिलिता सुमात्र्यां स्वल्पा गभीरा विशदा विभाति ।
आयुष्यमल्पं लभते मनुष्यो भग्नीसमेता यदि दीर्घमायुः ३२

टेढ़ी, छोटी, गहरी एवं साफ़ पितृरेखा यदि मातृरेखा में मिली हो तो अल्पायु होता है । यदि पूर्वोक्त रेखा भगिनी रेखा समेत दिखे तो दीर्घायु होता है ॥ ३२ ॥

१२ चन्द्रालयाच्चेच्चलितासुरेखावक्रासशाखायदियातिभाग्याम्
आरातिभीतःस्वजनैर्विहीनःक्रान्तायदाचेन्मनुजोविजेता ३३

जिसे चन्द्र स्थान से चली टेढ़ी व शाखासमेत रेखा यदि भाग्यरेखा पर्यन्त जावे तो उसके कुटुम्बी लोग ही शत्रु हो जाते हैं। यदि पूर्वोक्त रेखा किसी रेखा से अतिक्रमण करे तो वह वैरियों को विजय करता है ॥ ३३ ॥

१३भाग्यासमुत्थामणिबन्धदेशान्मध्येविभिन्नाशनिगाविभाति।
वातार्तियुक्तो मनुजस्तदानीं जङ्घाभिघातं लभते ज्वरार्तः ३४

मणिबन्ध से उठी भाग्यरेखा बीच में कटी एवं शनि पर्यन्त पहुँचे तो वह ज्वररोगी, वातव्याधि युक्त और जाँघों में चोट खाता है ॥ ३४ ॥

१४चंद्राधरस्थाकुटिलासुरेखाभाग्यांविभित्त्वायदियाति काव्यम्
कौतूहलासक्तमना मनुष्यः कल्याणयुक्तः सुभगः सुशीलः ३५

चन्द्रमा के निचले भाग में एक टेढ़ी रेखा भाग्यरेखा को काटकर शुक्र-स्थान के पास पहुँचे तो वह खिलाड़ी मनवाला, कल्याणयुक्त, ऐश्वर्यवाला और शीलवान् कहाता है ॥३५॥

१५पित्रोस्सुमध्ये विशदस्त्ररूपं शैलाङ्कतुल्यं यदि भाति चिह्नम्।
दौर्जन्ययुक्तो मनुजो मलाक्तो ह्युद्वन्धतो मृत्युमुखं प्रयाति ३६

जिसकी मातृ तथा पितृरेखा के बिचले भाग में साफ़ सात के अंक का-सा निशान हो वह दुर्जन, मल से भरा, मौत के मुख में जाता है ॥ ३६ ॥
(देखो चित्र नं० ३८)

षोडशलक्षणांकितकरतलफल

१सौम्यालये चेद्विशदास्सुवक्राः क्षुद्रास्सुरेखा बहुशो विभान्ति।
चौर्ये प्रवृत्तो मनुजस्तदा स्याद्दीप्तप्रभावश्चपलस्वभावः॥ ३७ ॥

बुध स्थान में साफ़ व टेढ़ी बहुतसी छोटी रेखायें हों तो वह प्राणी दीप्त प्रभाववाला होकर चपल स्वभाववाला होता हुआ चोरी करने में लगा रहता है ॥ ३७ ॥*

---

* ऐसा पुरुष या स्त्री चोर-कर्म-प्रयोग होता है यह अनेक शास्त्रियों का मत है। हमें भी इस प्रकार के चिह्न देखने को मिले हैं। संपादक

२ चण्डात्मजस्थानगतं सुचिह्नं संमध्यभिन्नं वृजिनं द्विरेखम् ।
सम्पत्समेतो मनुजो विलासी सौभाग्यशाली मणिरत्नमाली ॥

जिसके शनैश्चर स्थान में टेढ़ा व दो रेखाओंवाला निशान यदि बीच में सरल रेखा से कटा सा प्रतीत हो तो वह सम्पन्न, विलासी व सौभाग्यशाली और मणिमालाधारी होता है ॥ ३८ ॥

३ संभोगरेखा यदि चोर्ध्वभागे क्षुद्राविभिन्ना गुरुगा विभाति ।
मस्ताभिघातं लभते मनुष्यो मानी मनीषी ममतासमेतः ॥ ३९

जिसकी संभोगरेखा (आयुरेखा) ऊपरले भाग में छोटी-छोटी रेखाओं से भिन्न होकर बृहस्पति स्थान में पहुँचे, वह ज्ञानी व बुद्धिमान्, ममतासंपन्न और मस्तक में चोट खाता है ॥ ३९ ॥

४ प्रदेशिनीमूलगतं सुचिह्नं ध्वजस्वरूपं विशदं विभाति ।
सोऽयं जनः सज्जनसङ्गकारी धर्मी धरित्र्यां धनताविधारी ४०॥

जिसकी तर्जनी के मूल में ध्वजा के समान निशान हो तो वह सज्जनों का संग करनेवाला धर्मी और धनी होता है ॥ ४० ॥

५ मातुः सुरेखा यदि चोर्ध्वभागे संभिन्नशीर्षा गुरुगा विभाति ।
शोकाकुलस्स्यान्मनुजो गदार्तो गम्भीरभावो विगताभिमानः

जिसकी मातृरेखा (हेडलाइन) ऊपरले भाग में कटी और बृहस्पति स्थान में पहुँचे, वह रोगपीड़ित, गम्भीर आशयवाला, निरभिमानी और शोकाकुल होता है ॥ ४१ ॥

६ भोगा सुरेखा यदि शृङ्खलाङ्गा गम्भीररूपा गुरुगा विभाति ।
भार्याविहीनो मनुजस्तदानीं गत्वा विदेशं समुपैति मृत्युम् ४२

सांकल के समान भोगरेखा बृहस्पति स्थान में पहुँचे तो स्त्रीरहित होता और परदेश में मरता है ॥ ४२ ॥

७ संभोगमात्रोर्यदि मध्यदेशे गुणाख्यचिह्नं विपुलं विभाति ।
चिन्तातुरः स्यान्मनुजो मनस्वी पदाभिलाषी श्रमतासमेतः ४३

जिसकी संभोगरेखा व मातृरेखा के बिचले भाग में गुणा का निशान हो, वह चिन्तातुर, मनमौजी, पद की अभिलाषा करता और बड़ा परिश्रमी होता है * ॥ ४३ ॥

८ मातुः सुरेखा यदि नीचभागे भिन्ना सुभोगाभिमुखं प्रयाति ।
आयुष्यमल्पं लभते मनुष्यो ह्याचारहीनो व्याभिचारशीलः ४४

यदि मातृरेखा निचले भाग में कटी तथा सुभोगरेखा के सामने चली जावे तो अनाचारी, व्यभिचारी तथा अल्पायु की सूचक है ॥ ४४ ॥

९ भाग्यासुपित्रोर्यदि मध्यदेशे भिन्ना सुरेखा कुटिला विभाति ।
विश्वासघाती मनुजो विवादी दुष्टस्वभावो नृपदण्डमेति ४५

भाग्यरेखा व पितृरेखा के बिचले भाग में एक कटी टेढ़ी रेखा यदि हो तो विश्वासघाती, विवादी, बुरे स्वभाववाला, और राजदण्ड पानेवाला बताती है ॥ ४५ ॥

१० मातुस्सुरेखाधरगं विभाति मध्ये विभिन्नं कुटिलं द्विरेखम् ।
सोऽयं महोच्चात्पतितो मनुष्यो मानी महौजा मदनातुरश्च ४६

मातृरेखा के नीचे व बीच में कटा हुआ दो रेखाओंवाला टेढ़ा निशान हो तो मानी, महाबली, कामातुर, और ऊँचे स्थान से गिरकर चोट पाना बताती है ॥ ४६ ॥

११ पैत्री सुवक्रा मणिबन्धहीना वृत्तार्धमध्या गुरुगा विभाति ।
सोऽयं जनो विन्दति नेत्रघातं नारीविहीनो नयतासमेतः ४७

टेढ़ी पितृरेखा मणिबन्ध से छुटी तथा मध्य में अर्धवृत्तयुक्त हो और बृहस्पतिस्थान में पहुँचे तो स्त्रीहीन, नीतिसंपन्न, और नेत्रों में चोट खाता है ॥ ४७ ॥

१२ वृद्धाङ्गुलेर्वै निकटे नखस्य वेदाङ्कतुल्यं यदि भाति चिह्नम् ।
चौर्ये रतः स्यान्मनुजः कुसङ्गी धर्मादिभङ्गी भयदो जनानाम् ४८

अँगूठे के नाख़ून के पास चार के अंक का-सा निशान हो तो वह बुरे

---

* इसे अंग्रेज़ी में (मिस्टिक क्रास) कहते हैं ।—संपादक

लोगों का साथी बन धर्मभङ्ग करता, भयदायक और चौरकर्म-परायण रहता है ॥ ४८ ॥

१३वृद्धाङ्गुलेर्वै द्वितये परुष्के वक्रं द्विरेखं विरलं विभाति ।
विज्ञानहीनोमनुजोबलिष्ठोबालादिलीनो मृतिमेति पाशात् ४६

अँगूठे की दूसरी पोर में टेढ़ा दो रेखाओंवाला निशान हो तो विज्ञान-हीन, बलवान्, और फाँसी से मृत्यु पाता है ॥ ४६ ॥

१४भाग्याच्चलन्ती मणिबन्धदेशात्सञ्छिन्नमस्ता समुपैतिसूर्यम्
सौख्यान्वितोऽसौ सुभगो मनुष्यो व्यापारशाली वसुधासुपाली

मणिबन्ध से चली भाग्यरेखा क्षुद्ररेखाओं द्वारा कटी सूर्य के पास पहुँचे तो सुखसंपन्न, भाग्यवान्, व्यापारी, और पृथ्वीपाल होना बताती है ॥५०॥

१५वक्रा सुवप्राधरतश्चलन्ती क्षुद्रासमेता यदि याति मात्रीम् ।
संभ्रान्तमस्तो मनुजो भयार्तो ह्युद्विग्नचित्तो विफलं विवेति ५१

पितृरेखा के निचले भाग से चली छोटी रेखाओं समेत टेढ़ी रेखा मातृ-रेखा के समीप पहुँचे तो भययुक्त, कुन्दज़हन, और ऊबे दिलवाला तथा सब कामों में विफलता सूचक है ॥ ५१ ॥

१६चन्द्रालयस्थं सरलं ध्वजाङ्कं तिर्यग्विभिन्नं ग्रथितं मिथश्चेत् ।
दुष्टस्वभावोऽधमतासमेतो ह्याप्नोति मृत्युं जनतापकारी ॥ ५२ ॥

जिसके चन्द्र स्थान में सीधा ध्वजा का निशान तिरछा, कटा एवं परस्पर गुथा हुआ प्रतीत हो तो वह दुष्टस्वभाववाला, नीच, जन अपकारी होता तथा मौत पाता है ॥ ५२ ॥ (देखो चित्र नं० ३६)

चतुर्दशलक्षणाङ्कितकरतलफल

१ भोगासमुत्था सरला गभीरा रेखा यदैका यदि याति चान्द्रिम् ।
ज्ञानी गुणी स्यादुपदेशदाता मानी महौजाः परवृत्तगोप्ता ॥ ५३ ॥

जिसकी भोगरेखा (आयुरेखा) से उठी सीधी व गहरी रेखा यदि बुधपर्यन्त जावे तो वह ज्ञानी, गुणी, उपदेशदाता, मानी, बलवान् और सब के चरित्रों को छिपाये रहता है ॥ ५३ ॥

२ संभोगरेखोपरिगा गभीरा वक्रा सुरेखा समुपैति सूर्यम् ।
सोऽयं जनो विज्ञतमो गुणज्ञो नामी सुधामी धनतामुपैति ॥ ५४ ॥

जिसकी संभोगरेखा (आयुरेखा) के ऊपरले भाग से एक गहरी एवं टेढ़ी रेखा यदि सूर्य के समीप चली जावे वह महागुणज्ञाता, नामी, सुधामी, और धनी होता है ॥ ५४ ॥ *

३ पैत्रीसमुत्था विशदा सुरेखा स्वल्पा गभीरा यदि याति मन्दम् ।
साँवत्सरो ना खलु पारदर्शी दैवज्ञवर्यो यदि दीर्घगा चेत् ५५

पितृरेखा से उठी साफ़, छोटी एवं गहरी रेखा यदि शनि पर्यन्त जावे तो ज्योतिर्वेत्ता, पारदर्शी होने की सूचक है । यदि पूर्वोक्त रेखा भारी दिखे तो दैवज्ञों में प्रधानता बताती है ॥ ५५ ॥

४ पैत्रीसमुत्थं विशदं गभीरं केतुस्वरूपं गुरुगं विभाति ।
शास्ता जनानां मनुजस्तदा स्याद्दाता दयालुर्दयितासमेतः ५६

यदि पैत्रीरेखा से उठा साफ़ एवं गहरा ध्वजा का निशान बृहस्पति के स्थान में पहुँचे तो प्राणप्यारी समेत दयालु, दाता, और सब पर शासन करनेवाला बताती है ॥५६॥

५ देवेन्द्रवन्द्यालयगं विभाति चिह्नं त्रिकोणं विशदस्वरूपम् ।
सोऽयं जनः सर्वजनप्रधानः प्रख्यातकीर्तिं लभते नितान्तम् ५७

जिसके गुरु स्थान में साफ़ त्रिकोण चिह्न हो वह सब में प्रधान, विख्यात तथा किसी रियासत का एजण्ट होता है ॥ ५७ ॥

६ भोगा सुरेखा यदि नीचदेशे वक्रा द्विशाखा खलु मध्यमान्ता ।
विंशाब्दमायुर्लभतेमनुष्यःशाखात्रयंचेत्खगुणाब्दमायुः ॥५८॥

जिसकी भोगरेखा (आयुरेखा) निचले भाग में दो शाखाओंवाली तथा टेढ़ी होकर मध्यमा तक जावे वह बीस वर्ष की आयु पाता है । यदि पूर्वोक्त रेखा में तीन शाखायें प्रतीत हों तो तीस वर्ष की आयु जानना ५८॥

---

* इसे अन्य हस्तरेखाविशारद भी इस प्रकार बड़ी अच्छी रेखा बताते हैं ।—सम्पादक

७मातुः सुरेखा यदि नीचभागे शूलाख्यचिह्नेन युता यदा स्यात्।
सोऽयं विनीतो मनुजो महात्मा यज्ञादिधर्माङ्गयुतो जनानाम्॥५९

निचले भाग में मातृरेखा त्रिशूल चिह्नयुक्त हो तो उसे शिक्षित, महात्मा और यज्ञादि धर्मयुक्त जानना चाहिये ॥ ५९ ॥

८मात्री सुरेखा मिलिता सुपैत्र्यां संमध्यभिन्ना शशिगा विभाति।
व्याजीविवादीमनुजोविलासीसम्पत्तिराशी च महाप्रकाशी ६०

जिसकी पितृरेखा में मिली एवं बीच में कटी हुई मातृरेखा यदि चन्द्र-स्थान में पहुँचे तो वह छली, बहसी, विलासी, संपत्तिशाली और महा-प्रकाशी होता है ॥ ६० ॥

९ पैत्रीसमुत्था मिलिता सुमात्र्यां रेखा सकोणा कृशगा विभाति।
विश्वासशाली मनुजो विशोकी वेदान्तभाषीविदुषां वरेण्यः ६१

जब पितृरेखा से उठी तथा मातृरेखा में मिली एक रेखा त्रिकोण समेत पतली सी हो तो वह विश्वासी, विशोकी, वेदान्तवेत्ता, और विद्वानों में प्रधान कहाता है ॥ ६१ ॥

१०मातुस्सुरेखोपरिगा सुभोगा संभुग्नमध्या समुपैति शौरिम् ।
अल्पायुषं तं पुरुषं करोति सौभाग्यवन्तं बहुभोगवन्तम् ॥ ६२॥

जिसकी भोगरेखा (आयुरेखा) मातृरेखा के ऊपरी भाग में बीच में टेढी हो और शनि पर्यन्त पहुँचे उसे सौभाग्यवान् व महाभोगवान् तथा अल्पायु करती है ॥ ६२ ॥

११ समुत्थितं चेन्मणिबन्धदेशात्सार्प्यं द्विरेखं जननीमुपैति ।
दौर्भाग्ययुक्तो मनुजो दुराशो दीनो दरिद्रो दुरितान्युपैति॥६३॥

मणिबन्ध से उठा हुआ सर्पाकार दो रेखाओंवाला निशान यदि मातृ-रेखा के पास पहुँचे तो बुरी आशावाला, दीन, दरिद्री तथा पापी होना बताती है ॥ ६३ ॥

१२ वक्रा सुपैत्री मिलिता जनन्यां संमध्यभिन्ना भगिनीसमेता ।
सोऽयं जनो विन्दति देहघातं कण्डूसमेतो ज्वरजार्तियुक्तः॥६४॥

जिसकी मातृरेखा से मिली पितृरेखा टेढ़ी तथा बीच में कटी हुई भगिनीरेखा समेत दिखे वह खुजलीवाला, ज्वर पीड़ायुक्त होता और देहमें चोट खाता है ॥ ६४ ॥

१३ रेखा समुत्था मणिबन्धदेशाद्वक्रा गभीरा पितरं प्रयाति ।
संतीक्ष्णबुद्धिर्मनुजः सुकर्मा सौभाग्यशाली सुखतामुपैति ६५

जिसके मणिबन्ध से उठी टेढ़ी एवं गहरी रेखा पितृरेखा के पास पहुँचे वह तीव्र बुद्धिवाला, शोभन कर्मोंवाला, सौभाग्यशाली, और सुखी होता है ॥ ६५ ॥

१४ अङ्गुष्ठमूले विशदं सुवक्रं रेखाचतुष्कं यदि याति काव्यम् ।
सोऽयं मनुष्यः प्रथमे वयस्के प्राप्नोति सौख्यं शुभतासमेतः ६६॥

जिसके अँगूठे के मूल में चार रेखाओंवाला साफ़ एवं टेढ़ा निशान शुक्र के पास चला जावे वह शुभसंपन्न तथा पहली उमर में सौख्य पाता है ॥ ६६॥
(देखो चित्र नं० ४०)

षोडशलक्षणाङ्कितकरतलफल ३२

१ सुतर्जनीपर्वयुगे विभाति तिर्यग्विभिन्नं सरलैकरेखम् ।
सोऽयंजनःस्याद्बुधवर्गबन्धुःप्रधानलोकानुगतःसहिष्णुः ६७॥

यदि तर्जनी के पहिले एवं दूसरे पर्व में धन का चिह्न हो तो पण्डितों का बान्धव होना, प्रधान लोगों का अनुगामी तथा क्षमाशील होना बताती है ॥ ६७॥

२ कनिष्ठिकायाः प्रथमे परुष्के संकर्तिता वै यतिसन्ति रेखाः ।
तावत्प्रमाणा मनुजस्य नूनं नश्यन्ति गर्भा गदपीडिता वा ॥

जिसकी कनिष्ठा की पहिली पोर में जितनी कटी हुई रेखाएँ हों तो उसके उतने ही गर्भ निश्चय कर नष्ट होजाते हैं, या रोग से पीड़ित होते हैं ॥ ६८ ॥

३ सौम्यालये चेत्सरलं त्रिरेखं तिर्यग्विभिन्नं श्रुतिसंमिताभिः ।
नार्यापिशाच्यापरिवञ्चितोनादारिद्र्यदुःखाभिभवंप्रयाति ६९॥

जिसके बुध स्थान में चार रेखाओं से तिरछा कटा तीन रेखाओं

वाला सीधा निशान हो वह पिशाचरूपिणी नारी से छला जाता तथा दारिद्र्य दुःख से तिरस्कृत होता है ।। ६६ ।।†

४ सूरालये चेद्विशदं विशालं विभाति चिह्नं सरलं द्विरेखम् ।
दाराभिभूतो मनुजो मदान्धो ज्ञानेन मानेन धनेन हीनः ७० ॥

जिसके सूर्य स्थान में साफ़, सीधा दो रेखाओं वाला निशान हो तो वह भार्या से अनादृत होता तथा मदान्ध होकर ज्ञान, मान एवं धनहीन हो जाता है ।। ७० ।।

५ भाग्या सुरेखा समुपैति सौरिं सच्छिन्नमस्ता सरला गभीरा।
कष्टार्दिताङ्गोमनुजस्तदानीं कारालयं याति करालरूपः।।७१।।

गहरी, सीधी तथा कटे शीशवाली भाग्यरेखा यदि शनि के समीप पहुँचे तो कष्टपीड़ित अङ्गवाला करालरूपधारी तथा जेलखाने जाता है।।७१।।*

६ भोगा सुरेखा जननीमुपैति कौटिल्यमस्ता यदि मध्यभिन्ना ।
सोयं जनःस्याद्व्यभिचारशालीनार्यायदाचेत्कुलटातदासा ७२

बीच में कटी टेढ़े शीशवाली भोगरेखा मातृरेखा के पास पहुँचे तो व्यभिचारी होता है । यदि पूर्वोक्त रेखा रमणी के करतल में हो तो वह कुलटा होती है ।। ७२ ।।×

७ भोगा सुरेखा यदि नीचदेशे क्षुद्रा विभिन्ना कृतचुल्लिरूपा ।
तदा सुतानां प्रसवे जनस्य प्रभूतपीडा स तु भोगशाली ॥७३॥

यदि भोगरेखा निचले भाग में क्षुद्ररेखाओं से कटी हुई चूल्हे का रूप बना ले तो उस स्त्री को प्रसवकाल में अधिक वेदना होती है । और यदि पुरुष के हाथ में हो ता वह भोगशाली होता है ।। ७३ ।।

८ क्षुद्रा गभीरा जननीसुरेखा संभिद्य भोगां यदि याति मन्दम्।
सयौवने मृत्युमुखं प्रयाति स्पर्शेन हीना खलु पानमक्तः ७४॥

---

† इस प्रकार इस स्थान के चिह्न शुभ नहीं माने जाते ।—सं०

* जेल जाना अथवा संसार से विलग रहने के लिए अमेरिकन फ्रेंच तथा अनेकों इंगलिश विद्वानों ने शुक्रालय पर चतुष्कोण होना कहा है ।—सं०

× यह अशुभ चिह्न है ।—संपादक

जिसकी छोटी एवं गहरी मातृरेखा यदि भोगरेखा को काटकर शनि के पास जावे तो वह युवावस्था में ही मृत्यु पाता है। यदि पूर्वोक्तरेखा भोगरेखा का स्पर्श न करे तो वह प्राणी मद्यपायी होता है ॥ ७४ ॥

९ पित्रावियुक्ता यदि मातृरेखा तदन्तरे क्षुद्रतरा विभान्ति।
विश्वासहीनोमनुजो महौजा वेश्यारतः स्याद्विषयाभिभूतः ७५

यदि पैत्रीरेखा से मातृरेखा जुदा हो और उन दोनों के बीच छोटी छोटी बहुत सी रेखाएँ हों तो महाबलवान्, विश्वासहीन होता हुआ वेश्यारत तथा विषयों से अनादृत होता है ॥ ७५ ॥

१० काव्यालयाच्चेच्चलितासुरेखासंभिद्यपैत्रीमभियातिभाग्याम्।
कापट्यसक्तोमनुजोहिलम्पटो दौर्भाग्ययुक्तो दयया विहीनः७६

शुक्र स्थान से चली रेखा यदि पैत्रीरेखा को काटकर भाग्यरेखा के सम्मुख पहुँचे तो वह छलछन्दी, लम्पट, दौर्भाग्ययुक्त तथा दयाहीन होता है ॥ ७६ ॥

११ पैत्रीसुरेखा यदि मध्यदेशे क्षुद्रा विभिन्ना कुटिला विभाति।
चिन्ताभिभूतो मनुजस्तदास्यादौदास्ययुक्तोदयितासमेतः ७७॥

यदि पैत्रीरेखा विचले भाग में छोटी छोटी रेखाओं से कटी तथा टेढ़ी हो तो नारी समेत चिन्ताकुल और उदासीन बना रहता है ॥ ७७ ॥

१२ वृद्धाङ्गुलेरूर्ध्वगतं सुचिह्नं तिर्यग्द्विरेखं सरलं द्विरेखम्।
चौर्ये प्रवृत्तो मनुजो मनस्वी विश्वासहीनो वनिताविहीनः ७८

अँगूठा के नह के पास तिरछी दो रेखाएँ एवं सीधी दो रेखाएँ हों तो वह चोर, मनमौजी, विश्वास-रहित तथा वनिताविहीन होता है ॥७८॥ *

१३ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशात्क्षुद्राविभिन्नायदियातिचान्द्रिम्।
स्यान्मन्दभाग्योमनुजो जनानांमत्या विहीनो मदनातुरश्च ७९

मणिबन्ध से उठी छोटी छोटी रेखाओं से कटी हुई एक रेखा यदि बुधालय के पास जावे तो वह मन्दभागी, निर्बुद्धि तथा कामातुर होता है ॥७९॥

---

* चौर कर्म के अन्य चिह्न अन्यत्र भी कहे गये हैं।—सम्पादक

१४ पित्रा वियुक्ता यदि चोर्ध्वरेखा तदन्तरे बाणसमा विभाति।
सोयं जनः स्याद्व्यवसायशालीविश्वासहीनो बलतासमेतः ८०

यदि पैत्रीरेखा से ऊर्ध्वरेखा जुदी हो और उन दोनों के बीच में बाणाकार-सी एक रेखा हो तो वह रोजगारी, अविश्वासी तथा बलसंपन्न बना रहता है ॥ ८० ॥

१५ पैत्री सुरेखा यदि नीचदेशे शाखाप्रशाखासहिता विभाति।
बुद्ध्याविहीनोमनुजोगदार्तोमस्तिष्कपीडांलभतेनितान्तम् ८१

यदि निचले भाग में पैत्रीरेखा शाखा प्रशाखाओं समेत हो तो वह निर्बुद्धि, रोगपीड़ित, तथा कठिन मस्तक पीड़ा पाता है ॥ ८१ ॥

१६ अङ्गुष्ठमूले विशदं विशालं चिह्नं त्रिकोणादियुतं यदा स्यात्।
प्रवञ्चको ना जगतो जनानां मायारतो मानववृन्दवन्द्यः॥८२॥

अँगूठे के मूल में साफ़ निशान यदि त्रिकोण आदिकों से संयुक्त हो तो वह माया में रत, छलिया, और वन्दनीय होता है ॥ ८२ ॥ (देखो चित्र नं० ४१)

पञ्चदशलक्षणाङ्कितकरतलफल

१ सौम्यालयेचेद्युगपङ्क्तिसंस्थाःक्षुद्राःसुरेखाःसरला विभान्ति।
सोयं जनःस्याज्जनघातकारी हत्यासमूहैःसहितोऽपकारी॥८३॥

जिसे छोटी एवं सीधी बहुतसी रेखाएँ दो पंक्तियों में बुधालय में हों तो वह घातकी या हत्याकारी, और बुराई करनेवाला होता है ॥ ८३ ॥

२ ब्रध्नालये चेद्विशदं विशालं चिह्नं त्रिरेखं सरलं विभाति।
संस्थापकोयन्तु विना परीक्षां मतस्य नारीकृतहानिमेति॥८४॥

जिसके सूर्य स्थान में साफ़ सीधा एवं तीन रेखाओंवाला निशान हो वह विना परीक्षा किये हुए मत का चलानेवाला होता तथा रमणियों द्वारा हानि उठाता है ॥ ८४ ॥

३ भोगाद्यशाखा यदि याति मन्दं तथा द्वितीया धिषणं प्रयाति।
मातापितृभ्यांघृणितोऽरिभीतो दीर्घा न चेन्नारिकृताविपत्तिः८५

जिसकी सौभाग्यरेखा की पहिली शाखा शनैश्चर के स्थान में और दूसरी शाखा गुरु स्थान में पहुँचे वह माता पिता से घृणित होता और वैरियों से डरता है। यदि पूर्वोक्तरेखा फैली न हो तो वह नारीकृत विपत्ति भोगता है ॥ ८५ ॥

४सौम्यालयान्ते विशदस्वरूपं चिह्नं त्रिकोणं यदि भाति भिन्नम्।
सोयं श्रमासक्तमना मनुष्यो नारी तदीया मृतिमेति सूतौ ॥८६॥

जिसे बुधालय के समीप त्रिकोण का साफ़ निशान यदि भिन्न हो तो वह बड़ा परिश्रमी होता है। उसकी भार्या की मृत्यु संतान उत्पन्न होने के समय होती है ॥ ८६ ॥

५पैत्रीसमुत्था जननीं विभित्त्वा भोगां च रेखा समुपैति सूरम्।
भूपालवन्द्यो मनुजो महात्मा मायारतः स्यान्ममतासमेतः ८७

जिसकी पैत्रीरेखा से उठी रेखा मातृरेखा और भोगरेखा को काटकर सूर्य के पास जावे तो वह राजाओं द्वारा वन्दनीय, महात्मा, माया में रमता और ममता संपन्न रहता है ॥ ८७ ॥ *

६ चिह्नं सकोणं सरलं द्विरेखं तिर्यक्त्रिरेखं गुरुगं विभाति।
आचारहीनो मनुजस्तदानीं वित्तस्यहानिं लभतेनितान्तम्८८

जिसके गुरु स्थान में कोणयुक्त सीधा दो रेखाओंवाला एवं तिरछी तीन रेखाओंवाला निशान हो वह आचारहीन तथा धनहानि भोगता है ॥ ८८ ॥

७भोगा सुरेखा यदि नीचभागे भग्नस्वरूपा विशदा विभाति।
विश्वासहीनो मनुजो महौजामत्याविहीनोमदनातुरःस्यात्८९

यदि सौभाग्यरेखा निचले भाग में भग्न हो तो वह महाबलवान्, विश्वास हीन, निर्बुद्धि और कामी होता है ॥ ८९ ॥

८भोगा सुरेखा भगिनीसमेता कुबिन्दुमध्या शनिगा विभाति।
सन्तानहीनो मनुजस्तदा स्याद्दौर्बल्ययुक्तो दयितो दयालुः ९०

---

* कुछ विद्वानों का मत है कि ऐसी रेखा आकस्मिक प्राप्ति का चिह्न है। कुछ का कथन है कि वह उस समय कीर्त्ति तथा धन देती है।—सम्पादक

भगिनीसमेत भोगरेखा बीच में छोटे बिन्दुओंवाली होकर शनि के पास पहुँचे तो वह अपुत्री, दुर्बल, सबका प्यारा, और दयावान् होता है ॥९०॥

९ पैत्रीमुखे चेद्विशदं विशालं जालस्वरूपं यदि भाति चिह्नम् ।
सोऽयंजनःसज्जननिन्दकःस्यादाचारहीनोऽव्यभिचारशाली ९१

पैत्रीरेखा के मुख के समीप साफ़ जालरूप चिह्न हो तो वह सज्जनों का निन्दक, आचारहीन और व्यभिचारी होता है ॥ ९१ ॥

१०मात्रीविभिन्नायदिनीचभागेक्षुद्राःसमीपेकुटिलाविभान्ति ।
नाप्नोति सौख्यं पुरुषःकदापिसंक्षीणबुद्धिःसरलस्वभावः ॥९२॥

यदि निचले भाग में मातृरेखा कटी हो और पास ही छोटी छोटी तिरछी बहुत-सी रेखायें हों तो वह कभी सुख नहीं पाता है। क्षीणबुद्धि तथा सीधे स्वभाववाला बना रहता है ॥ ९२ ॥

११वप्रस्य रेखा यदि कण्ठदेशे शाखात्रयेणापि युतायदास्यात् ।
सोऽयं मतालम्बनतो हि पीडां प्राप्नोति जन्तुर्जनताविहीनः ९३

यदि कण्ठदेश में पितृरेखा तीन शाखा युक्त हो तो वह जनहीन और विमत से पीड़ित होता है ॥ ९३ ॥

१२चन्द्रालये भाति मिथोविभिन्नं गुणस्वरूपं यदि चिह्नयुग्मम् ।
सोऽयं जनः कृत्रिमबन्धुयुक्तो भुग्नं न चेत्स्यादुपकारहीनः ॥९४॥

चन्द्र स्थान में परस्पर कटे दो निशान हों तो वह बने भाइयों युक्त होता है। अथवा पूर्वोक्त निशान क्रम से गमन करें तो वह अनेक भाइयोंवाला कहाता है। यदि दोनों निशान टेढ़े न हों तो वह किसी की भलाई नहीं करता है ॥ ९४ ॥

१३ पैत्रीसमुत्थाभगिनीसमेतारेखागभीरायदियाति चान्द्रिम् ।
सोऽयं नरःस्याच्चपलस्वभावोभग्नायदा चेत्फलमन्यथास्यात्९५

जिसकी पैत्रीरेखा से उठी भगिनीसहित गहरी रेखा बुध के पास जावे वह चपलस्वभाववाला होता है। यदि पूर्वोक्त रेखा कटी मर्नात हो तो फल अन्यथा हो जाता है ॥ ९५ ॥

१४मात्रा वियुक्ताकुटिलासुपैत्रीह्यधोद्विशाखा मणिबन्धमेति।
स मन्दभाग्यःपुरुषस्तदानीं दारिद्र्यदुःखाभिभवं प्रयाति॥९६॥

मातृरेखा से जुदी एवं टेढ़ी पैत्रीरेखा निचले भाग में दो शाखाओंवाली होती हुई मणिबन्ध के पास पहुँचे तो वह मन्दभागी तथा दारिद्र्य से उपजा दुःख और अनादर पाता है॥ ९६॥

१५सञ्छिन्नमस्तं मणिबन्धगं चेच्चिह्नं द्विरेखं समुपैति मात्रीम्।
मिथ्याभ्रमेणापि युतो मनुष्यो दारिद्र्ययुक्तोविगताभिमानः९७

कटे शीशवाला एवं मणिबन्धगामी दो रेखाओंवाला निशान यदि मातृरेखा के पास पहुँचे तो वह मिथ्याभ्रम युक्त, दरिद्री और घमण्ड रहित होता है॥ ९७॥ (देखो चित्र नं० ४२)

चतुर्दशलक्षणाङ्कितकरतलफल ३५

१ कनिष्ठिकानामिकपर्वयुग्मे रेखाद्वयं चेत्सरलं विभाति।
सोयं जनो विन्दति बाहुघातं भ्राता विहीनो भ्रमतासमेतः ९८

कनिष्ठिका और अनामिका की पहली व दूसरी पोर में सीधी दो रेखाएँ हों तो वह भुजाओं में चोट खाता है। और भ्रमसंपन्न तथा भ्रातृहीन रहता है॥ ९८॥

२ सुतर्जनीपर्वयुगे द्विरेखं मध्यापरुष्के यदि द्वित्रिरेखम्।
शोफार्दितोयं मनुजस्तदा स्याज्ज्वरादिरोगैःपरिपीडिताङ्गः ९९

तर्जनी की पहली व दूसरी पोर में सीधी दो रेखाएँ तथा मध्यमा की पोरों में दो तीन रेखाएँ हों तो वह ज्वर से व्याकुल तथा शोथरोग से पीड़ित होता है॥ ९९॥

३ सौम्यालयान्तेऽमरलैकरेखं तिर्यग्विभिन्नं यदि भाति चिह्नम्।
ज्ञानीसुमानी पुरुषस्तदानीं स्याद्दौत्यकारीदयितापहारी १००

बुधालय में एक रेखावाला तिरछा कटा हुआ निशान हो तो वह ज्ञानी, सुमानी, दूतकर्म को करना और किसी विजातीय की प्यारी को हरनेवाला होता है॥ १००॥

४ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशात्सर्पाननना वै समुपैति मध्याम् ।
धूर्तस्वभावो मनुजो धनाढ्यः धन्यो धरित्र्यां धरया समेतः ॥१॥

मणिबन्ध से उठी सर्प के समान मुँहवाली रेखा यदि मध्यमा की पहला पोर में पहुँचे तो वह धूर्तस्वभाववाला, धनी, भूमि का मालिक तथा धन्य गिना जाता है ॥ १ ॥

५ भोगाद्यशाखा समुपैति सौरिं तथा द्विशाखे जननीमुपेतः ।
सोऽयं मनुष्यः शुभकर्मकारी दानी सुमानी तु महोपकारी ॥२॥

भोगरेखा की पहली शाखा शनि के पास जावे तथा दो शाखायें मातृरेखा के आमने सामने हों तो वह शुभ कर्म करनेवाला, दानी और उपकारी होता है ॥ २ ॥

६ लूतासुजालं विशदं विशालं चिह्नं यदा चेद्गुरुगं विभाति ।
सोऽयं जनो मज्जति वारिवाहे बाल्ये वयस्के बलतासमेतः ॥३॥

बृहस्पति स्थान में मकड़ी के जाल के समान साफ़ निशान हो तो वह बाल्यावस्था में ही बलसंपन्न होता तथा जल में डूब जाता है ॥ ३ ॥

७ चन्द्रालयान्ते परिभाति चिह्नं भिन्नत्रिकोणं यदि बाहुभिन्नम् ।
सोऽयं नरः स्यान्निगमागमज्ञः सत्यप्रवक्ता सरलस्वभावः ॥४॥

चन्द्रालय के समीप भिन्न त्रिकोणवाला तथा भिन्नबाहुवाला निशान हो तो वह वेद शास्त्र ज्ञाता, सत्यवक्ता, तथा सरलस्वभाववाला कहाता है ॥४॥

८ वृद्धाङ्गुलेर्वै द्वितये परुष्के वेदाङ्कतुल्यं यदि भाति व्यस्तम् ।
सोयं जनःस्याद्व्यभिचारशाली ह्याचारहीनः कुविचारपाली ५

यदि अँगूठे की दूसरी पोर में चार ४ अङ्क के समान उलटा निशान हो तो वह व्यभिचारी, आचारहीन तथा निन्दित विचार रखनेवाला होता है ॥ ५ ॥

९ मात्रीस्वशीर्षे मिलिता सुपैत्र्या तदन्तरे चापसमा विभाति ।
दुःखार्दितोऽयं पुरुषस्तदानीं मृत्युं स्वतो वाञ्छति सर्वदैव ॥ ६ ॥

मातृरेखा अपने शिरोभाग में पैत्रीरेखा से मिलाप करे और उन दोनों के बीच में धन्वाकारसी एक और रेखा हो तो वह दुःख से घबराता तथा सदैव मृत्यु चाहता रहता है ॥ ६ ॥

१० भोगासमीपेहि मिथोविभिन्नंगुणानुरूपंयदिलक्ष्मयुग्मम् ।
दारिद्र्ययुक्तो मनुजो विबन्धुश्चिह्नप्रमाणैरपि बन्धुता वा ॥ ७ ॥

जिसकी सौभाग्यरेखा के पास परस्पर कटे हुए गुणाकार दो निशान हों वह भाईरहित था सहायताहीन और दरिद्री बना रहता है। अथवा जितने ही चिह्न हों उतने ही भाई होते हैं ॥ ७ ॥

११ समुत्थितं चेन्मणिबन्धदेशाच्चिह्नं द्विरेखं यदि यातिचान्द्रिम् ।
सोयं जनः स्यात्परदास्ययुक्तो भग्नं यदा चेत्परबन्दिमेति ॥ ८ ॥

मणिबन्ध से उठी दो रेखाओंवाला निशान यदि बुधालय में चला जावे तो वह परपुरुषों का सेवक होता है। और यदि पूर्वोक्त निशान कटा हो तो वह बन्धन पाता है ॥ ८ ॥

१२ अङ्गुष्ठमूले यदि भाति चिह्नं रेखासुषट्कं कुटिलं विशुद्धम् ।
सोयं नरः स्यात्प्रमदाविलासी ह्यानन्दराशी महतामुपासी ९

अँगूठे के मूल में साफ़ छः रेखाओंवाला टेढ़ा निशान हो तो वह प्रमदा-विलासी, आनन्दराशि तथा महात्माओं का सेवक बना रहता है ॥ ९ ॥

१३ अञ्जालयान्ते विशदं गभीरं घनस्वरूपं यदि भाति चिह्नम् ।
सोयं निमग्नो हि जलप्रवाहे बाधिर्ययुक्तो विधुरस्वभावः ॥ १० ॥

चन्द्रालय के पास साफ़ एवं गहरा हथौड़े के समान निशान हो तो वह बहिरा होता है। और टेढ़े, स्वभाववाला तथा जल में डूब जाता है ॥ १० ॥*

१४ तिस्रः सुरेखामणिबन्धसंस्थास्तासां विभिन्ना यदि चाद्यरेखा ।
सोयं यशस्वी मनुजो नराणां प्राज्ञःप्रशंसी परमायुषाढ्यः ॥ ११ ॥

जो तीन रेखायें मणिबन्ध में रहती हैं उनमें से पहली रेखा कटी हो तो वह यशस्वी, प्रशंसापात्र और परमायु संयुक्त होता है ॥ ११ ॥ (देखो चित्र नं० ४३)

* जल में डूबने के अन्य चिह्न भी अन्यत्र बताये गये हैं।—सम्पादक

पञ्चदशलक्षणाङ्कितकरतलफल ३९

१ भोगासमुत्था सरलैकरेखा संमध्यभिन्ना यदि याति सूरम् ।
मान्यो वदान्यो मनुजस्तदानीं सद्धर्मशाली धनतामुपैति १२

भोगरेखा से उठी एक सीधी बीच में कटी रेखा यदि सूर्यालय में पहुँचे तो वह मानी, दानी, सद्धर्मशाली और धनी होता है ॥ १२ ॥

२ मन्दालये चेद्विशदं गभीरं चिह्नं त्रिरेखं सरलं विभाति ।
शान्तस्वभावो मनुजो हि नूनमुद्वेगहीनः समयं समेति॥१३॥

शनिश्चर स्थान में साफ़, गहरा, एवं सीधा तीन रेखाओंवाला निशान हो तो वह निश्चय शान्त स्वभाववाला, और अपने समय को व्याकुलता रहित व्यतीत करता है ॥ १३ ॥

३ पूज्यालये चेत्सरलं त्रिरेखं रेखाचतुष्कैस्तु तिरो विभिन्नम् ।
सोयं मनुष्यो विधनो विदीनो हीनो जनैर्गच्छति सर्वदेशम् १४

बृहस्पति स्थान में सीधी तीन रेखाएँ तिरछी चार रेखाओं से कटी हों तो वह दरिद्री, जनहीन और देशदेश में घूमता है ॥ १४ ॥

४ सौम्यालयान्ताच्चलिता सुभोगा रेखा गभीरा गुरुगेहमेति ।
कोपान्वितोऽयंपुरुषस्तदानींपारुष्ययुक्तः खलु साहसी स्यात् १५

बुध स्थान से चली गहरी भोगरेखा बृहस्पति स्थान पर्यन्त जावे तो वह कोपशाली, कठोर और साहसी होता है ॥ १५ ॥

५ देवेन्द्रवन्द्यालयगा सुभोगा संकर्तिता चेद्यदि कण्ठदेशे ।
धर्मेण हीनो हि नरो नराणां भूपादिभीत्या नितरां बिभेति १६

जिसके बृहस्पति स्थान में पहुँची भोगरेखा यदि कण्ठदेश में कटी हो वह अधर्मी तथा राजा, अग्नि और चोर के डर से बहुत डरता रहता है ॥ १६ ॥

६ चन्द्रालये चेत्सरलं द्विरेखं चिह्नं सुभोगाभिमुखं प्रयाति ।
विश्वासहीनो मनुजो विबन्धुर्वेश्याविलासी वनिताविहीनः १७

जिसके चन्द्र स्थान से सीधी दो रेखाएँ यदि भोगरेखा के सामने जावें वह अविश्वासी, भाईरहित, वेश्यागामी, और स्त्रीहीन होता है ।। १७ ।।

७मात्री सुरेखा यदि नीचभागे क्षुद्राविभिन्नामिलिता सुपैत्र्याम् ।
मात्रानिरस्तो मनुजो हि त्रस्तो विध्वस्तमानो ममतामुपैति १८

यदि मात्रीरेखा निचले भाग में छोटी रेखाओं से कटी हो तथा पैत्रीरेखा से मिल जावे तो माताद्वारा निकाला जाता तथा घबराता और टूटे मानवाला होता है ।। १८ ।।

८ भोगासमीपे करवालचिह्नं भित्त्वा सुमात्रीं समुपैति पैत्रीम् ।
सांघातिकं मृत्युमुपैति मर्त्यो मत्याविहीनो मदनातुरात्मा ॥ १९॥

भोगरेखा के पास तलवार का निशान यदि मातृरेखा को भेदकर पैत्रीरेखा के सामने चला जावे तो वह निर्बुद्धि, कामपीड़ित तथा सांघातिक मृत्यु पाता है ।। १९ ।।

९ पैत्रीस्वशीर्षे मिलिता सुमात्र्या चिह्नं विधत्ते यदि कोणरूपम् ।
सोयं जनः स्याद्गणितागमज्ञो गौरस्वरूपो ह्यतिगौरवाढ्यः २०

शिरोभाग में पैत्रीरेखा मात्रीरेखा के साथ मिलाप कर कोण चिह्न बनावे, तो वह गणितशास्त्र ज्ञाता, गौराङ्ग, और गौरवसंपन्न बना रहता है २०

१०संमध्यभिन्नामिलिताजनन्यांभाग्यासुरेखाकुरुतेहिकोणम् ।
सोयं विवादी मनुजो विषादी कष्टप्रदायी तु महज्जनानाम् २१

भाग्यरेखा बीच में कटकर मातृरेखा में मिल कोण चिह्न बनावे तो वह विवादी, विषादी, तथा महज्जन लोगों को बड़ा कष्टदायक होता है ॥२१॥

११कण्ठत्रिशाखाविनता गभीरा पैत्री सुरेखासमुपैतिभाग्याम् ।
सोयं जनो विन्दति वित्तवृन्दं संस्थासमेतः सरलस्वभावः ॥२२॥

कण्ठ में तीन शाखाओंवाली, लची हुई तथा गहरी पैत्रीरेखा भाग्यरेखा से मिल जावे तो वह मर्यादायुक्त, सीधे स्वभाववाला, और धनी होता है ॥२२॥

१२ अङ्गुष्ठमूले च पितुः समीपे त्रिपुण्ड्रूपं यदि भाति चिह्नम् ।
सोयं मनुष्यो बलवीर्यहीनो दीनो ह्यधीनो ललनाविहीनः २३

अँगूठे के मूल एवं पैतरीरेखा के पास त्रिपुण्ड्ररूपवाला निशान बलवीर्य-हीन, दीन, अधीन और रमणीहीन होने का सूचक है ॥ २३ ॥

१३ चन्द्रालयान्ते विशदं गभीरं तारानुरूपं यदि भाति लक्ष्म।
सोयं नरो मज्जति नीरमध्ये मानापमानेन युतो यविष्ठः ॥ २४ ॥

चन्द्रालय के पास गहरा साफ़ तारा का निशान हो तो वह जल में डूब-जाता है । उसका छोटा भाई मानापमानयुक्त होता है ॥ २४ ॥ (इसे पहले समझा चुके हैं ।) *

१४ विद्योतते चेन्मणिबन्धदेशे गुणानुरूपं यदि लक्ष्मयुग्मम्।
सत्येन हीनो मनुजो मलाढ्यो मान्योऽधमानां धनतासमेतः २५

मणिबन्ध के ऊपरले भाग में गुणाकारवाले दो निशान हों तो वह धनाढ्य, मैला, अधमजनों द्वारा माननीय तथा सत्यहीन होता है ॥ २५ ॥

१५ सर्पानुरूपं मणिबन्धसंस्थं वक्रं सुचिह्नं सुतरां विभाति।
सोयं नरः स्यात्परिणामदर्शी ज्ञानाधिकारी परकार्यकारी २६

सर्पाकार, टेढ़ा निशान मणिबन्ध में हो तो वह ज्ञानाधिकारी, परकार्य-कारी, तथा परिणामदर्शी होता है ॥ २६ ॥ (देखो चित्र नं० ४४)

त्रयोदशलक्षणाङ्कितकरतलफल

१ कनिष्ठिकापर्वयुगे विभाति कोणार्धरूपं यदि लक्ष्म शुद्धम्।
चौर्ये प्रवृत्तः पुरुषस्तदा स्याच्चातुर्ययुक्तश्चपलस्वभावः ॥ २७ ॥

कनिष्ठा की पहली व दूसरी पोर में शुद्ध अर्धकोण चिह्न हो तो वह चतुर, चपलस्वभाववाला तथा चौरकर्म में लगा रहता है ॥ २७ ॥

२ सुमध्यमायाः प्रथमे परुष्के त्रिकोणरूपं यदि भाति चिह्नम्।
सोयं मनुष्यः सकले स्वकार्ये प्राप्नोति हानिं न सुखं कदापि २८

मध्यमा की पहली पोर में यदि त्रिकोण चिह्न हो तो वह सब कार्यों में हानि तथा कभी सुख नहीं पाता है ॥ २८ ॥

---

* जल संबंधी भयंकर दुर्घटना के लिये यह चिह्न विदेशी विद्वानों ने भी कहा है।

३ पूज्यालयस्योपरिगं विभाति पार्श्वेत्रिरेखं सरलाद्विरेखम् ।
पित्तार्दितोयं लभते सुशोथं दीर्घापरा चेद्रमणीकृतार्थम् ॥ २९ ॥

जिसके बृहस्पति स्थान के ऊपरी भाग के पार्श्व में तीन रेखावाला तथा खड़ी दो रेखावाला निशान हो वह पित्तरोगी होता है । और यदि पूर्वोक्त दो रेखाओं में से कोई रेखा दीर्घ हो तो नारीकृत धन पाता है ॥ २९ ॥

४ सूरालये चेत्कुटिला सशाखा भोगां विभित्त्वा जननीं प्रयाति ।
सोयं जनः संशयसक्तचित्तो भूपादिकोपाद्बहुहानिमेति ॥ ३० ॥

सूर्यस्थान में टेढ़ी शाखासमेत रेखा भोगरेखा को काटकर मातृरेखा के सामने पहुँचे तो वह सन्देही तथा राजा-महाराजादि बड़े-बड़े लोगों के कोप से हानि उठाता है ॥ ३० ॥

५ भोगा सुरेखा यदि नीचभागे संकर्तिता चेन्मिलिता जनन्याम् ।
सोयं श्रमासक्तमना मनुष्यो विश्रामहीनो विपदामुपैति ॥ ३१ ॥

यदि निचले भाग में कटी हुई भोगरेखा मातृरेखा में मिल जावे तो वह विश्रामरहित-परिश्रमी तथा विपद्ग्रस्त होता है ॥ ३१ ॥

६ संभोगरेखा सरला गभीरा शीर्षे नता चेन्मिलिता सुमात्र्याम् ।
उग्रस्वभावो मनुजो महौजा विख्यातकीर्तिर्विजितारिपक्षः ३२

सीधी एवं गहरी भोगरेखा शिरोभाग में लची तथा मातृरेखा में मिली हो तो वह उग्रस्वभाववाला, बड़ा बली, विख्यात कीर्तिवाला और शत्रुपक्ष पर विजय पाता है ॥ ३२ ॥

७ चन्द्रालयान्ताच्चलितासुमात्री भोगासुशीर्षे मिलिता यदा चेत् ।
सोयं जनो विन्दति वित्तनाशं शाखायुता चेत्खलु साहसी स्यात् ३३

चन्द्रालय के समीप से चली मातृरेखा भोगरेखा के शिरोभाग में मिली हो तो उसका धननाश होता है । और यदि पूर्वोक्त रेखा शाखायुक्त हो तो साहसी होता है ॥ ३३ ॥

८ चन्द्रालये चेन्मिलितं स्वशीर्षे रेखाद्वयं वै विरलं विभाति ।
तत्प्राणनाशं कुरुते विपक्षो दीर्घापरा चेत्खलु वैरिजेता ॥ ३४ ॥

---

१. "पेलवं विरलं तनु" इत्यमरः ।

चन्द्र स्थान पर दो रेखाओंवाला निशान यदि शिरोभाग में मिला हो तो वैरीलोग उसके प्राण हरते हैं। यदि पूर्वोक्त रेखाओं में से कोई रेखा दीर्घ हो तो वह वैरियों को विजय करता है ॥ ३४ ॥

९ वृद्धाङ्गुलेर्वै द्वितये परुष्के रेखाद्वयं चेत्सरलं सशाखम्।
सोयं ह्यगम्यागमनं करोति गम्भीरबुद्धिर्गणितागमज्ञः ॥३५॥

अँगूठे की दूसरी पोर में दो रेखाओंवाला यदि सीधा होकर शाखा-सहित निशान हो तो वह गंभीर, बुद्धिशाली, गणितशास्त्र ज्ञाता तथा अगम्या रमणियों में गमन करता है ॥ ३५ ॥

१० रेखाचतुष्कं सरलं विभाति रेखाचतुष्कैस्तु तिरोविभिन्नम्।
सोयं निमग्नो मनुजो जलोघे जायाजितो जल्पति जन्तुवादम्॥

सीधी चार रेखाएँ तिरछी चार रेखाओं से कटी हों तो वह निजनारी से पराजित होता तथा जल में डूबता है ॥ ३६ ॥ *

११ काव्यालयान्ते विशदं सकोणं गुणानुरूपं यदि भाति चिह्नम्।
सोयं मनुष्यो धनधान्ययुक्तो मायारतो मानववृन्दमुख्यः ॥३७॥

यदि शुक्रालय के पास साफ़ कोणों समेत गुणाकार निशान हो तो वह धन-धान्य-युक्त, मायारत तथा मुखिया गिना जाता है ॥ ३७ ॥

१२ भुग्ना चलन्ती मणिबन्धदेशाद्भाग्यां सपैत्रीं प्रविभिद्य याति
प्रेमास्पदो वै पुरुषस्तदानीं प्राप्नोति पारं भवसागरस्य ॥ ३८ ॥

मणिबन्ध से चली टेढ़ी रेखा भाग्यरेखा और पितृरेखा को काटकर शुक्र के पास पहुँचे तो वह प्रेम धाम होता तथा भवसागर पार होता है ॥३८॥

१३ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशाद्रेखा गभीरासमुपैति सौम्यम्।
नारीकृतापत्तियुतो मनुष्यो मित्राभिभूतो हि समेति काराम् ३९

जिसकी मणिबन्ध से उठी गहरी रेखा बुधालय पर्यन्त जावे वह मित्रों से अनादृत होता, स्त्रीकृत विपदायुक्त तथा जेलख़ाने जाता है ॥ ३९ ॥

(देखो चित्र नं० ४५)

* चंद्र स्थान पर ऐसे चिह्न जलाघात बताते हैं, यह मत अनेक विदेशी पंडितों का भी है।—सम्पादक

पञ्चदशलक्षणाङ्कितकरतलफल

१ बुधनालयस्योपरिगं विभाति रेखाद्वयं चेत्सरलं सुदीर्घम् ।
सोयं महात्मा मनुजस्तदा स्याज्ज्ञानेन मानेन धनेन धन्यः ४०

यदि लम्बा दो रेखावाला सीधा निशान अनामिका की पहली पोर से उठकर दूसरी पोर के मध्य में पहुँचे तो वह महात्मा, ज्ञानी-मानी, धनी और प्रशंसनीय होता है ॥ ४० ॥

२ सौम्यालये चेद्विशदं च सूक्ष्मं रेखाचतुष्कं सरलं विभाति ।
सोयं निमग्नो हि जलप्रवाहे वृद्धे वयस्के बहुसौख्यमेति ॥ ४१ ॥

साफ़ छोटासा चार रेखावाला सीधा निशान यदि बुधालय में हो तो वह जल में डूबता तथा वृद्धावस्था में सुख पाता है ॥ ४१ ॥

३ सूरालये चेत्सरलं विभाति रेखाचतुष्कं खलु स्वल्परूपम् ।
पुत्रप्रपौत्रादियुतो मनुष्यो महामनीषी ममताविहीनः ॥ ४२ ॥

यदि सीधा चार रेखाओंवाला छोटासा निशान सूर्यालय में हो तो वह पुत्र एवं प्रपौत्र-संपन्न होता तथा बड़ा बुद्धिमान् और ममताहीन होता है ४२

४ देवेन्द्रवन्द्यालयगं विभाति चिह्नं त्रिकोणं विशदस्वरूपम् ।
संस्थासमेतो मनुजो धनाढ्यो धन्यो धरायां सरलस्वभावः ४३

जिसके बृहस्पति स्थान में साफ़ त्रिकोण चिह्न हो वह मर्यादायुक्त, धनाढ्य, प्रशंसनीय और सीधे स्वाभाववाला होता है ॥ ४३ ॥

५ पूज्यालये चेद्विशदस्वरूपं तारानुरूपं यदि भाति चिह्नम् ।
सोयं मनोऽव्याधियुतो मनुष्यो मस्तिष्कपीडां लभते सशोकः ४४

बृहस्पति स्थान में (भोगरेखा के कण्ठदेश के पास) तारा का चिह्न हो तो वह मानसी पीड़ा से पीड़ित, शोकी तथा माथे की पीड़ा*पाता है ॥ ४४ ॥

६ पैत्रीसुशीर्षोपरिगं विशुद्धं गुणानुरूपं यदि भाति चिह्नम् ।
पुरोहिताचार्यनिपीडिताङ्गो बाधासमेतो बहुदुःखमेति ॥ ४५ ॥

---

*यह अत्युत्तम चिह्न है ।—सम्पादक

पैत्रीरेखा के शिरोभाग के ऊपरी भाग में साफ़ गुणाकार निशान हो तो वह पुरोहित, आचार्य, या गुरु द्वारा पीड़ित अङ्गवाला तथा बहुत दुखी होता है ॥ ४५ ॥

७ भोगासुशीर्षे मिलिता सुपैत्री भोगा मुखं चैति यदा सुमात्री ।
धूर्तस्वभावो मनुजो नराणां कार्यं विधत्ते सततं समस्तम् ॥ ४६ ॥

भोगरेखा के शिरोदेश में यदि पितृरेखा मिलाप करे और यदि भोगरेखा के मुख के समीप मातृरेखा चली गई हो तो वह धूर्तस्वभाववाला (छलछन्दी) होता है ॥ ४६ ॥

८ भिन्नासुमात्री यदि नीचभागे गोलार्धरूपं कुरुते हि चिह्नम् ।
सोयं नरः स्यान्निजबन्धुवर्गे विश्वासहीनो बहुसेवकाढ्यः ४७

यदि निचले भाग में मात्रीरेखा छिन्नभिन्न होकर अर्धगोलाकार निशान बनाती हो तो बन्धुवर्गों में अविश्वस्त होना तथा अनेक दासगणों से सेव्यमान होना सूचित करती है ॥ ४७ ॥

९ मन्दालये चेत्खलु भोगरेखा क्षुद्राविभिन्ना समुपैति सौम्यम् ।
नानापदार्थैः सहितो मनुष्यो भूपादिभीत्या बहुहानिमेति ४८

जिसके शनिस्थान के पास यदि भोगरेखा छोटी २ रेखाओं से कटकर बुधालय पर्यन्त जावे तो वह नाना वस्तुयुक्त होना तथा राजा-महाराजा आदि के डर से हानि उठाता है ॥ ४८ ॥

१० मात्रीसुरेखा यदि मध्यदेशे क्षुद्राविभिन्ना विनता विभाति ।
अल्पायुषं तं पुरुषं करोति सौभाग्यवन्तं बहुपुत्रवन्तम् ४९

यदि मातृरेखा मध्यभाग में (शनैश्चरालय के सामने) छोटी २ रेखाओं से कटी तथा लचीसी प्रतीत हो तो उसको सौभाग्यवाला, अनेक पुत्रोंवाला तथा अल्पायु करती है ॥ ४९ ॥

११ पैत्रीसमुत्था खलु चोर्ध्वरेखा शेषे सशाखा शशिनं प्रयाति ।
सांघातिकं मृत्युमुपैति मर्त्यो मत्या विहीनो ममतासमेतः ५०

जिसकी पैत्रीरेखा से उठी ऊर्ध्वरेखा शेष भाग में शाखा समेत चन्द्रालय में चली जावे वह निर्बुद्धि तथा सांघातिक मृत्यु पाता है ॥ ५० ॥

१२ भौमालयान्ते मिलितं गभीरं तिर्यक्त्रिरेखं समुपैति काव्यम्
अपव्ययेनापि युतो मनुष्यः शेषेऽनुतापं कुरुते सदैव ५१ ॥

मङ्गल स्थान से मिला गहरा तथा तिरछी तीन रेखाओंवाला निशान शुक्रालय के पास पहुँचे तो वह बुरे कामों में पैसा खर्चता है । जब धन चुक जाता है तो सदैव पछताया करता है ॥ ५१ ॥

१३ भाग्यासुरेखा मिलिता सुपैत्र्यां तदन्तरे चेत्समकोणचिह्नम् ।
साधारणोयं पुरुषस्तदा स्यान्नार्यां यदा चेत्तनयं प्रसूते ५२ ॥

जिसकी भाग्यरेखा पैत्रीरेखा से मिली हो (ऊर्ध्वरेखा पितृरेखा से मिली हो) और उनके बीच में समकोण का चिह्न हो तो वह साधारण पुरुष होता है । यदि पूर्वोक्त निशान रमणी के करतल में हो तो वह पुत्र पैदा करती है ॥ ५२ ॥

१४ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशाद्रेखा गभीरा समुपैति भाग्याम् ।
सर्वप्रियो वै पुरुषस्तदानीं विजित्य बन्धुं सुखतां समेति ५३ ॥

मणिबन्ध से उठी गहरी रेखा भाग्यरेखा के पास पहुँचे तो वह प्राणी सबका प्यारा होता तथा वैरी का विजय कर सुख पाता है ॥ ५३ ॥

१५ चन्द्रालये चेद्विशदस्वरूपं चिह्नं चतुष्कोणयुतं विभाति ।
सोयं यशस्वी मनुजो मनस्वी विश्वासशाली बहुवित्तमेति ५४

जिसके चन्द्रालय के निकट साफ़ चार कोणयुक्त निशान हो वह यशस्वी, मनमौजी, विश्वासी और धनी होता है ॥ ५४ ॥ (देखो चित्र नं० ४६)

चतुर्दशलक्षणाङ्कितकरतलफल

१ सौम्यालयान्ते सरलैकरेखं संमध्यगोलं यदि भाति चिह्नम् ।
दुर्दृष्टियुक्तो विकलो मनुष्यो विक्षीणवीर्यो विषयानुरागी ५५

बुधालय के पास सीधी एक रेखावाला व बीच में गोलाकार निशान हो तो वह क्षीणवीर्यवाला, विषयानुरागी, दुर्बलदृष्टियुक्त तथा व्याकुल बना रहता है ॥ ५५ ॥*

---

* बुधालय पर गोलाकार चिह्न आकस्मिक मृत्यु-सूचक होता है । नेत्रों की दृष्टि कमज़ोर भी होती है, ऐसा कहा गया है ।—संपादक

२ भोगागभीरा गुरुगा विभाति शाखातदीया यदि याति मन्दम्
सोयं मनुष्यो वनिताविलासाद्दौर्भाग्ययुक्तोधनहानिमेति ५६

गहरी सौभाग्यरेखा बृहस्पति स्थान में पहुँचे और यदि उसकी शाखा शनि स्थान में गई हो तो उसकी रमणियों में आसक्ति होने से धनहानि होती है ॥५६॥

३ मात्रीसमुत्था विशदा विभुग्ना रेखा यदैका धिषणं प्रयाति ।
स मन्दभाग्यो मनुजस्तदानीं प्राप्नोति सौख्यं चरमे वयस्के ५७

मातृरेखा से उठी टेढ़ी साफ़ रेखा यदि बृहस्पति स्थान पर्यन्त जावे तो वह मन्दभागी तथा अन्तिम अवस्था में सुख पाता है ॥ ५७ ॥

४ आरम्भदेशे खलु भोगमात्र्योस्तारानुरूपं यदि भाति चिह्नम् ।
सोऽयं गतो वै मनुजो विदेशं प्राप्नोति भद्रं भयताविहीनः ५८

भोगरेखा एवं मातृरेखा के आरम्भदेश में तारा का चिह्न हो तो वह विदेश जाता तथा निडर और कल्याणयुक्त होता है ॥ ५८ ॥

५ भोगासुमध्ये सरलं त्रिरेखं तिर्यग्विभिन्नं खलु चन्द्रमित्या ।
सोयं मनुष्यो रिपुतासमेतो मातापितृभ्यां कुरुते विवादम् ५९

भोगरेखा के मध्यभाग में एक रेखा से तिरछा कटा हुआ तीन रेखाओं वाला सीधा निशान हो तो वह माता-पिता के साथ झगड़ा करनेवाला होता है ॥ ५९ ॥

६ चिह्नं गभीरं जठरे जनन्या वृत्तार्धरूपं विशदं विभाति ।
त्यक्त्वास्वकीयौपितरौमनुष्योह्यात्मम्भरिर्वैभ्रमतेविदेशम् ६०

मातृरेखा के मध्य में गहरा साफ़ वृत्तार्धरूप (अर्धगोलाकार) निशान हो तो वह अपने माता-पिता को छोड़ स्वात्मा पालता तथा विदेश में घूमता है ॥ ६० ॥

७ मात्रीसुरेखा शशिनं समेति पैत्री विभुग्ना मणिबन्धमेति ।
एवं विधे गर्ततरे प्रयाते करोति चौर्यं चपलस्वभावः ॥६१॥

मातृरेखा चन्द्रालय के पास चली जावे और टेढ़ी पैत्रीरेखा मणिबन्ध से मिले और गड्ढे का सा निशान हो तो वह चपल स्वभाववाला तथा चोरी करता है ॥ ६१ ॥

८ पैत्रीगले चेत्सरलं त्रिरेखं रेखाचतुष्कैस्तु तिरोविभिन्नम् ।
सोयं जनो वै कुरुते कुकृत्यं विषप्रयोगैर्विषयानुरक्तः ॥६२॥

सीधा तीन रेखावाला चार रेखा से तिरछा कटा निशान पैत्रीरेखा के कण्ठदेश में हो तो विषयी तथा विषप्रयोगों सरीखे निन्दित कार्य करना बताती है ॥ ६२ ॥

९ पित्रा वियुक्ता यदि मातृरेखा द्विधा विभक्ता खलु चाग्रभागे ।
सोयं नरो भिन्नतरस्वभावो ह्याप्नोति खञ्जं खलतासमेतः ६३

जिसकी मातृरेखा पैत्रीरेखा से विलग हो और अग्रभाग में दो प्रकार से बँट जाय वह खल, भिन्नस्वभाववाला तथा लँगड़ा होता है ॥ ६३ ॥

१० नतद्विरेखं मणिबन्धसंस्थं तद्भूतचिह्नं सरलद्विरेखम् ।
सांघातिकं मृत्युमुपैति मर्त्यो मन्दस्वभावो मदनाकुलात्मा ६४

मणिबन्ध में दो लची रेखाएँ तथा उस पर सीधी दो रेखाएँ हों तो वह नीच स्वभाववाला, कामपीड़ित तथा सांघातिक मृत्यु पाता है ॥६४॥

११ अङ्गुष्ठमूले विशदं विभाति कोणस्वरूपं यदि युग्मचिह्नम् ।
सोयं दरिद्रः परिवारयुक्तो भिक्षासुवृत्तिं कुरुतेऽप्यजस्रम् ६५

जिसके अँगूठे के मूल में साफ दो कोण चिह्न हों वह परिवारयुक्त, दरिद्री तथा भिक्षावृत्ति से निर्वाह करता है ॥ ६५ ॥

१२ पैत्रीसुरेखा यदि नीचभागे वृत्तार्धभिन्ना मणिबन्धमेति ।
सोयं हठान्मृत्युमुपैति मर्त्यो मत्या विहीनो विपदासमेतः६६

यदि पैत्रीरेखा निचले भाग में अर्धवृत्ताकार निशान से कट मणिबन्ध के पास पहुँचे (अँगूठे के मूल में समा जावे) तो वह विपदयुक्त, निर्बुद्धि तथा हठ से मृत्यु पाता है ॥ ६६ ॥

१३ सर्पाननाभा मणिबन्धसंस्था ह्येवंविधाश्चेद्यतिसन्ति रेखाः ।
तात्रान्मतं वै भ्रमते विदेशं व्यापद्ग्रहग्रस्तमना मनुष्यः ॥६७॥

मणिबन्ध के ऊपर के भाग में सर्प मुखवाली रेखा हो (अथवा ऐसी हों

जितनी रेखाएँ प्रतीत हों) तो वह उतने बार विशिष्ट आपद्ग्रस्त मनवाला होता और निश्चय विदेश में घूमता है ॥ ६७ ॥

१४ सर्वाङ्गुलीनां त्रितये परुष्के सार्प्यं द्विरेखं यदि भाति चिह्नम् ।
बाल्याद्यवस्थाङ्गुलिकक्रमेण नूनं नरो मज्जति वारिवाहे ॥ ६८ ॥

जिसकी समस्त अँगुलियों की तीसरी पोर में सर्प समान वक्राकार दो रेखाएँ हों वह बाल्यादि अवस्था और कनिष्ठादि अँगुलियों के अनुक्रम से निश्चय जल में डूबता है। [यानी पूर्वोक्त निशान यदि कनिष्ठा में हो तो बाल्यावस्था में, अनामिका में हो तो युवावस्था में, मध्यमा में हो तो मध्यावस्था में, तर्जनी में हो तो वृद्धावस्था में और अँगूठे में हो तो अति-वृद्धावस्था में जल-निमग्न होता है] ॥ ६८ ॥ (देखो चित्र नं० ४७)

पञ्चदशलक्षणाङ्कितकरतलफल ८०

१ सर्वाङ्गुलीनां त्रितये परुष्के वक्रं द्विरेखं यदि भाति चिह्नम् ।
सोयं मनुष्यो बलवीर्यहीनो दौर्बल्ययुक्तो दयितो दयालुः ॥६९॥

समस्त अँगुलियों की तीसरी पोर में वक्राकार दो रेखाएँ हों तो वह प्राणी बल, एवं वीर्यहीन तथा दुर्बल शरीरवाला और प्यारा तथा दयालु होता है ॥ ६९ ॥

२ सौम्यालये चेत्सरलं सकोणं समध्यरेखं विशदं विभाति ।
सोयं नरो नीतिपरो भयार्तो भिक्षासुवृत्तिं कुरुतेऽप्यजस्रम् ७०॥

साफ़ सीधा कोण समेत एवं बीच में रेखावाला निशान यदि बुधालय में हो तो वह नीतिपरायण, भयाकुल तथा निरन्तर भिक्षावृत्ति करता है ७०॥

३ भोगासुरेखा खलु नीचभागे शाखाद्वयेनापि युता यदा स्यात् ।
सोयं विवादी मनुजो विषादी व्यासक्तचित्तो व्ययमायशाली ७१

यदि भोगरेखा निचले भाग में दो शाखायुक्त हो तो वह विवादी, विषादी, विषयासक्त और रोजगारी होता है ॥ ७१ ॥

४ भाग्यासुरेखा रविगा विभाति त्वर्धार्धवृत्तेन युता सुशीर्षे ।
दोष्कर्म्यदोपान्मनुजस्तदानीं कारालयं याति करालरूपः ७२

यदि गहरी भाग्यरेखा सूर्यालयपर्यन्त जावे और यदि शिरोभाग में अर्धार्धवृत्तयुक्त हो तो वह दुष्कर्मों से जेलखाने जाता है ॥ ७२ ॥

५ भोगासमुत्था गुरुगेहमेति संकर्तिता चेत्खलु कण्ठदेशे ।
सोयं जनो वै भ्रमते विदेशं प्राप्नोति मृत्युं ममतासमेतः ॥ ७३ ॥

भोगरेखा से उठी शाखारेखा बृहस्पति स्थान पर्यन्त जावे और यदि कण्ठ-भाग में कटी सी प्रतीत हो तो वह विदेश में घूमता तथा मरता है ॥७३॥

६ द्विधा विभक्ता खलु शेषभागे सौभाग्यरेखा गुरुगा विभाति ।
प्रवञ्चयित्वा पितरौ स्वकीयौ ह्यनारतं कुप्यति कोपशाली ७४॥

शेषभाग में दो प्रकार से बटी सौभाग्यरेखा बृहस्पति स्थान में पहुँचे तो वह अपने माता-पिता को छलता, तथा सदैव कुपित होता है ॥ ७४ ॥

७भाग्या विभिन्ना खलु भोगरेखा कोणं विधत्ते यदि मध्यदेशे ।
वित्ताभिलाषी मनुजो विलासी प्राप्नोति कामं कलयासमेतः ७५

यदि भोगरेखा मध्यभाग में कोण बनावे तथा भाग्यरेखा से कटी हो तो वह धनाभिलाषी, काम-कलायुक्त तथा विलासी होता है ॥ ७५ ॥

८ मात्रीसुरेखा मिलिता सुपैत्र्यां वृत्तार्धयुक्ता खलु कण्ठदेशे ।
सोयं विदीनो दयिताविहीनो भङ्क्त्वा स्ववाटिं भयतामुपैति ॥

पैत्रीरेखा में मिली मात्रीरेखा कण्ठदेश में अर्धगोलाकार निशानयुक्त हो तो वह दरिद्री, दयिताविहीन, तथा अपनी बाड़ी नाश कर भयातुर रहता है ॥७६॥

९ भौमालयान्ते सरलं द्विरेखं संवृकणमध्यं यदि भाति चिह्नम् ।
उच्चस्थलाद्वै पतनं जनस्य नो कर्तितं चेन्मरणं प्रयाति ॥ ७७ ॥

भौमालय के पास साधा दो रेखाओंवाला तथा बीच में कटा हुआ निशान हो तो उसका ऊँचे से गिरना होता है । और यदि पूर्वोक्त निशान बीच में कटा न हो तो वह गिरकर मर जाता है ॥ ७७ ॥*

१०पैत्रीसमुत्था मिलिता सुमात्र्यां कोणं विधत्ते विशदस्वरूपम् ।
दौर्जन्ययुक्तोमनुजोतिलुब्धो लावण्यहीनो ललनां समेति ७८॥

---

*मंगल सदा लड़ाई-झगड़े, चोट लगना, गिरना, रक्तपातादि का सूचक है । —संपादक

पैत्रीरेखा से उठी एवं मात्रीरेखा में मिली साफ़ रेखा कोणचिह्न बनावे तो वह दुर्जन, कुरूप, बड़ा लोभी तथा रमणी पाता है ॥ ७८ ॥

११ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशात्सर्पानुरूपा जननीमुपैति ।
विना प्रयासं लभते हि वित्तं विश्वासघाती जनवञ्चकश्च ७९॥

मणिबन्ध से उठी सर्पाकाररेखा यदि मातृरेखा के पास पहुँचे तो वह छलिया, विश्वासघाती तथा विना परिश्रम के ही धन पाता है ॥ ७९ ॥

१२ मातुःसमीपे विशदस्वरूपा रेखा यदैका भगिनी विभाति ।
संलब्धवित्तो मनुजोऽधिकारी दीर्घा यदा चेद्बहुवित्तमेति ८०

साफ़ सुथरी एक भगिनीरेखा यदि मातृरेखा के पास हो तो वह अधिकारी होकर धन पाता है । यदि पूर्वोक्त रेखा दीर्घाकार हो तो वह बहुतसा धन पाता है ॥ ८० ॥

१३ पूज्यालयाच्चेच्चलिता सुरेखा चापस्वरूपा शशिजं समेति ।
धूर्तस्वभावोमनुजो हि लम्पटो दान्योवदान्योध्वजभङ्गमेति ८१

बृहस्पति स्थान से चली धनुषाकार रेखा यदि बुधालय पर्यन्त जावे तो वह धूर्तस्वभाववाला, व्यभिचारी, दाता, बड़ा वक्ता होता तथा उसकी ध्वजभङ्ग होती है ॥ ८१ ॥

१४ मात्रीसमुत्था कुटिला सुपैत्री ह्यधोद्विभिन्ना मणिबन्धमेति ।
सोयं जनःस्यात्परिमाणभोजी प्रमाणपायी दयितानुयायी ८२

मात्रीरेखा से उठी टेढ़ी पैत्रीरेखा यदि निचले भाग में छोटी दो रेखाओं से कटती मणिबन्ध में समा जावे तो वह परिमाणभोजी, परिमाणपायी और अपनी प्यारी का अनुगामी होता है ॥ ८२ ॥

१५ सर्वाङ्गुलीनां द्वितये परुष्के कोणस्वरूपं यदि भाति चिह्नम् ।
नानार्तियुक्तो मनुजोऽतिदुर्बलोमूर्च्छामयं वैलभतेऽलसाङ्गः८३

सब अँगुलियों की दूसरी पोर में कोणचिह्न हो तो वह नानाव्याधियुक्त, दुबला, आलसी तथा मूर्च्छारोगी होता है ॥ ८३ ॥ (देखो चित्र नं० ४८)

त्रयोदशलक्षणाङ्कितकरतलफल

१इज्यालयाच्चेच्चलिता कुरेखा भित्त्वा सुभोगां समुपैति सौरिम् ।
शीर्षाभिघातं लभतेमनुष्यो लावण्यलीलालसितोऽलसाङ्गः ८४

बृहस्पति स्थान से चली एक छोटीसी रेखा सौभाग्यरेखा को काटकर यदि शनैश्चरालय पर्यन्त जावे तो वह सुन्दर लीला से विलसित होता तथा सुस्त देहवाला और मस्तकरूपीड़ा भोगता है ॥ ८४ ॥

भोगाविभुग्ना शनिगाविभाति क्षुद्राविभिन्ना यदि नीचभागे ।
विसूचिकाक्रान्तवपुर्ज्वरार्तो जृम्भायुतो याम्यपदं प्रयाति ८५॥

टेढ़ी भोगरेखा शनि स्थान में पहुँच एवं निचले भाग में एक छोटी सी रेखा से कटे तो वह हैज़ारोग से तथा ज्वर से पीड़ित होता और जँभुहाई लेने में मरता है ॥ ८५ ॥

३ मात्रीसुरेखा भगिनीसमेता स्वल्पस्वरूपा पितरं समेति ।
तदास्थिभङ्गं लभते नरो वै त्वन्या यदा चेदधिकाङ्गनःस्यात् ८६॥

भगिनीसमेत छोटीसी मात्रीरेखा पैत्रीरेखा में समा जावे (पैत्रीरेखा से मिलाप करे) तो वह हड्डी टूटने की पीड़ा पाता है । यदि दूसरी भगिनीरेखा प्रतीत हो तो वह अनेकानेक रमणियों में रमता है ॥ ८६ ॥

४ पैत्रीसमुत्थां शनिगां स्वशीर्षे संयुज्य भाग्या मणिबन्धमेति।
सोयं मनुष्यः कलहानुरक्तः प्राप्नोति कारां कमलाविहीनः८७

अपने शिरोभाग में पैत्रीरेखा से उठी एवं शन्यालय में पहुँची रेखा से मिली भाग्यरेखा मणिबन्ध (कब्जे) के पास आ जावे तो वह लड़ाका तथा लक्ष्मीहीन होता और जेलख़ाने जाता है ॥ ८७ ॥

५अङ्गुष्ठशाखा यदि सन्तु तिस्रस्तासां सुमध्या खलु कर्तिता चेत् ।
सोयं जनौ वैरिगणान्विजित्य सत्यप्रतिज्ञः क्षमतामुपैति ॥८८॥

अँगूठे की यदि तीन शाखाएँ हों और उन में से बीचवाली शाखा कटी हो तो वह सत्यसंकल्पवाला, वैरियों को विजय करता और क्षमाशील होता है ॥ ८८ ॥

९ समुत्थितं चेन्मणिबन्धदेशाच्चिह्नं द्विरेखं यदि याति चन्द्रम् ।
सोयं नरो मूढतरो नराणां विश्वासघाती वनितारतः स्यात् ८९

मणिबन्ध से उठी दो रेखाएँ यदि चन्द्रालय में जावें तो वह महामूर्ख, विश्वासघाती तथा वनिता में रत रहता है ॥ ८९ ॥

७ पैत्री विभुग्ना मणिबन्धमेति शाखाचतुष्केन युता स्वमध्ये ।
सोयं जनः स्यान्निजबन्धुवर्गे विश्वासहीनो विषमस्वभावः ९०

टेढ़ी पैत्रीरेखा अपने बिचले भाग में चार शाखाओं से मिले तथा मणिबन्ध के पास जावे तो वह स्वबन्धुवर्गों में अविश्वासी और कठिन स्वभाववाला होता है ॥ ९० ॥

८ वृद्धाङ्गुलेर्वै द्वितये परुष्के तिरोद्विभिन्नं सरलं द्विरेखम् ।
विश्वासराहित्यमुपैति जन्तुर्जाज्वल्यमानःखलुनास्तिकश्च ९१

अँगूठे के दूसरे पोर में तिरछी दो रेखाओं से कटी सीधी दो रेखाएँ कोपाग्नि से जलना, नास्तिकता तथा विश्वासहीनता की सूचक हैं ॥९१॥

९ वृद्धाङ्गुलेर्वै नखतः समुत्थं द्विपर्वगं चेत्सरलं द्विरेखम् ।
विश्वासशाली मनुजो रसाली प्रजासुपाली जनदुःखदाली ९२

अँगूठे के नाखून से उठ दूसरी पोर तक गया सीधा दो रेखाओंवाला निशान विश्वासी, मिष्टभाषी होकर सन्तान पालनेवाला, जनदुःखविदारक बताती है ॥ ९२ ॥

१० सुतर्जनी चेद्द्वितये परुष्के धत्ते सकोणं यदि बाहुभिन्नम् ।
सोयं मनुष्यो रसनारसज्ञो रामारतो द्यूतयुतो दयालुः ॥ ९३ ॥

जिसकी तर्जनी की दूसरी पोर में कोणयुक्त भुजाभिन्न चिह्न हो वह जिह्वा के स्वाद का ज्ञाता, दयालु, सुन्दरियों में रत, और जुवाड़ी होता है ॥९३॥

११ सुमध्यमाया द्वितये परुष्के चिह्नं सकोणं यदि मध्यकोणम् ।
दुरोदराक्रान्तमना मनुष्यो मान्यो वदान्यो बलतामुपैति ॥९४॥

जिसकी मध्यमा की दूसरी पर्व में कोण समेत एवं बीच में कोण रखने-

वाला निशान हो वह जुवाड़ी, माननीय, वक्ता तथा बलवान् बना रहता है ॥ ९४ ॥

१२ अनामिकाया द्वितये परुष्के चिह्नं सकोणं यदि बाहुभिन्नम्।
द्यूते रतो वै मनुजो विलासी ह्यानन्दराशी खलु सुद्ध्युपासी ९५

जिसकी अनामिका की दूसरी पोर में कोण समेत भुजाभिन्न चिह्न हो वह जुवाड़ी, भोगी, आनन्दराशि और विद्वानों का उपासक होता है ९५॥ *

१३ कनिष्ठिकाया द्वितये परुष्के चिह्नं सकोणं यदि मध्यकोणम्।
सोयं नरो द्यूतपरोऽप्युदारो ह्याप्नोति शङ्कां निजजीवनेप्सुः ९६

जिसकी कनिष्ठा की दूसरी पोर में कोण समेत एवं बीच में कोण रखनेवाला निशान हो वह जुवाड़ी, उदार, अभिलाषी तथा सन्देही होता है ९६ (देखो चित्र नं० ४९)

दशलक्षणाङ्कितकरतलफल

१ पैत्री विभुग्ना मणिबन्धमेति वृत्तार्धयुक्ता खलु चोर्ध्वभागे।
श्वासादिरोगान्मृतिमेति मर्त्यो न्यूना यदा चेद्वयसोऽनुमानात्॥

यदि टेढ़ी पैत्रीरेखा मणिबन्ध के समीप चली जावे और ऊपरी भाग में वृत्तार्धयुक्त हो तो वह श्वासरोगी एवं कृमिरोग से मृत्यु पाता है। यदि पूर्वोक्त रेखा स्वल्परूप हो तो वह अवस्था के अनुमान से मरता है ९७

२ पैत्री समीपाच्चलितं सरेखं वेत्रस्वरूपं शशिजं समेति।
सोयं नरो मूढतरो बलीयान् वामाजितो वै भ्रमते विदेशम् ९८॥

जिसकी पैत्रीरेखा के निकटदेश से चला रेखा समेत बेत के समान निशान बुधालय-पर्यन्त जावे वह महामूर्ख, बड़ा बली तथा वनिता से पराजित होता और विदेश में घूमता है ॥ ९७ ॥

३ चन्द्रालयाच्चेच्चलितं द्विरेखं भित्त्वा सुमात्रीं गुरुमभ्युपैति।
सोयं सुभाग्यो मनुजो मनस्वी धन्यो यदा चेन्मणिबन्धसंस्थम्॥

---

* यदि अनामिका मध्यमा बराबर लम्बी हो अथवा कुछ छोटी हो तो भी जुवा खेलना सूचित करती है।—सम्पादक

जिसके चन्द्रालय से चला दो रेखाओंवाला निशान मात्रीरेखा को काटकर बृहस्पति स्थान के सामने पहुँचे वह बड़ा भाग्यशाली तथा मनमौजी होता है। यदि पूर्वोक्त चिह्न कब्ज़े के पास हो तो वह धन्य कहाता है ॥ ९९ ॥

४ समुत्थितं चेन्मणिबन्धदेशाच्चिह्नं द्विरेखं बुधमभ्युपैति।
गाम्भीर्यशालीगणको गरिष्ठो ज्येष्ठो वरिष्ठो जनतामुपैति १००

मणिबन्ध से उठा दो रेखाओंवाला निशान यदि बुधालयपर्यन्त जावे तो वह गाम्भीर्यशाली, ज्योतिर्वेत्ता, गरिष्ठ, ज्येष्ठ, श्रेष्ठ और जनसमूह पाना सूचित करता है ॥ १०० ॥

५ शेषे सुभागे खलु मातृकाया मध्ये विभिन्नं यदि भाति सार्प्यम्।
आत्माभिमानी पुरुषोऽतिलुब्धो मन्दो मलाढ्यो मदनातुरश्च॥

जिसकी मातृरेखा के शेषभाग में बीच में कटा सर्पाकार निशान हो वह आत्माभिमानी, बड़ा लोभी, मूर्ख, मलिनस्वभाववाला, तथा काम से व्याकुल रहता है ॥ १ ॥

६ मात्रीसमीपे विशदं विभाति सर्पानुरूपं यदि युग्मचिह्नम्।
सोऽयं नरो मज्जति वारिवाहे मध्ये वयस्के सुखतामुपैति २॥

जिसकी मात्रीरेखा के समीपवर्ती साफ़ सर्पाकार दो निशान हों तो वह जल में डूबता और मध्यावस्था में सुख पाता है ॥ २ ॥

७ सुमध्यमायास्तृतये परुष्के चिह्नं त्रिशूलं वृजिनं विभाति।
श्वासावरोधात्खलुपाशतोवाप्राप्नोतिमृत्युं भुविचौरमुख्यः ॥३॥

मध्यमा की तीसरी पर्व में टेढ़ा त्रिशूल चिह्न हो तो मुखिया, चोर, श्वासारोध या फांसी से मृत्यु पाता है ॥ ३ ॥

८ अनामिकायास्तृतये परुष्के संमध्यगोलं वृजनैकरेखम्।
सोऽयं नरश्चौरवरोऽतिलम्पटो विसंकटो वै विकटोनराणाम् ४॥

जिसकी अनामिका की तीसरी पर्व में स्थित बीच में गोल एवं तिरछी

एक रेखावाला निशान हो वह चोरों में मुखिया, व्यभिचारी मनुष्यों में विकट, तथा संकट में रहता है ॥ ४ ॥*

९ सौम्यालयाच्चेच्चलिता गभीरा भोगा सुरेखा गुरुगा विभाति।
जैवातृकोयंमनुजोजवाढ्योह्याप्नोतिनित्यंललनासुभोगम् ५ ॥

जिसे बुधालय से चली गहरी भोगरेखा बृहस्पति स्थान पर्यन्त हो वह वेगवान्, दीर्घजीवी तथा नित्य रमणियों को भोगता है ॥ ५ ॥

१० चन्द्रालयाच्चेच्चलिता विभुग्ना मात्रीसुरेखा पितरं परैति।
सोयं मनुष्यो निजवंशजातो मान्यो वदान्योविभुतामुपैति ६

चन्द्रालय से चली टेढ़ी मातृरेखा यदि पितृरेखा से मिले तो वह कुलीन, मान्य, वक्ता और विभुता पाता है ॥ ६ ॥ (देखो चित्र नं० ५०)

एकादशलक्षणाङ्कितकरतलफल

१ सौम्यालये चेद्विशदं विशालं यवानुरूपं यदि भाति चिह्नम्।
नैजे कुटुम्बे कुरुते विवाहं त्वन्यालये चेत्फलमुक्तमेव ७ ॥

बुधालय में साफ़ यव के आकारवाला निशान हो तो वह अपने कुटुम्ब या बन्धुगणों में ब्याह करता है। और अन्य घरों में हो तो भी कहा हुआ ही फल होता है ॥ ७ ॥

२ समुष्टिका चेत्करवालरूपा भोगा सुरेखा गुरुगा विभाति।
सोयं ह्यगम्यागमनं करोति चेत्थं सुपैत्री तु फलं तदेव ८ ॥

जिसकी मुठिया समेत तलवार के समान आकारवाली भोगरेखा बृहस्पति स्थान में पहुँचे वह मौसी, चाची, दादी, बेटी या बहू आदि में गमन करता है। यदि ऐसे ही पैत्रीरेखा भी हो तो भी अगम्यागमन करता है ॥ ८ ॥

३ भाग्या सशाखा शनिगा विभाति वृत्तेन युक्ता खलु नीचभागे।
नीचाङ्गनां वै भजते मनुष्यो वाप्री यदीत्थन्तु फलं तदेव ९॥

---

* इसी प्रकार कनिष्ठा की पोरों में चौकोन, त्रिकोण, गोलाकार अथवा धन चिह्न भी चौरकर्मपरायण सूचित करते हैं। --संपादक

जिसकी भाग्यरेखा शनि स्थान में पहुँचे तथा निचले भाग में शाखा समेत वृत्ताकार निशान से संयुक्त हो तो वह नीच रमणी सेवन करता है। यदि ऐसी ही पैत्रीरेखा प्रतीत हो तो भी पूर्वोक्त फल होता है ॥ ९ ॥

४ अङ्गुष्ठमूले विशदस्वरूपं वेदाङ्कतुल्यं यदि भाति भिन्नम्।
संतापशाली मनुजो विशोकी दीर्घं यदा चेद्बहुशोकमेति १०

जिसके अँगूठे के मूल में शुद्ध चार अङ्क के समान भिन्न निशान हो तो वह विशोकी तथा सन्तापशाली होता है। यदि पूर्वोक्त चिह्न लम्बायमान हो तो घना शोक पाता है ॥ १० ॥

५ अंगुष्ठशाखा यदि सन्तु तिस्रो वृत्तार्धयुक्ता प्रथमा हि तासाम्।
लोके भ्रमन्वै मनुजस्तदानीमुद्वाह्य पर्त्नीं पितरं समेति ॥ ११ ॥

अँगूठे की तीन शाखाएँ हों उनमें से पहली शाखा अर्धवृत्ताकार युक्त हो तो वह लोक भ्रमणकर विजातीय रमणी के साथ ब्याहकर पिता के पास पहुँचता है ॥ ११ ॥

६ मात्रीसमीपे सरलं त्रिरेखं रेखाचतुष्कैस्तु तिरोविभिन्नम्।
सोयं नरो मज्जति वारिवाहे प्राप्नोति मृत्युं मदनातुरश्च॥ १२॥

सीधा तीन रेखाओंवाला तिरछी चाररेखाओं से कटा निशान मात्रीरेखा के पास हो तो वह जल में डूब जाता है या कामातुर होकर मर जाता है ॥१२॥

७ रेखाचतुष्कं सरलं विभाति रेखाचतुष्कैस्तु तिरोविभिन्नम्।
सोयं निमग्नो हि जलप्रवाहे नानार्तियुक्तो मरणं प्रयाति १३

चन्द्रालय के समीप सीधा चार रेखाओंवाला एवं तिरछी चाररेखाओं से कटा निशान हो तो वह जल में डूब या अनेकानेक व्याधियों से घिरकर मरता है ॥ १३ ॥

८ चिह्नं यदाच्चेन्मणिबन्धसंस्थं तिर्यक्त्रिभिन्नं सरलं त्रिरेखम्।
सोयं जनो वै पतितो जलौघे जायाजितो याम्यपदं प्रयाति १४

मणिबन्ध में तिरछी तीन रेखाओं से कटा हुआ सीधा तीन रेखाओं वाला निशान हो तो वह भार्या से पराजित होकर जल में गिर यमालय जाता है ॥ १४ ॥

९ कनिष्ठिकायाः प्रथमे परुष्के समद्विकोणं यदि भाति चिह्नम्।
चौर्याभियोगे लभते हि शास्तिं न मन्यते ना निजदोषजालम्॥

कनिष्ठा की पहली पर्व में समद्विकोण चिह्न हो तो वह चोरी के मुक़द्दमा में सज़ा पाता है। परन्तु वह अपने दोषजाल को तो नहीं स्वीकार करता॥१५॥*

१० चन्द्रालयाच्चेच्चलिता सुमात्री संयुज्य पैत्रीं कुजमभ्युपैति।
भ्रात्रा युतो वै मनुजो धनाढ्यो धन्यो धरायां धरया समेतः १६

यदि चन्द्रालय से चली मात्रीरेखा पैत्रीरेखा से मिलकर मङ्गलालय में पहुँचे तो वह धरा एवं भाई युक्त तथा धनाढ्य और धन्य होता है॥ १६ ॥

११ मात्रीसमुत्था कुटिला सुपैत्री संवृत्तकण्ठा मणिबन्धमेति।
सोयं मनुष्यो वनितावियुक्तो रामे रतो रामपदं प्रयाति॥ १७॥

मात्रीरेखा से उठी व टेढी पैत्रीरेखा के कण्ठ में वृत्ताकार निशान हो और मणिबन्ध के पास जावे तो वह रमणी वियोगी, राम-परायण और रामालय को जाता है॥ १७ ॥ (देखो चित्र नं० ५१)

ग्रन्थ का उपसंहार और कविवंशवर्णन

शाके शैलगुणार्ष्टभूपरिमिते वर्षे द्विगोत्राङ्कके
भाद्रे मास्यसिते ग्रहेशतिथिके भूनन्दने वासरे।
नानाग्रन्थमतानुगोतिविशदो ग्रन्थो मया भाषितो
भूयाद्भव्यतराय सर्वविदुषां सामुद्रिको नित्यशः॥ १ ॥

शाके १७३७ संवत् १९७२ भाद्रमास कृष्णपक्ष षष्ठी मङ्गलवार दिवस में नानाग्रन्थमतानुयायी विशदरूप सामुद्रिक ग्रन्थ को मैंने कहा है वह सदैव सर्वविद्वान्महोदयों के मङ्गल के लिये होवे॥ १ ॥

सामुद्रिकं शास्त्रवरं विशुद्धं प्रोक्तं शिवायै शशिशेखरेण।
आदाय सर्वं भणितं मयैतद् भूयान्मुदे मण्डितपण्डितानाम्॥२॥

विशुद्ध, शास्त्रों में श्रेष्ठ जिस सामुद्रिकशास्त्र को चन्द्रचूड शिवजी ने शिवा

---

* ऐसा अनेक विद्वानों ने भी कहा है। संपादक

(पार्वती) जी से कहा है वह सब लेकर इस सामुद्रिक को मैंने बनाया है वह गुणगणमण्डित पण्डित महोदयों की प्रीति के लिये होवे ॥ २ ॥

सामुद्रिकं शास्त्रमिदं मनोज्ञं द्वाविंशमब्दं मृगितं नितान्तम् ।
नो देयमेतत्सुधिया कदापि लोकद्रुहां निन्दनतत्पराणाम् ॥३॥

यह सामुद्रिकशास्त्र मनोज्ञ है कि जिसको बाईस वर्ष पर्यन्त पुराण, अंगरेज़ी, फ़ारसी तथा बंगला व महाराठी आदिकों में अत्यन्त ही गवेषण किया है इसको लोकद्रोही निन्दकजनों के लिये विद्वानों को कदापि नहीं देना चाहिये ॥ ३ ॥

शान्ताय शाक्ताय शिवप्रियाय शिष्याय देयं गुरुभक्तकाय ।
वाणी भवेन्नो विफला कदापि स्वधर्मपालात्सफलं समस्तम् ॥४॥

शान्त, शाक्त, शिवप्रिय, गुरुभक्त शिष्य के लिये देना चाहिये उसकी वाणी कदापि निष्फल नहीं हो सक्ती है क्योंकि अपने धर्म की पालना से सबही सफल होता है ॥ ४ ॥

सामुद्रिकाभ्यासपरा नितान्तं सत्येन युक्ताः सरलस्वभावाः ।
सद्धर्मवन्तो मनुजा हि नूनं कीर्तिं लभन्तां विमलां दिगन्ते ॥५॥

सत्यवान् सरलस्वभाववाले जो मनुष्य सामुद्रिक के अभ्यास में अत्यन्त परायण होवेंगे वे लोग अवश्य सच्चे धर्मवाले होकर दिगन्तों में विमल कीर्ति को पावेंगे ॥ ५ ॥

फलन्ति वाण्यो मनुजस्य तस्य सत्येन युक्तं हृदयं हि यस्य ।
तेनोदितं वै वचनं जनेभ्यः प्राप्नोति सिद्धिं न मृषा कदापि ॥ ६ ॥

जिस मानव का हृदय सत्यसम्पन्न होता है उसकी वाणियां सफल होती हैं उस करके जनों के लिये जो वचन कहा जाता है वह सिद्धि को पाता हुआ झूठा कभी नहीं होसक्ता है ॥ ६ ॥

पठन्तु नित्यं सुधियो महान्तो धनं लभन्तां जनयूथकेभ्यः ।
पुत्रप्रपौत्रादियुता भवन्तु चायुष्यवन्तो नितरामुदाराः ॥ ७ ॥

जो विद्वान्लोग इसको सदैव पढ़ेंगे वे महन्त होकर जनसमूहों से धन

को पावेंगे और पुत्र, प्रपौत्र आदिकों से संयुक्त होवेंगे व आयुर्दायवाले होकर बड़े ही उदार गिने जावेंगे ॥ ७ ॥

श्रीमत्प्रागनरायणेन प्रभुणा सद्धर्मविद्याविदा
सर्वेषामुपकारकाय नितरामाज्ञापितोहं मुदा ।
नाम्ना शक्तिधरः सदाशिवपदद्वन्द्वे रतो नित्यश-
श्चक्रे ग्रन्थमनुत्तमं मतिमतां सामुद्रिकं सौख्यदम् ॥ ८ ॥

श्रीमान् रायबहादुर मुंशी प्रयागनारायणजी भार्गव मेरे स्वामी जोकि सच्चे धर्म व विद्या के जाननेवाले हैं उन्हों से सर्वो के उपकार के लिये आज्ञापित, सदाशिवजी के युगल पदारविन्द के सेवक शक्तिधरनामक मैंने मतिमानों को सदैव सौख्यदायक सर्वोत्तम सामुद्रिक ग्रन्थ को बनाया है ॥८॥

पुरे मुरादाबादाख्ये शुक्लवंशोद्भवः सुधीः ।
आसीद्दुर्गाप्रसादाख्यो बलभद्रस्तु तत्सुतः ॥ ९ ॥
तस्यात्मजः शक्तिधरः शिवपादार्चने रतः ।
चक्रे सामुद्रिकं शास्त्रं सरलं सर्वसम्मतम् ॥ १० ॥

इति श्रीमद्रायबहादुरमुंशीप्रयागनारायणाज्ञापितद्विजवरशक्तिधरसंकलितः सामुद्रकः समाप्तिं प्रफाणेति शम् ।

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

खण्डेलवाल प्रेस, मानमन्दिर वाराणसी